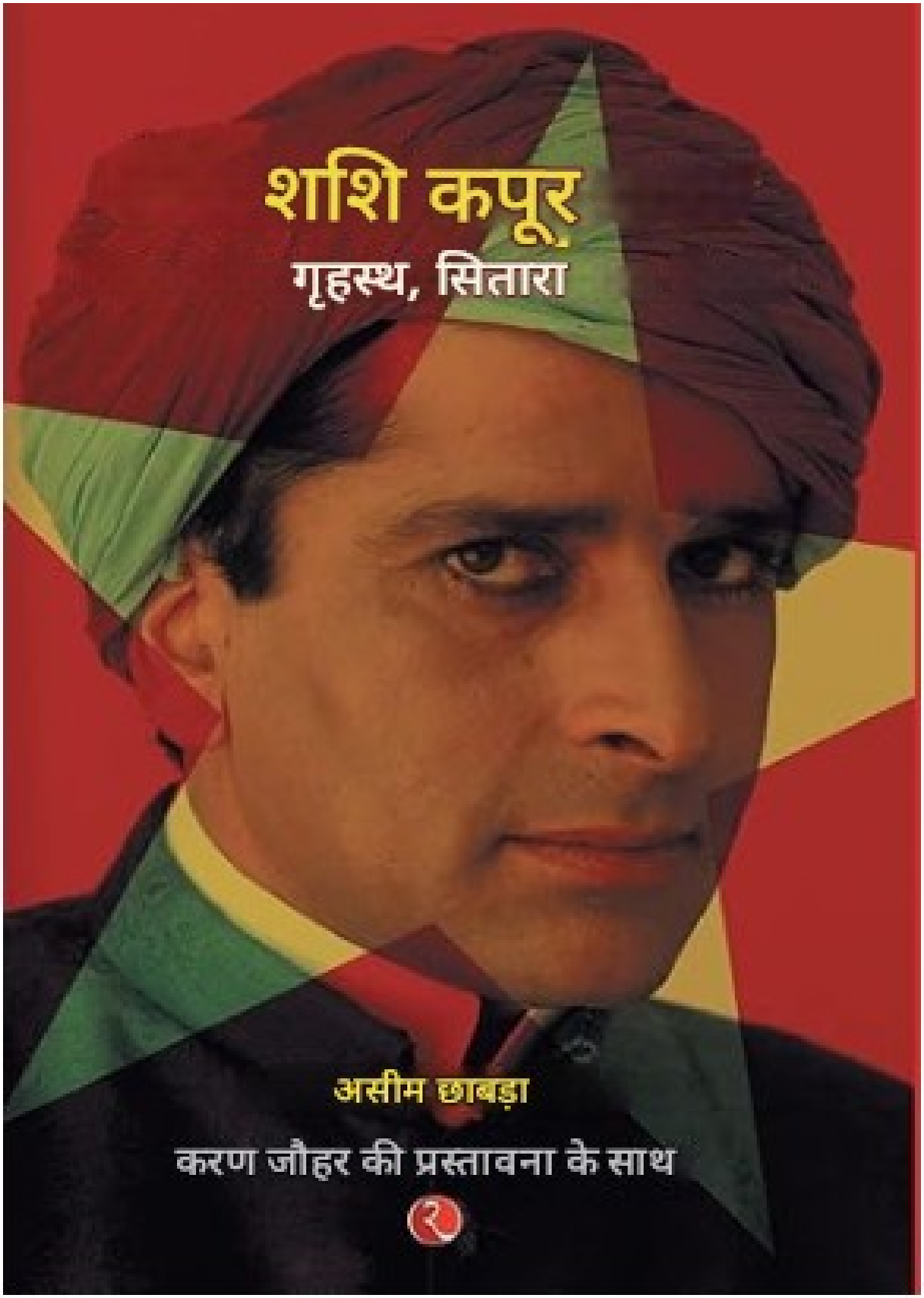
शशि कपूर
गृहस्थ, सितारा
असीम छाबड़ा
करण जौहर की प्रस्तावना के साथ

शशि कपूर

गृहस्थ, सितारा

असीम छाबड़ा

करण जौहर की प्रस्तावना के साथ

रूपा

करण जौहर द्वारा लिखित प्रस्तावना
लेखक का नोट
परिचय
1. एक सितारे का जन्म : शशि , जेनिफर और फिल्में
2. उत्थान : शशि और उनकी शुरुआती फिल्में
3. चलो अमेरिका : शशि , व्यापारी - हाथी दांत और रूक्स
4. टैक्सी : शशि और 1970 के दशक की पागलपन भरी घटनाएं
5. सटीक अनुमान : शशि , निर्माता और व्यवसायी
6. आधुनिक फ़िल्में : शशि , 1980 का दशक और उसके बाद
7. चीजें बिखर गईं : जेनिफर के बाद शशि
शशि कपूर की फिल्मों की सूची
स्वीकृतियाँ

□□□ □□□□

□□□□□□□, □□□□□□□

□□□□□□□□□

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2016
7/16, Ansari Road, Daryaganj
[illegible] 110002

Copyright © Aseem Chhabra 2016

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

अंतर्वस्तु

करण जौहर द्वारा लिखित प्रस्तावना
लेखक का नोट
परिचय
1. एक सितारे का जन्म: शशि, जेनिफर और फिल्में
2. उत्थान: शशि और उनकी शुरुआती फिल्में
3. चलो अमेरिका: शशि, व्यापारी-हाथी दांत और रूक्स
4. टैक्सी: शशि और 1970 के दशक की पागलपन भरी घटनाएं
5. सटीक अनुमान: शशि, निर्माता और व्यवसायी
6. आधुनिक फ़िल्में: शशि, 1980 का दशक और उसके बाद
7. चीजें बिखर गईं: जेनिफर के बाद शशि
शशि कपूर की फिल्मों की सूची
स्वीकृतियाँ

प्रस्तावना

यह सन् 1960 का दशक था। बेहद आकर्षक, गालों पर डिंपल वाला और बेहद खूबसूरत बालों वाला एक हीरो सामने आया। हरे-भरे पहाड़ी इलाकों में, वह अपनी नायिकाओं को प्यार भरी निगाहों से देखता था। और उस एक पल के लिए, समय थम जाता था, और दर्शकों के दिल भी ठहर जाते थे।
फिल्म के हीरो शशि कपूर थे। और वो हर तरह से एक रोमांटिक शख्स थे।
उनके हाव-भाव, उनका रूप-रंग, और वो अदा जो दिलों को धड़का देती है और औरतों को दीवाना बना देती है—शशि कपूर सचमुच एक आदर्श राजकुमार थे।
फिर 1970 के दशक के उत्तरार्ध और 1980 के दशक के आरंभिक वर्षों में नायक की अवधारणा का उदय हुआ।
बदल गया। वह एक मध्यमवर्गीय, क्रोध से भरा हुआ व्यक्ति बन गया जो शब्दों के बजाय मुट्ठियों से अपनी बात कहता था। स्नेह भरी निगाहों की जगह गुस्से भरे आँसू आ गए। दर्शक हिंसक दृश्यों और धमाकेदार मार-धाड़ वाले दृश्यों को देखने के लिए बेताब हो गए। पिछले दशक का राजकुमार मानो दफ़न हो चुका था।
और फिर भी, शशि कपूर चमत्कारिक रूप से बच गए। अपने आकर्षक व्यक्तित्व के साथ
अपनी दमदार शख्सियत और शानदार अभिनय कौशल के दम पर, उन्होंने तर्क और नैतिकता की आवाज बनकर अपनी छाप छोड़ी। वे बॉलीवुड के उस दौर के विपरीत साबित हुए, जिसमें 'बदला लो या कुछ नहीं' का बोलबाला था। उनके द्वारा निभाए गए किरदारों ने दर्शकों को याद दिलाया कि शोर-शराबे, खून-खराबे और हिंसा के बीच भी शांत स्वभाव और सौम्यता का महत्व है; सही का साथ देने में गुण है, न कि

तात्कालिक प्रतिक्रिया देने में। शशि कपूर अब 'नैतिक नायक' बन चुके थे।
शशि कपूर वर्षों से फिल्म उद्योग के एक दिग्गज रहे हैं, और अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा में लगातार अभिनय करने वाले पहले अभिनेताओं में से एक। फिर भी, वे हमेशा एक विनम्र व्यक्ति रहे, जो हर सदस्य को अपने परिवार के सदस्य की तरह मानते थे। वे उन गिने-चुने लोगों में से हैं जो हमेशा अपनी जड़ों - रंगमंच - से जुड़े रहे। पृथ्वी थिएटर की स्थापना और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म शेक्सपियर वाला में उनकी भूमिका, रंगमंच से उन्हें बचपन में मिली हर चीज को श्रद्धांजलि है - उनकी कुशलता, अपनी कला पर उनकी पकड़ और, ज़ाहिर है, उनकी पत्नी। शशि कपूर एक आदर्श सज्जन व्यक्ति हैं।
कहीं न कहीं, भारतीय संस्कृति के अतिरंजित 1980 के दशक के शोरगुल में,
सिनेमा जगत में हम भूल गए हैं कि शशि कपूर कितने महान अभिनेता और इंसान थे और आज भी हैं। उनके प्रति मेरे मन में असीम प्रेम और सम्मान है - न केवल हमारे उद्योग में उनके योगदान के लिए, बल्कि उनके व्यक्तित्व के लिए भी: वे हमेशा दयालु, हमेशा आकर्षक और हमेशा उदार थे।
आज मुझे एक ऐसे व्यक्ति के बारे में लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है जिसने कभी हार नहीं मानी।
उन्होंने न केवल अपनी कला को निखारा, बल्कि एक निर्माता, रंगमंच के दिग्गज और दिलचस्प, लीक से हटकर विषयों को चुनने वाले निर्माता के रूप में भी इसे पोषित किया। शशि जी को उस पीढ़ी का प्यार और सम्मान प्राप्त है जो उन्हें हर बार पर्दे पर चमकते

हुए देखकर बड़ी हुई है। और निश्चित रूप से, जो भी आज उन्हें देखेगा, वह भी ऐसा ही महसूस करेगा।
मेरे लिए, और बहुत से लोगों के लिए, वह हमेशा एक सज्जन व्यक्ति रहेंगे, एक सच्चे सज्जन व्यक्ति।
नैतिक नायक, एक राजकुमार।
वह हमेशा शशि कपूर ही रहेंगे।
Karan Johar
बॉम्बे, 2016

लेखक का नोट

आम तौर पर, एक पत्रकार के तौर पर, जब मैं किसी का ज़िक्र करता हूँ, तो पहली बार पूरा नाम इस्तेमाल करता हूँ, लेकिन बाद में उपनाम (या सरनेम) का इस्तेमाल करता हूँ। हालाँकि, इस किताब में ऐसा करने से कुछ लोग भ्रमित हो सकते थे, क्योंकि मैं कई कपूरों के बारे में बात कर रहा हूँ—शशि कपूर, राज कपूर, शम्मी कपूर, संजना कपूर, कुणाल कपूर और यहाँ तक कि ऋषि कपूर भी। इसलिए मैंने पहली बार पूरा नाम और उसके बाद सिर्फ़ पहला नाम इस्तेमाल करने का फ़ैसला किया।
इस फैसले से हालात और भी जटिल हो गए। भारतीय फिल्म उद्योग में, वरिष्ठ अभिनेताओं और फिल्म निर्माताओं को अक्सर सम्मानपूर्वक संबोधित किया जाता है और उनके नाम के आगे 'जी' या 'दा' (बंगालियों में) लगा दिया जाता है। इसलिए, यश चोपड़ा को आमतौर पर यशजी कहा जाता है, और बिमल रॉय को ज्यादातर बिमलदा कहते हैं। श्याम बेनेगल को तो फिल्म जगत में हर कोई श्याम बाबू कहता है। यह एक सम्मानजनक उपाधि और परंपरा है। लेकिन उद्योग में कुछ ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने मुझे 'जी' न लगाने की याद दिलाई है, भले ही वे मुझसे उम्र में बड़े हों—इसलिए, ऋषि कपूर को ऋषि और अपर्णा सेन को अपर्णा कहना चाहिए।
इसलिए, निरंतरता बनाए रखने के लिए, मुझे परंपरा का त्याग करना पड़ा है और
नियमों का पालन करना अनिवार्य है। मेरा किसी का अपमान करने का कोई इरादा नहीं है, लेकिन मुझे तर्क का पालन करना होगा। कुछ पाठकों को यह अजीब लग सकता है, लेकिन प्रत्येक अनुभाग में दूसरी बार उपयोग करते समय मैं आमतौर पर लोगों—चाहे वे युवा हों या

वरिष्ठ—को केवल उनके प्रथम नाम से संबोधित करता हूँ। अमिताभ, श्याम, शशि और सत्यजीत के मामले में भी यही नियम लागू होता है।
आशा है कि इस निर्णय के लिए मुझे क्षमा कर दिया जाएगा।
मैं यह जोड़ना चाहूंगा कि जिन मामलों में संदर्भ नहीं दिए गए हैं, वहां उद्धरणों का उपयोग किया जा सकता है।
ये जानकारियां आमने-सामने के साक्षात्कारों से प्राप्त की गई हैं।
अंततः, जबकि पूना को आधिकारिक तौर पर 1978 में पुणे के रूप में नामित किया गया था, बॉम्बे
इस पुस्तक में, 1995 में मुंबई, 1996 में चेन्नई और 2001 में कलकत्ता को कोलकाता के रूप में लिखा गया है, इसलिए एकरूपता बनाए रखने के लिए पुरानी वर्तनी को ही बरकरार रखा गया है।

परिचय

5 जनवरी 1985 को—दिल्ली में मेरी शादी के एक दिन बाद—मैं अपनी नवविवाहित दुल्हन के साथ ताज मानसिंह होटल की लॉबी में दाखिल हुआ। कुछ देर पहले ही हमारी हल्की-फुल्की कहासुनी हुई थी—जो पंद्रह साल तक चली हमारी शादी में पहली बार हुई थी। जैसे-जैसे हम साथ-साथ चल रहे थे, हमारे बीच एक अजीब सी बेचैनी छाई हुई थी। और फिर, जैसे ही हमने सामने देखा, मैंने शशि कपूर को रिसेप्शन के पास खड़े देखा, गहरे रंग के सूट और टाई में वे बेहद सजे-धजे थे। मेरी पत्नी शशि कपूर को बहुत पसंद करती थी—जिसके बारे में मुझे पता था। मुझे याद है मैंने एक वीएचएस देखी थी।
जेम्स आइवरी द्वारा निर्देशित उस शानदार फिल्म '1 बॉम्बे टॉकी' की टेप, जिसमें वह और उसके माता-पिता थे, उस समय की बात है जब हम एक-दूसरे को पसंद करने लगे थे। मेरी पत्नी ने अपनी माँ को उस समय चौंका दिया जब उसने एक होटल के कमरे में शशि (विक्रम के रूप में) द्वारा जेनिफर केंडल कपूर (ल्यूसिया के रूप में) को चूमने पर एक लंबी आह भरी। (वैसे, यह एकमात्र ऐसा मौका था जब शशि और जेनिफर, जो असल जिंदगी में पति-पत्नी हैं, ने पर्दे पर प्रेमियों की भूमिका निभाई थी।)

‘देखो, वहाँ शशि कपूर हैं!’ मैंने रिसेप्शन की ओर इशारा करते हुए अपनी पत्नी से फुसफुसाकर कहा। अचानक, उसका व्यवहार बदल गया; वह अब परेशान नहीं थी, बल्कि मंत्रमुग्ध हो गई थी।
कुछ ही देर में एक युवती अभिनेता के पास आई और ज़ोर से बोली, 'हेलो शशि, मुझे याद है?' उसकी आवाज़ से पूरी लॉबी गूंज उठी। 'नहीं,' अभिनेता ने उसकी ओर देखते हुए जवाब दिया।
मुझे लगता है उस महिला ने सोचा होगा कि फिल्म स्टार से बात शुरू करने का उसका तरीका बिल्कुल सही था। मुझे यह भी पूरा यकीन है कि शशि उस महिला से कभी नहीं मिले थे—यह सर्वविदित तथ्य है कि अभिनेता को लंबे समय तक अपने सबसे कम समय के परिचितों की भी याददाश्त बहुत अच्छी थी।
शाम का अंत यहीं होना चाहिए था—निराश महिला चुपचाप चली जाती, और मेरी पत्नी उसे देखकर खुश हो जाती—हमारी पहली लड़ाई रहस्यमयी शशि की वजह से अचानक खत्म हो जाती।
और फिर भी, 2015 की शुरुआत में, जब मैं इस पुस्तक के लिए शोध कर रहा था, तब शाम सबसे अप्रत्याशित तरीके से लौट आई। संयोगवश, मैंने एक साक्षात्कार लिया।
फिल्म निर्माता रमेश शर्मा, जिन्होंने शशि को निर्देशित किया था (न्यू दिल्ली टाइम्स)।
रमेश ने मुझे बताया कि फिल्म की शूटिंग कई कारणों से टल गई थी और आखिरकार, फिल्म के कुछ हिस्सों की शूटिंग 1984 के अंत और 1985 की शुरुआत में दिल्ली में हुई। फिल्म का बजट सीमित होने के बावजूद, शशि ही एकमात्र ऐसे कलाकार थे जो ताज मानसिंह होटल में रुके थे। जब मैंने रमेश को बताया कि मैंने शशि को होटल की लॉबी में देखा था, तो उन्होंने तुरंत मेरी बात की पुष्टि कर दी: 'उस समय मैं ही फिल्म बना रहा था!'

[illegible]
[illegible]
that the film was 3 Jab Jab Phool Khile—Shashi and Nanda were acting in it.
[illegible]
[illegible]

तस्वीरों को स्याही से रंगा गया था। शशि के होंठ चमकीले गुलाबी रंग के थे। इससे वे काफी सुंदर लग रहे थे, थोड़े-सा स्त्रीत्व का भाव लिए हुए। लेकिन उस समय मुझे इन सब बातों की कोई परवाह नहीं थी। मेरे लिए जो मायने रखता था, वह था एक बेहद आकर्षक और बेहद मिलनसार फिल्म स्टार के साथ मेरा व्यक्तिगत जुड़ाव।
स्कूल में मुझे यह बिल्कुल भी नहीं पता था कि तीन दशक बाद मैं शशि को मुंबई के जुहू स्थित पृथ्वी कैफे में कुछ लोगों से बात करते हुए देखूंगा। यह इस किताब की योजना बनने से बहुत पहले की बात है। चूंकि मैं मशहूर हस्तियों का पीछा नहीं करता—और उनसे तभी मिलता हूं जब फिल्म पत्रकार के तौर पर मेरा काम इसकी मांग करता है—इसलिए मैंने उस शाम उन्हें परेशान नहीं किया। फिर भी, वह दृश्य मेरे मन में आज भी अंकित है—एक उम्रदराज शशि, कई अन्य लोगों की तरह एक कुर्सी पर बैठे हुए, किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने से इनकार करते हुए।
जब इस किताब की योजना बनाई गई, तब शशि का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा था। इसलिए मैं उनसे बात नहीं कर सका। उनकी बेटी संजना कपूर ने मुझे बताया कि उन्हें मनोभ्रंश है, जबकि उनके भतीजे ऋषि कपूर ने बताया कि उन्हें ठीक से सुनाई नहीं देता और लोगों को पहचानने में भी परेशानी होती है।

इस किताब के लिए इंटरव्यूज़ को इकट्ठा करते समय मुझे एहसास हुआ कि बहुत से लोग शशि कपूर को भूल चुके थे। मैंने युवा महिलाओं को यह कहते सुना कि उन पर सिर्फ़ उनकी माँ या दादी का ही क्रश था। और मेरे कज़िन के बच्चे, जो अब टीनएजर हैं, उन्हें शशि कपूर के

बारे में पहली बार तब पता चला जब मैंने उन्हें उनकी समझ में आने वाली भाषा में समझाया, 'वह ऋषि कपूर के मामा और रणबीर कपूर के दादा हैं।' तीस साल की उम्र के कुछ लोगों को शशि कपूर याद थे। यश चोपड़ा की फिल्म 'दीवार' से—हालांकि, जैसा कि मेरे एक ब्रिटिश-पाकिस्तानी मित्र ने मुझे बताया, इस प्रतिष्ठित फिल्म को भी अमिताभ बच्चन के लिए उनके आकर्षक सह-कलाकार से ज़्यादा याद किया जाता है। मैंने सोचा, यह कितना अजीब है; हाँ, अमिताभ (विजय के रूप में) ने 'दीवार' में एक अधिक जोशीली भूमिका निभाई थी, लेकिन शशि (रवि के रूप में) द्वारा दिए गए संतुलन और शांति के बिना वह प्रदर्शन फीका पड़ जाता।
सौभाग्य से, इस जीवनी पर काम शुरू करने के कुछ ही समय बाद, शशि को भारतीय सिनेमा में उनके योगदान के लिए दादासाहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह एक अत्यंत योग्य सम्मान था और इसने उन्हें जनमानस में फिर से स्थान दिलाया। यह सम्मान बहुत पहले ही मिल जाना चाहिए था। फिल्म निर्माता श्याम बेनेगल ने मुझसे यही कहा: 'अब जब मैं इस पर विचार करता हूँ, तो मुझे दादासाहेब फाल्के पुरस्कार 2005 में मिला था। शशि को यह दस साल बाद मिला। उन्हें यह पुरस्कार मुझसे पहले मिलना चाहिए था।' लेकिन शशि रंजिश मन में बैर रखने वालों में से नहीं हैं। उनके सबसे बड़े बेटे कुणाल कपूर बताते हैं: 'जब मुझे बताया गया कि फिल्मों में उनके अपार योगदान के लिए उन्हें अत्यंत प्रतिष्ठित दादासाहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है, तो (मेरे पिता) ने बस इतना ही किया...'
मुस्कुराओ और सिर हिलाओ।’5 बाद में, कुणाल आगे कहते हैं, ‘दादासाहेब फाल्के पुरस्कार की खबर पर उनकी प्रतिक्रिया थी: “मैं?” और फिर वे खिलखिलाकर हंस पड़े।’

असली शशि कपूर कौन हैं?
वह निस्संदेह भारत के पहले अंतरराष्ट्रीय स्टार थे—प्रियंका चोपड़ा और इरफान खान के हॉलीवुड में अपनी पहचान बनाने से बहुत पहले।
वो उस दौर के सबसे खूबसूरत हिंदी फिल्म अभिनेता थे—शर्मिला टैगोर से लेकर जेम्स आइवरी तक, लगभग हर किसी ने इस बात की पुष्टि की है जिनसे मैंने बात की है। कई फिल्मों में उनकी सह-कलाकार रहीं शबाना आज़मी कहती हैं, 'वो बेहद आकर्षक थे। सच कहूँ तो, मुझे लगता है कि उनकी खूबसूरती ही उनके लिए नुकसानदायक साबित हुई। क्योंकि पहली नज़र में ही लोग उन्हें बेहद आकर्षक मानते थे, इसलिए वे भूल जाते थे कि वो कितने बेहतरीन अभिनेता थे!'
फिर आते हैं शशि कपूर, जो एक निर्माता थे और जिन्होंने 1970 और 1980 के दशक में भारत की कुछ बेहतरीन स्वतंत्र फिल्मों को समर्थन दिया। उन्होंने फिल्म निर्माताओं को जोखिम उठाने के लिए प्रोत्साहित किया, भले ही इसका मतलब अंततः उन्हें दिवालियापन की ओर ले जाना हो। कुणाल कपूर कहते हैं कि उनके पिता उस उद्योग के प्रति अपने ऋण को कभी नहीं भूले जिसने उन्हें एक स्टार के रूप में यह विशेष स्थान दिलाया; वे उस दुनिया का समर्थन करना चाहते थे जिसका वे हिस्सा थे। कुणाल मुझसे कहते हैं, 'उनका इस बात पर विश्वास था। वे वास्तव में उन अन्य अभिनेताओं के बारे में शिकायत करते थे जो स्टार बन जाते थे, पैसा कमाते थे, एक अच्छा जीवन सुरक्षित कर लेते थे, लेकिन फिर भी उस जगह के लिए कभी कुछ नहीं करते थे जिसने उन्हें पाला-पोसा।'

शशि, रंगमंच के शौकीन, मंच के जीवंत अनुभव से बेहद प्रभावित थे और उन्होंने अपनी सारी दौलत मुंबई के उस मशहूर थिएटर, पृथ्वी थिएटर में लगा दी थी। रंगमंच के प्रति उनका यह लगाव उन्हें अपने पिता पृथ्वीराज कपूर से विरासत में मिला था—जो अपनी पहली मोहब्बत, पृथ्वी थिएटर्स को चलाने के लिए फिल्मों में काम करते थे—और उनके ससुर और पत्नी, जेनिफर केंडल कपूर ने इसे और निखारा। शशि और जेनिफर ने जुहू में उसी ज़मीन पर पृथ्वी थिएटर का निर्माण किया, जिसे पृथ्वीराज ने कुछ दशक पहले अपने पृथ्वी थिएटर्स के लिए स्थायी भवन बनाने के लिए पट्टे पर लिया था। शशि की बेटी, संजना कपूर, मुझे बताती हैं, 'यही वह माहौल है जिसमें हम पले-बढ़े, यही मेरे पिता ने मुझे सिखाया और यही उनके पिता ने उन्हें सिखाया।'
संजना और कुणाल कपूर के माध्यम से हमें शशि की झलक मिलती है, जो एक पारिवारिक व्यक्ति थे, अपनी पत्नी से बेहद प्यार करते थे और अपने घर चलाने के लिए हर संभव प्रयास करते थे, भले ही इसका मतलब कुछ बेहद खराब (लेकिन अच्छी कमाई वाली) फिल्मों में अभिनय करना ही क्यों न हो। लगभग सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, शशि आसानी से आर्ट-हाउस और अमेरिकी फिल्मों के साथ-साथ मुख्यधारा की हिंदी फिल्मों में भी काम कर सकते थे। 1982 में, उन्होंने
उन्होंने अमिताभ बच्चन के साथ हिट कॉमेडी फिल्म '6 नमक हलाल' में अभिनय किया। अगली फिल्म में...
उसी वर्ष, शशि ने जेम्स आइवरी की समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फिल्म 7 हीट एंड डस्ट में अभिनय किया।
जो कान फिल्म महोत्सव में प्रतियोगिता में थी। इससे पहले, 1978 में, उन्होंने

उन्होंने राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्म 8 जुनून का निर्माण किया और उसमें मुख्य भूमिका निभाई।
कुछ महीनों बाद, वह सुभाष घई की फिल्म 'गौतम गोविंदा' में नज़र आए। शशि एक बार कोई भूमिका स्वीकार कर लेते थे, तो वह उस प्रोजेक्ट की शर्तों को मान लेते थे।
इस लिहाज से देखा जाए तो शशि का करियर वास्तव में शर्मिला टैगोर के करियर के समानांतर था। उन्होंने भी सत्यजीत रे (अपुर) द्वारा निर्देशित फिल्मों के बीच सहजता से बदलाव किया।
Sansar 10 11 12 13 , Devi , Nayak , Seemabaddha) and those by Shakti Samanta (An
पेरिस में शाम 14 15 16 17, आराधना, अमर प्रेम) और यश चोपड़ा (वक्त,
दाग 18)। शशि और शर्मिला दोनों ही सिनेमा के प्रत्येक प्रकार के महत्व को समझते थे, और खुशी-खुशी विभिन्न प्रणालियों और संवेदनशीलताओं के माध्यम से काम करते थे।
अंत में, शशि कपूर की बात करें तो, वे एक आदर्शवादी थे, जो हमेशा सभी को समान दृष्टि से देखते थे; इस बात की पुष्टि दिवंगत यश चोपड़ा की पत्नी पामेला चोपड़ा भी करती हैं। ‘शशि कपूर सेट पर निर्माता से लेकर छोटे से छोटे कलाकार तक, हर किसी के साथ एक जैसा व्यवहार करते थे।’ उनकी अक्सर सह-कलाकार और मित्र रहीं शर्मिला आगे कहती हैं, ‘सिर्फ साथी कलाकार और निर्माता ही नहीं — अगर आप तकनीशियनों से बात करेंगे, तो आपको पता चलेगा कि शशि कपूर को उनका भी समर्थन प्राप्त था। वे उनसे हाथ मिलाते, कहते, “मेरा नाम शशि कपूर है” और उनके साथ चाय पीते।’ ऋषि कपूर से विवाहित नीतू सिंह कपूर, जिन्होंने शशि कपूर के साथ ‘दीवार’ और अन्य फिल्मों में अभिनय किया है, भी इसी भावना को दोहराती हैं:

‘मुझे याद है कि उस फिल्म के सेट पर वे कितने सज्जन व्यक्ति थे। वे मेकअप आर्टिस्ट से लेकर अपने बच्चे तक, सबसे बात करते थे।
कितने मानवीय और कितने सरल स्वभाव के व्यक्ति थे।’
रमेश तलवार, जो यश चोपड़ा की कई फिल्मों में मुख्य सहायक निर्देशक रह चुके हैं, शशि के व्यक्तित्व के इस पहलू को याद करते हैं जो उनकी फिल्मों में स्पष्ट रूप से झलकता था।
कश्मीर में '19 कभी कभी' की शूटिंग के दौरान, उन्होंने बताया, 'शशि अक्सर डोंगा (कश्मीरी नाव) पार्टियां आयोजित करते थे। वह दो नावें किराए पर लेते थे और लोग जहां चाहें वहां बैठने के लिए स्वतंत्र थे। क्रू के सदस्य अक्सर सितारों के साथ घुलने-मिलने में असहज महसूस करते थे, लेकिन शशि लोगों को एक नाव से दूसरी नाव पर जाने के लिए प्रोत्साहित करते थे।'
कुणाल कहते हैं कि यह समावेशिता उनके पिता की परवरिश का नतीजा थी। 'मेरे पिता अपने पिता के रोमांटिक, समाजवादी विचारों में दृढ़ विश्वास रखते थे। उन्होंने कभी किसी को ठेस नहीं पहुंचाई। उन्होंने कभी किसी अभिनेता को फिल्म से बाहर नहीं निकाला। उन्होंने कभी कोई भूमिका पाने के लिए राजनीति नहीं की। वे प्रतिस्पर्धी नहीं थे। वास्तव में, वे खुद पीड़ित थे और अन्य अभिनेताओं के आगे आने के कारण फिल्मों में कई भूमिकाएँ खो बैठे।'
इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि शशि ने एक बेहद लोकप्रिय स्टार के रूप में अपनी पहचान बनाई। वास्तव में, जब मैं शर्मिला से बात करती हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि यह धारणा न केवल उद्योग जगत की सामाजिक स्थिति, बल्कि सभी आयु वर्ग के लोगों में फैली हुई है! शर्मिला

शर्मिला बताती हैं: ‘शशि और मैं फिल्म '20 पाप और पुण्य' की शूटिंग के लिए जयपुर में थे। मेरा बेटा सैफ (अली खान, जो अब अभिनेता हैं) तब सिर्फ दो साल का था और मेरे साथ था, साथ ही शशि की पत्नी और बच्चे भी थे। कपूर परिवार मेरे बेटे को घुमाने ले जाता था और मुझे लगता है कि शशि उसके साथ समय बिताते थे— क्योंकि जल्द ही सैफ को “शशि अंकल” से बहुत लगाव हो गया था। एक दिन, शशि एक ऐसे दृश्य की शूटिंग कर रहे थे जिसमें एक खलनायक उनके गले में फंदा डाल देता है, और वह रस्सी को खींचकर बुरी तरह छटपटा रहे थे। अचानक, दृश्य पर पूरी तरह हावी खलनायक चिल्ला उठा! उसे पता ही नहीं था कि सैफ रेंगकर उसके पास आया और उसके पैर पर काट लिया! दरअसल, सैफ को लगा कि उसके शशि अंकल की पिटाई हो रही है, वह बहुत बड़े खतरे में है और कोई उसकी मदद नहीं कर रहा है। उसे अभिनय करना ही था! शशि अंकल वास्तव में उसके चहेते थे।’ हैरानी की बात यह है कि इस छोटे बच्चे का दिल जीतने के लिए इस स्टार को ज्यादा मेहनत भी नहीं करनी पड़ी। शर्मिला मुस्कुराते हुए कहती हैं, ‘शशि बहुत ही मिलनसार इंसान थे।’ ‘यह उसे स्वाभाविक रूप से आता था। उसे दिखावा करने की जरूरत नहीं थी।’ मेरे लिए, शशि द्वारा निभाए गए सभी किरदारों में से, सबसे भव्य किरदार निस्संदेह एक स्टार का है—एक ऐसा हीरो जिसने हमेशा मेरे अंदर के फिल्म प्रेमी को मोहित किया है। मुझे आज भी युवा, सुंदर शशि को देखना अच्छा लगता है—राजा के रूप में, एक शिकारावाला, जो मुस्कुराता हुआ और भोला-भाला दिखता है, जबकि रीता (नंदा) नृत्य करती है।
white silk gown to ‘Yeh Sama, Sama Hai Ye Pyar Ka’21 in Jab Jab Phool Khile; or as the dashing Pyarelal who tries to woo Seema (Asha Parekh),

singing ‘Ni Sultana Re’22 23 in Pyar Ka Mausam. And who can forget the actor’s despair as he sings in Kishore Kumar’s haunting voice, ‘Kaise Kahen
'हम प्यार ने हमको', 24 में जब उनके किरदार, कैप्टन अजय कपूर, को गलत जुड़वां से शादी करने के लिए धोखा दिया जाता है (दोनों भूमिकाएं राखी द्वारा निभाई गई हैं) शर्मिली में?
25 उस गाने को गाते हुए किशोर कुमार भी रोते हुए से लग रहे हैं! इस पुस्तक को लिखते समय, मैं पाठकों को शशि कपूर परिवार के प्रत्येक सदस्य से परिचित कराना चाहता हूँ, विशेष रूप से उनकी फिल्मों के माध्यम से। इनमें 1960 और 1970 के दशक की शुरुआती फिल्में शामिल हैं जिन्होंने उन्हें हिंदी सिनेमा के सितारे के रूप में स्थापित किया, और फिर कई महत्वपूर्ण फिल्में जो उनकी विरासत का हिस्सा बनेंगी। उन्होंने कितनी फिल्मों में अभिनय किया, इसका कोई सटीक आंकड़ा नहीं है। कई फिल्में - जैसे सैमी और रोजी गेट्स - उनकी फिल्मों में शामिल हैं।
लेड 26 27 28, जिन्ना और साइड स्ट्रीट्स—भारत में कभी सिनेमाघरों में रिलीज नहीं हुईं, और एक
कुछ रचनाएँ—जैसे कि 29 सिद्धार्थ और ऊष्मा और धूल—आज भुला दी गई हैं।
लेकिन ऐतिहासिक फिल्में- 30 दीवार, कभी कभी, जुनून, कलयुग और उनकी शुरुआती कृतियों में से एक, 31 धर्मपुत्र—भी हिंदी फिल्म इतिहास का हिस्सा हैं, और निश्चित रूप से दोबारा देखने लायक हैं, खासकर उस बेहद आकर्षक व्यक्ति के भीतर छिपे हुए शानदार, सूक्ष्म अभिनेता को खोजने के लिए!

नोट्स

1. 1970, बॉम्बे टॉकी, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट,
इसमें शशि कपूर, जेनिफर केंडल और जिया मोहियुद्दीन ने अभिनय किया है।
2. 1986, नई दिल्ली टाइम्स, निर्देशक रमेश शर्मा, निर्माता पी.के. तिवारी
शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, ओम पुरी अभिनीत।
इसमें शशि कपूर, नंदा और आगा ने अभिनय किया है।
4. 1975, दीवार, डायरेक्टर यश चोपड़ा, प्रोड्यूसर गुलशन राय, स्टारिंग
अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, नीतू सिंह, परवीन बाबी।
5. पुरस्कार समारोह के तुरंत बाद मीडिया साक्षात्कारों में उद्धृत किया गया; साथ ही
सुरेखा कडप्पा-बोस में, 'शशि कपूर: प्रतिबंधित लेकिन अविश्वसनीय', डॉन, 9 अप्रैल 2015।
6. 1982, नमक हलाल, डायरेक्टर प्रकाश मेहरा, प्रोड्यूसर सत्येंद्र पाल,
अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, स्मिता पाटिल, वहीदा रहमान, परवीन बाबी अभिनीत।
7. 1983, हीट एंड डस्ट, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट,
इसमें जूली क्रिस्टी, ग्रेटा स्काची और शशि कपूर ने अभिनय किया है।
8. 1978, Junoon, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring
शशि कपूर, शबाना आज़मी, जेनिफर केंडल।

9. 1979, Gautam Govinda, dir. Subhash Ghai, prod. Shyam Sunder
Shivdasani, starring Shashi Kapoor, Shatrughan Sinha, Moushumi Chatterjee.
10. 1959, Apur Sansar, dir. Satyajit Ray, prod. Satyajit Ray, starring
सौमित्र चटर्जी, शर्मिला टैगोर, आलोक चक्रवर्ती।
11. 1960, देवी, निर्देशक सत्यजीत रे, निर्माता सत्यजीत रे, अभिनीत
सौमित्र चटर्जी, शर्मिला टैगोर, छवि बिस्वास।
12. 1966, Nayak, dir. Satyajit Ray, prod. R.D. Bansal, Sharankumari
बंसल, अभिनीत उत्तम कुमार, शर्मिला टैगोर, बिरेश्वर सेन।
13. 1971, Seemabaddha, dir. Satyajit Ray, prod. Bharat Shumsher
Jung Bahadur Rana, starring Barun Chanda, Harindranath Chattopadhyay, Sharmila Tagore.
14. 1967, An Evening in Paris, dir. Shakti Samanta, prod. Shakti सामंता, अभिनीत शम्मी कपूर, शर्मिला टैगोर, प्राण।
15. 1969, आराधना, दिर. शक्ति सामंत, प्रो. शक्ति सामंत,
starring Rajesh Khanna, Sharmila Tagore, Sujit Kumar.
16. 1972, अमर प्रेम, दिर. शक्ति सामंत, प्रो. शक्ति सामंत, इसमें राजेश खन्ना, शर्मिला टैगोर और विनोद मेहरा ने अभिनय किया है।
17. 1965, समय, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत बलराज साहनी, शर्मिला टैगोर, शशि कपूर।

18. 1973, दाग, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. यश चोपड़ा, अभिनीत
शर्मिला टैगोर, राजेश खन्ना, राखी।
19. 1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, राखी, सिमी गरेवाल, वहीदा रहमान, ऋषि कपूर, नीतू सिंह अभिनीत।
20. 1974, Paap Aur Punya, dir. Prayag Raj, prod. Shyam Kumar Shivdasani, starring Shashi Kapoor, Sharmila Tagore, Aruna Irani.

21. ‘Yeh Sama, Sama Hai Ye Pyar Ka’, lyr. Anand Bakshi, comp. Kalyanji–Anandji, artist Lata Mangeshkar.
22. 'नी सुल्ताना रे', गीत। मजरूह सुल्तानपुरी, कंप. आर.डी. बर्मन, कलाकार लता मंगेशकर, मोहम्मद रफी।
23. 1969, Pyar Ka Mausam, dir. Nasir Hussain, prod. Nasir Hussain,
starring Shashi Kapoor, Asha Parekh, Bharat Bhushan.
24. ‘Kaise Kahen Hum Pyar Ne Humko’, lyr. Neeraj, comp. S.D. बर्मन, कलाकार किशोर कुमार।
25. 1971, शर्मीली, दिर. समीर गांगुली, प्रो. सुबोध मुखर्जी, शशि कपूर, राखी, नज़ीर हुसैन अभिनीत।
26. 1987, सैमी और रोजी ने संबंध बनाए, निर्देशक: स्टीफन फ्रीर्स, निर्माता: टिम
बेवन, सारा रेडक्लिफ, जिसमें शशि कपूर, फ्रांसिस बार्बर और क्लेयर ब्लूम ने अभिनय किया है।
27. 1998, Jinnah, dir. Jamil Dehlavi, prod. Jamil Dehlavi, starring क्रिस्टोफर ली, शशि कपूर, मारिया ऐटकेन।

28. 1998, [illegible], [illegible] [illegible], [illegible]
[illegible]
[illegible], [illegible], [illegible] [illegible]
29. 1972, [illegible], [illegible]: [illegible] [illegible], [illegible]: [illegible]
[illegible],
starring Shashi Kapoor, Simi Garewal, Romesh Sharma.
30. 1981, Kalyug, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor,
starring
Shashi Kapoor, Rekha, Raj Babbar.
31. 1961, [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible].[illegible].
[illegible], [illegible]
Shashi Kapoor, Mala Sinha, Rehman.

1

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], [illegible] [illegible]

18 [illegible] 1938 [illegible] [illegible] [illegible]

रूपों को अपनाने का रिवाज था। लेकिन बलबीर की मां रामसरनी कपूर इस नाम से खुश नहीं थीं। उन्होंने अपने बेटे को शशि कहकर पुकारना शुरू कर दिया, क्योंकि उनका छोटा बेटा चांद से बेहद लगाव रखता था और घंटों उसे देखता रहता था।
शशि कपूर अपने जन्म के कुछ समय बाद ही मुंबई चले गए और मटुंगा के कॉलेज बैक रोड पर स्थित एक बड़े पारिवारिक घर में रहने लगे—जो एक संकरी गली थी।
विभाजन के बाद पंजाब के कई अभिनेता यहाँ आकर बस गए थे, इसलिए इसे अनौपचारिक रूप से हॉलीवुड लेन ¹ कहा जाता है। आज यह वर्सोवा की यारी रोड और अंधेरी के लोखंडवाला के समान है, जहाँ हर इमारत में फिल्म सितारे और उभरते अभिनेता नज़र आते हैं।
शशि अपने भाई-बहनों और माता-पिता के साथ पले-बढ़े—हालाँकि उनके पिता अक्सर यात्रा करते रहते थे—और उनका बचपन माँ और घर की अन्य स्नेहशील महिलाओं के लाड़-प्यार में बीता। उन्हें कभी- कभार ही डांट पड़ती थी, और वो भी उनके बड़े भाई राज कपूर से। राज के बेटे ऋषि कपूर कहते हैं, 'मेरे पिता शशि अंकल और डब्बू (ऋषि के बड़े भाई रणधीर कपूर) में कोई फर्क नहीं करते थे। वो शशि अंकल को अपने बड़े बेटे की तरह मानते थे।' हालांकि, राज की डांट भी युवा शशि को सिनेमा हॉल से दूर नहीं रख पाई; वो नई फिल्में देखने के लिए डॉन बॉस्को स्कूल छोड़ देते थे!
शशि के जन्म के छह वर्ष बाद, पृथ्वीराज ने पृथ्वी थिएटर्स की स्थापना की। शशि तुरंत ही इससे जुड़ गए; उन्होंने कंपनी के पहले नाटक, शकुंतला में भरत की भूमिका निभाई। यह अनुभव इतना प्रभावशाली था कि उन्होंने यह तय कर लिया कि उनका मन पढ़ाई-लिखाई में नहीं लगता। जब शशि किशोरावस्था में थे, तब रंगमंच उनके जीवन का प्रेरक बन गया। 1953 में, पंद्रह वर्षीय इस दृढ़

निश्चयी किशोर ने स्कूल छोड़ दिया—जिसका उनके पिता ने भी समर्थन किया—और पृथ्वी थिएटर्स में पूर्णकालिक रूप से काम करना शुरू कर दिया। यहीं से उनकी वास्तविक शिक्षा की शुरुआत हुई।
पृथ्वी थिएटर्स में किसी कंपनी के संस्थापक का बेटा होने का कोई खास महत्व नहीं था। शशि को अपनी मेहनत से सफलता की सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ीं। फिल्म निर्माता देव बेनेगल, जिन्होंने शशि के होम प्रोडक्शन में सहायक निर्देशक के रूप में काम किया,
कलयुग 2 के अभिनेता कहते हैं, ‘शशि ने मुझे जो बातें बताईं, उनमें से एक यह थी कि जब वह छोटे थे, तो उनके पिता ने उनसे कहा था, “तुम जो भी करो, तुम्हें शुरुआत निचले स्तर से करनी होगी। तुम्हें लाइटें ढोनी होंगी, वज़न उठाना होगा, तभी तुम रचनात्मक कार्य की बारीकियों को समझ पाओगे। तुम एक दिन अचानक मेरे पास आकर यह नहीं मान सकते कि तुम निर्देशक बन जाओगे!” पृथ्वीराज को ऐसे लोग पसंद नहीं थे जो खुद को श्रेष्ठ समझते थे। प्रशंसनीय बात यह थी कि वह अपने बच्चों को भी यही नैतिक शिक्षा दे रहे थे।’ पृथ्वी थिएटर्स में शशि को जो प्रशिक्षण मिला और तकनीकी कार्य में लगे लोगों के प्रति जो सम्मान उन्होंने विकसित किया—वह कार्य जो अभिनेताओं को मंच और पर्दे पर अच्छा दिखाता है—वह उनके पूरे पेशेवर करियर में उनके साथ रहा।
शशि 1953 से 1960 तक पृथ्वी थिएटर्स में कार्यरत रहे—यह वही वर्ष था जब पृथ्वीराज को खराब स्वास्थ्य के कारण भारत भर में 2,662 शो करने के बाद अपनी कंपनी बंद करनी पड़ी। इस दौरान शशि ने थिएटर निर्माण के हर पहलू को सीखा और छोटी-मोटी भूमिकाएँ भी निभाईं। जब भी उन्हें समय मिलता—यानी जब वे थिएटर कंपनी के साथ

दौरे पर नहीं होते थे—शशि राज की आर.के. फिल्म्स में जाया करते थे, जहाँ वे फिल्म निर्माण की बारीकियों को समझते थे।

पृथ्वी थिएटर्स में प्रशिक्षण के दौरान ही शशि कपूर की मुलाकात संयोगवश उस महिला से हुई जो आगे चलकर उनकी पत्नी बनीं। शशि की होने वाली भाभी, फेलिसिटी केंडल, अपनी आत्मकथा 'व्हाइट कार्गो' में लिखती हैं कि एक शाम उनकी बहन, जेनिफर केंडल—जो उनसे तेरह साल बड़ी थीं—बंबई के रॉयल ओपेरा हाउस में पृथ्वी थिएटर्स द्वारा प्रस्तुत 'दीवार' का प्रदर्शन देखने गई थीं। शशि मंच के पीछे थे और संयोगवश पर्दों के पीछे से देख रहे थे; तभी उनकी नज़र जेनिफर पर पड़ी। वहाँ वह 'काले और सफेद रंग की पोल्का डॉट वाली गर्मियों की पोशाक में थीं, जिसका नेकलाइन हॉल्टर था—जो काफी बोल्ड था—और वह बेहद खूबसूरत लग रही थीं […] खुद को पंखा कर रही थीं।
उनके कार्यक्रम से शशि को तुरंत प्यार हो गया।

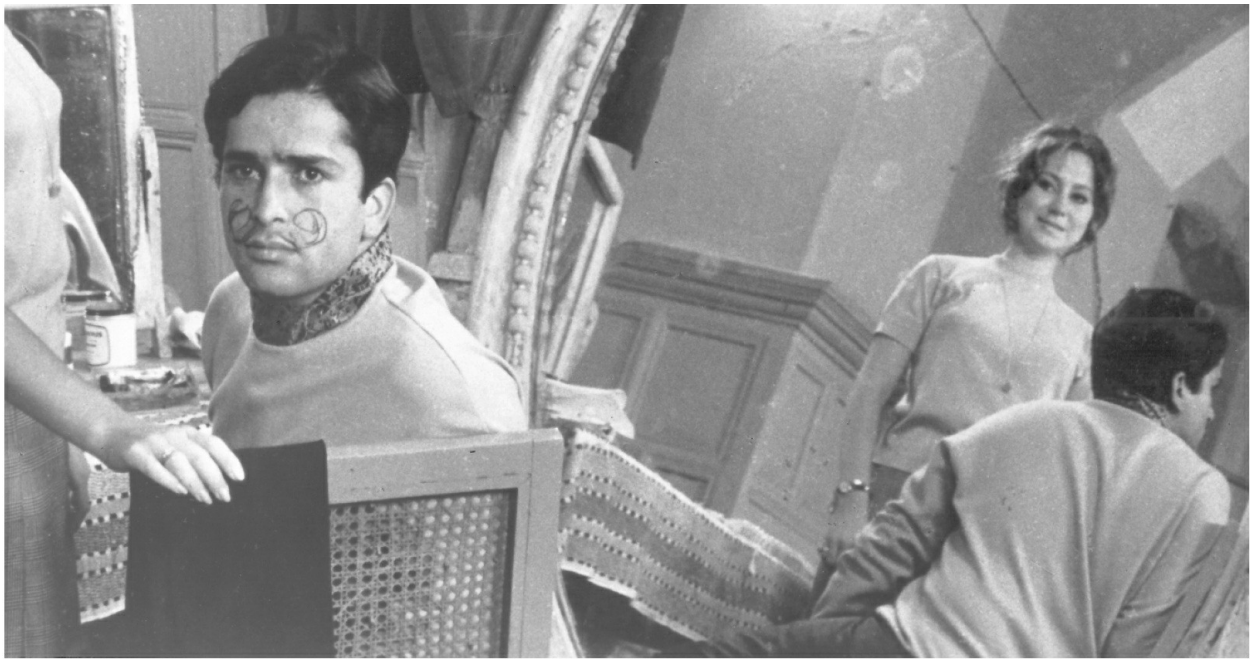

शेक्सपियर वॉलह के एक दृश्य में शशि कपूर और फेलिसिटी केंडल।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

जेनिफर और फेलिसिटी के पिता, जेफ्री केंडल, जो शेक्सपियरआना थिएटर कंपनी चलाते थे, इस घटना का थोड़ा अलग विवरण देते हैं। अपनी आत्मकथा, 'द शेक्सपियर वॉलह' में, उन्होंने इस घटना का वर्णन कलकत्ता के एम्पायर थिएटर में किया है। उनके अनुसार, प्रबंधन कंपनी ने शेक्सपियरआना और पृथ्वी थिएटर के लिए एक ही मंच की दोहरी बुकिंग करके गलती की थी। अंततः यह निर्णय लिया गया कि दोनों कंपनियां बारी-बारी से प्रदर्शन करेंगी। और पृथ्वी थिएटर के प्रदर्शन की शाम को ही शशि ने मंच के पर्दों के पीछे से जेनिफर को देखा। 'नहीं,
बेशक, मुझे इसके बारे में कुछ समय से पता था,’ जेफ्री कहते हैं।4

शो के बाद, शशि ने अपना परिचय दिया और जेनिफर को बैकस्टेज ले गए; जेनिफर उनसे चार साल बड़ी थीं। फेलिसिटी लिखती हैं: 'अगली दोपहर, मैं एक चीनी रेस्टोरेंट में बैठी थी और जेनिफर और शशि को नूडल्स खाते हुए एक-दूसरे के प्यार में पड़ते देख रही थी। वे जेनिफर की मृत्यु तक साथ रहे, सुख-दुख में भी और कभी-कभी बहुत सुख-दुख में भी [...] उन्हें शशि में वह व्यक्ति मिल गया था जिसे वह चाहती थीं।
हमेशा के लिए।
कुछ समय बाद, जब शेक्सपियर समूह में अभिनेताओं की कमी हो गई, तो शशि को पुणे स्थित टीम में शामिल होने के लिए कहा गया। यहाँ भी तथ्यों के वर्णन में थोड़ी विसंगति है। फेलिसिटी लिखती हैं कि जेनिफर ने शशि को टीम में शामिल होने के लिए तार भेजा था, जबकि जेफ्री घटना का अधिक तर्कसंगत स्पष्टीकरण देते हैं—‘मैंने पृथ्वीराज को पत्र लिखकर पूछा कि क्या वह मुझे कुछ समय उधार दे सकते हैं।’
मुझे शशि ने कुछ समय के लिए अपनी कंपनी से निकाल दिया।’6 शशि ने कभी अंग्रेजी में अभिनय नहीं किया था, लेकिन 1957 में स्वेच्छा से समूह में शामिल हो गए। पांच महीनों तक, जेनिफर ने उन्हें शेक्सपियर, शॉ और अन्य अंग्रेजी नाटककारों की बारीकियों से अवगत कराया, और उन वाक्यों का उच्चारण करने में उनकी मदद की जिन्हें युवा अभिनेता ने कभी बोला या पढ़ा नहीं था। संजना कपूर कहती हैं, ‘मेरे पिता मुझे बताया करते थे कि शेक्सपियर की पंक्तियाँ सीखना कितना मुश्किल था—यह प्रक्रिया कितनी भयावह होती थी और ऐसा लगता था जैसे उनके मुंह में कंचे भरे हों। वे शब्दों का उच्चारण ही नहीं कर पाते थे!’

जेफ्री ने एक युवा भारतीय अभिनेता को अपने परिवार में शामिल तो कर लिया था, लेकिन उसे अपने परिवार में जगह देने को तैयार नहीं थे; उन्हें ज़रा भी उम्मीद नहीं थी कि उनकी बेटी उस लड़के से शादी करने का इरादा रखेगी। जेफ्री अपने बच्चों को लेकर बेहद सतर्क थे और अपनी स्टार कलाकार जेनिफर को खोने के सख्त खिलाफ थे। अत्यधिक सुरक्षात्मक रवैये में आकर वे अक्सर शशि का मज़ाक उड़ाते और उसके लहजे पर ताने कसते थे। शशि कहती हैं, 'वे जेनिफर के लिए झगड़ते थे और अक्सर बदतमीज़ी करते थे।'
पत्रकार मधु जैन के सामने कबूल किया।7
युवा प्रेमी-प्रेमिका खुद को जेफ्री की ताक-झांक भरी निगाहों से बचने की कोशिश करते हुए पाते थे। संजना अपने माता-पिता के बारे में कहती हैं, 'जब वे थिएटर करते थे, तब वे गरीब थे। उन्हें पर्याप्त नींद और भोजन नहीं मिलता था और मेरे पिता मुझे बताते थे कि कैसे वे सड़कों पर घूमते हुए भूख से तड़पते थे—दोनों माता-पिता यह तय करने की कोशिश करते थे कि उन्हें आधा पराठा मिल पाएगा या नहीं। फिर, वे किसी रेस्तरां के पास से गुजरते और वहाँ मेरे दादा, जेफ्री केंडल, बीयर के साथ भरपेट खाना खा रहे होते। मेरे पिता अंदर नहीं जा सकते थे। वे उनके कर्मचारी थे और साथ ही उनकी बेटी को भी चुरा रहे थे। इसलिए उनके लिए तूफान में उतरना नामुमकिन था।'
शशि के प्रति जेफ्री की स्पष्ट उपेक्षा ने जेनिफर को बहुत परेशान किया और उसने अपने पिता से इस बारे में बात की। फिर उसने फेलिसिटी से कहा, 'पापा ने मुझसे कहा है कि उन्हें शशि से कोई आपत्ति नहीं है, न ही इस बात से कि वह भारतीय है, न ही इस बात से कि वह मुझसे छोटा है [...] बात सिर्फ इतनी है कि वह नहीं चाहते कि हम कंपनी छोड़ दें [...]

काश, वह समझ पाता कि सभी बच्चे बड़े हो जाते हैं और घर छोड़ना चाहते हैं!
जेनिफर की परेशानियों को और बढ़ाने वाली बात यह थी कि शशि शर्मीला, अपनी अंग्रेज़ी को लेकर सचेत और अपने माता-पिता से बेहद डरा हुआ था। अगर उनका रिश्ता आगे बढ़ा, तो यह शशि की भाभी (जो खुद भी एक अभिनेत्री थीं) गीता बाली और उनके पति (और शशि के भाई) शम्मी कपूर के अटूट समर्थन के कारण था, जिन्हें इस प्रेम प्रसंग के बारे में पता चल गया था। यह जीवन के एक अद्भुत चक्र का पूरा होना था। शम्मी की तरह, जिन्हें राज और उनकी पत्नी कृष्णा ने गीता से शादी करने के लिए प्रेरित किया था, शर्मीले शशि को भी गीता और शम्मी ने जेनिफर को मुंबई लाने और अपने माता-पिता से मिलवाने के लिए उकसाया। लेकिन शशि हमेशा आशंकित ही रहा। शशि हंसते हुए कहता है, 'मैं डर गया था क्योंकि मुझे लगा कि मेरी पिटाई हो जाएगी।' 'इसलिए मैंने समझौता किया और जेनिफर को शम्मी जी के घर ले गया और गीता भाभी को उससे तुरंत प्यार हो गया। खुद भी एक सच्ची रोमांटिक महिला होने के नाते, वह हमें अपनी कार और कुछ पैसे उधार देती थीं ताकि हम बाहर खाना खाने जा सकें।
और एक ड्राइव।’9 आखिरकार, शशि के कहने पर, शम्मी ने अपने माता- पिता से जेनिफर के बारे में बात की और उन्होंने अनिच्छा से इस रिश्ते को मंजूरी दे दी।
लेकिन जेफ्री ने अपना रुख बदलने से इनकार कर दिया। वह इस रिश्ते के घोर विरोधी बने रहे और अपनी बेटी पर कड़ी पाबंदियां लगा दीं। अंततः, अपनी स्वतंत्रता का दावा करने और आगे बढ़ने के प्रयास में, जेनिफर, शशि के साथ, उनके थिएटर मंडली को छोड़कर चली गई। परिवार के मुखिया के लिए यह सबसे बड़ा झटका था, और वह अपनी बेटी के इस परित्याग को हल्के में लेने वाले नहीं थे। उन्होंने

गुस्से और कठोरता से उस दिन को देखा जब वह गई थी; यह एक ऐसा क्षण है, जो समय में जम गया है, जिसका फेलिसिटी ने दिल दहला देने वाला वर्णन किया है:

…जब हम उस सुबह बरामदे में खड़े थे और जेनिफर, जिसकी आँखें लाल थीं, ने अपने हाथ उसके [जियोफ्रे के] गले में डाल दिए, उसके छोटे कंधे सिसकियों से काँप रहे थे, वह अकड़ा हुआ और सीधा खड़ा था, उसकी बाहें उसके बगल में चिपकी हुई थीं, वह आगे देख रहा था और चुप था, जब तक कि मैंने उसे उससे अलग नहीं किया और उसे गले लगाकर इंतज़ार कर रही टैक्सी में नहीं बिठा दिया। शशि के चेहरे पर हैरानी का भाव था।
यह घिनौना व्यवहार मैं कभी नहीं भूलूंगा। 10

जेनिफर और शशि अब एक विशाल, कभी-कभी प्रतिकूल दुनिया में अकेले थे। वे एक थिएटर शो के लिए सिंगापुर और मलेशिया के लिए रवाना हुए। लेकिन दुर्भाग्यवश, शो रद्द हो गए और उनके पास पैसे नहीं बचे। हताश शशि ने भारत में फोन किया और राज से मदद की गुहार लगाई, जिन्होंने तुरंत बॉम्बे के लिए दो इकोनॉमी टिकट भेज दिए। इस तरह जेनिफर और शशि माटुंगा में कपूर परिवार के घर पहुंचे और जुलाई 1958 में उनकी शादी हो गई।
जेफ्री शादी में शामिल नहीं हुए, लेकिन 1960 में बेटे कुणाल के जन्म के बाद जेनिफर से उनका सुलह हो गया। बीच के बच्चे करण का जन्म 1962 में हुआ और बेटी संजना का जन्म पांच साल बाद 1967 में हुआ।
वे साल बेहद रोमांचक थे—हालांकि उनके साथ कुछ खास चुनौतियां भी थीं। शर्मिला टैगोर, उस शख्स के सादे जीवन को याद करते हुए

कहती हैं, जो आगे चलकर एक स्टार बना, ‘शशि ने एक बार मुझसे कहा था कि जब उनकी शादी जेनिफर से हुई, तो उनका कमरा सबके लिए आने-जाने का रास्ता बन गया था—उन्हें कभी भी किसी तरह की निजता नहीं मिली।’ ‘सौभाग्य से, वे ऐसे माहौल में पले-बढ़े थे जहां मिल-जुलकर रहना और सहनशीलता ज़रूरी थी, और जहां सहजता से काम लेना अनिवार्य था। यह उनके व्यक्तित्व का हिस्सा था।’
शशि, उनकी पत्नी और बच्चे बाद में अल्टामाउंट रोड और अंततः दक्षिण मुंबई के नेपियन सी रोड में रहने चले गए, जहाँ जेनिफर ने अपने बच्चों को हिंदी फिल्म उद्योग की चकाचौंध और अतिरंजित पागलपन से दूर एक सामान्य जीवन देने के लिए हर संभव प्रयास किया। उदाहरण के लिए, उनके परिवार में टेलीविजन नहीं था।
जब पृथ्वीराज कपूर अभिनीत सीरियल '11 सिकंदर' प्रसारित हुआ, तो परिवार को एक दिन के लिए टीवी किराए पर लेना पड़ा। संजना कहती हैं, 'मैं शायद तीन साल की थी, लेकिन मुझे याद है कि मैंने स्क्रीन पर देखकर कहा था, "पापा।" क्योंकि मेरे दादाजी बिल्कुल मेरे पापा जैसे दिखते थे। मुझे वह बात अच्छी तरह याद है।' दूसरी बात यह है कि जिन दिनों शशि शूटिंग के लिए यात्रा नहीं कर रहे होते थे, उन दिनों जेनिफर जोर देती थीं कि उनका परिवार सुबह एक साथ इकट्ठा हो। कुणाल कहते हैं, 'पिताजी चाहे जिस समय भी काम से घर आते, हमारे साथ नाश्ता करते थे। हम सुबह 7 बजे उठ जाते थे और 7:30 बजे तक खाने की मेज पर बैठ जाते थे।'
अंत में, बच्चों को अन्य लोगों की तरह शहर में घूमना-फिरना सिखाया गया। संजना कहती हैं, 'हम बीईएसटी (बृहन्मुंबई इलेक्ट्रिक सप्लाई एंड ट्रांसपोर्ट) की बसों और लोकल ट्रेनों से सफर करते थे। आम लोगों की तरह, लगभग गुमनाम रहना, यह एक ऐसी चीज थी जिसकी हमने कद्र करना सीखा।' उन्हें अपनी मां द्वारा

मुंबई के भीड़भाड़ वाले चोर बाजार में घसीटकर ले जाने की यादें भी ताज़ा हैं: 'मेरे लिए स्कूल के बाद वहां जाना सबसे बड़ी यातना थी क्योंकि मेरी मां को कुछ न कुछ खरीदना होता था - और यह कभी भी सिर्फ एक चीज नहीं होती थी। यह चार-पांच घंटे तक चलता था! लेकिन मुझे यह जगह इसलिए भी पसंद थी क्योंकि यह भारत में एकमात्र ऐसी जगह थी जहां मैं शशि कपूर की बेटी नहीं थी; मैं जेनिफर केंडल कपूर की बेटी थी। इसके अलावा, मेरी मां हमेशा मुझे क्रॉफर्ड मार्केट के सामने एक उडुपी रेस्तरां में डोसा, इडली और वड़ा खिलाकर बहलाती थीं!'
जेनिफर ने अपने परिवार को स्टारडम की चकाचौंध से दूर रखने का कड़ा संकल्प लिया था, इसलिए संजना को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उसके पिता एक मशहूर शख्स हैं। यह घटना काफी अप्रत्याशित थी, जब संजना दो या तीन साल की थी और परिवार एक कार में था जो ट्रैफिक सिग्नल पर रुकी थी। तभी गली के कुछ बच्चे आए और बंद शीशे वाली खिड़कियों से झाँकने लगे। जल्द ही वे पागलों की तरह दरवाज़ा खटखटाने लगे और चिल्लाने लगे, 'शशि कपूर, शशि कपूर!' संजना हंसते हुए कहती है, 'मुझे बताया गया है कि मैंने अपने पिता की ओर मुड़कर पूछा, "पापा, इन्हें आपका नाम कैसे पता चला?"'
जेनिफर का शोहरत के प्रति भावहीन रवैया होने के बावजूद, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि परिवार को शशि की प्रसिद्धि के अनुरूप अपने जीवन में बदलाव करने पड़े। संजना कहती हैं, 'मैंने अपने पूरे जीवन में कभी अपने पिता के साथ मुंबई की सड़कों पर सैर नहीं की। यह नामुमकिन था और मैं इस बात से पूरी तरह वाकिफ थी।' कुणाल को चिड़ियाघर में परिवार के साथ सुबह-सुबह की दुर्लभ यात्राएं याद हैं। 'हमें चिड़ियाघर खुलने से पहले वहाँ पहुँचना पड़ता था और भीड़ आने से आधे घंटे पहले अंदर जाने की अनुमति

लेनी पड़ती थी। हमारी मुलाकात के अंत तक, प्रशंसक इकट्ठा हो जाते थे और पिताजी को पहचानने लगते थे।'

शशि कपूर अपनी बेटी संजना के साथ फिल्म 'हीट एंड डस्ट' के सेट पर।
फोटो साभार: मैरी एलेन मार्क। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

अंततः, गोवा ने कपूर परिवार को वह सुरक्षित आश्रय प्रदान किया जिसकी उन्हें चाह थी। परिवार का बागा बीच पर एक घर था, और यहाँ वे बिना किसी की नज़र में आए टहलते थे। फेलिसिटी के अनुसार, उनकी बहन ने ही सबसे पहले इस समुद्र तट को खोजा था और यहाँ तक कि

वह घर भी ढूँढा था जिसे उन्होंने शशि को किराए पर लेने के लिए राजी किया था—जिसकी टाइल वाली छत पर एक बड़ा सा दिल बना हुआ था, इसलिए सब उसे 'लव हाउस' कहने लगे। जेफ्री, जो अक्सर यहाँ छुट्टियाँ मनाने आते थे, इस घर को 'लव हाउस' कहते थे।
पड़ोस को 'निस्संदेह सबसे खूबसूरत छुट्टी स्थल' के रूप में वर्णित किया गया था।12 यह सितंबर 1984 में जेनिफर की मृत्यु तक हर सर्दियों में परिवार का अवकाश गृह होगा।
संजना कहती हैं, ‘मुझे लगता है कि मेरे माता-पिता ने हमें जो सबसे बड़ा तोहफा दिया, वह गोवा में हमारा घर था, उस समय जब गोवा इतना विकसित नहीं था।’ ‘मुझे यकीन है कि मेरे भाई भी इस बात से सहमत होंगे। हम सामान्य थे, साधारण थे। ग्रामीणों ने हमें स्वीकार करने से पहले एक साल से अधिक समय तक हमारी परीक्षा ली। वे नहीं जानते थे कि मेरे पिता कौन हैं।’ वह आगे कहती हैं कि उस समय गोवा में केवल कुछ ही सिनेमाघर थे, और स्थानीय निवासी— जिनमें से अधिकांश कोंकणी मछुआरे थे—शायद ही कभी हिंदी फिल्में देखते थे। ‘बेशक, वे अंततः समझ गए कि पापा कौन थे। लेकिन तब, उन्हें इसकी परवाह भी नहीं थी!’

जेनिफर केंडल कपूर के जीवित रहते हुए, उन्होंने अपने पति के खान-पान पर कड़ी नज़र रखी। यही कारण है कि कपूर परिवार के अन्य पुरुषों के विपरीत, शशि कपूर लंबे समय तक दुबले-पतले रहे। यही वजह थी कि शशि के आसपास के कई लोग उन पर तरस खाते थे! नीतू सिंह कपूर बताती हैं, 'मुझे याद है, जब मैं उनके साथ काम करती थी, तो मैं उनके खाने को देखकर कहती थी, "क्या हुआ है शशि अंकल?"' 'वह एक

संतरा और थोड़ा सा दही खाते थे। यही उनका दोपहर का भोजन होता था। और वह कहते थे, "अगर मैंने इससे ज़्यादा कुछ खाया तो मेरी पत्नी मुझे मार डालेगी!"'
लेखक और फिल्म फाइनेंस कॉर्पोरेशन (FFC) के पूर्व प्रमुख अनिल धारकर—जो पहली बार शशि से बीबीसी (ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन) के रेडियो इंटरव्यू के दौरान मिले थे और जल्द ही उनके घनिष्ठ मित्र बन गए—भी अभिनेता की खान-पान की आदतों को याद करते हैं। ‘मुझे याद है जब शशि और जेनिफर पहली बार हमारे घर डिनर पर आए थे। शशि ने दूसरी बार खाना मांगा। लेकिन जब जेनिफर ने बहुत सख्ती से कहा, “शशि!” तो वह चुपचाप बैठ गए।’
फिर वो समय भी आता था जब शशि अनिल को दोपहर के भोजन पर बुलाती थीं। ‘मुझे राज कपूर के रसोइए द्वारा घी, नमक और मिर्ची के साथ तैयार किया गया एक खास तरह का मटन परोसा जाता था। इसे जंगली गोश्त कहते थे क्योंकि उस ज़माने में जब लोग शिकार पर जाते थे, तो वे कुछ ही सामग्रियाँ साथ ले जा सकते थे जिनसे एक लाजवाब व्यंजन बनता था! दिक्कत ये थी कि इसमें घी की अधिक मात्रा के कारण यह बहुत ही भारी होता था। इसलिए शशि मुझे फोन करके कहतीं, “देखो, जेनिफर शहर से बाहर है। चलो इसे साथ में खाते हैं।” मैं तुरंत वहाँ पहुँच जाता। हम दोनों जी भर के खाते और अगले दो दिन तक परेशान होते!’
लेकिन जब जेनिफर ने उनके खान-पान पर सख्त पाबंदियां लगाईं, तब भी शशि ने कभी-कभार शराब का सेवन किया। नीतू सिंह कपूर कहती हैं, 'मुझे याद है,
कभी कभी 13 की पार्टी बुखारा में हुई और हम सब वहाँ थे। शशि अंकल ने दो-तीन ड्रिंक्स पी लीं और और भी प्यारे हो गए। उनके चेहरे से मुस्कान हट ही नहीं रही थी। मैं उनसे कहा करती थी, "आप सबसे

खुशमिजाज शराबी हैं जिन्हें मैं जानती हूँ।" कुछ लोग कुछ ड्रिंक्स के बाद गुस्सा हो जाते हैं। लेकिन शशि अंकल तो और भी अच्छे इंसान बन जाते थे। कमाल! मुझे उनका ये अंदाज बहुत पसंद था।

रविवार को नेपियन सी रोड स्थित कपूर परिवार पृथ्वी झोंपड़ा जाया करता था, जो जुहू के जानकी कुटीर इलाके में पृथ्वीराज कपूर का घर था। पृथ्वीराज के पड़ोसी कवि कैफी आज़मी थे। और एक व्यक्ति, विशेष रूप से, शशि कपूर के रविवार को आने पर बेहद उत्साहित हो जाती थी - कैफी की बेटी, शबाना आज़मी। उन्हें हिंदी फिल्म स्टार शशि कपूर पर बहुत बड़ा क्रश था। वह मुझे बताती हैं, 'मेरी मां (अभिनेत्री शौकत आज़मी) शशि को सात साल की उम्र से जानती थीं, क्योंकि उनका पृथ्वीराज कपूर और पृथ्वी थिएटर्स से जुड़ाव था। तो हां, परिवार बहुत करीब थे। मैं शशि की दीवानी थी। जब मैं लगभग बारह या तेरह साल की थी, तो मैं अपनी सारी पॉकेट मनी बचाकर हर हफ्ते ग्रांट रोड स्थित अपने स्कूल के पास एक विक्रेता से उनकी ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीरें खरीदती थी। जब शशि आते थे, तो मैं शर्माते हुए उन्हें तस्वीर देती थी और वह उस पर मेरे लिए ऑटोग्राफ कर देते थे।' कई साल बाद, शबाना और शशि ने आठ फिल्मों में एक साथ काम किया।
1986 में, अपने राजनीतिक और सामाजिक सक्रियता के चरम पर, शबाना ने वृत्तचित्र निर्माता आनंद पटवर्धन के साथ भूख हड़ताल की। उनके संगठन, निवारा हक, ने कोलाबा की झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों के लिए वैकल्पिक आवास की मांग की, जिनके घरों को

मंत्रियों के लिए छात्रावास बनाने के लिए ध्वस्त कर दिया गया था। हड़ताल के पांचवें दिन, शबाना का रक्तचाप गिरने लगा; चारों ओर अफरा-तफरी मची हुई थी। शशि तुरंत शबाना से मिलने पहुंचे और संगठन की मांगों को और गहराई से समझने की कोशिश की। फिर, वे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री से मिलने गए। शबाना कहती हैं, 'उन्होंने मुख्यमंत्री से कहा, "जब आपको प्राकृतिक आपदाओं या संकटों से निपटने के लिए फिल्म उद्योग के समर्थन की आवश्यकता होती है, तो फिल्म उद्योग हमेशा आपके साथ खड़ा रहता है। फिर भी, जब हमारा एक प्रमुख सदस्य भूख हड़ताल पर जाता है, तो सरकार कोई ध्यान नहीं देती।"' तुरंत, मुख्यमंत्री ने राज्य के आवास मंत्री को फोन किया, जिन्होंने प्रदर्शनकारियों को बताया कि शशि के हस्तक्षेप के बाद, सरकार उनकी मांगों को मानने के लिए विवश हो गई।
शबाना कहती हैं, 'मैं मंच पर चढ़ गई। लेकिन इससे पहले कि मैं कह पाती, "निवारा हक शशि कपूर को धन्यवाद देना चाहता है", मैंने उन्हें चुपचाप कोलाबा की एक गली में गायब होते देखा। वह इसका श्रेय नहीं लेना चाहते थे। ऐसी उदारता शशि कपूर की खासियत है।' मुंबई की पत्रकार समीरा खान को भी शशि कपूर की दयालुता याद है। समीरा और उनके माता-पिता एटलस अपार्टमेंट्स, नेपियन सी रोड में कपूर परिवार के पड़ोसी थे। खान परिवार उस इमारत में एकमात्र मुस्लिम परिवार था। जनवरी 1993 में, मुंबई दंगों के दौरान, खान परिवार को अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा। समीरा कहती हैं, 'हमें एटलस सोसाइटी से कोई मदद नहीं मिली और बेचैनी बढ़ती जा रही थी। जब हम दूर थे, सोसाइटी ने एक बैठक बुलाई और एक प्रस्ताव पारित किया कि अब से किसी भी मुस्लिम को इमारत में फ्लैट किराए पर लेने या खरीदने की अनुमति नहीं दी जाएगी। इसका पुरजोर विरोध

करने और इमारत छोड़कर चले जाने वाले एकमात्र व्यक्ति शशि कपूर थे। हो सकता है कि उन्हें मैं या मेरा परिवार याद न हो, लेकिन जब भी मैं उनसे मिलती हूं, मुझे बेहद उम्मीद महसूस होती है।'

नोट्स
1. हिंदी सिनेमा के विश्वकोश में एक प्रविष्टि के अनुसार, edited by Gulzar, Govind Nihalani and Saibal Chatterjee (Bombay: Popular Prakashan, 2003).
2. 1981, Kalyug, dir. Shyam Benegal prod. Shashi Kapoor, starring
Shashi Kapoor, Rekha, Raj Babbar.
3. फेलिसिटी केंडल, व्हाइट कार्गो (लंदन: माइकल जोसेफ, 1998), पृ. 157.
4. जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा
(लंदन: सिडगविक एंड जैक्सन, 1986), पृ. 133.
5. फेलिसिटी केंडल, व्हाइट कार्गो (लंदन: माइकल जोसेफ, 1998), पृ. 157.
6. जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा
(लंदन: सिडगविक एंड जैक्सन, 1986), पृ. 133.
7. मधु जैन, कपूर परिवार: भारतीय सिनेमा का पहला परिवार
(नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृष्ठ 227।
8. फेलिसिटी केंडल, व्हाइट कार्गो (लंदन: माइकल जोसेफ, 1998), पृ. 163.
9. शम्मी कपूर, ‘कपूर परिवार की वेबसाइट’, में <http://www.junglee.org.in/jennifer.html>, 11 जनवरी 2015 को देखा गया।

10. फेलिसिटी केंडल, व्हाइट कार्गो (लंदन: माइकल जोसेफ, 1998), पृ.
172.
11. 1941, सिकंदर, निर्देशक: सोहराब मोदी, निर्माता: सोहराब मोदी, अभिनीत
Prithviraj Kapoor, Sohrab Modi, Zahur Raja.
12. जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा
(लंदन: सिडगविक एंड जैक्सन, 1986), पृ. 158.
13. 1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, राखी, सिमी गरेवाल, वहीदा रहमान, ऋषि कपूर, नीतू सिंह अभिनीत।
2

चढ़ाई

शशि और उनकी शुरुआती फिल्में

शशि कपूर की पहली फिल्म किसी मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शन में एक आकर्षक हीरो के रूप में नहीं, बल्कि वास्तव में एक मोटे किशोर के रूप में थी।
व्यावसायिक फिल्म। उनके बड़े भाई राज कपूर द्वारा निर्देशित प्रसिद्ध भारतीय फिल्म '1 आवारा' में, शांत चेहरे वाले शशि ने -

जो उस समय अपने वयस्क रूप का भोलापन और आकर्षण दिखा रहे थे - राज द्वारा निभाए गए किरदार के युवा संस्करण की भूमिका निभाई। फिल्म रिलीज के समय शशि तेरह वर्ष के थे, जबकि राज सत्ताईस वर्ष के थे। इस फिल्म में उनके पिता पृथ्वीराज कपूर ने भी एक न्यायाधीश की भूमिका निभाई थी, जो अपनी गर्भवती पत्नी को छोड़कर भाग जाता है, क्योंकि उसे अपहरण करने वाले डाकू ने उसके साथ बलात्कार किया था।
स्पष्ट रूप से, आवारा की कहानी राम-सीता-रावण की कथा से काफी मिलती-जुलती थी, जिसमें भरपूर मेलोड्रामा और अतिशयोक्ति थी। इसका कथानक भी सनक और संयोग पर आधारित था—युवा शशि का किरदार अपनी प्रेमिका को खो देता है, और वयस्क होने पर उससे फिर मिलता है; उसे जग्गा डाकू गोद ले लेता है, वही आदमी जिसने कभी उसकी माँ का अपहरण किया था!
हालांकि शशि को उस दौर की कुछ अन्य फिल्मों में छोटी भूमिकाएँ निभाने का श्रेय दिया जाता है, लेकिन आवारा ही वह फिल्म है जिसे उनके प्रशंसक बार-बार देखते हैं—उस बाल कलाकार की मोहक आँखों के लिए, साथ ही साथ मनमोहक गीतों और राज और रीता (नरगिस द्वारा अभिनीत) के बीच के भावुक प्रेम दृश्यों के लिए। इसलिए, इसे शशि की 'लॉन्च' फिल्म के रूप में पहचाना जाता है—क्योंकि उस समय से ही युवा अभिनेता अपार प्रतिभा के संकेत दे रहे थे, अभिनय में उनकी प्रतिभा और अभिनय की गहरी क्षमता झलक रही थी।

जब शशि कपूर ने वयस्क होकर भारतीय फिल्म उद्योग में कदम रखने का फैसला किया, तो इसके पीछे कोई स्वप्निल कारण नहीं थे; उन्हें

अपने परिवार का भरण-पोषण करना था। शशि कपूर ने भारतीय सिनेमा की लेखिका और प्रोफेसर राहेल ड्वायर को उनकी किताब के लिए दिए एक साक्षात्कार में बताया, 'मैं पैसे के लिए एक अभिनेता के रूप में फिल्मों में आया था। मुझे पसंद था...'
थिएटर में काम करते थे, लेकिन उसमें कोई पैसा नहीं था।’2 कुणाल कपूर इस बात की पुष्टि करते हैं: ‘मेरे जन्म के बाद, मेरे पिता को एहसास हुआ कि उन्हें अपने परिवार की मनचाही जीवनशैली को बनाए रखने के लिए अपनी आय में वृद्धि करनी होगी। आप जानते हैं, माँ बहुत किताबें पढ़ती थीं—और जैसा कि हम जानते हैं, किताबें महंगी होती हैं!’
एक बार जब शशि को फिल्म उद्योग में शामिल करने का फैसला हो गया, तो असली संघर्ष शुरू हुआ। शशि का पारिवारिक संबंध प्रतिष्ठित था—वे फिल्म जगत के अग्रणी अभिनेता पृथ्वीराज कपूर के पुत्र और पहले से ही विख्यात अभिनेता शम्मी कपूर और राज कपूर के भाई थे—लेकिन फिल्म जगत में उनका अनुभव सीमित था। मुंबई में फिल्म में काम की तलाश कर रहे हजारों लोगों की तरह, शशि को भी निर्देशकों और स्टूडियो से मिलने, अपने पोर्टफोलियो की तस्वीरें बांटने और व्यस्त निर्माताओं की नजर में आने के लिए कॉफी शॉप के बाहर घंटों बिताने पड़ते थे।
आखिरकार शशि को अपना पहला मौका मिला। उन्हें एक सामाजिक नाटक में अभिनय करने के लिए कहा गया।
मेलोड्रामा फिल्म '3 चार दीवारी' में नंदा ने मुख्य अभिनेत्री की भूमिका निभाई थी। नंदा शशि से एक साल छोटी थीं, लेकिन तब तक वह घर-घर में जानी-मानी हस्ती और बड़ी फैन फॉलोइंग वाली स्टार बन चुकी थीं, उन्होंने पच्चीस से अधिक फिल्मों में अभिनय किया था, जिनमें शामिल हैं:

कुछ बड़ी हिट फिल्में—जिनमें धूल का फूल और कानून शामिल हैं। कहानी यह है कि फिल्म जगत की स्टार नंदा ने नवोदित अभिनेता शशि के साथ काम करने का फैसला राज के कहने पर किया—राज ने भाईचारे का परिचय देते हुए नंदा से शशि का ध्यान रखने को कहा क्योंकि वह उनकी 'वरिष्ठ' थीं। नंदा ने बाद में बातचीत का विवरण देते हुए बताया: 'राज ने मुझसे कहा, "[शशि] मेरा भाई नहीं है। वह मेरा बेटा है। [अभिनय] मेरे लिए एक बिल्कुल नया अनुभव है।
उसके लिए।”
चार दीवारी बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई, हालांकि इसमें सलिल चौधरी द्वारा रचित मधुर संगीत था—जिसमें वो सदाबहार गीत भी शामिल था।
by Mukesh, ‘Kaise Manaoon Piyawa’.7 Soon after, Shashi went on to act in

two more films with Nanda— 8 Mehndi Lagi Mere Haath and Mohabbat Isko
Kahete Hain.9 Both failed.
ऐसा लग रहा था मानो शशि का करियर बहुत जल्द ही खत्म होने वाला था, और उसके साथ ही नंदा का भी। लेकिन फिर आया साल 1965, और आई फिल्म, जब जब फूल।
खिले 10—कश्मीर में रची-बसी एक प्रेम कहानी। वर्ग सीमाओं को तोड़ने का इसका अनूठा विषय (उस समय के हिसाब से) और इसके बेहद लोकप्रिय गाने (जिनमें 'परदेसियों से ना' भी शामिल है) ‘अंखियां मिलाना’ (11-12 और ‘ना ना करते प्यार’) ने दर्शकों का दिल जीत लिया। फिल्म अप्रत्याशित रूप से हिट हो गई और अचानक शशि और नंदा की खूब मांग होने लगी! इस जोड़ी ने 1960 के दशक में कुल आठ फिल्मों में साथ काम किया।

एक अनिश्चित शुरुआत के बाद, 1960 के दशक के उत्तरार्ध ने शशि के करियर को मजबूती से स्थापित किया। अभिनेता कई फिल्मों में दिखाई दिए (इसके अलावा
from those with Nanda)— 13 Pyar Ka Mausam with Asha Parekh, and the
कॉमेडी फिल्म '14 प्यार किए जा' में, अट्ठाईस वर्षीय अभिनेता ने अपने जोशीले भाई शम्मी को भी मात दे दी, और 'कहने की' गाने पर अपने सबसे सहज और ऊर्जावान नृत्य प्रदर्शन से सबको प्रभावित किया, जिसमें उनका मशहूर ट्विस्ट डांस भी शामिल था।
'नहीं बात'.15 गाने का आधार—और वास्तव में, पूरी फिल्म का आधार — पूरी तरह से बेतुका है, लेकिन यह उस तरह का निरर्थक मनोरंजन है जो अभिनेताओं से बहुत अधिक अपेक्षा रखता है। शशि ने इस चुनौती को बखूबी निभाया और उन्हें देखना आज भी आनंददायक है।
Then, there was Prakash Mehra’s first feature, 16 Haseena Maan Jayegi—
एक और बेतरतीब लेकिन हानिरहित फिल्म—जिसमें शशि ने बबीता के साथ अभिनय किया (जो दो साल बाद उनके भतीजे रणधीर कपूर से शादी करेंगी)। फिल्म में जॉनी वॉकर और अमीता अभिनीत हास्यप्रद गाने हैं; कल्याणजी-आनंदजी द्वारा रचित गीतों से भरपूर है—जिनमें शामिल हैं...
memorable ‘Chale The Saath Milke’17 and the incredibly romantic ‘Bekhudi
'मैं सनम' (18) उभरते सितारे शशि को एक मज़ेदार दोहरी भूमिका में प्रस्तुत करता है— वह कमल और राकेश दोनों हैं। इतना ही नहीं, एक हास्यपूर्ण और चतुराई से रची गई कहानी में...

कोरियोग्राफ किए गए गीत, 'सुनो सुनो',19 में शशि के एक किरदार को, दुनिया भर में पाई जाने वाली महिलाओं के प्रकारों पर अपने शोध के निष्कर्षों का वर्णन करते हुए, महिला के कपड़े पहनाए जाते हैं; एक शानदार दृश्य है जहाँ शशि तवायफ की पोशाक पहनकर हिट हिंदी फिल्मी गानों की पैरोडी पर नृत्य करते हैं। इस गीत के दृश्य में शशि बेहद ऊर्जावान हैं—दौड़ते-भागते, उछलते-कूदते और मेहनत करते हुए।
उसके पैर—यह शम्मी की 20 21 जंगली, प्रोफेसर की याद दिलाता है। और 22 जनवरी—बस फर्क इतना है कि शशि का लचीला शरीर उसे अपने भाई से कहीं ज्यादा फुर्तीला और चुस्त बनाता है! यह मानना पड़ेगा कि 'हसीना मान जाएगी' एक साधारण फिल्म है—यह समझाने की कोई कोशिश नहीं करती कि दोनों शशि एक जैसे क्यों दिखते हैं; कहानी में ऐसा कोई मोड़ नहीं लाती जिससे पता चले कि कमल और राकेश बिछड़े हुए जुड़वा भाई हैं; और हमें यह विश्वास दिलाती है कि हमशक्लों के अस्तित्व का एकमात्र कारण एक बेहद उलझन में पड़ी नायिका को और भी ज्यादा परेशान करना है। लेकिन गाना, 'सुनो सुनो' शशि के प्रशंसकों के लिए एक खास तोहफा है।

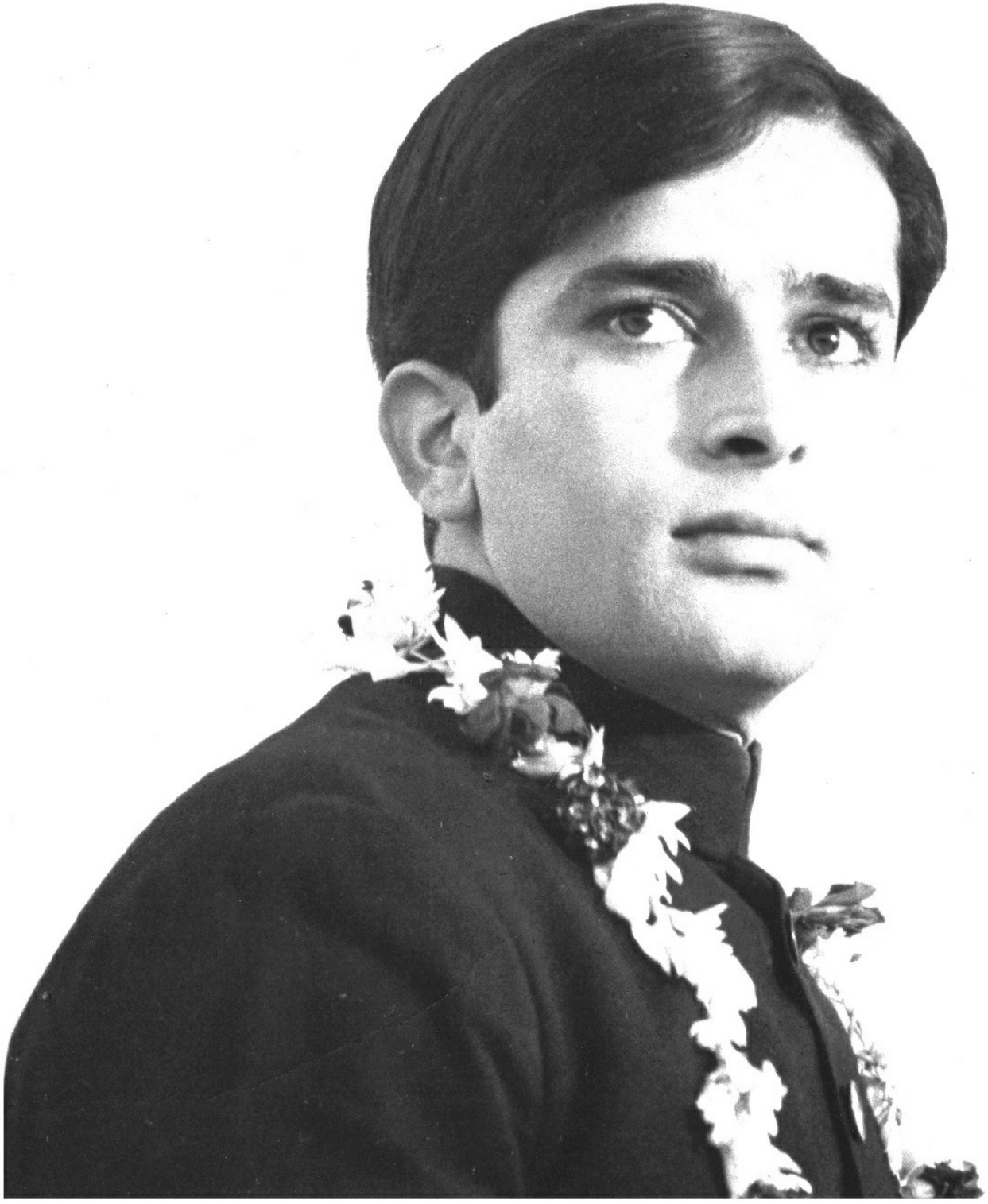

शशि कपूर: एक उभरता सितारा। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

यदि 1960 का दशक शशि के जीवन में एक महत्वपूर्ण दशक था, तो इसका एक कारण यह भी था कि इस अवधि ने उनके जीवन में तीन अन्य संबंधों को भी परिभाषित किया - फिल्म निर्माता यश चोपड़ा के साथ, जो शशि के घनिष्ठ मित्र बन गए; अभिनेत्री शर्मिला टैगोर के साथ, जिन्होंने बंगाली क्लासिक्स से पूरी तरह से व्यावसायिक फिल्मों की ओर कदम बढ़ाना शुरू कर दिया था; और दिग्गज निर्देशक बिमल रॉय के साथ, जिन्होंने अभिनेता को दो फिल्मों में कास्ट किया (हालांकि दोनों बॉक्स ऑफिस पर असफल रहीं)।

यश चोपड़ा की शुरुआती फिल्में

यश चोपड़ा की शशि कपूर से पहली मुलाकात, संभवतः 1950 के दशक के अंत में हुई थी, जो अप्रत्याशित और आश्चर्यजनक रूप से संक्षिप्त थी। कहा जाता है कि यश ने शशि को बॉम्बे के चर्चगेट इलाके में स्थित मशहूर गे लॉर्ड्स रेस्तरां की ओर जाते हुए देखा, जहाँ कभी संघर्षरत अभिनेता अक्सर जाया करते थे। युवा शशि के आकर्षण और अच्छे रूप से प्रभावित होकर, प्रसिद्ध निर्देशक ने उन्हें अपने यहाँ आमंत्रित किया। संक्षिप्त बातचीत के बाद— जिसमें शशि ने स्वाभाविक रूप से अपने पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में बताया—यश ने उभरते अभिनेता को अपने भाई बी.आर. चोपड़ा के कार्यालय, करदार स्टूडियो जाने की सलाह दी, जिसे शशि ने बिना देरी किए मान लिया। कहा जाता है कि यहाँ यश ने अपनी नई फिल्म की कहानी सुनाई, जिसका निर्माण उन्हें करना था।
उसके भाई ने आश्चर्यचकित शशि को बताया। इस तरह 23 धर्मपुत्र को अपना सितारा मिला।

सामाजिक चेतना से भरपूर फिल्म 'धूल का फूल' की अपार सफलता के तुरंत बाद, यश की दूसरी फिल्म 'धर्मपुत्र', जो आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास पर आधारित थी, ने नव स्वतंत्र भारत में हिंदू-मुस्लिम संघर्ष के जटिल परिदृश्य को एक युवा मुस्लिम दंपति की कहानी के माध्यम से उजागर करने का विकल्प चुना; यह जोड़ा अपने नाजायज बच्चे को हिंदू दोस्तों के पास छोड़ देता है, लेकिन वर्षों बाद उन्हें पता चलता है कि उनका मुस्लिम बेटा अब एक कट्टरपंथी हिंदू बन चुका है।
फिल्म रिलीज के समय तेईस साल के शशि ने एक अति उत्साही हिंदू की चुनौतीपूर्ण भूमिका निभाई, जिसे अपनी जैविक जड़ों के बारे में कुछ भी पता नहीं था। अपने किरदार को लेकर परेशान होने के साथ-साथ, शशि को हिंदी सिनेमा की परंपराओं से भी जूझना पड़ा। राहेल ड्वायर के साथ एक साक्षात्कार में, शशि ने यश की वाचालता (जो अक्सर पत्रकारों के निर्देशक से मिलने पर भी एक मुद्दा बन जाती थी) के बारे में बताया; कैसे एक विषय दूसरे में उलझ जाता था; और अंत में, निर्देशक और अभिनेता के बीच मतभेद हो गए। हिंदी सिनेमा के अनिच्छुक सितारे शशि के मन में अभी भी युवावस्था के आदर्श थे — उनमें से एक यह था कि वे फिल्मों में गाने नहीं गा सकते थे; दूसरी ओर, यश उस फॉर्मूले को बदलने को तैयार नहीं थे जो पहले से ही सफल था। 'मैंने अपने किरदार को बहुत गंभीरता से लिया,' शशि ने राहेल से स्वीकार किया। अंततः, 'परिष्कृत और पश्चिमी' अभिनेता को अपने निर्देशक के आदेश के आगे झुकना पड़ा। 'एक गाना था... शशि अपने साक्षात्कार में कहते हैं, ‘एक क्रांतिकारी और एक रोमांटिक व्यक्ति।’24
रोमांटिक गीत, ‘भूल सकता है भला कौन’ 25—जो कि मुख्य कहानी में एक छोटा, लेकिन दिल को छू लेने वाला मोड़ है—में शशि द्वारा

अभिनीत दिलीप राय, महेंद्र कपूर की शांत, स्वप्निल आवाज़ में अपनी प्रेमिका मीना (इंद्राणी मुखर्जी द्वारा अभिनीत) के लिए गाते हैं, जो उनके सामने बैठी हैं। शशि ने पतली मूंछें रखी हैं— जो उन्हें और भी आकर्षक बनाती हैं—और अपने किरदार द्वारा लिखी गई एक प्रेम कविता सुनाते हैं; फिल्म के ब्लैक एंड व्हाइट दृश्यों से इस दृश्य की सुंदरता और भी बढ़ जाती है। धर्मपुत्र—जिसे बाद में सर्वश्रेष्ठ हिंदी फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार (1961) मिला—बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप रही, शायद इसलिए कि विभाजन के तुरंत बाद एक युवा राष्ट्र को बांटने वाले धार्मिक विभाजन की कहानी में दर्शकों की दिलचस्पी नहीं थी। फिल्म की असफलता बी.आर. चोपड़ा के लिए एक बड़ा नुकसान साबित हुई, जिनके बैनर तले पहले कई सफल फिल्में बनी थीं।
बॉक्स ऑफिस के नतीजों को छोड़ दें तो, धर्मपुत्र फिल्म ने यश, शशि और देवेन वर्मा के बीच गहरी दोस्ती को और मजबूत किया। देवेन वर्मा ने फिल्म में नायक के छोटे भाई का किरदार निभाया था। बाद में, पामेला चोपड़ा के अनुसार, जब देवेन के परिवार ने रूपा गांगुली (अशोक कुमार की बेटी) से शादी का कड़ा विरोध किया, तो शशि और यश ने देवेन की शादी में मदद की।
शशि और यश की दोस्ती को कैसे समझाया जा सकता है? राहेल के अनुसार, उनकी दोस्ती उनके पृष्ठभूमि से प्रेरित थी। 'जेनिफर की पश्चिमी शैली के बावजूद शशि पूरी तरह पंजाबी थीं। ऐसी 'पंजाबीपन' कपूर परिवार और चोपड़ा परिवार की पहचान थी; यह खान-पान, जीवनशैली और सामाजिकता में स्पष्ट थी। अगर शशि और यशजी के बीच कोई मतभेद था, तो वह इसलिए था क्योंकि यशजी शराब नहीं पीते थे।'

राहेल आगे कहती हैं कि यश और शशि और जेनिफर कला में अपनी रुचि साझा करते थे—जो व्यावसायिक हिंदी सिनेमा के दायरे से कहीं आगे थी। ‘यश जी आईपीटीए (इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन) के आजीवन सदस्य थे और रंगमंच के बहुत बड़े प्रशंसक थे,’ वह कहती हैं। ‘लोग हमेशा मानते हैं कि पाम और वह फिल्मी थे, लेकिन मैंने उनके साथ कई कम चर्चित फिल्में और आर्ट हाउस सिनेमा देखे हैं। ऐसी जिज्ञासा ही इस दंपत्ति की पहचान थी।’ शायद यही कारण है कि शशि राहेल से कहती हैं, ‘वह [यश] [इस्माइल] के अलावा एकमात्र निर्देशक थे।’
मर्चेंट और [जेम्स] आइवरी कि जेनिफर के पास घर होगा।’26 धर्मपुत्र की असफलता के बावजूद, बी.आर. चोपड़ा ने अपने भाई यश को यह जिम्मेदारी सौंपी।
27 वक्त के साथ एक और मौका मिला—यह बैनर की पहली रंगीन फिल्म थी और इसमें कई सितारों ने अभिनय किया था। फिल्म में, एक सफल व्यापारी, लाला केदारनाथ (बलराज साहनी), एक विनाशकारी भूकंप (1935 में क्वेटा में आए भीषण भूकंप का संदर्भ) के बाद अपने परिवार—अपनी पत्नी और तीन छोटे बेटों—से बिछड़ जाता है। बेटे अलग-अलग बड़े होते हैं और उनका जीवन बिल्कुल अलग होता है—एक शातिर चोर बन जाता है, दूसरा ऐशो-आराम और विशेषाधिकार की दुनिया में खो जाता है, और तीसरा कम से कम शुरुआत में, कड़ी मेहनत और लगन के सीधे रास्ते पर चलता है। उनके जीवन प्रेम प्रसंगों के माध्यम से जुड़ते हैं, और अंत में, एक भावुक दृश्य में—जो दिल को छू लेने वाला है—परिवार अदालत में फिर से एक हो जाता है। कहानी की संरचनात्मक जटिलता को देखते हुए, फिल्म में कलाकारों की एक विशाल श्रृंखला है! सबसे बड़े बेटे—गुंडे राजू—का किरदार राज कुमार ने निभाया है, जिन्हें यह लोकप्रिय डायलॉग

बोलने का मौका मिलता है: ‘चेनॉय सेठ, जिनके अपने घर शीशे के हों वो दूसरों के घरों पर पत्थर नहीं फेंकते।’ (‘चेनॉय सेठ, जिनके घर काँच के बने हों वे दूसरों के घरों पर पत्थर नहीं फेंकते।’) मंझले बेटे—समृद्ध वकील रवि—का किरदार सुनील दत्त ने निभाया है, जबकि शशि सबसे छोटे बेटे मुन्ना के रूप में हैं—जो अपनी माँ का सहारा बनने के लिए ड्राइवर बन जाता है, और फिर उसे एक गंभीर बीमारी से ठीक करने के लिए संदिग्ध फैसले लेने पड़ते हैं। प्रेम प्रसंगों की बात करें तो, अचला सचदेव केदारनाथ की पत्नी लक्ष्मी का किरदार निभाती हैं (बलराज साहनी द्वारा अभिनीत केदारनाथ मन्ना गीत गाते हैं)।
दे की अविस्मरणीय ‘ऐ मेरी ज़ोहरा जबीन’28 (उनके लिए); साधना मीना की भूमिका निभाती हैं—रवि की प्रेमिका—लेकिन राजू उनके प्रति आसक्त हो जाता है; और पहली बार, शशि को शर्मिला टैगोर के साथ जोड़ा गया है, जो अपनी सफलता के बाद आई हैं।
उनकी पहली हिंदी फिल्म, 29 कश्मीर की कली।
वक्त न केवल बॉक्स ऑफिस पर बड़ी हिट साबित हुई, बल्कि उद्योग जगत के लिए एक मानक भी बन गई। भव्य सेट; आधुनिक गाड़ियाँ; आकर्षक और फैशनेबल कपड़े पहने सितारे; मनमोहक गाने; और साथ ही, अप्रत्याशित परिस्थितियों के कारण बिछड़े परिवारों से जुड़ी अनगिनत उपकथाएँ खूब लोकप्रिय हुईं। 1970 और 1980 के दशक में, हिंदी फिल्म उद्योग ने ऐसी कई कहानियाँ गढ़ीं, और इन फिल्मों में हमेशा उस समय के शीर्ष सितारे शामिल होते थे—जिनमें कई बार शशि सान्निध्य भी शामिल थे।

शर्मिला टैगोर की शुरुआती फिल्में

शर्मिला टैगोर को शशि कपूर से अपनी पहली मुलाकात याद है—जब वह शक्ति सामंता की फिल्म 'कश्मीर की कली' के सेट पर आए थे। शशि कपूर अपने भाई शम्मी कपूर से मिलने आए थे, जो फिल्म में मुख्य भूमिका निभा रहे थे।
जेनिफर (केंडल कपूर) और शशि ने '30 अपुर संसार' देखी थी और उन्हें यह फिल्म पसंद आई थी।
शर्मिला मुझसे कहती हैं, 'मेरी परफॉर्मेंस। मैंने शशि को '31 प्रेम पत्र' में देखा था। और मैं उन पर फिदा हो गई थी! उसमें वो बहुत हैंडसम थे। मुझे बस इतना याद है कि फिल्म में वो अंधे थे। और एक सीन में जब साधना साड़ियां तह कर रही थी, तब शशि कुर्सी पर बैठे बेहद खूबसूरत लग रहे थे।'
शशि के कश्मीर की कली के सेट पर अचानक आने से अठारह वर्षीय शर्मिला घबरा गई। 'हम "इशारों इशारों" गाने की शूटिंग कर रहे थे।'
'मैं दिल लेनेवाले', 32, और मैंने खुद से कहा, "हे भगवान! ये तो शशि कपूर हैं।" और मैं काम नहीं कर पाई। शक्ति ने आखिरकार उन्हें जाने के लिए कहा।
जब तक वक्त फिल्म फाइनल हुई, शर्मिला, जो थोड़ी बड़ी और अनुभवी हो चुकी थीं, युवा अभिनेता के साथ काफी सहज महसूस करने लगी थीं। इसके अलावा, बॉक्स ऑफिस की मांग के चलते शर्मिला और शशि की रोमांटिक जोड़ी ज़रूरी थी। शर्मिला कहती हैं, 'जब वक्त फिल्म आई, तो हमें युवा पीढ़ी का ध्यान मिला। हमने निश्चित रूप से एक ज़रूरत पूरी की और इसमें सफल भी रहे। फिल्म में एक सीन है जहां हम नाव पर गाना गाते हैं—"दिन है बहार"।
के"33—और हर चीज, यहां तक कि मेरे कपड़े भी, सराहे जाने लगे।'

शशि और शर्मिला एक युवा प्रेम-प्रसंग के प्रतीक बन गए—ठीक वैसे ही जैसे एक दशक बाद ऋषि कपूर और नीतू सिंह की जोड़ी बनी—और यह जोड़ी न केवल यश चोपड़ा की बहु-सितारा फिल्मों में बल्कि कई अन्य फिल्मों में भी एक आम बात बन गई। परिणामस्वरूप, शर्मिला और शशि दस फिल्मों में एक साथ दिखाई दिए।
जिसमें 34 35 36 आमने सामने, सुहाना सफर, आ गले लग जा और शामिल हैं।
राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता 37 न्यू दिल्ली टाइम्स।
ये दोनों न सिर्फ लोकप्रिय सह-कलाकार बने, बल्कि एक-दूसरे से सीखते हुए साथ-साथ आगे बढ़े। शर्मिला कहती हैं, 'शशि मुझे अक्सर चिढ़ाते थे क्योंकि मैं सेट पर निर्देशकों से बहुत बहस करती थी। हर बार, वह मुझे याद दिलाते थे कि काम पर ध्यान दो—झगड़ा मत करो, बस काम करो! यही मैंने उनसे सीखा है। जब आप पैसे के लिए या किसी दोस्त की मदद के लिए फिल्म कर रहे हों, तो अपने मकसद को लेकर स्पष्ट रहें और फिर जो करना है उसे पूरा करें। जब आप सेट पर आते हैं, और स्क्रिप्ट या निर्देशक की सीमाओं से अवगत होते हैं, तो असंभव की उम्मीद न करें।'
शर्मिला शशि की कार्यशैली की भी सराहना करने लगीं। शर्मिला कहती हैं, 'वह हमेशा अपने निर्देशक की बात सुनते थे और हमेशा समय पर सेट पर आते थे।' उनका इशारा इस बात की ओर था कि उन्होंने 1960 के दशक के मशहूर अभिनेता राजेश खन्ना की फिल्मों में काम करना इसलिए बंद कर दिया था क्योंकि वह अक्सर देर से आते थे। 'और हां, उनके बाद सबसे आखिर में आने वाले (अमिताभ) बच्चन होते थे।' शर्मिला को सबसे ज़्यादा शशि का हर अच्छे-बुरे समय में भी हास्यबोध याद आता है। वह कहती हैं, 'हम 'सुहाना सफर' की शूटिंग कर रहे थे, और एक सीन था जिसमें मुझे ढलान पर गाड़ी चलानी थी और शशि

को रास्ते से हट जाना था। लेकिन कुछ गड़बड़ हो गई—मैं क्लच और ब्रेक पर काबू नहीं रख पाई और गाड़ी एक नाले में जा घुसी। रिफ्लेक्टर पकड़े बेचारा लाइटमैन गिर गया, लेकिन शशि बाल-बाल बच गए। बाद में उन्होंने मज़ाक में कहा, "अगर तुमने ऐसा दोबारा किया, तो जेनिफर तीन बच्चों के साथ तुम्हारे पास आएगी और कहेगी कि उसके पास दूध के लिए पैसे नहीं हैं!" वह हमेशा मज़ाक करते थे, और फिर भी विनम्र और सम्मानजनक बने रहते थे।'
बीते वर्षों में शशि और शर्मिला के परिवार—उनके जीवनसाथी और बच्चे—एक-दूसरे के बहुत करीब आ गए। यह बात मददगार साबित हुई कि दोनों परिवार दक्षिण मुंबई में रहते थे, हिंदी फिल्म उद्योग के शोर-शराबे और चकाचौंध से दूर। यह भी मददगार रहा कि फिल्म निर्माण के वर्षों में शशि और शर्मिला के बीच एक ऐसा रिश्ता बन गया था जो गर्मजोशी भरा और शरारती भी था। शर्मिला कहती हैं, 'जब मैं टाइगर (उनके भावी पति और क्रिकेटर, पटौदी के नवाब) से मिली, तब तक मुझे एक साथ "अलविदा" और "खुदा हाफ़िज़" कहने की आदत पड़ चुकी थी। और शशि मुझे चिढ़ाते हुए कहते थे, "आधा उसका है और आधा मेरा!" मेरे दिल में शशि के लिए हमेशा एक खास जगह थी। मुझे उनकी पलकें याद हैं।'

बिमल रॉय फिल्म्स

1950 के दशक के उत्तरार्ध में, शशि कपूर की मुलाकात दिग्गज फिल्म निर्माता बिमल रॉय से हुई।
- 38 39 40 दो बीघा जमीन, मधुमती और सुजाता जैसे क्लासिक्स के लिए जाना जाता है

फिल्मफेयर द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में। शशि बिमल को बचपन से जानते थे, और मुलाकात के बाद उन्हें मोहन स्टूडियो में निर्देशक से मिलने का निमंत्रण मिला।
जब शशि पहुंचे, तो उन्होंने फिल्म निर्माता के कई सहायकों (और भावी निर्देशकों) - गुलज़ार, हृषिकेश मुखर्जी और बसु भट्टाचार्य (जिन्होंने बाद में बिमल की बेटी रिंकी से शादी की, जिससे बिमल को बहुत दुख हुआ) - को अपने कार्यालय के बाहर पाया। शशि ने धर्मेंद्र को भी देखा - जो उस समय, उनकी ही तरह, एक संघर्षरत अभिनेता थे। खबर थी कि बिमल अपनी दो फिल्मों के लिए कास्टिंग कर रहे थे।
उनके दिमाग में 41 प्रेम पत्र और बंदिनी फिल्में थीं—और शशि ने अनुमान लगाया कि धर्मेंद्र और वह खुद इस दौड़ में शामिल थे।
जब उन्हें बुलाया गया, तो शशि घबराते हुए बिमल से मिलने के लिए एक कमरे में गए। निर्देशक सीधे मुद्दे पर आए और बंगाली लहजे से भरी हिंदी में बोले: ‘शशिबाबू…एक पिक्चर बनाएगा [मैं
मैं एक तस्वीर बनाना चाहता हूँ]…मैं तुम्हें चाहता हूँ।’42 शशि तो ज़ाहिर तौर पर बहुत खुश था। उसे पता नहीं था कि उसे दोनों में से किस फिल्म में काम मिलेगा—लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। उसे जो भी मिलता, वह उससे संतुष्ट था।
पता चला कि शशि—जिन्हें रोमांटिक भूमिकाओं के लिए उपयुक्त माना जाता था—को प्रेम पत्र में भूमिका मिल गई। और धर्मेंद्र ने अंततः बंदिनी में सहायक भूमिका निभाई। अगर बिमल ने कास्टिंग उलट दी होती तो क्या होता? अगर धर्मेंद्र ने दृष्टिबाधित अरुण की भूमिका निभाई होती और शशि उस दयालु जेल डॉक्टर की भूमिका में होते जिसका प्यार अधूरा रह जाता? कोई केवल अनुमान ही लगा सकता है कि अभिनेताओं का करियर कितना अलग होता…

खैर, कास्टिंग का फैसला लेने के कुछ समय बाद बिमल ने शशि से पूछा कि वह इस रोल के लिए कितने पैसे मांग रहे हैं। यह एक अजीब सवाल था, लेकिन शशि ने उन्हें बताया कि बी.आर. और यश चोपड़ा उन्हें 'धर्मपुत्र' के लिए 25,000 रुपये दे रहे हैं। एक लेख में शशि लिखते हैं: 'वह हैरान हुए और पूछा, "क्या वे आपको इतना पैसा देंगे?" मैंने कहा, "हां, वे बड़े निर्माता हैं।"'
उन्होंने जवाब दिया, “ठीक है, मैं तुम्हें उतना ही भुगतान करूँगा।”’43 और इसी के साथ, गोलीबारी शुरू हो गई।
प्रेम पत्र एक शांत ढंग से बनी फिल्म है—यह दो मेडिकल छात्रों, अरुण (शशि कपूर) और कविता (साधना) की कहानी है, जो एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं, लेकिन एक प्रेम पत्र से जुड़ी गलतफहमी के कारण उनका रिश्ता टूट जाता है। अरुण की सगाई सरोज (सीमा देव) से हो जाती है, जो अनजाने में कविता की चचेरी बहन है। इससे दिखावे और वास्तविकता, यानी जो दिखता है और जो है, के बीच एक बड़ा संघर्ष शुरू हो जाता है—और कहानी का अंत तब होता है जब अरुण अंधा हो जाता है।
बिमल रॉय गलतफहमियों को सुलझाने में समय लेते हैं—जिसकी वजह से फिल्म थोड़ी लंबी लग सकती है। लेकिन अन्यथा लंबी कहानी को सलिल चौधरी के मधुर संगीत (‘ये मेरे अंधेरे उजाले’) से एक नई जान मिल जाती है।
‘ना होते’, ‘दो अखियां झुकी झुकी’ (अन्य गीतों सहित) जैसे गीतों के साथ-साथ, मुख्य कलाकार बेहद आकर्षक दिखते हैं—बेहतरीन ब्लैक-एंड-व्हाइट सिनेमैटोग्राफी उन्हें हर फ्रेम में जीवंत कर देती है। शशि विशेष रूप से सुंदर लगते हैं, पहले तो अपनी करीने से कटी हुई मूंछों में, और बाद में, जब वे काले चश्मे

पहनकर चलते हैं। लेकिन अभिनेता की अन्य शुरुआती फिल्मों की तरह, प्रेम पत्र बॉक्स ऑफिस पर असफल रही।
हालांकि, इस फैसले से बिमल निराश नहीं हुए। जैसा कि शशि याद करते हैं, बिमल को प्रेम पत्र की असफलता का पछतावा था और वे अक्सर अभिनेता से कहते थे, 'फिर से तुमको लेगा...हम काम करेगा एक साथ।'
हम साथ मिलकर काम करेंगे।] आप अभी भी बिमल रॉय प्रोडक्शंस में हमारे ही एक सदस्य हैं।
अपने वादे के मुताबिक, बिमल ने शशि को एक बार फिर कास्ट किया—इस बार, 47 बेनजीर में, एक
बिमल के बैनर तले बनी और एस. खलील द्वारा निर्देशित इस फिल्म में भी शशि को मिलने वाली फीस को लेकर एक असहज बातचीत हुई। शशि लिखती हैं, 'मैंने [बिमल] से कहा कि मुझे पैसों की ज़रूरत है। मुझे अपने भाइयों या किसी और से कोई आर्थिक सहायता नहीं मिल रही थी, मेरा एक परिवार था, और
अल्टामाउंट रोड स्थित ओलंपस में रहना महंगा था।’48 शशि ने फिर बिमल को बताया कि उन्हें वक्त फिल्म में अभिनय करने के लिए 1,00,000 रुपये मिल रहे हैं—एक बार फिर बी.आर. चोपड़ा के बैनर को ही बेंचमार्क स्थापित करने दिया। शशि याद करते हैं: ‘[बिमल] ने कहा, “मुझे विश्वास नहीं हो रहा,” और मैंने उनसे इसकी जाँच करने को कहा। उन्होंने कहा, “नहीं, मैं करूँगा
आपको वही वेतन मिलेगा…बस इतना ही।
लखनऊ में घटित होने वाली और 'मुस्लिम सामाजिक' शैली की फिल्म बेनज़ीर में, शशि अनवर के रूप में अशोक कुमार के नवाब के छोटे भाई की भूमिका निभाते हैं। कहानी यह है कि दोनों भाई अलग-अलग समय पर बेनज़ीर से प्यार करने लगते हैं, जो एक थिएटर अभिनेत्री

और नर्तकी हैं, जिनका किरदार मीना कुमारी ने निभाया है। जब दोनों भाइयों के एक ही महिला के साथ संबंध उजागर होते हैं, तो ईर्ष्या और गलतफहमियां पैदा हो जाती हैं। बेनज़ीर एक खूबसूरती से गढ़ी गई कहानी है, और बिमल रॉय के दूसरे पसंदीदा संगीतकार, एस.डी. बर्मन (उनके पसंदीदा सलिल चौधरी थे), 'दिल' जैसे गीतात्मक गीतों के साथ इसे और भी अधिक काव्यात्मक बना देते हैं।
'मैं एक जाने तमन्ना' (50) में शशि के अनवर मोहम्मद रफी की आवाज में गाते हैं। बेनजीर फिल्म बनने के समय तक, शशि स्पष्ट रूप से फिल्मों के लिए रोमांटिक गाने गाने में सहज हो चुके थे।
भले ही बेनजीर का भी वही हश्र हुआ जो प्रेम पात्र का हुआ था, लेकिन शशि की युवा सूरत, उसकी मुस्कान और यहां तक कि उसके दो टेढ़े-मेढ़े दांत भी, जो मुस्कुराते समय मनमोहक ढंग से बाहर झांकते थे, हमेशा याद रखे जाएंगे।
शशि को 1960 के दशक के अंत में एक अप्रिय परिस्थिति में फंस जाने पर सिद्धांतों से युक्त बिमल की विशेष रूप से सराहना हुई। निर्माता एन.सी. सिप्पी ने उन्हें एक भूमिका निभाने के लिए अनुबंधित किया था।
51 आनंद में मुख्य भूमिका—लेकिन जैसा कि हम जानते हैं, फिल्म में राजेश खन्ना मुख्य किरदार में हैं और अमिताभ बच्चन सहायक भूमिका में हैं। बीच में क्या हुआ? शशि ने द संडे गार्जियन के रिपोर्टर को बताया: 'हां, मुझे [आनंद में एक भूमिका की पेशकश की गई थी]। लेकिन जिस दिन मैं शूटिंग के लिए गया, मुझे बताया गया कि मेरी ज़रूरत नहीं है, इसलिए मैं वापस आ गया। मैंने निर्माता एन.सी. सिप्पी को अपनी साइनिंग राशि लौटा दी और मैं अच्छी तरह समझता था कि हृषिकेश
मुखर्जी कभी भी बिमल रॉय जितने नेक इंसान नहीं थे।

□□□□□

1. 1951, Awara, dir. Raj Kapoor, prod. Raj Kapoor, starring Prithviraj Kapoor, Raj Kapoor, Nargis, Shashi Kapoor.
2. □□□□□ □□□□□□, □□ □□□□□□: □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ (□□□ □□□□□□□□)
□□□□□□: □□□□, 2002), □□. 54.
3. 1961, Char Diwari, dir. Krishan Chopra, prod. Jagan Prasad Sharma, starring Shashi Kapoor, Nanda, Manmohan Krishna.
4. 1959, Dhool Ka Phool, dir. Yash Chopra, prod. B.R. Chopra, starring Mala Sinha, Nanda, Rajendra Kumar.
5. 1960, □□□□□, □□□□□□□□ □□.□□. □□□□□□, □□□□□□□□ □□.□□. □□□□□□, □□□□□□
Rajendra Kumar, Ashok Kumar, Nanda.
6. □□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ "□ □□□□□□: □ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□" □□□ □□□□□□□
□□□□□□ (□□ □□□□□□: □□□□□□□, 2005), □□. 230.
7. ‘Kaise Manaoon Piyawa’, lyr. Shailendra, comp. Salil □□□□□, □□□□□□ □□□□□□
8. 1962, Mehndi Lagi Mere Haath, dir. Suraj Prakash, prod. Hiren Khera, starring Ashok Kumar, Nanda, Shashi Kapoor.
9. 1965, Mohabbat Isko Kahete Hain, dir. Akhtar Mirza, starring Nanda, Shashi Kapoor, Ramesh Deo.
10. 1965, Jab Jab Phool Khile, dir. Suraj Prakash, prod. Chetan K.,

□□□□□ □□□ □□□□, □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□
11. ‘Pardesiyon Se Na Ankhiyan Milana’, lyr. Anand Bakshi, comp.
Kalyanji–Anandji, artists Lata Mangeshkar, Mohammed Rafi.
12. ‘Na Na Karte Pyar’, lyr. Anand Bakshi, comp. Kalyanji–Anandji,
□□□□□□ □□□□□□□ □□□□
13. 1969, Pyar Ka Mausam, dir. Nasir Hussain, prod. Nasir Hussain,
starring Shashi Kapoor, Asha Parekh, Bharat Bhushan.
14. 1966, Pyar Kiye Jaa, dir. C.V. Sridhar, starring Shashi Kapoor,
Kalpana, Mumtaz.
15. ‘Kehne Ki Nahin Baat’, lyr. Rajendra Krishan, comp. Laxmikant–
Pyarelal, artist Mohammed Rafi.
16. 1968, Haseena Maan Jayegi, dir. Prakash Mehra, prod. S.M.
□□□□□□, □□□ □□□□, □□□□□, □□□□ □□□□ □□□□□□□
17. ‘Chale The Saath Milke’, lyr. Akhtar Romani, comp. Kalyanji–Anandji, artist Mohammed Rafi.
18. ‘Bekhudi Main Sanam’, lyr. Akhtar Romani, comp. Kalyanji–
Anandji, artists Mohammed Rafi, Lata Mangeshkar.
19. ‘Suno Suno’, lyr. Prakash Mehra, comp. Kalyanji–Anandji, artist
□□□□□□□ □□□□
20. 1961, Junglee, dir. Subodh Mukherji, prod. Subodh Mukherji,

starring Shammi Kapoor, Saira Banu, Shashikala.
21. 1962, Professor, dir. Lekh Tandon, prod. F.C. Mehra, starring Shammi Kapoor, Kalpana, Lalita Pawar.
22. 1965, Janwar, dir. Bhappi Sonie, prod. S. Hardip, starring शम्मी कपूर, राजश्री, रहमान।
23. 1961, धर्मपुत्र, निर्देशक यश चोपड़ा, निर्माता बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत
Mala Sinha, Shashi Kapoor, Rehman.
24. राहेल ड्वायर, यश चोपड़ा: भारतीय सिनेमा के पचास वर्ष (नया संस्करण)
दिल्ली: रोली, 2002), पृ. 54.
25. ‘Bhool Sakta Hai Bhala Kaun’, lyr. Sahir Ludhianvi, comp. Dutta
नायक, कलाकार महेंद्र कपूर।
26. राहेल ड्वायर, यश चोपड़ा: भारतीय सिनेमा के पचास वर्ष (नया संस्करण)
दिल्ली: रोली, 2002), पृ. 226.
27. 1965, समय, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत बलराज साहनी, शर्मिला टैगोर, शशि कपूर।
28. 'ऐ मेरी ज़ोहरा जबीं', गीत। साहिर लुधियानवी, कंप. रवि
शंकर शर्मा, कलाकार मन्ना डे।
29. 1964, Kashmir Ki Kali, dir. Shakti Samanta, prod. Shakti सामंता, अभिनीत शम्मी कपूर, शर्मिला टैगोर, प्राण।
30. 1959, Apur Sansar, dir. Satyajit Ray, prod. Satyajit Ray, starring
सौमित्र चटर्जी, शर्मिला टैगोर, आलोक चक्रवर्ती।

31. 1962, Prem Patra, dir. Bimal Roy, prod. Bimal Roy, starring Shashi Kapoor, Sadhana, Seema Deo.
32. ‘Isharon Isharon Main Dil Lenewale’, lyr. S.H. Bihari, comp. O.P. Nayyar, artists Mohammed Rafi, Asha Bhosle.
33. ‘Din Hai Bahar Ke’, lyr. Sahir Ludhianvi, comp. Ravi, artists आशा भोसले, महिंद्रा कपूर।
34. 1967, Aamne Saamne, dir. Suraj Prakash, prod. Suraj Prakash,
इसमें शशि कपूर, शर्मिला टैगोर और प्रेम चोपड़ा ने अभिनय किया है।
35. 1970, Suhana Safar, dir. Vijay, prod. R.C. Kumar, starring Shashi
कपूर, शर्मिला टैगोर, ललिता पवार।
36. 1973, Aa Gale Lag Jaa, dir. Manmohan Desai, prod. A.K. नाडियाडवाला, शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, शत्रुघ्न सिन्हा अभिनीत।
37. 1986, नई दिल्ली टाइम्स, निर्देशक रमेश शर्मा, निर्माता पी.के. तिवारी,
starring Shashi Kapoor, Sharmila Tagore, Om Puri.
38. 1953, Do Bigha Zamin, dir. Bimal Roy, prod. Bimal Roy, starring
Balraj Sahni, Nirupa Roy, Nazir Hussain.
39. 1958, Madhumati, dir. Bimal Roy, prod. Bimal Roy, starring दिलीप कुमार, वैजयंतीमाला, जॉनी वॉकर।
40. 1959, Sujata, dir. Bimal Roy, prod. Bimal Roy, starring Nutan,

सुनील दत्त, ललिता पवार।
41. 1963, बंदिनी, दिर. बिमल रॉय, प्रो. नूतन अभिनीत बिमल रॉय, Ashok Kumar, Dharmendra.
42. शशि कपूर द्वारा उद्धृत, ‘दादा की यादें’, बिमल रॉय: ए
मैन ऑफ साइलेंस, रिंकी भट्टाचार्य द्वारा संपादित (नई दिल्ली: हार्परकॉलिन्स, 1994), पृष्ठ 136।
43. वही, पृष्ठ 137.
44. ‘Yeh Mere Andhere Ujale Na Hote’, lyr. Rajinder Krishan, comp.
सलिल चौधरी, कलाकार लता मंगेशकर, तलत महमूद।
45. ‘Do Akhiyan Jhuki Jhuki’, lyr. Rajinder Krishan, comp. Salil चौधरी, कलाकार लता मंगेशकर, मुकेश।
46. शशि कपूर द्वारा उद्धृत, ‘दादा की यादें’, बिमल रॉय: ए
मैन ऑफ साइलेंस, रिंकी भट्टाचार्य द्वारा संपादित (नई दिल्ली: हार्परकॉलिन्स, 1994) पृष्ठ 138।
47. 1964, Benazir, dir. S. Khalil, prod. Bimal Roy, starring Ashok कुमार, मीना कुमारी, शशि कपूर।
48. शशि कपूर, ‘दादा की यादें’, बिमल रॉय: एक व्यक्ति
साइलेंस, रिंकी भट्टाचार्य द्वारा संपादित (नई दिल्ली: हार्परकॉलिन्स, 1994), पृष्ठ 138।
49. वही।
50. ‘Dil Mein Ek Jaane Tamanna’, lyr. Shakeel Badayuni, comp. S.D.
बर्मन, कलाकार मोहम्मद रफी।
51. 1971, Anand, dir. Hrishikesh Mukherjee, prod. Hrishikesh

Mukherjee, N.C. Sippy, starring Rajesh Khanna, Amitabh Bachchan, Sumita Sanyal.
52. रंजन दास गुप्ता, ‘शम्मी एक बेहतर रोमांटिक हीरो थे: शशि’ कपूर’, द संडे गार्जियन, 22 मार्च 2014।
3

चलो अमेरिका

शशि, व्यापारी-हाथी दांत और रूक्स

जेम्स आइवरी को यह बात स्पष्ट रूप से याद है। नवंबर 1961 में, वह सर्दियों से तर-बहुल बॉम्बे पहुंचे थे, और वहां से गुजरात के एक छोटे से गांव जा रहे थे, जहां उन्होंने योजना बनाई थी... मानवविज्ञानी गीताल स्टीड द्वारा लिखित '1 देवगर' नामक एक फीचर फिल्म की शूटिंग करें।
न्यूयॉर्क में रहने वाले उनके मित्र इस्माइल मर्चेंट इसकी निर्माण योजना बना रहे थे और सिडनी मेयर्स निर्देशक बनने वाले थे। इस्माइल मुख्य भूमिकाओं में शशि कपूर और युवा फ्रांसीसी- भारतीय अभिनेत्री लीला नायडू को लेना चाहते थे और अनुभवी अभिनेत्री दुर्गा खोटे को बुजुर्ग मां की भूमिका निभाने के लिए चुनना चाहते थे।

लेकिन सबसे पहले, इस्माइल चाहते थे कि जेम्स, शशि से मिलें। इसलिए, एक शाम, जेम्स और इस्माइल क्रिकेट क्लब ऑफ इंडिया में एक फिल्म समारोह के लिए रवाना हुए। जेम्स याद करते हुए बताते हैं, 'मुझे याद है कि मैं उस लंबे गलियारे से नीचे जा रहा था - मानो एक तंबू जैसा गलियारा हो - जहाँ शशि के होने की उम्मीद थी। लेकिन ठीक उसी समय, शशि और जेनिफर बाहर आए। तो, हमारी मुलाकात वहीं, उस बंद गलियारे में हुई। जेनिफर बहुत ही मिलनसार और मेहमाननवाज थीं। इस्माइल ने शशि को मेरे बारे में बताया था, और अभिनेता हमेशा की तरह दोस्ताना थे। यह हमारी पहली मुलाकात थी - तब वह लगभग तेईस साल के रहे होंगे - और मैं उनकी असाधारण सुंदरता को देखकर दंग रह गया।'
इससे पहले, कुछ असामान्य परिस्थितियों में, इस्माइल की मुलाकात शशि से हुई थी; एक ऑस्ट्रेलियाई महिला के साथ, जो एक विज्ञापन एजेंसी में काम करती थी, वह उस पार्टी में बिन बुलाए पहुँच गए थे जो युवा अभिनेता ने अपने घर पर कुछ फिल्म पत्रकारों के लिए आयोजित की थी। इस्माइल—जिनका 2005 में एक संक्षिप्त बीमारी के बाद निधन हो गया—अपनी आत्मकथा, 'माई पैसेज फ्रॉम इंडिया' में लिखते हैं:

मुझे समय बर्बाद करने का कोई कारण नहीं दिखा। मैंने कहा, 'मैं इस्माइल मर्चेंट हूँ। मैं अमेरिका से फिल्में बनाने आया हूँ और आप उनमें अभिनय करेंगी।' [… शशि] मेरे इस प्रस्ताव से कुछ हैरान दिखीं, लेकिन अंत तक
उस शाम मैंने उसे अपने उत्साह से भर दिया था। 2

इस्माइल मर्चेंट, जेनिफर केंडल कपूर और चिंतनशील शशि कपूर (बाएं से दाएं)।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

शशि ने पुष्टि की: ‘[इस्माइल] ने मेरे घर में घुसते ही मुझ पर हमला करना शुरू कर दिया। खैर, जब वह अंदर आया, तो वहाँ बहुत सारे लोग थे [...] और वे आपस में बातचीत कर रहे थे। [लेकिन] मिस्टर मर्चेंट को जल्दी थी यह जानने की।
जब वह मुझे अपने निर्देशक के साथ देख सकता था।

उस समय शशि ने दो फीचर फिल्मों में मुख्य भूमिका निभाई थी।
चार दीवारी 4 5 और धर्मपुत्र। उनका रिकॉर्ड कुछ खास अच्छा नहीं था—दोनों फिल्में बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप हो गई थीं। लेकिन इस्माइल—जो अपने जोशीले, सकारात्मक और कुशल सेल्समैन के लिए जाने जाते थे—शशि को दुनिया भर के सपने दिखाने के लिए तैयार थे: ‘मैंने कहा, “यह आपके लिए एक अंतरराष्ट्रीय स्टार बनने का मौका है। यह आपके लिए एक शानदार भूमिका है।” [शशि] पूरी तरह से
आश्चर्यचकित […] हमने एक अविश्वसनीय तालमेल स्थापित किया।
जब शशि की मुलाकात उस तंबू वाले गलियारे में इस्माइल और जेम्स दोनों से हुई, तो उन्हें देवगर के लिए उनकी याचिकाओं का जवाब देना जरूरी लगा। शशि याद करते हुए कहते हैं, 'मैंने कहा, यह फैसला लेने के लिए सही जगह नहीं है। लेकिन वे जल्दी फैसला चाहते थे।'
निर्णय। और [इसलिए] मैंने कहा, ठीक है, ठीक है, मैं इसे करूँगा।'7 इसी बीच, इस्माइल कहानी के एक और पहलू को याद करते हैं—कि शायद शशि को लगा था कि अमेरिकी निर्माता उन्हें अच्छी खासी रकम देंगे: 'उन्हें यह एहसास नहीं था कि इतनी बड़ी रकम उनके बस की बात नहीं थी।'
कार्ड।’8
हुआ यूं कि देवगर फिल्म कभी बन ही नहीं पाई; इस्माइल को फिल्म के लिए जो पैसा जुटाना था, वह नहीं मिल पाया। लेकिन निर्माता ने हार मानने के बजाय एक और योजना पर काम करना शुरू कर दिया। एमजीएम (मेट्रो-गोल्डविन-मेयर) के एक हॉलीवुड पटकथा लेखक की सिफारिश पर, इस्माइल ने जर्मन लेखिका रूथ प्रॉवर झबवाला की एक

किताब पढ़ी थी, जो अपने भारतीय वास्तुकार पति के साथ दिल्ली में रहती थीं।
'द हाउसहोल्डर' की कहानी और भारतीय जीवन की बारीकियों को बखूबी दर्शाने की उसकी क्षमता ने उन्हें मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने यह किताब जेम्स को दी, जो उससे उतना ही प्रभावित हुए। तुरंत ही दोनों ने रूथ से संपर्क किया, जो फिल्म निर्माताओं से बात करने में हिचकिचाती थीं, इसलिए उन्होंने फोन पर अपनी सास होने का नाटक किया। आखिरकार, उनका यह नाटक नाकाम हो गया और कुछ हिचकिचाहट के बाद, वह उनसे मिलने के लिए राजी हो गईं। ऐसा माना जा सकता है कि इस्माइल और जेम्स ने अपनी बातों से उन्हें प्रभावित कर लिया होगा, क्योंकि उनके पति की इस चेतावनी के बावजूद कि दोनों धोखेबाज फिल्म निर्माता लग रहे हैं, रूथ ने न केवल उन्हें अपने उपन्यास पर आधारित फिल्म बनाने की अनुमति दी, बल्कि पटकथा लिखने के लिए भी सहमत हो गईं।
देवगर की बेहतरीन स्टार कास्ट को छोड़ने के लिए अनिच्छुक इस्माइल और जेम्स ने शशि, लीला और दुर्गा को एक बार फिर नए प्रोजेक्ट में शामिल करने का फैसला किया। लेकिन, अभिनेताओं को अंतिम रूप देने से पहले ही, रूथ ने एक चिंता व्यक्त की। उन्हें लगा कि शशि, द हाउसहोल्डर में बेचारे स्कूल शिक्षक प्रेम सागर की भूमिका निभाने के लिए बहुत ज्यादा आकर्षक थे। जेम्स ने मुझे बताया, 'अगर आप दिल्ली के किसी दयनीय स्कूल में एक गरीब, संघर्षरत शिक्षक पर फिल्म बनाना चाहते हैं, तो आप शायद शशि जैसे शानदार व्यक्ति को कास्ट नहीं करेंगे। वह एक महान नौजवान थे।' जब शशि को रूथ की आपत्तियों के बारे में पता चला—कि वह इस भूमिका के लिए बहुत आकर्षक और सुंदर हैं—तो उन्होंने एक अनोखा उपाय निकाला। वह कहते हैं, “मैं दिल्ली के एक बहुत प्रसिद्ध नाई

की दुकान पर गया और मैंने कहा, ‘मुझे कोई सोफिस्टिकेटेड हेयरकट नहीं चाहिए। मुझे एक आम, निम्न-मध्यम वर्ग के हिंदी शिक्षक जैसा हेयरकट चाहिए—एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो बहुत युवा और अनुभवहीन हो। और मैं ऐसा दिखना चाहता हूँ जैसे...
वह।”’10
इसके बाद, जब शशि, रूथ से मिलने आया—उसके घने बाल करीने से कटे हुए थे और एक तरफ़ की मांग सलीके से निकाली हुई थी—और उसने प्रेम सागर के अपने काल्पनिक किरदार की तरह बात की, तो रूथ उसे एक नए नज़रिए से देखने से खुद को रोक नहीं पाया। ‘तो इस तरह मैंने शुरुआत की’
शशि कहती हैं, '[मेरा जुड़ाव] मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस के साथ था।'11
शशि को जेम्स से घुलमिलने में ज्यादा समय नहीं लगा। वह कहते हैं, 'मुझे जिम (जैसा कि जेम्स को दोस्त कहते थे) के साथ काम करने में बहुत मज़ा आया, क्योंकि उन्होंने मुझे अपने तरीके से काम करने, अपनी प्रतिभा, अपनी बुद्धिमत्ता का उपयोग करने का आत्मविश्वास दिया।'
उनकी फिल्मों में किरदारों को चित्रित करने के लिए मेरी संवेदनशीलता।
जेम्स का कहना है कि शशि अपने किरदार में पूरी तरह डूब जाते थे और अपने जीवन के अनुभवों, भावनाओं और झुकावों को उस किरदार के साथ सहजता से जोड़ लेते थे, इसीलिए उन्हें उनके साथ काम करने में आनंद आता था: 'शशि के साथ काम करना बहुत आसान था। वे निर्देशों का अच्छी तरह पालन करते थे। और किसी भी अच्छे अभिनेता की तरह, वे कभी-कभी मुझे किसी दृश्य को दूसरे तरीके से करने का विकल्प देते थे—जिसे मैं स्वीकार करता था, अगर वह उचित

लगता था, अगर वह फिल्म के बारे में मेरे विचार से मेल खाता था और अगर संवाद में कोई बहुत बड़ा बदलाव नहीं होता था। शशि निश्चित रूप से, और हर जगह के सभी अभिनेता, संवादों के साथ थोड़ा बहुत फेरबदल करते हैं—वे सोचते हैं कि किसी पंक्ति को कहने का थोड़ा बेहतर तरीका हो सकता है, या कोई एक शब्द दूसरे से बेहतर होगा—और मैं उनकी बात मान लेता हूँ। हमेशा नहीं, लेकिन कभी-कभी, हाँ।'

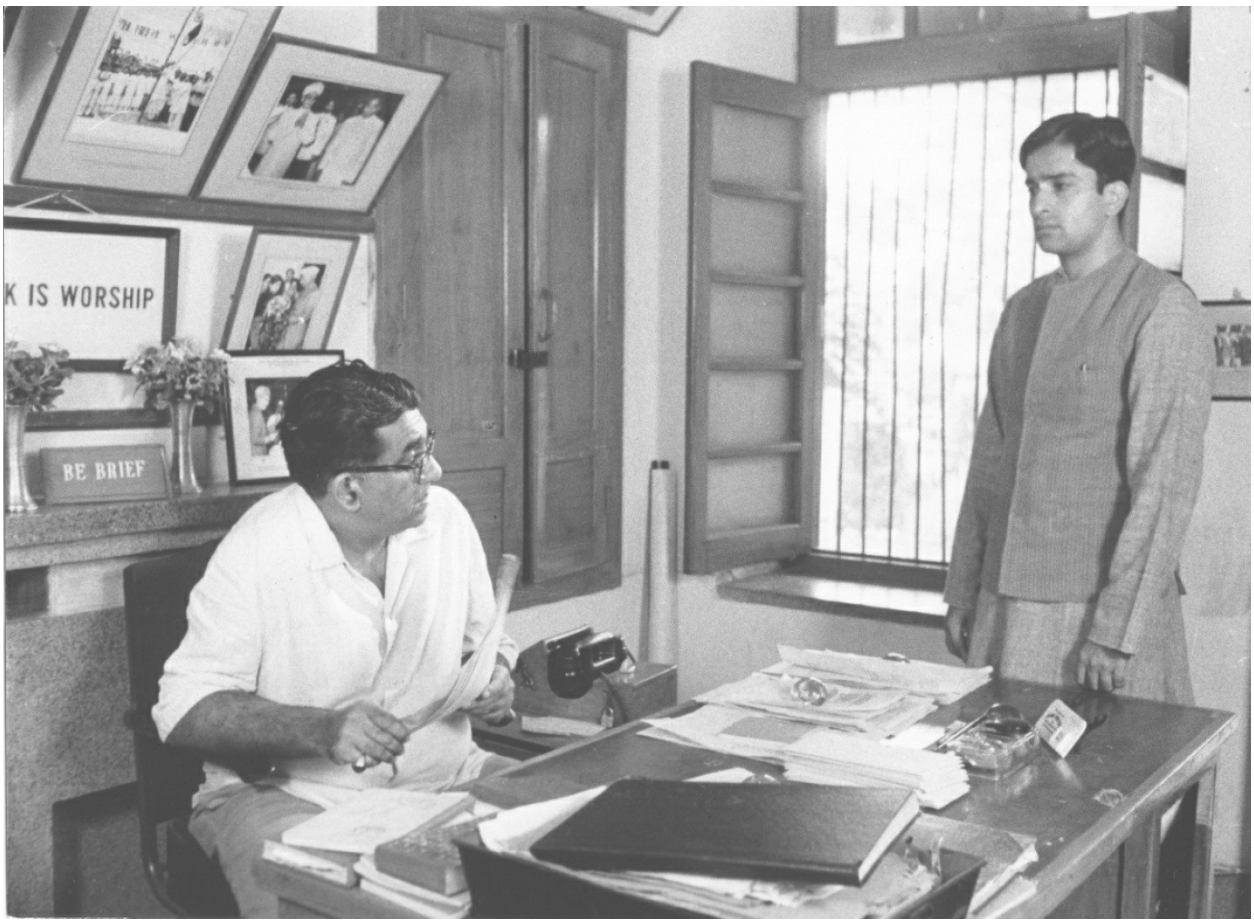

1963, द हाउसहोल्डर। शशि कपूर, प्रेम सागर के रूप में, एक ऐसे हेयरकट के साथ जो उन्हें ऐसा दिखाता है जैसे वे
दुनिया से ऊबे हुए एक व्यक्ति की मुलाकात प्रिंसिपल श्री खन्ना से होती है, जिनका किरदार दिवंगत पत्रकार रोमेश ने निभाया था। थापर। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

जेम्स का यह भी मानना है कि शशि की रंगमंच की पृष्ठभूमि और उनके पिता, फिर ससुर के मार्गदर्शन में वर्षों के कठोर प्रशिक्षण ने उनके अभिनय को सूक्ष्मता प्रदान की। जेम्स कहते हैं, 'वह पूरी तरह से स्वाभाविक थे। उनके अभिनय में कोई अतिरंजित शैली नहीं थी। मैंने उनकी कुछ हिंदी व्यावसायिक फिल्में देखी हैं, और

उनमें वह बिल्कुल भी अतिरंजित नहीं थे। उनमें संयम की भावना थी।' जेम्स आगे कहते हैं, 'शशि को शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त था [...] एक ऐसी पृष्ठभूमि जिसका लाभ वह एक युवा अभिनेता के रूप में उठा सकते थे, जो मुंबई फिल्म जगत के अधिकांश युवा भारतीय अभिनेताओं के पास नहीं होती। और वह अंग्रेजी भी बोलते थे।
बहुत अच्छा।’13
इसी बीच, शशि को इस्माइल में एक आजीवन मित्र और एक ऐसा सहकर्मी मिला जिसकी वह प्रशंसा भी कर सकते थे और उसे चिढ़ा भी सकते थे: 'मेरे लिए इस्माइल मर्चेंट एक मेहनती और अच्छे निर्माता हैं। मुझे नहीं लगता कि कोई उन्हें बुरा निर्माता कह सकता है। लेकिन जब उन्हें पता होता है कि उनके पास पैसे नहीं हैं, तो वे कभी-कभी कबूतर की तरह व्यवहार करते हैं। [...] आप जानते हैं, जब आप किसी कबूतर पर बंदूक तानते हैं [...] तो कबूतर अपनी आँखें बंद कर लेता है, सोचता है कि सब कुछ खत्म हो जाएगा। तो इस्माइल भी कभी-कभी कबूतर की तरह सोचते और करते हैं!' शशि एक शरारती मुस्कान के साथ आगे कहते हैं, 'तो, जब उनके पास पैसे नहीं होते, तब भी वे फिल्म बनाते हैं। जब उनके पास डेट्स नहीं होतीं, तब भी वे अभिनेताओं को अपने साथ काम करने के लिए राजी कर लेते हैं। यह आश्चर्यजनक है कि वे कैसे लगातार काम करते रहते हैं।'
इसे!’14
इस्माइल हल्के-फुल्के अंदाज़ में अपनी बाद की बुराइयों के लिए शशि को दोषी ठहराते हैं। 'द हाउसहोल्डर' के संपादन के दौरान, शशि ने ही शराब से परहेज़ करने वाले इस्माइल को पहली बार शराब का स्वाद चखने के लिए प्रेरित किया था। इस्माइल अपनी आत्मकथा में लिखते हैं:

अमेरिका में तीन साल रहने के बाद भी मैंने कभी शराब नहीं पी थी और शशि ने तय किया कि अब मुझे जीवन की बेहतर चीजों से परिचित कराने का समय आ गया है। 'अगर तुमने कभी शराब का स्वाद नहीं चखा, तो तुमने अपना जीवन व्यर्थ कर दिया,' शशि ने कहा।
मुझे। ‘तुम्हें मेरे साथ एक गिलास पीना होगा।’ उसने मुझे पूरी तरह से भ्रष्ट कर दिया।15

शशि का इस्माइल के साथ घनिष्ठ संबंध और जेम्स के प्रति उनका स्नेह, उनके साथ उनके कामकाजी संबंधों पर सीधा प्रभाव डालता था। उन्होंने मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस बैनर के तहत बनी सात फिल्मों में अपनी अपार प्रतिभाओं का संयोजन किया:
द हाउसहोल्डर, शेक्सपियर वॉलह 16 17, बॉम्बे टॉकी, हीट एंड डस्ट — ये सभी फिल्में जेम्स आइवरी द्वारा निर्देशित हैं—और तीन अन्य निर्देशकों द्वारा निर्देशित तीन फिल्में—
धोखेबाज 18 19 20, हिरासत में और साइड स्ट्रीट।

शशि कपूर अपने दोस्त और निर्देशक जेम्स आइवरी के साथ कुछ समय बिताते हुए काफी खुश नजर आ रहे हैं।
न्यूयॉर्क शहर में प्लाजा होटल के सामने पुलित्जर फाउंटेन। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

गृहस्वामी (1963)

फिल्म 'द हाउसहोल्डर' की शूटिंग दिल्ली में हुई, ज्यादातर पुराने जमाने के दरियागंज और ऐतिहासिक रूप से समृद्ध महरौली में। जब फिल्म की शूटिंग शुरू हुई, तो भीड़ मोहल्लों में उमड़ पड़ी, लोग बेतहाशा हाथ हिलाते हुए ऑटोग्राफ मांग रहे थे—खासकर

शशि कपूर के। जेम्स आइवरी मानते हैं, 'वह पहले से ही काफी मशहूर थे, शायद इसलिए क्योंकि राज कपूर और शम्मी कपूर उनके भाई थे।' 'द हाउसहोल्डर' में शशि द्वारा निभाए गए प्रेम सागर के किरदार पर दुनिया भर की समस्याओं का बोझ है - एक खूबसूरत लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति वाली पत्नी; एक दखलंदाजी करने वाली मां जो उसके स्नेह के लिए उसकी पत्नी से प्रतिस्पर्धा करती है; और एक ऐसे स्कूल में हिंदी शिक्षक के रूप में कम वेतन वाली नौकरी जहां उसे अपने छात्रों, सहकर्मियों या प्रधानाचार्य से कोई सम्मान नहीं मिलता है।
फिर भी, रूथ प्रॉवर झबवाला के लेखन और जेम्स के निर्देशन के साथ, 'द हाउसहोल्डर' अपने नायक के अस्तित्व संबंधी संकटों से बोझिल होने के बजाय एक हास्यप्रद और मनमोहक फिल्म बन जाती है। शायद, पहली बार शशि को अपना हास्य अभिनय दिखाने का मौका मिलता है— जैसे कि एक दृश्य में, जब वह और उनकी पत्नी स्कूल के प्रधानाचार्य की चाय पार्टी में मेहमान होते हैं; लीला नायडू (इंदु के रूप में) अपनी प्लेट भर लेती है और खाना चट कर जाती है, जबकि प्रेम उसे धीरे खाने के लिए समझाने की पूरी कोशिश करता है। (विडंबना यह है कि दबंग प्रधानाचार्य—दिवंगत पत्रकार रमेश थापर द्वारा अभिनीत—के वास्तविक जीवन के बेटे वाल्मिक थापर की शादी कई साल बाद शशि की वास्तविक जीवन की बेटी संजना कपूर से होती है।)

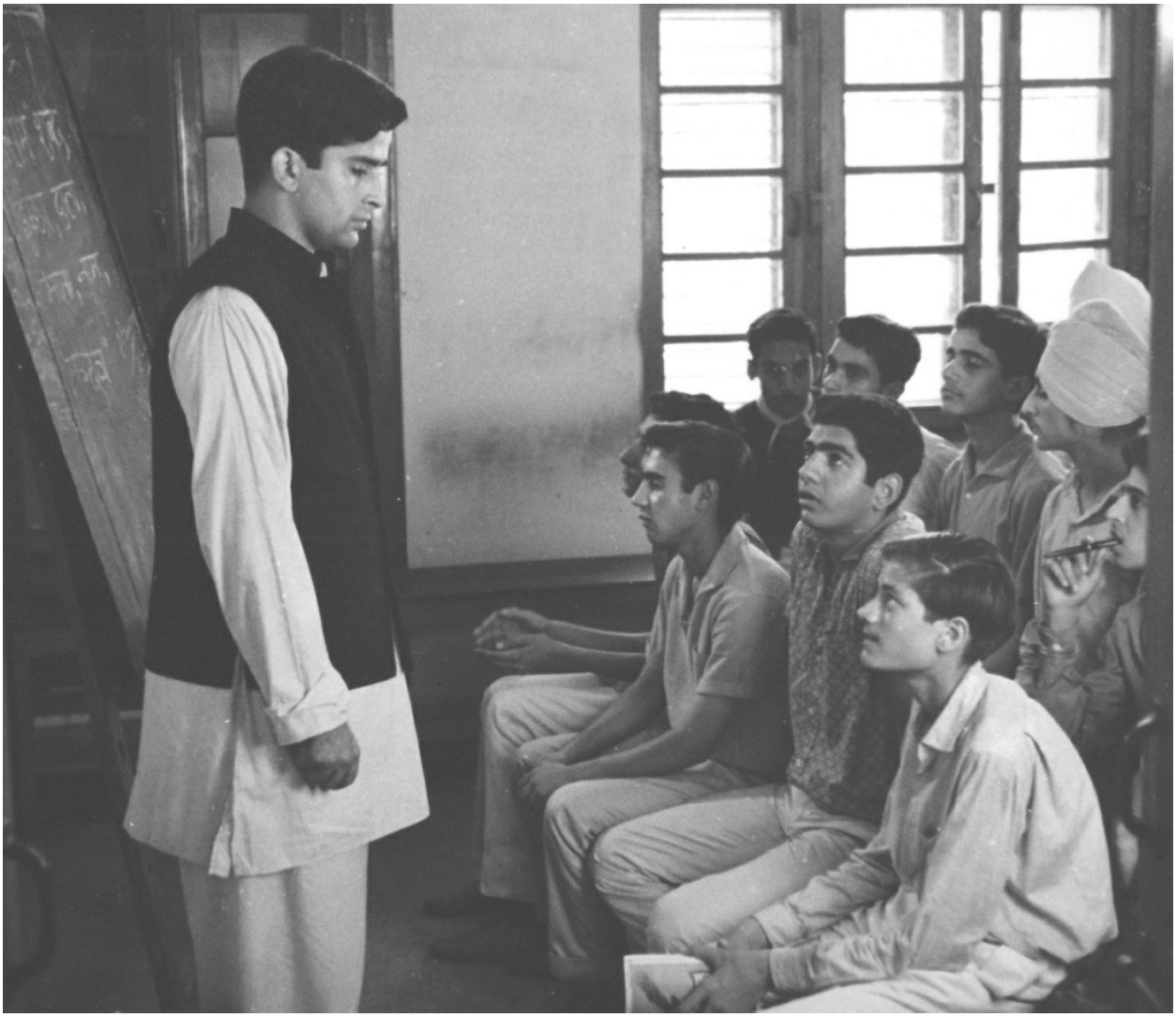

1963, द हाउसहोल्डर। शशि कपूर (एक परेशान शिक्षक की भूमिका में) अपने छात्रों के साथ।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

1963, द हाउसहोल्डर। शशि कपूर के साथ दुर्गा खोटे, जो एक चिड़चिड़ी और अधिकार जताने वाली महिला की भूमिका निभाती हैं।
माँ। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

1963, द हाउसहोल्डर। शशि कपूर द्वारा अभिनीत प्रेम सागर, अपने कुछ मित्र अमेरिकियों के साथ।
एक अमेरिकी महिला ने उलझन में पड़े प्रेम से पूछा, 'आप किस तरह का योग करते हैं?'
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

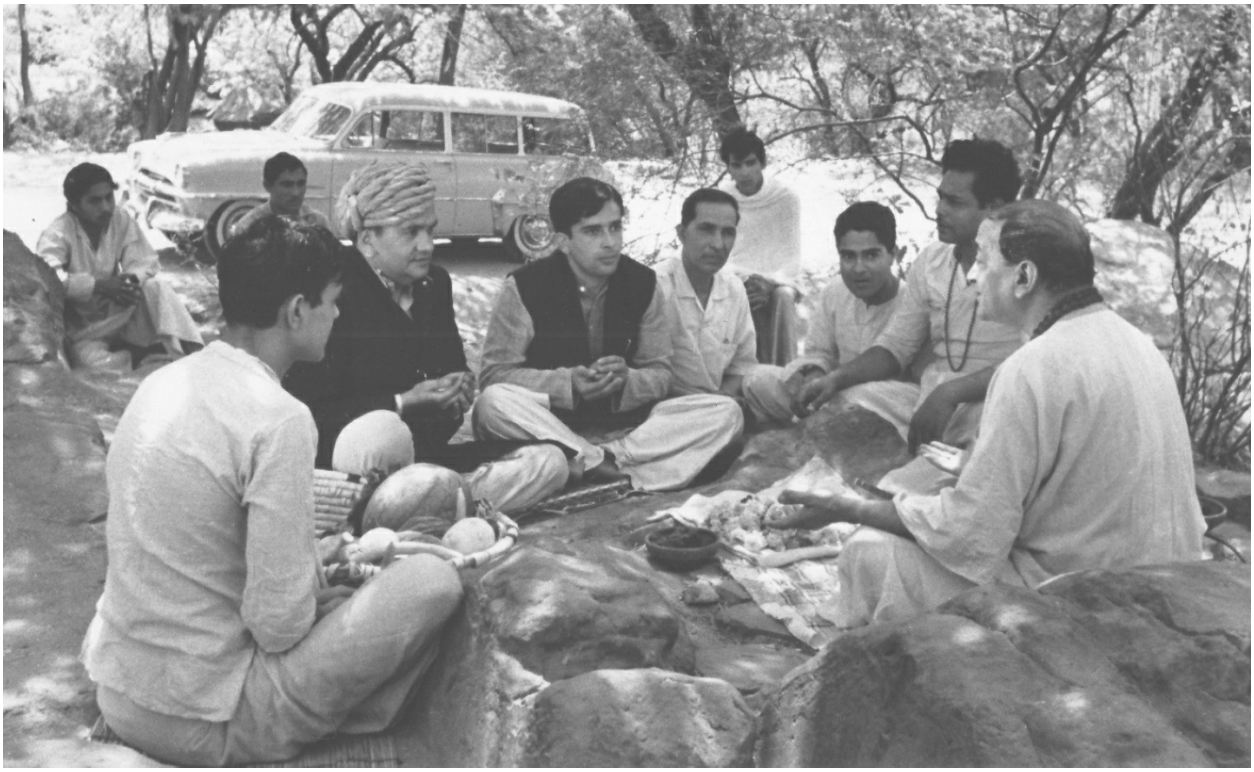

1963, द हाउसहोल्डर। शशि कपूर, एक परेशान गृहस्थ के रूप में, सलाह लेने के लिए एक स्वामी के पास जाते हैं।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

1963, द हाउसहोल्डर। शशि कपूर अपनी पत्नी की भूमिका निभा रही खूबसूरत लीला नायडू को देख रहे हैं।
नींद—कोमलता का एक दुर्लभ क्षण। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

इस दृश्य में, और अन्य दृश्यों में भी, शशि, भले ही सादगीपूर्ण दिखने की कोशिश करता है, बेहद आकर्षक लगता है। लीला हमेशा की तरह बेहद खूबसूरत है, और दुर्गा खोटे का किरदार भी मंत्रमुग्ध कर देता है, जब वह अपनी बहू को घूरती है और उस पर व्यंग्य करती

है। तीनों कलाकारों के शानदार अभिनय से फिल्म में जान आ जाती है।
हालांकि, इस बेहतरीन फिल्म को बनाना आसान नहीं था। हमेशा की तरह, पैसा ही सबसे बड़ी बाधा थी। फिल्म बहुत कम बजट में बन रही थी—देवगर के लिए जो थोड़ा-बहुत पैसा इकट्ठा हुआ था, वही द हाउसहोल्डर बनाने में लगा दिया गया; जेम्स के पिता और इस्माइल मर्चेंट के पिता ने भी निर्माण लागत में कुछ योगदान दिया; और घरेलू दृश्यों की शूटिंग के लिए इस्माइल के एक दोस्त का घर किराए पर लिया गया। लेकिन संसाधन जल्द ही खत्म हो गए। कुछ समय के लिए शूटिंग पूरी तरह रोकनी पड़ी। आखिरकार, बहुत कम पैसे में काम कर रहे शशि और रूथ ने अपनी फीस स्थगित करने पर सहमति जताई। इसके साथ ही, कुछ निवेशकों के समय पर हस्तक्षेप से द हाउसहोल्डर को पूरा करने में मदद मिली।
अगर 'द हाउसहोल्डर' को तमाम आर्थिक चुनौतियों के बावजूद भाग्यशाली माना जाता है, तो इसका श्रेय महान फिल्म निर्माता सत्यजीत रे के अप्रत्याशित हस्तक्षेप को जाता है। जेम्स की मुलाकात सत्यजीत रे से कलकत्ता यात्रा के दौरान हुई थी; संयोग से बंगाली संगीत के उस्ताद सत्यजीत रे ने उनकी एक लघु फिल्म देखी थी और उन्हें वह पसंद आई थी। सत्यजीत रे ने जेम्स और इस्माइल का परिचय अपने छायाकार सुब्रता मित्रा से कराया; उन्होंने इस प्रतिभाशाली छायाकार को जेम्स और इस्माइल को सौंप दिया, जिन्होंने 'द हाउसहोल्डर' की शूटिंग की और शानदार ब्लैक एंड व्हाइट मोंटाज के साथ इसे एक बेदाग रूप दिया। इसके अलावा, सत्यजीत रे ने 'द हाउसहोल्डर' के संगीत निर्माण में भी हाथ बटाया—सितार वादक अली अकबर खान की मदद ली—और जब जेम्स और इस्माइल ने उन्हें फिल्म का एक रफ कट दिखाया, तो उन्होंने अपने

संपादक दुलल दत्ता के साथ मिलकर फिल्म का पुनः संपादन भी किया। जेम्स ने उपन्यासकार अमिताभ घोष के साथ एक साक्षात्कार में बताया है कि यह सब कैसे हुआ।

'द हाउसहोल्डर' की एडिटिंग के बाद भी, यह बहुत अव्यवस्थित और बेढंगी लग रही थी [...] मैंने [रे] से पूछा कि क्या मैं फिल्म उन्हें दिखाने के लिए ला सकता हूँ। उन्होंने कहा, ज़रूर, आ जाओ। तो इस्माइल और मैं ट्रेन में चढ़ गए—हम फिल्म का हिंदी संस्करण, वो सारे डिब्बे, लगभग चौबीस डिब्बे रहे होंगे। हम उस सारी फिल्म के साथ बॉम्बे से कलकत्ता गए। उन्होंने फिल्म देखी और उन्हें पसंद आई—उन्हें लगा कि इसमें कुछ काम करने लायक है। मैंने उनसे पूछा कि क्या वे एडिटिंग के बारे में कोई सुझाव दे सकते हैं और उन्होंने कहा, हाँ। वे इसे दोबारा एडिट करेंगे, लेकिन वे नहीं चाहते थे कि मैं एडिटिंग के दौरान दखल दूं। उन्होंने कहा, मुझे इसे करने दो, मैं इसे अपने तरीके से करूँगा, अगर तुम चाहो तो एडिटिंग रूम में रह सकते हो, जब सब काम हो जाए तो अगर तुम चाहो तो इसे बदल सकते हो, यह तुम्हारा मामला है, लेकिन मुझे वही करने दो जो मैं करना चाहता हूँ। तो फिर उन्होंने और उनके एडिटर दुलाल दत्त ने फिल्म को दोबारा एडिट किया। उन्हें लगभग चार दिन लगे और उन्होंने इसे एक नया रूप दिया। यह वही [रे] थे जिन्होंने सुझाव दिया था कि इसे एक
फ्लैशबैक फॉर्म.21

द हाउसहोल्डर का वितरण कोलंबिया पिक्चर्स द्वारा किया गया था और यह अक्टूबर 1963 में न्यूयॉर्क शहर के गिल्ड थिएटर में प्रदर्शित हुई थी। हालाँकि कुछ अच्छी समीक्षाएँ मिलीं, लेकिन

न्यूयॉर्क टाइम्स के बॉस्ले क्रॉथर—जिन्हें उस समय फिल्मों का सर्वोपरि विशेषज्ञ माना जाता था—ने शहर के आर्ट-हाउस सिनेमाघरों में द हाउसहोल्डर की बॉक्स ऑफिस सफलता की संभावनाओं को सिरे से खारिज कर दिया। पीछे मुड़कर देखें तो बॉस्ले की समीक्षा काफी कठोर प्रतीत होती है, क्योंकि यह फिल्म के निर्माण की स्वतंत्र भावना को समझने में विफल रहती है। विशेष रूप से कठोर, यहाँ तक कि अनुदार भाषा में, बॉस्ले शशि के बारे में यह कहते हैं:

शशि कपूर, जो पति का किरदार निभा रहे हैं, इस वास्तव में एक अप्रिय भूमिका में रंगहीन और अनाड़ी लगते हैं। यहाँ हम जिस रूढ़िवादी युवा शिक्षक को देखते हैं—स्वार्थ का घमंड करने वाला यह चिड़चिड़ा व्यक्ति—वह इस सुंदर भूमिका के लायक नहीं है।
लीला नायडू द्वारा निभाई गई प्यारी और भोली-भाली छोटी पत्नी।22

इस निंदनीय समीक्षा के बाद, शशि कहती हैं: ‘[जेम्स] और मैं प्लाज़ा [होटल] गए। उसने अपने पिता का क्रेडिट कार्ड इस्तेमाल किया और हमने खूब शराब पी। […] हम
हम तनावग्रस्त और भावुक हो गए और खुद पर तरस खाने लगे।23
उस रात शशि को बस इतना ही समय मिला कि वह अपने गम में डूबी रहे। क्योंकि अगले दिन, शांत स्वभाव वाले इस्माइल और दृढ़ निश्चयी जेम्स एक और फिल्मी सपने को पूरा करने के लिए उस निराश अभिनेता को अपने साथ शामिल कर रहे थे।

जेम्स आइवरी, लीला नायडू, शशि कपूर, इस्माइल मर्चेंट (बाएं से दाएं) फिल्म 'द' के प्रीमियर पर गृहस्थ। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस। शेक्सपियर वाला (1965)

जेम्स आइवरी एक ऐसी फिल्म बनाने के बारे में सोच रहे थे जिसमें भारतीय अभिनेताओं का एक समूह शहरों में आधुनिक भारतीय-अंग्रेजी नाटक प्रस्तुत करता हुआ दिखाया जाए। लेकिन रूथ प्रॉवर झबवाला को यह प्रस्ताव अव्यावहारिक लगा। जेम्स कहते हैं, 'रूथ ने कहा कि जो लोग उच्च कोटि के अंग्रेजी नाटकों का हिस्सा बनना चाहेंगे, वे घुमंतू अभिनेताओं का जीवन नहीं

अपनाएंगे। उन्हें यह विचार बिल्कुल पसंद नहीं आएगा। उन्होंने कहा कि यह एक निराधार धारणा है।'
लेकिन यही ‘अवास्तविक’ विचार था जिसने जेम्स को शेक्सपियरआना टीम तक पहुँचाया—ब्रिटिश घुमंतू अभिनेताओं का वह समूह जिसका नेतृत्व ज्योफ्री और लौरा लिडेल केंडल कर रहे थे। द हाउसहोल्डर की शूटिंग के दौरान उनकी केंडल परिवार से पहले ही मुलाकात हो चुकी थी, क्योंकि जेनिफर केंडल कपूर अपने पति के साथ दिल्ली में काफी समय बिता रही थीं। अब उन्होंने थिएटर मंडली से और अधिक घनिष्ठ संबंध बनाने का फैसला किया और रूथ को भी अपने साथ ले गए। जॉफ्री की डायरियों से व्यापक रूप से प्रेरित, शेक्सपियर वॉलह अपनी विषयवस्तु और शैली में चेखोव से प्रेरित है। यह स्वतंत्र और तेजी से बदलते भारत में शेक्सपियर को जीवित रखने के लिए संघर्षरत घुमंतू ब्रिटिश अभिनेताओं के निराशाजनक जीवन को चित्रित करता है—एक ऐसा भारत जहाँ दर्शक गंभीर नाटकों और संघर्षरत अभिनेताओं से जुड़ने के बजाय लोकप्रिय, निम्न स्तरीय सिनेमा और हंसमुख फिल्मी सितारों में निवेश करना अधिक पसंद करते हैं।
हालांकि फिल्म में केंडल दंपति को उनके काल्पनिक संस्करणों के रूप में दिखाया गया है—जियोफ्रे को मंडली के नेता टोनी बकिंघम और लौरा को उनकी पत्नी और साथी कार्ला के रूप में लिया गया है— जियोफ्रे पटकथा और फिल्म के परिणाम से खुश नहीं थे। जियोफ्रे अपनी आत्मकथा में लिखते हैं, 'फिल्म हमारे बारे में नहीं थी, बल्कि कुछ घुमंतू कलाकारों के बारे में थी जिनसे हमारा कोई लेना-देना नहीं था।'
समानता।’24 इसके बावजूद, जेफ्री ने अपनी पुस्तक के लिए जेम्स की फिल्म का शीर्षक उधार लेने में संकोच नहीं किया। और वर्षों बाद,

उन्होंने अंततः स्वीकार किया कि उन्होंने फिल्म की भावना की सराहना की—‘यह उस प्रशंसा और प्रसिद्धि की हकदार है जो इसे मिली है।’
अर्जित किया।’25
शशि कपूर को शेक्सपियर वाला में एक छिछोरे लेकिन अमीर प्लेबॉय, संजू के किरदार में लिया गया था, जो न केवल एक हिंदी फिल्म स्टारलेट के साथ फ्लर्ट करता है, बल्कि थिएटर मंडली की एक ब्रिटिश अभिनेत्री, लिज़ी के साथ भी, जिसका किरदार जेनिफर की बहन, फेलिसिटी केंडल ने निभाया था, जो उस समय सत्रह साल की थीं और उन्हें पचहत्तर रुपये में अभिनय करने का अनुबंध मिला था। शशि के लिए अपनी साली के साथ अभिनय करना किसी चमत्कार से कम नहीं था। वह कहते हैं, 'क्योंकि मैंने शेक्सपियरना के साथ दौरा किया था, इसलिए मैं परिवार के साथ घनिष्ठ संपर्क में था। शादी के बाद भी, फेलिसिटी केंडल मेरी पत्नी और मेरे बहुत करीब थीं। मैं उन्हें जानता था, लेकिन मुझे अंदाजा नहीं था कि [फिल्मों में बिना किसी अनुभव वाली यह लड़की] इतनी अच्छी होगी। [...] वह पूरी तरह से किरदार में डूब जाती थी और अपनी असलियत भूल जाती थी।
खुद। […] फेलिसिटी केंडल ने सबका ध्यान अपनी ओर खींच लिया। यह उनकी फिल्म थी।’26
शेक्सपियर वाला में संजू और लिज़ी के बीच 'अचानक, बिजली की तरह तेज़ और संक्षिप्त'27 रोमांस और उनके रिश्ते का खुलना—ये दृश्य अपने भीतर बहुत मार्मिकता समेटे हुए हैं। लेकिन पारिवारिक वृक्षों और रिश्तों के विभाजन में रुचि रखने वालों के लिए, शेक्सपियर वाला संजू और लिज़ी के बीच के उस कोमल चुंबन के लिए भी यादगार है—या शशि और उसकी भाभी के बीच के उस चुंबन के

लिए। उस पल को याद करते हुए शशि कहते हैं, 'मुझे लगता है कि यह पहली फिल्म थी जिसमें मैंने कभी चुंबन किया था [...] यह मेरे लिए थोड़ा शर्मनाक था और मुझे एहसास हुआ कि
यह फेलिसिटी के लिए बहुत शर्मनाक होगा।
शेक्सपियर वाला में एक मुख्य किरदार मंजुला है—जो संजू के साथ रोमांस करती हुई एक चुलबुली, ग्लैमरस हिंदी फिल्म स्टारलेट है — इस भूमिका के लिए जेम्स और इस्माइल ने अपनी न्यूयॉर्क स्थित थिएटर अभिनेत्री मित्र मधुर जाफरी को चुना। जेम्स और इस्माइल की मुलाकात मधुर के दिवंगत पति और अभिनेता सईद जाफरी (दोनों का तलाक हो गया था) के माध्यम से हुई थी, और बाद में, मधुर मर्चेंट-आइवरी टीम की नियमित सदस्य बन गईं और उन्होंने तीन फिल्मों में अभिनय किया।
जेम्स द्वारा निर्देशित अन्य निर्माण - 29 द गुरु, आत्मकथा प्रिंसेस 30 31, हीट एंड डस्ट—और साथ ही, द परफेक्ट मर्डर में (जिसके लिए
इस्माइल कार्यकारी निर्माता थे) और 32 कॉटन मैरी, जिसका उन्होंने इस्माइल के साथ सह-निर्देशन किया था।
मधुर के लिए शेक्सपियर वाला का हिस्सा बनना कई मायनों में बेहद रोमांचक था, लेकिन इसलिए भी क्योंकि वह शशि के साथ पहली बार काम कर रही थीं—जो तब तक हिंदी फिल्म जगत के एक प्रमुख सितारे बन चुके थे। मधुर कहती हैं, 'बेशक, मैं शशि को उनकी फिल्मों—हिंदी सिनेमा—से जानती थी। मैं हमेशा से शशि को सबसे आकर्षक पुरुषों में से एक मानती थी। और उनके साथ अभिनय करने का विचार बहुत ही रोमांचक था। फिर, मैं उनसे पहली बार मिली। वह खुशमिजाज—एक सकारात्मक, युवा व्यक्ति—थे और उन्होंने मेरा बहुत अच्छे से अभिवादन किया। और मैंने सोचा, सब ठीक हो जाएगा।'

मधुर की मंजुला, जो लिज़ी की प्रतिद्वंदी है, शेक्सपियर वाला में कुछ सबसे दमदार दृश्यों में से एक है, जहाँ वह चिढ़कर संजू का ध्यान अपनी ओर खींचती है। यह एक ऐसा अभिनय है जिसके लिए शशि एकदम सही साथी साबित होते हैं। मधुर कहती हैं, 'शशि के साथ मेरे दृश्य अंतरंग थे। वे दो प्रेमी थे। यह मेरी पहली फिल्म थी, और शशि का यह स्पष्ट मानना था कि अभिनय तो बस मनोरंजन है—इसे ज़्यादा गंभीरता से मत लो—उनका यही रवैया था, खासकर तनावपूर्ण परिस्थितियों में जब मुझे फिल्म क्रू के सामने रहने की आदत नहीं थी।'
द हाउसहोल्डर की तरह ही, शेक्सपियर वाला भी सीमित बजट में बनी थी। एक बार फिर, रूथ और शशि ने अपने वेतन को स्थगित करने पर सहमति जताई - आखिरकार 1970 में इस्माइल ने बॉम्बे टॉकी के निर्माण के दौरान शशि को बकाया राशि का भुगतान किया।
द हाउसहोल्डर से एक और विचित्र समानता यह है कि शेक्सपियर वॉलह में भी सत्यजीत रे की उपस्थिति थी—उनके छायाकार सुब्रता मित्रा ने फिल्म की शूटिंग की और सत्यजीत ने मूल संगीत तैयार किया। वर्षों बाद, 2007 में, अमेरिकी फिल्म निर्देशक वेस एंडरसन ने अपनी भारत-आधारित ड्रामा कॉमेडी, द हाउसहोल्डर के लिए शेक्सपियर वॉलह के कई संगीत का उपयोग किया।
दार्जिलिंग लिमिटेड.33
सत्यजीत की सिफारिश पर शेक्सपियर वाला फिल्म 15 वें बर्लिन अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के प्रतियोगिता अनुभाग में प्रदर्शित हुई, जिनकी
चारुलता 34—जिसे कई लोग उत्कृष्ट कृति मानते हैं—भी दौड़ में शामिल थी। मधुर ने सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का रजत भालू पुरस्कार जीता, जबकि सत्यजीत ने चारुलता के लिए सर्वश्रेष्ठ

निर्देशक का रजत भालू पुरस्कार जीता, जिससे 1965 जर्मनी में भारत के लिए उल्लेखनीय रूप से सफल वर्ष साबित हुआ।
बर्लिन में मधुर और शशि एक मजेदार गलतफहमी में फंस गए। दोनों अभिनेता होटल एमज़ो की लिफ्ट में थे, तभी उन्हें एहसास हुआ कि इतालवी अभिनेत्री जीना लोलोब्रिगिडा भी उनके साथ लिफ्ट में थीं। परिचय हुआ और जीना, जो एक सेक्स सिंबल के रूप में जानी जाती थीं, जाहिर तौर पर शशि के आकर्षक रूप से प्रभावित हो गईं। मधुर मुझे बताते हैं, 'अगले दिन, मेरे कमरे में मेरे लिए फूलों का एक बहुत बड़ा, बेहद खूबसूरत गुलदस्ता आया, जिस पर जीना के हस्ताक्षर के साथ लिखा था, "क्या आप मेरे साथ दोपहर का भोजन करेंगे?" मैंने गुलदस्ते को देखा और मुझे पता चल गया कि कोई गलती हुई है। जीना भला शशि कपूर और मधुर जाफरी के नामों में कैसे फर्क कर सकती थीं - इतालवी दृष्टिकोण से कौन पुरुष है और कौन महिला? उन्होंने मुझे शशि समझ लिया होगा। मुझे याद है कि मैं शशि के कमरे में गया, उनके सामने फूल रख दिए और कहा, "शशि, मुझे पता है ये आपके लिए हैं। लेकिन अगर आप चाहते हैं कि मैं उनके साथ दोपहर का भोजन करूं, तो मैं कर लूंगा।"'
इस्माइल को उस घटना के बारे में और भी बहुत कुछ याद है। अपनी आत्मकथा में वे लिखते हैं:

हमारी यात्रा की आखिरी रात, उत्सव द्वारा आयोजित एक पार्टी में, बेहद नाराज़ जीना—जिसके प्रस्तावों को, संभवतः, शायद ही कभी ठुकराया जाता था—ने शशि से खुलकर बात की और अपनी गलती का एहसास कराया। बेचारी शशि को इस बात से बहुत निराशा हुई कि भ्रम की स्थिति पैदा हो गई थी।
जिसकी वजह से उन्हें ऐसा अवसर गंवाना पड़ा। 35

शेक्सपियर वॉलह को न्यूयॉर्क और लंदन फिल्म समारोहों में दिखाया गया। शशि कपूर के अभिनय की कई लोगों ने सराहना की। वैरायटी के एक अनाम समीक्षक ने फिल्म के 'भोलेपन' की प्रशंसा करते हुए लिखा: 'शशि कपूर ने भारतीय अभिनेता के रूप में बेहद आत्मविश्वासपूर्ण अभिनय किया है।'
प्लेबॉय।’36 लाइफ पत्रिका के रिचर्ड शिकेल ने फिल्म की ‘मानवता, बुद्धिमत्ता और कल्पना’ की भरपूर प्रशंसा करते हुए कहा कि ‘आइवरी और उनके पटकथा लेखक, आर. प्रावर झबवाला [sic], को उनके द्वारा शानदार ढंग से सहयोग दिया गया है।
अभिनेता।’37 यहां तक कि द न्यूयॉर्क टाइम्स के बॉस्ले क्रॉथर भी शेक्सपियर वाला के प्रति (अपेक्षाकृत) दयालु हैं:

इस कहानी [ब्रिटिश थिएटर समूह के संघर्षों और अंतिम दिनों की कहानी] के वर्णन के माध्यम से, श्री आइवरी और उनकी लगभग परिपूर्ण कलाकारों की टीम ने अनगिनत सशक्त निहितार्थों और सूक्ष्म संकेतों को व्यक्त करने में कामयाबी हासिल की है जो विडंबना, उदासी और
परिवर्तन के प्रति सौम्य स्वीकृति। 38

क्रॉथर की समीक्षा ने अंततः शेक्सपियर वाला को मैनहट्टन के पूर्वी हिस्से में स्थित एक आर्ट-हाउस थिएटर, बैरोनेट एंड कोरोनेट में आठ सप्ताह तक चलने का मौका दिलाने में मदद की। लेकिन सबसे सटीक टिप्पणी शशि के ससुर, ज्योफ्री केंडल की थी, जिन्होंने अपनी बेटी फेलिसिटी को लिखे एक पत्र में कहा: 'उसे

[शशि को] विदेशी निर्देशकों के साथ अंग्रेजी फिल्मों में काम करना चाहिए जो अंग्रेजी भाषा जानते हों।'
उसका फायदा कैसे उठाया जाए।’39

बॉम्बे टॉकी (1970)

भारत में बनी अपनी चौथी फिल्म के लिए (जेम्स आइवरी ने 1969 में इसके बीच में 'द गुरु' का निर्देशन किया था), मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस ने मुंबई के चकाचौंध भरे हिंदी फिल्म उद्योग पर ध्यान केंद्रित करने का फैसला किया। यह रूथ प्रॉवर झबवाला का विचार था—एक ब्रिटिश बेस्टसेलर लेखिका की कहानी जो अपनी अगली बड़ी किताब के लिए 'बॉलीवुड' से सामग्री की तलाश में है, और साथ ही भारतीय फिल्म जगत की स्टार-सिस्टम से भी गुज़रती है। इस्माइल मर्चेंट, जो हमेशा से हिंदी सिनेमा के बड़े प्रशंसक रहे हैं—उनकी पसंदीदा स्टार 1950 के दशक की अभिनेत्री निम्मी थीं—इस बात से बेहद खुश थे कि फिल्म में फिल्म जगत के भड़कीले और दिखावटी तत्वों को दिखाया जा सकेगा। 'बॉम्बे टॉकी' शीर्षक स्वाभाविक रूप से चुना गया, और एक बार फिर सुब्रता मित्रा छायाकार थे।
स्वाभाविक रूप से, शशि कपूर को बड़े फिल्म स्टार विक्रम की भूमिका निभाने के लिए चुना गया, जो लेखिका लूसिया लेन से प्यार कर बैठता है, जिसका किरदार उनकी वास्तविक जीवन की पत्नी जेनिफर केंडल कपूर ने निभाया है। अपने करियर में निभाए गए कुछ नकारात्मक किरदारों में से एक में, आत्ममुग्ध विक्रम अपनी युवा पत्नी माला (अपर्णा सेन द्वारा अभिनीत) को धोखा देता है और अपने शांत स्वभाव के पटकथा लेखक दोस्त हरि (पाकिस्तानी अभिनेता

ज़िया मोहियुद्दीन द्वारा अभिनीत) से लूसिया का ध्यान अपनी ओर खींच लेता है।
हालांकि, शशि के बॉम्बे टॉकी के लिए प्रतिबद्ध होने से पहले, द हाउसहोल्डर और शेक्सपियर वाला के लिए उन्हें दिए गए पैसों का असहज सवाल उनके सामने था। शशि इस्माइल को अपना करीबी दोस्त मानते थे, लेकिन वे अपने पुराने वित्तीय बकाया चुकाना चाहते थे। लेकिन, इस्माइल के साथ हमेशा की तरह, उनके पास एक बार फिर पैसों की कमी थी। आखिरकार, जेनिफर ही उनकी मदद के लिए आगे आईं। इस्माइल लिखते हैं:

जेनिफर के दिल में मेरे लिए हमेशा एक खास जगह थी। उसने मुझे शशि को पैसे देने के लिए उधार दिए थे। तो, असल में, मैंने शशि के ही पैसों से उसका कर्ज चुकाया। बेशक, मैंने पैसे चुकाते ही जेनिफर को लौटा दिए।
वह ऐसा कर सकता था, लेकिन शशि के साथ पूरा लेन-देन गुप्त रहा।40

और इसी तरह बॉम्बे टॉकी को अपना सितारा मिला। जेम्स आइवरी कहते हैं, 'बॉम्बे टॉकी बनाना वाकई एक आनंददायक अनुभव था, जिसमें शशि और जेनिफर ने प्रेमियों की भूमिका निभाई। पूरी फिल्म - खैर, कोई भी फिल्म बनाना आसान नहीं होता - लेकिन यह आनंददायक थी और शशि को इसे करने में मज़ा आया। वह काफी खुश थे।'

1970, बॉम्बे टॉकी। एक अक्सर चर्चित दृश्य, जिसमें शशि कपूर अपनी पत्नी के साथ चुंबन साझा करते हैं।
जेनिफर केंडल। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

हालांकि फिल्म में अपर्णा की भूमिका छोटी है—वह इसे शशि के साथ अपने सहयोग में सबसे 'कम दिलचस्प' बताती हैं, जिनमें से एक में शशि भी शामिल हैं—फिल्म में उनकी भूमिका छोटी है।
अपनी पहली निर्देशित फिल्म '41 36 चौरंगी लेन' की निर्माता होने के नाते, उन्हें सेट पर जेम्स, सुब्रता और शशि को करीब से देखने का मौका मिला। वह कहती हैं, 'मुझे याद है, एक बार 'बॉम्बे टॉकी' की शूटिंग के दौरान, सुब्रता को सेटअप करने में बहुत समय लग रहा था
- पूरा कमरा शीशों से भरा हुआ था, और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि

अपनी लाइटें कहाँ छिपाएँ। आखिरकार, जब सुब्रता ने कहा कि वह तैयार हैं, तो शशि ने कहा कि उनका अभिनय करने का मन नहीं है! शशि उस समय एक जाने-माने अभिनेता थे, लेकिन सुब्रता दोनों में कहीं बड़े स्टार थे। हालांकि, शशि काफी देर से वहाँ बैठे थे, और नाराज़ थे।'
‘अचानक, इस कहासुनी के बीच में, जिम [जेम्स आइवरी] अपनी नाक खींचने लगे। उनकी नाक लाल हो गई। और वे मुस्कुराने लगे। दरअसल, जब भी कुछ अप्रिय होता, जिम की पहली प्रतिक्रिया अपना आपा खोने की नहीं, बल्कि हंसने की होती थी। वे एक बच्चे की तरह थे। इसलिए, वे मुस्कुराते हुए शशि से पूछने लगे, “तुम्हें क्या लगता है कि तुम कब सही मूड में आओगे?” और शशि ने कहा, “मुझे नहीं पता, आधे घंटे बाद!” फिर, चुपचाप वे वापस आए और उस दृश्य की शूटिंग की।’ यह इकलौता मौका नहीं था जब जेम्स को मुस्कुराते हुए स्थिति को संभालना पड़ा। अपर्णा मुझे बताती हैं, 'मेरा शशि के साथ एक किसिंग सीन था। मैं बहुत परेशान थी क्योंकि मुझे पहले से बताया नहीं गया था - मुझे सेट पर ही बताया गया! जिम मुस्कुराए और बोले, हां, तुम्हें यह करना ही होगा। और शशि के साथ मिलकर, वह मुझे चिढ़ाते रहे। मुझे आखिरकार मान जाना पड़ा। यह पहली बार था जब मैंने स्क्रीन पर किस किया।'
बॉम्बे टॉकी को मिली-जुली समीक्षाएँ मिलीं—न्यूयॉर्क टाइम्स ने इसे जेम्स की 'सबसे महत्वाकांक्षी' फिल्म कहा, और फिर, 'अमेरिकी संदर्भ में, [द]
सबसे कम सफल रही फिल्म '42'—इसे भारतीय 'ड्रीम फैक्ट्री' के भव्य चित्रण और विशाल टाइपराइटर पर बुस्बी बर्कले से प्रेरित शुरुआती नृत्य के लिए याद किया जाता है; हेलेन और शशि

टाइपराइटरों पर कूदती हैं, जबकि किशोर कुमार एक अद्भुत और जोशीला गीत गाते हैं, 'टाइपराइटर टिप टिप टिप'।
Tip Karta Hai, Zindagi Ki Har Kahani Likhta Hai’.43 It is a sequence that outdoes ‘Bollywood’ pop-extravagance!
बॉम्बे टॉकी को शशि और उनके दोस्त अमिताभ बच्चन अभिनीत कई फिल्मों में से पहली फिल्म के रूप में जाना जा सकता था—लेकिन सिनेमाई इतिहास का यह हिस्सा बन पाना किस्मत में नहीं था। जेम्स के अनुसार, अमिताभ को एक ऐसे दृश्य में संघर्षरत अभिनेता की भूमिका निभानी थी, जहां अनुभवी अभिनेत्री नादिरा पुरुष प्रशंसकों से घिरी होती हैं। लेकिन अमिताभ आए ही नहीं! जेम्स कहते हैं, 'किसी कारणवश उन्होंने उस भूमिका से मना कर दिया। लेकिन समस्या यह थी कि हमने उन्हें पहले ही एक दृश्य में फिल्माया था—जहां शशि के पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार हो रहा है और कई युवक चिता के आसपास मौजूद भीड़ का हिस्सा हैं— अमिताभ उस फ्रेम में थे। आखिरकार, हमने उस दृश्य को फिल्म से हटा दिया।'

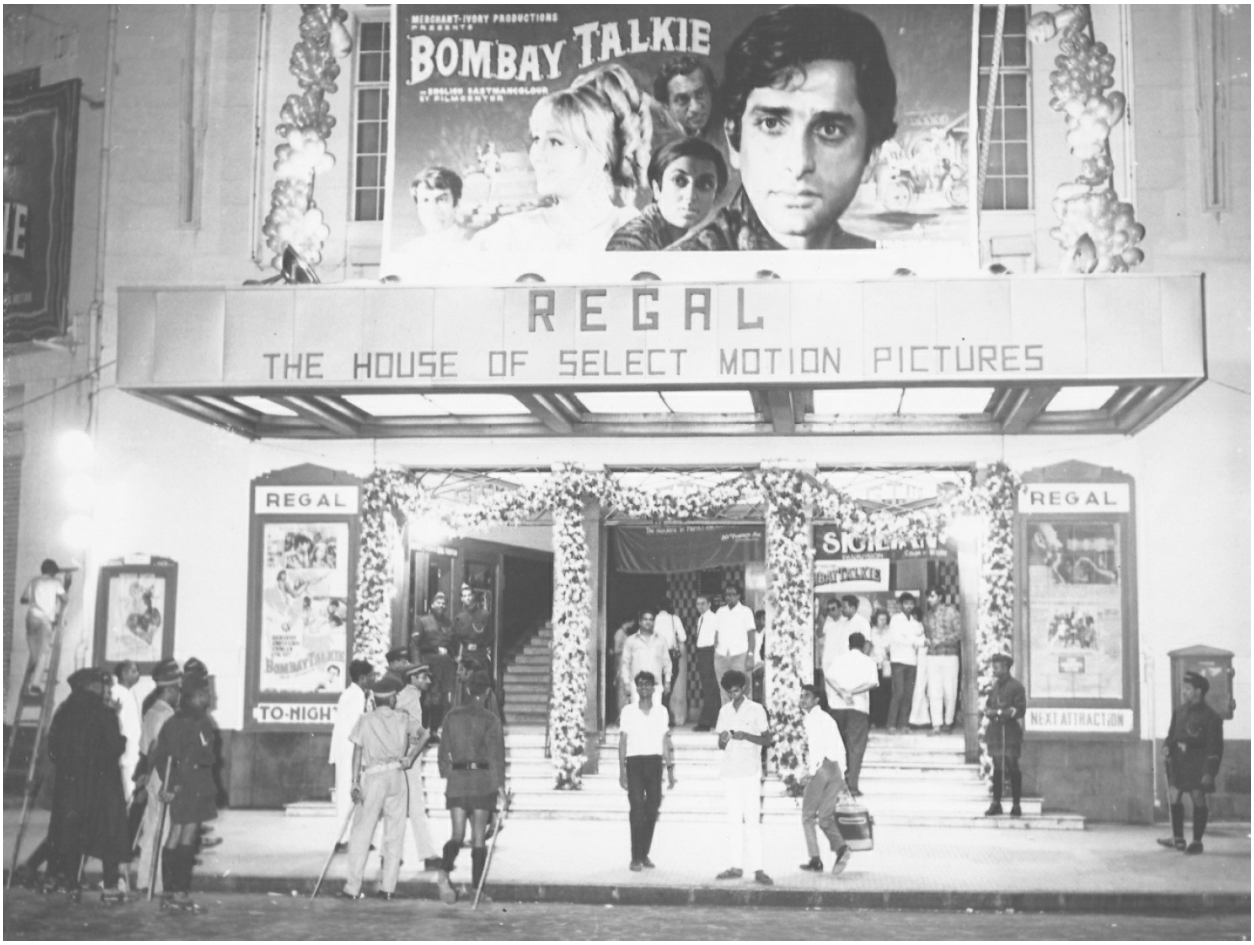
MERCHANT-IVORY PRODUCTIONS
PRESENTS
BOMBAY TALKIE
REGAL
THE HOUSE OF SELECT MOTION PICTURES
REGAL
REGAL
NEXT ATTRACTION

1970, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]: [illegible]-[illegible] [illegible]

1
2
5

1970, बॉम्बे टॉकी। शुरुआती दृश्य में शशि कपूर द्वारा अभिनीत विक्रम, हेलेन के साथ एक विशाल टाइपराइटर सेट पर नृत्य करते हैं, जबकि किशोर कुमार और आशा भोसले 'टाइपराइटर टिप टिप टिप टिप' गीत गाते हैं।
करता है’। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

शशि अमिताभ के रहस्यमय ढंग से गायब होने की घटना को समझाते हैं, साथ ही बॉम्बे टॉकी के एक दृश्य का वर्णन करते हैं जिसमें जेनिफर की कार अंतिम संस्कार के जुलूस के लिए सड़क पर रुकी हुई है। वे कहते हैं, 'अमिताभ उन पुरुषों की भीड़ में से एक अभिनेता थे। मैंने उनसे कहा कि वे सेट छोड़कर चले जाएं और वह भूमिका न करें। वह...
वह नाराज था और कह रहा था कि उसे 50 रुपये कमाने का नुकसान होगा। अमिताभ भी इस बात की पुष्टि करते हैं। ‘जी हां, बॉम्बे टॉकी की कहानी सही है।’ फिर वे आगे कहते हैं, ‘शशि ने कहा था: “ये छोटे- मोटे रोल मत करो। तुम इससे कहीं बेहतर चीजों के लिए बने हो।”’ शशि के शब्द—जिन्होंने उस समय संघर्षरत अमिताभ को ‘परेशान’ कर दिया था, जो अभी-अभी बॉम्बे आए थे और उन्हें कोई काम नहीं मिल रहा था—भविष्यवाणी साबित होंगे।

ऊष्मा और धूल (1983)

शशि कपूर की जेम्स आइवरी के निर्देशन में बनी चौथी और आखिरी फिल्म 'हीट एंड डस्ट' थी, जो रूथ प्रॉवर झबवाला के 1975 में प्रकाशित इसी नाम के बुकर पुरस्कार विजेता उपन्यास पर आधारित थी। यह पहली भव्य पैमाने की फिल्म भी थी जिसके लिए मर्चेंट-

आइवरी की जोड़ी भविष्य में ऑस्कर जीतने वाली फिल्मों के साथ जानी जाएगी।
46 47 ए रूम विद ए व्यू और हॉवर्ड्स एंड जैसी विजेता फिल्में। हीट एंड डस्ट में प्रभावशाली कलाकार हैं, जिनमें जूली क्रिस्टी एक आधुनिक अंग्रेज महिला, ऐन की भूमिका निभा रही हैं, जो उस भारत की तलाश में है जिससे उसकी परदादी का 1920 में संपर्क हुआ था। ग्रेटा स्काची - जो फिल्म की रिलीज के समय केवल तेईस वर्ष की थीं और पहली बार पर्दे पर अभिनय कर रही थीं - को ऐन की चाची और भारत में एक ब्रिटिश सिविल सेवक की पत्नी ओलिविया के रूप में कास्ट किया गया था; ओलिविया का एक स्थानीय नवाब के साथ प्रेम संबंध बन जाता है।
स्वाभाविक रूप से, शशि को नवाब की भूमिका के लिए चुना गया। फिल्म रिलीज के समय वे पैंतालीस वर्ष के थे, शाही व्यक्तित्व वाले थे और हिंदी सिनेमा में अपने करियर के शिखर पर थे। cinema, having completed 48 49 50 51 Shaan , Kalyug , Namak Halaal and Vijeta.
जेम्स कहते हैं, 'जब उन्होंने 'द हाउसहोल्डर' बनाई थी, तब से वो बीस साल बड़े हो गए थे। वो परिपक्व और पहले की तरह ही आकर्षक लग रहे थे। हे भगवान, उन्होंने नवाब का किरदार बखूबी निभाया।' एक और इंटरव्यू में जेम्स आगे कहते हैं, 'शशि हमेशा हमारी फिल्मों में राजकुमारों की भूमिका निभाते थे - सिवाय 'द हाउसहोल्डर' के। 'शेक्सपियर वाला' में वो एक अमीर प्लेबॉय का किरदार निभाते हैं। फिर, जब हमने 'बॉम्बे टॉकी' बनाई, तो वो अपने करियर और लुक्स के शिखर पर एक फिल्म स्टार थे। और फिर, जब हम 'हीट एंड डस्ट' की बात करते हैं, तो वो एक नवाब हैं। सच में, उन्हें इसी तरह के किरदार निभाने के लिए ही इस दुनिया में भेजा गया था।

भाग.’52
शेक्सपियर वॉलह में शशि की प्रेमिकाओं में से एक की भूमिका निभाने वाली मधुर जाफरी ने हीट एंड डस्ट की पटकथा पढ़ी और इस बार उनकी मां, बेगम की भूमिका निभाने के लिए उत्सुक थीं। चूंकि अभिनेत्री शशि से केवल पांच साल बड़ी थीं, इसलिए जेम्स को यकीन था कि यह कास्टिंग काम नहीं करेगी। जैसा कि मधुर याद करती हैं, 'मुझे नहीं पता कि उनके मन में कौन था, लेकिन उन्होंने मुझसे कहा, "मैं तुम्हें बेगम की भूमिका नहीं दे सकता क्योंकि यह मेरे लिए बहुत अनुचित होगा।"' अंततः मधुर के समझाने पर जेम्स मान गए और उन्होंने अपना इरादा बदल दिया।
जैसा कि मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस के साथ अक्सर होता था, फाइनेंसर अचानक पीछे हट गए और इसके साथ ही फिल्म के लिए फंड भी खत्म हो गया। हैदराबाद में शूटिंग शुरू होने के तीन हफ्ते बाद, अभिनेताओं और क्रू को भुगतान करने के लिए पैसे नहीं थे; इससे भी बुरा यह था कि जब टीम अगले लोकेशन पर जाने के लिए तैयार थी, तो होटल के बिल चुकाने थे। इस्माइल मर्चेंट, जो पहले से ही कश्मीर में थे, ने शशि से बिलों के लिए गारंटर बनने को कहा। जेम्स कहते हैं, 'मुझे इस तरह की जानकारियों से दूर रखा गया था,' लेकिन वे इस बात की पुष्टि करते हैं कि शशि ने उनकी मदद की।
कई वित्तीय संकटों के बावजूद, हीट एंड डस्ट फिल्म बन ही गई, और यह
एक बड़ी सफलता। रिचर्ड एटनबरो की फिल्म '53 गांधी' के साथ, जिसने पिछले साल ऑस्कर में धूम मचा दी थी, और ब्रिटिश पृष्ठभूमि पर आधारित दो टेलीविजन श्रृंखलाओं की सफलता के साथ, यह फिल्म भी हिट रही।

भारत— 54 55 द ज्वेल एंड द क्राउन और द फार पवेलियंस—हीट एंड डस्ट ने देश को अंतरराष्ट्रीय मानचित्र पर मजबूती से स्थापित किया; भारत उस समय की शान बन गया।
कोलंबिया विश्वविद्यालय के पत्रकारिता स्कूल में एक छात्रा के रूप में, मुझे याद है कि मैंने मिडटाउन मैनहट्टन के पेरिस थिएटर में 'हीट एंड डस्ट' का उद्घाटन सप्ताहांत देखा था। टिकट धारकों की कतार पूरे ब्लॉक तक फैली हुई थी, और जब हम आखिरकार अर्ध-अंधेरे हॉल में अपनी सीटों पर बैठे, तो मैं इस बात से बेहद रोमांचित थी कि भारत और एक शानदार शशि न्यूयॉर्क शहर में एक विशाल स्क्रीन पर थे।

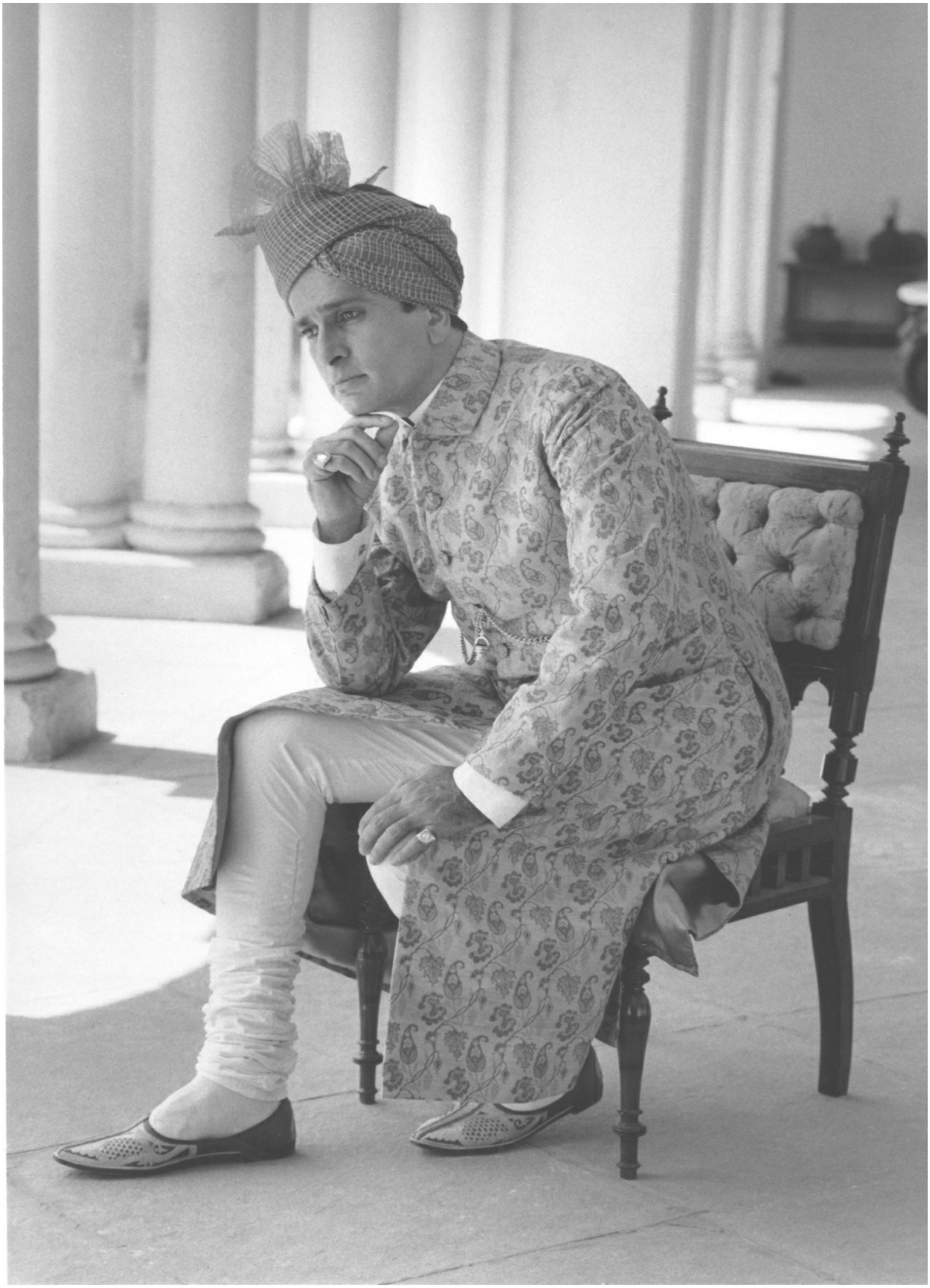

1983, हीट एंड डस्ट। शशि कपूर नवाब के किरदार में। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

86-8

1983, हीट एंड डस्ट। 'शशि कपूर को राजकुमार की भूमिका निभाने के लिए ही इस धरती पर भेजा गया था': जेम्स आइवरी।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

शशि ने शेक्सपियर वॉलह के लिए विदेश यात्रा की थी, लेकिन हीट एंड डस्ट के साथ ही उन्हें एक अमेरिकी सेलिब्रिटी होने का पूरा अनुभव मिला। शशि कहते हैं:

मैं यूनिवर्सल स्टूडियो के टूर पर गया था। वहाँ हर जगह हीट और डस्ट के पोस्टर लगे हुए थे। शशि कपूर हर जगह नज़र आ रहे थे [...] एयरलाइंस ने मेरे कपड़े खो दिए और न्यूयॉर्क शहर के प्लाज़ा में दिग्गज हैरी विंस्टन द्वारा आयोजित रिसेप्शन के लिए कुछ ही घंटों में मेरा नया सूट सिलवाया गया। प्लासिडो
डोमिंगो वहाँ था। 56

उस उद्घाटन रात, हीट और डस्ट की टीम सुबह के अखबारों में आने वाली पहली समीक्षाओं को पढ़ने के लिए जागती रही—और वे सभी समीक्षाएँ सकारात्मक थीं। बाद में, शिकागो सन-टाइम्स में, रोजर एबर्ट ने शशि के नवाब को 'मनमोहक' बताया।
आकर्षक, हंसमुख और परिष्कृत।’57 और द न्यूयॉर्क टाइम्स में, विंसेंट कैनबी ने पूरी टीम की सराहना करते हुए कहा—‘उनके सभी सहयोगों में से, हीट एंड डस्ट से अधिक सुंदर, हास्यपूर्ण, साहित्यिक या मनोरंजक कोई नहीं रहा है’—और आगे शशि की भूमिका की जटिलता को स्वीकार करते हुए कहा: ‘श्री कपूर […] नवाब के रूप में हास्यपूर्ण और रहस्यमय दोनों हैं, जिनके उत्तम शिष्टाचार शायद

या तो मूर्ख का मुखौटा या फिर खलनायक का।’58 शशि ने बहुत लंबा सफर तय किया था।

सिद्धार्थ (1972)

कॉनराड रूक्स, जो न्यूयॉर्क के निवासी और एवन के संस्थापक अध्यक्ष के पुत्र थे,
यह रचना हरमन हेस के 1922 के उपन्यास 59 और उसके नायक सिद्धार्थ से गहराई से प्रेरित थी—एक बेचैन लड़का, जो जीवन के सच्चे अर्थ की खोज में लंबी और दूर की यात्रा करता है। रास्ते में, सिद्धार्थ की मुलाकात बुद्ध से होती है, जिनकी शिक्षाओं की वह सराहना तो करता है लेकिन उन्हें आत्मसात नहीं कर पाता; एक आकर्षक वेश्या, कमला, जो (अस्थायी रूप से) उसे अपने भाग्य का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित करती है; और एक नाविक, जो उसे याद दिलाता है कि प्रत्येक आध्यात्मिक खोज अद्वितीय होती है, और ज्ञान सिखाया जा सकता है, लेकिन बुद्धिमत्ता अनुभव से ही प्राप्त होती है।
सिद्धार्थ और कॉनरैड कुछ मायनों में एक जैसे थे—दोनों ही भारत में आत्म-खोज की यात्रा पर निकले हिप्पी थे। लेकिन जहां सिद्धार्थ को नदी के किनारे आध्यात्मिक ज्ञान का अनुभव हुआ, वहीं कॉनरैड को राज कपूर के स्टूडियो में ज्ञानोदय का क्षण मिला, और इसने उन्हें एक ऐसे रास्ते पर अग्रसर किया जो वास्तव में 'आध्यात्मिक' नहीं था।

तो मैं राज कपूर के छोटे से दफ्तर में था। वो एक चबूतरे पर शान से बैठे थे और नौकर बार-बार आकर उनके लिए स्कॉच और सोडा ला रहा

था। इसी बीच, सारे डिस्ट्रीब्यूटर आ गए और उनसे बाहर बन रही फिल्म को पूरा करने की गुहार लगाने लगे, और साथ ही वे उनके लिए पैसों से भरे बक्से और सूटकेस भी ला रहे थे। तो मैंने मन ही मन सोचा, यही मेरे लिए सही है, यही मेरी जिंदगी है। मुझे फिल्म इंडस्ट्री में आना ही होगा […]
भारत में महाराजा की तरह जीवन व्यतीत कर सकते हैं!60

कॉनराड के ये बेतुके दावे सच हैं या नहीं, यह हम कभी नहीं जान पाएंगे, लेकिन इतना ज़रूर जानते हैं कि उन्होंने हरमन के उपन्यास पर आधारित फिल्म बनाने का फैसला किया और अभिनेताओं की एक सूची तैयार की। उन्हें मुख्य भूमिका के लिए पीटर फोंडा को लेने की सलाह दी गई थी, लेकिन निर्देशक भारतीय कलाकारों को लेना चाहते थे और शशि से बेहतर नायक की भूमिका के लिए उन्हें कोई और उपयुक्त नहीं लगा। शशि की मुलाकात पहले मुंबई यात्रा के दौरान जुहू के होटल सन-एन-सैंड में जेनिफर केंडल कपूर के साथ शशि से हुई थी। सिमी गरेवाल, जो तब तक कई आर्ट हाउस फिल्मों में काम कर चुकी थीं, को भी इस फिल्म के लिए चुना गया।
और व्यावसायिक फिल्में— सत्यजीत रे की 61 अरण्येर दिन रात्रि से लेकर राज तक
कपूर की फिल्म 'मेरा नाम जोकर' में उन्हें खूबसूरत कमला के किरदार के लिए चुना गया था।
कॉनराड ने कोई कसर नहीं छोड़ी और सिद्धार्थ के निर्माण के लिए अपने पिता से मिली विशाल विरासत का एक हिस्सा खर्च किया। उन्होंने इंगमार बर्गमैन के नियमित कैमरामैन (जिन्हें अक्सर बर्गमैन की 'आंखें' कहा जाता था) स्वेन नाइक्विस्ट को काम पर रखा, जो अपने साथ एक स्वीडिश टीम लेकर आए थे, ताकि उत्तर भारत की

अव्यवस्थित सुंदरता और हरिद्वार और ऋषिकेश के अर्ध-रहस्यमय इलाकों को कैमरे में कैद किया जा सके। उन्होंने ब्रिटिश और अमेरिकी क्रू सदस्यों को भी शामिल किया। संगीत के लिए, उन्होंने हेमंत कुमार की प्रतिभा को चुना, जिन्होंने संगीत रचना के अलावा, अपने दो संगीतकारों का भी इस्तेमाल किया। पुरानी फिल्मों के हिट बंगाली गाने- 'ओ नोडी रे' 63 और 'पाथेर क्लांति
Bhule’.64
कॉनराड ने दिसंबर 1971 में होने वाले भारत-पाकिस्तान युद्ध की कल्पना भी नहीं की थी, जिसके कारण फिल्म की शूटिंग में देरी हुई। तनावपूर्ण पखवाड़े भर सिद्धार्थ की टीम दिल्ली के ओबेरॉय मेडेंस होटल में रुकी रही। आगे क्या होगा, इस बारे में चिंतित होकर कुछ ब्रिटिश क्रू मेंबर चले गए। डेविड मैककिबेन, जिन्हें कॉनराड ने लोकेशन स्काउट और प्रोडक्शन मैनेजर के रूप में नियुक्त किया था, प्रोडक्शन टीम की दुविधा को याद करते हुए कहते हैं, 'हम आगे बढ़ने ही वाले थे, लेकिन अब हमारे पास प्रोडक्शन या साउंड टीम नहीं थी!'
इस मोड़ पर, शशि न केवल कॉनरैड के साथ एक टीम बनाने में जुट गए, बल्कि अपने संवादों का अभ्यास भी कर रहे थे ताकि निर्देशक को उनकी प्रस्तुति पसंद आए। सिमी को शशि के साथ हुए ये अभ्यास सत्र याद हैं। वह कहती हैं, 'मुझे स्वाभाविक अभिनय पसंद है, लेकिन कॉनरैड चाहते थे कि हम अपने अभिनय में पारंपरिक शैली का प्रयोग करें क्योंकि यह एक ऐतिहासिक फिल्म थी, आधुनिक नहीं।'
युद्ध के दौरान कठिन पूर्वाभ्यासों की देखरेख करने के बाद, कॉनरैड को एक और दुविधा का सामना करना पड़ा—शशि मशहूर थे, और ऋषिकेश की भीड़भाड़ वाली सड़कों पर शूटिंग करना असंभव था।

इसलिए, शूटिंग का एक बड़ा हिस्सा भरतपुर के महाराजा की जागीर में करना पड़ा, जहाँ प्रवेश प्रतिबंधित था। यह एक अच्छा निर्णय साबित हुआ। सिमी मुझे बताती हैं, 'शूटिंग के दौरान एक तरह का शाश्वत अनुभव था। कोई जल्दबाजी नहीं। कोई हड़बड़ी नहीं। यह सहज था, ठीक फिल्म की शांति की तरह।'
फिर सिद्धार्थ और कमला के बीच अंतरंग दृश्यों की शूटिंग का समय आया—जिनके लिए कॉनरैड कोणार्क और खजुराहो की मूर्तियों से प्रेरणा मिली थी। डेविड तुरंत स्पष्ट करते हैं, 'इसमें बहुत ज़्यादा यौन दृश्य नहीं थे। ये सांकेतिक और सुरुचिपूर्ण ढंग से फिल्माए गए थे।' लेकिन दृश्यों में चुंबन ज़रूरी था और सिमी को आंशिक रूप से नग्न अवस्था में शूट करना पड़ा। सिमी कहती हैं, 'मैं आपको बता नहीं सकती कि इन दृश्यों से पहले मैं कितनी घबराई हुई थी। स्वीडिश क्रू मेरी घबराहट को समझ नहीं पा रहा था। स्वेन ने मुझसे कहा, "स्वीडन में, जब हम नग्न दृश्यों की शूटिंग करते हैं, तो अभिनेता बस अपने कपड़े उतार देते हैं और इंतज़ार करते हुए बैठ जाते हैं!" आखिरकार मैंने कमर से नीचे बॉडी-स्टॉकिंग पहनी, लेकिन जब मुझे टॉपलेस होना पड़ा, तो मैं बुरी तरह घबरा गई। मैं ऊपर नहीं देख पा रही थी और बस अपनी आँखें नीचे कर लेती थी। शशि ने मेरी स्थिति को भांप लिया और मुझसे कहा, "शर्माओ मत, सिमी। तुम खूबसूरत हो।" उनके शब्दों से प्रेरित होकर, मुझे आत्मविश्वास के साथ यह सब करने का साहस मिला।'
बेहद धैर्यवान शशि ने ही सिमी को कैमरे के सामने किस करना सिखाया था। सिमी कहती हैं, 'चूंकि उन्होंने हॉलीवुड फिल्मों में प्रेम दृश्य किए थे, इसलिए शशि ने मुझे समझाया कि स्क्रीन पर किस करते समय चेहरे का एंगल कैसा रखना चाहिए।' उन्होंने आगे

कहा, 'उन्होंने यह भी कहा, "दबाव कम रखें, ताकि चेहरा विकृत न हो।"'
मैंने सिद्धार्थ को पहली बार 1974 में लंदन के एक छोटे से आर्ट-हाउस थिएटर में देखा था, भारत में इसके रिलीज़ होने से दो साल पहले। फिल्म की गति, रहस्यमयी लोकेशन और सिद्धार्थ और कमला के बीच के कोमल पलों ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया था। लेकिन सबसे ज़्यादा मुझे हेमंत की आवाज़ याद है, और थिएटर से बाहर निकलते समय मैं लंदन की सड़कों पर 'ओ नोडी रे' गुनगुना रहा था—एक धुन जो बाद में हेमंत ने कोहरा में 'ओ बेकरार दिल'65 66 के लिए प्रयोग किया।
सिद्धार्थ फिल्म 1976 में भारत में रिलीज हुई, लेकिन इससे पहले इसे कई विवादों का सामना करना पड़ा, जिनमें से ज्यादातर विवाद फिल्म के नग्न दृश्यों को लेकर थे। प्रेस ने जमकर हंगामा मचाया, एक पत्रिका ने तो शशि के साथ सिमी की टॉपलेस तस्वीरें लीक कर दीं; सिमी ने मुकदमा कर दिया। इतने शोर-शराबे के बीच, अविश्वसनीय रूप से, फिल्म भारतीय सेंसर बोर्ड से बच गई, जिन्होंने सिद्धार्थ को कुछ मामूली कट के साथ पास कर दिया। कॉनरैड रूक्स ने गर्व से कहा: 'मैंने अंत में पहला प्रेम प्रसंग दिखाया।'
भारतीय सिनेमा में पहला दृश्य और पर्दे पर पहला चुंबन या चुंबनों की श्रृंखला।'67 हमेशा की तरह, उनके दावे कुछ हद तक अतिरंजित थे; भारतीय सिनेमा का पहला ऑन-स्क्रीन चुंबन चार दशक पहले, 1933 की फिल्म में फिल्माया गया था।
कर्म.68
सिद्धार्थ को दर्शकों ने खूब सराहा नहीं। आलोचकों ने शशि के बनावटी अभिनय और अटपटे संवादों की तुरंत निंदा की और फिल्म को

समग्र रूप से खराब बताया। वैरायटी के एक अनाम आलोचक ने सिद्धार्थ की 'सतही भव्यता' की आलोचना की, जिसे
कभी-कभी यह फिल्म की आवश्यक वास्तविकता को छीन लेता है’;69 न्यूयॉर्क टाइम्स के विंसेंट कैनबी ने इसे ‘फूलों के लिए दस आज्ञाओं का एक छोटा संस्करण’ कहकर खारिज कर दिया।
बच्चों’;70 और शिकागो सन टाइम्स के रोजर एबर्ट ने फिल्म को खराब करने वाली खामियों का सारांश प्रस्तुत किया:

समस्या यह है कि फिल्म कुछ ज़्यादा ही खूबसूरत है। हमें सूर्यास्त, मनोरम दृश्य, धीमी गति से बहती नदियाँ, धूप में उड़ती धूल और शानदार भारतीय परिदृश्य (मानव निर्मित और वास्तविक) देखने को मिलते हैं। और इस सारी भव्यता के बीच, किरदारों की गतिविधियाँ किसी तरह अवास्तविक और महत्वहीन लगती हैं। ऐसा लगता है मानो फिल्म के लोग हमेशा खुद को परछाईं और पीछे से आती रोशनी में ही देखते रहे हों। सामान्य नियम के अनुसार, किरदारों को इस तरह व्यवहार नहीं करना चाहिए जैसे कि उन्हें पता है कि वे एक फिल्म में हैं। यह हमें भी विचलित करता है और उन्हें भी।71

दिलचस्प बात यह है कि अमेरिका में, और विशेष रूप से कॉलेज परिसरों में, वियतनाम युद्ध और नागरिक अधिकार आंदोलन के बाद के हालातों से बुरी तरह प्रभावित दर्शकों को यह फिल्म पसंद आई, जो बेचैनी और व्यक्तिवाद की बात करती थी। सिद्धार्थ भले ही बॉक्स ऑफिस पर सफल न रही हो, लेकिन एक कल्ट क्लासिक बन गई। इसने दुनिया भर में प्रदर्शन किया।

सिमी और शशि फिल्म के प्रीमियर के लिए न्यूयॉर्क गए और सितंबर 1972 में कॉनराड के साथ वेनिस फिल्म फेस्टिवल में शामिल हुए। सिमी कहती हैं, 'सिद्धार्थ वाली रात मुझे हमेशा याद रहेगी।' 'शशि और मैं होटल एक्सेल्सियर से थिएटर तक पैदल गए। गहरे रंग की जोधपुर ड्रेस में शशि मेरे बगल में बेहद खूबसूरत लग रहे थे। मैंने सिद्धार्थ की हेड ज्वेलरी पहनी थी और अपने इवनिंग कोट का लंबा ट्रेल लगाया था, और कुछ युवा इतालवी लड़के मेरे पीछे-पीछे चलते रहे। फोटोग्राफर पागल हो गए!' स्क्रीनिंग के बाद, पंद्रह मिनट तक तालियों की गड़गड़ाहट गूंजी। सिमी कहती हैं, 'यह जादुई, अवास्तविक था।' सिद्धार्थ ने वेनिस में सिल्वर लायन पुरस्कार जीता।

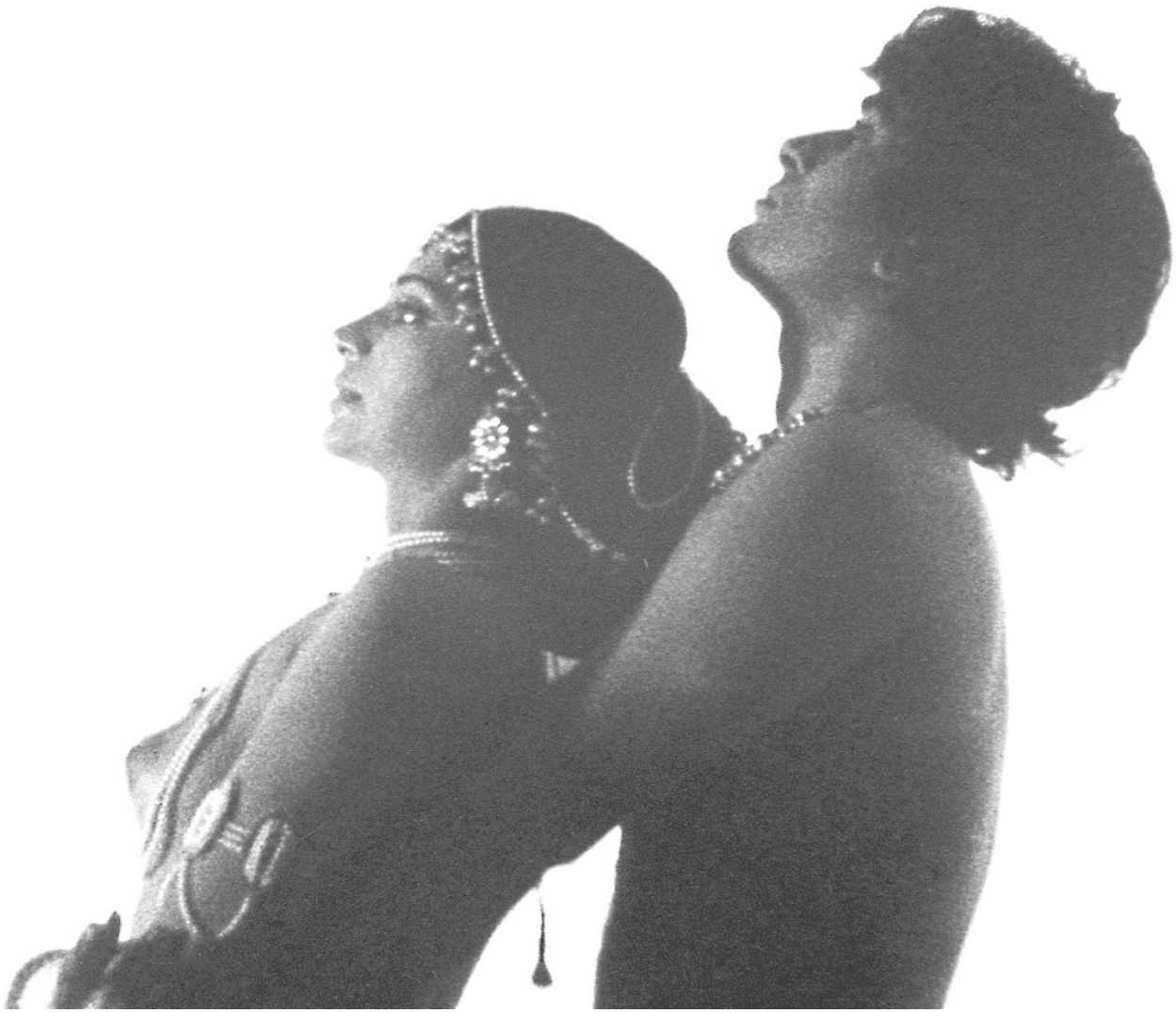

1972, सिद्धार्थ। शशि कपूर अनिच्छुक संन्यासी की भूमिका में हैं, और खूबसूरत सिमी गरेवाल एक अभिनेत्री के रूप में हैं।
वेश्या। सौजन्य: अलेक्जेंडर रूक्स/लोटस फिल्म्स।

1972, सिद्धार्थ। एक ऐसी फिल्म जो विवादों में घिरी रहेगी। इस दृश्य में, कमला पढ़ाती हैं।
सिद्धार्थ को चुंबन करना सिखाया गया। असल में, शशि कपूर ने सिमी गरेवाल को चुंबन करना सिखाया था।
कैमरा। सौजन्य: अलेक्जेंडर रूक्स/लोटस फिल्म्स।

इटली में अपनी आखिरी रात, शशि और सिमी गोंडोला की सवारी पर गए।
गोंडोला चालक गाना गा रहा था और अचानक ही शशि उछल पड़े। सिमी

बताती हैं, “हमारे शांत, हमेशा गरिमापूर्ण और शालीन शशि ने गोंडोला चालक के साथ एक अजीबोगरीब आधा-हिंदी युगल गीत शुरू कर दिया! हर इतालवी पंक्ति के बाद वह एक मनगढ़ंत हिंदी पंक्ति गाते थे। वह इतने मज़ेदार थे कि मैं हँसना बंद नहीं कर पाई। फिर शशि पूरे जोश में शम्मी कपूर के कुछ गाने गाने लगे! वैसे तो शशि को गाना नहीं आता! लेकिन वहाँ से गुज़र रहे गोंडोला चालकों ने तालियाँ बजाकर उनका उत्साह बढ़ाया। यह किसी फिल्म के हास्य दृश्य जैसा था।”
शशि के सबसे करीबी दोस्तों, सहयोगियों और सह-कलाकारों से बातचीत करने पर मुझे यही बात समझ में आई है - शशि की फिल्मों में ही नहीं, बल्कि जीवन में भी उनकी सहजता और सरलता झलकती है। चाहे उनके किरदार कितने भी गंभीर हों, उनका अभिनय कितना भी संयमित हो, या आलोचकों और दर्शकों द्वारा उनकी फिल्मों को कैसे भी देखा जाए, शशि मूल रूप से एक ऐसे अभिनेता और इंसान हैं जो गंभीरता के बोझ तले दबने से इनकार करते हैं।

नोट्स
1. रॉबर्ट एमेट लॉन्ग, जेम्स आइवरी के साथ बातचीत (लॉस एंजिल्स, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2005), पृ. 67.
2. इस्माइल मर्चेंट, भारत से मेरी यात्रा: एक फिल्म निर्माता की यात्रा
बॉम्बे से हॉलीवुड तक (न्यूयॉर्क: वाइकिंग स्टूडियो, 2002), पृ. 43.
3. क्राइटेरियन में शशि कपूर के साथ एक साक्षात्कार पर आधारित

जेम्स आइवरी द्वारा निर्देशित और इस्माइल मर्चेंट द्वारा निर्मित 1963 की फिल्म 'द हाउसहोल्डर' का कलेक्शन डीवीडी, जिसमें शशि कपूर, लीला नायडू और दुर्गा खोटे ने अभिनय किया है।
4. 1961, Char Diwari, dir. Krishan Chopra, prod. Jagan Prasad Sharma, starring Shashi Kapoor, Nanda, Manmohan Krishna.
5. 1961, धर्मपुत्र, निर्देशक यश चोपड़ा, निर्माता बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत
Shashi Kapoor, Mala Sinha, Rehman.
6. क्राइटेरियन में इस्माइल मर्चेंट के साथ एक साक्षात्कार पर आधारित
द हाउसहोल्डर का कलेक्शन डीवीडी।
7. क्राइटेरियन में शशि कपूर के साथ एक साक्षात्कार पर आधारित द हाउसहोल्डर का कलेक्शन डीवीडी।
8. क्राइटेरियन में इस्माइल मर्चेंट के साथ एक साक्षात्कार पर आधारित
द हाउसहोल्डर का कलेक्शन डीवीडी।
9. रूथ प्रॉवर झबवाला, द हाउसहोल्डर (न्यूयॉर्क: डब्ल्यू.डब्ल्यू.
नॉर्टन एंड कंपनी, 1960)।
10. क्राइटेरियन में शशि कपूर के साथ एक साक्षात्कार पर आधारित द हाउसहोल्डर का कलेक्शन डीवीडी।
11. वही।
12. वही।
13. क्राइटेरियन में जेम्स आइवरी के साथ एक साक्षात्कार पर आधारित

जेम्स आइवरी द्वारा निर्देशित और इस्माइल मर्चेंट द्वारा निर्मित 1983 की फिल्म 'हीट एंड डस्ट' की कलेक्शन डीवीडी, जिसमें जूली क्रिस्टी, ग्रेटा स्काची और शशि कपूर ने अभिनय किया है।
14. क्राइटेरियन में शशि कपूर के साथ एक साक्षात्कार पर आधारित हीट एंड डस्ट का कलेक्शन डीवीडी।
15. इस्माइल मर्चेंट, भारत से मेरी यात्रा: एक फिल्म निर्माता की यात्रा
बॉम्बे से हॉलीवुड तक (न्यूयॉर्क: वाइकिंग स्टूडियो, 2002), पृ. 50.
16. 1965, शेक्सपियर वाला, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल
Merchant, starring Shashi Kapoor, Felicity Kendal, Madhur Jaffrey.
17. 1970, बॉम्बे टॉकी, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट,
इसमें शशि कपूर, जेनिफर केंडल और जिया मोहियुद्दीन ने अभिनय किया है।
18. 1988, द डिसीवर्स, निर्देशक निकोलस मेयर, निर्माता इस्माइल मर्चेंट,
इसमें पियर्स ब्रॉसनन, शशि कपूर और सईद जाफरी ने अभिनय किया है।
19. 1993, हिरासत में, निर्देशक: इस्माइल मर्चेंट, निर्माता: वाहिद चौहान,
starring Shashi Kapoor, Shabana Azmi, Om Puri.
20. 1998, साइड स्ट्रीट्स, निर्देशक टोनी गेर्बर, निर्माता ब्रूस वीस, अभिनीत

वेलेरिया गोलिनो, शशि कपूर, शबाना आज़मी।
21. अमिताव घोष, 'सत्यजीत रे', आउटलुक, 22 जून 2004।
22. बॉस्ले क्रॉथर, ‘द हाउसहोल्डर: मूवी रिव्यू’, द न्यू
यॉर्क टाइम्स, 22 अक्टूबर 1963।
23. मधु जैन द्वारा लिखित पुस्तक "द कपूर्स: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन" में उद्धृत।
सिनेमा (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृ. 238.
24. जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा
(लंदन: सिडगविक एंड जैक्सन, 1986), पृ. 145.
25. वही, पृष्ठ 154.
26. क्राइटेरियन में शशि कपूर के साथ एक साक्षात्कार पर आधारित शेक्सपियर वॉलह का कलेक्शन डीवीडी।
27. बॉस्ले क्रॉथर, ‘शेक्सपियर वॉलह: मूवी रिव्यू’, द न्यूयॉर्क टाइम्स, 23 मार्च 1966।
28. क्राइटेरियन में शशि कपूर के साथ एक साक्षात्कार पर आधारित शेक्सपियर वॉलह का कलेक्शन डीवीडी।
29. 1969, द गुरु, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत
Michael York, Madhur Jaffrey, Zohra Sehgal.
30. 1975, ऑटोबायोग्राफी ऑफ ए प्रिंसेस, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल
मर्चेंट, जिसमें जेम्स मेसन, मधुर जाफरी और डायने फ्लेचर ने अभिनय किया है।
31. 1988, The Perfect Murder, dir. Zafar Hai, prod. Wahid Chowhan,
नसीरुद्दीन शाह, मधुर जाफरी, रत्ना पाठक अभिनीत।

32. 1999, Cotton Mary, dir. Ismail Merchant, prod. Nayeem Hafizka,
Richard Hawley, starring Greta Scacchi, Madhur Jaffrey, James Wilby.
33. 2007, द दार्जिलिंग लिमिटेड, निर्देशक: वेस एंडरसन, निर्माता: वेस
एंडरसन, रोमन कोपोला, लिडिया डीन पिल्चर, स्कॉट रुडिन, मुख्य कलाकार: ओवेन विल्सन, एड्रियन ब्रॉडी, जेसन श्वार्ट्जमैन।
34. 1964, Charulata, dir. Satyajit Ray, prod. R.D. Bansal, starring सौमित्र चटर्जी, माधबी मुखर्जी, सैलेन मुखर्जी।
35. इस्माइल मर्चेंट, भारत से मेरी यात्रा: एक फिल्म निर्माता की यात्रा
बॉम्बे से हॉलीवुड तक (न्यूयॉर्क: वाइकिंग स्टूडियो, 2002), पृ. 63.
36. ‘समीक्षा: शेक्सपियर वाला’, वैरायटी, 31 दिसंबर 1964।
37. रिचर्ड शिकेल, ‘भारत में एक मधुर और सूक्ष्म आदर्श: शेक्सपियर’
वल्लाह', जीवन, 19 अप्रैल, 1966।
38. बॉस्ले क्रॉथर, ‘शेक्सपियर वॉलह: मूवी रिव्यू’, द
न्यूयॉर्क टाइम्स, 23 मार्च 1966।
39. जेफ्री केंडल ने फेलिसिटी केंडल को 30 जुलाई को लिखे पत्र में यह बात कही।
1965. फेलिसिटी केंडल, व्हाइट कार्गो (लंदन: माइकल जोसेफ, 1998), पृ. 207.
40. इस्माइल मर्चेंट, भारत से मेरी यात्रा: एक फिल्म निर्माता की यात्रा

बॉम्बे से हॉलीवुड तक (न्यूयॉर्क: वाइकिंग स्टूडियो, 2002), पृ. 73.
41. 1981, 36 चौरंगी लेन, दिर. अपर्णा सेन, प्रो. शशि
कपूर, जेनिफर केंडल, देबाश्री रॉय, धृतिमान चटर्जी अभिनीत।
42. विंसेंट कैनबी, ‘बॉम्बे टॉकी: मूवी रिव्यू’, द न्यूयॉर्क टाइम्स, 19 नवंबर 1970।
43. ‘Typewriter Tip Tip Tip Tip Karta Hai’, lyr. Hasrat Jaipuri, comp.
Shankar–Jaikishan, artists Asha Bhosle, Kishore Kumar.
44. जेसिका हाइन्स द्वारा उद्धृत, लुकिंग फॉर द बिग बी: बॉलीवुड, बच्चन और मैं (लंदन: ब्लूम्सबरी, 2007), पृ. 101.
45. वही, पृष्ठ 102.
46. 1985, ए रूम विद ए व्यू, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल
मर्चेंट, जिसमें मैगी स्मिथ, हेलेना बोनहम कार्टर और डेनहोम इलियट ने अभिनय किया है।
47. 1992, हॉवर्ड्स एंड, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट,
इसमें एंथोनी हॉपकिंस, वैनेसा रेडग्रेव और हेलेना बोनहम कार्टर ने अभिनय किया है।
48. 1980, शान, निर्देशक रमेश सिप्पी, निर्माता जी.पी. सिप्पी, अभिनीत सुनील
दत्त, अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, राखी, परवीन बाबी।
49. 1981, Kalyug, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring
Shashi Kapoor, Rekha, Raj Babbar.

50. 1982, Namak Halaal, dir. Prakash Mehra, prod. Satyendra Pal,
अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, स्मिता पाटिल, वहीदा रहमान, परवीन बाबी अभिनीत।
51. 1982, Vijeta, dir. Govind Nihalani, prod. Shashi Kapoor, starring
Shashi Kapoor, Rekha, Kunal Kapoor.
52. क्राइटेरियन में जेम्स आइवरी के साथ एक साक्षात्कार पर आधारित
हीट एंड डस्ट का कलेक्शन डीवीडी।
53. 1982, गांधी, निर्देशक: रिचर्ड एटनबरो, निर्माता: रिचर्ड एटनबरो अभिनीत फिल्म में बेन किंग्सले, रोहिणी हट्टंगडी और रोशन सेठ ने अभिनय किया है।
54. 1984, द ज्वेल इन द क्राउन [टीवी श्रृंखला], निर्देशक जिम ओ'ब्रायन,
क्रिस्टोफर मोराहन द्वारा निर्मित, क्रिस्टोफर मोराहन अभिनीत, आर्ट मलिक, सईद जाफरी, पेगी एशक्रॉफ्ट।
55. 1984, द फार पवेलियंस [टीवी श्रृंखला], निर्देशक पीटर डफेल, निर्माता।
जेफ्री रीव द्वारा निर्देशित, जिसमें बेन क्रॉस, एमी इरविंग और क्रिस्टोफर ली ने अभिनय किया है।
56. मधु जैन द्वारा लिखित पुस्तक "द कपूर्स: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन" में उद्धृत।
सिनेमा (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृ. 244.
57. रोजर एबर्ट, ‘गर्मी और धूल’, शिकागो सन-टाइम्स, 20 अक्टूबर 1983.

58. [illegible], ‘[illegible]: [illegible]’, [illegible], 15 [illegible] 1983।
59. [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (1970) [illegible]: [illegible], 2010)।
60. 1972 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
dir. Conrad Rooks, prod. Conrad Rooks, starring Shashi Kapoor, Simi Garewal, Romesh Sharma.
61. 1970, Aranyer Din Ratri, dir. Satyajit Ray, prod. Asim Dutta, [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]
62. 1970, Mera Naam Joker, dir. Raj Kapoor, prod. Raj Kapoor, starring Raj Kapoor, Simi Garewal, Manoj Kumar.
63. '[illegible]', [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]. [illegible], [illegible] [illegible]
64. '[illegible] [illegible]', [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]. [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]
65. '[illegible]', [illegible] [illegible], [illegible]. -[illegible] [illegible], [illegible]
Lata Mangeshkar.
66. 1964, Kohraa, dir. Biren Nag, prod. Hemant Kumar, starring [illegible], [illegible], [illegible]
67. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
68. 1933, [illegible], [illegible]: [illegible]. [illegible], [illegible]: [illegible], [illegible]

देविका रानी, हिमांशु राय, अब्राहम सोफ़र।
69. ‘समीक्षा: सिद्धार्थ’, वैरायटी, 31 दिसंबर 1971।
70. विंसेंट कैनबी, ‘सिद्धार्थ: फिल्म समीक्षा’, द न्यूयॉर्क टाइम्स, 19 जुलाई 1973।
71. रोजर एबर्ट, ‘सिद्धार्थ’, शिकागो सन-टाइम्स, 18 जुलाई 1973। 4

टैक्सी

शशि और 1970 के दशक की पागलपन भरी घटनाएं

‘My father-in-law used to call Shashi Uncle “taxi” back then,’ Neetu Singh Kapoor says. ‘Ki kisi ko bhi apni gaadi main bitha leta hai!’ (‘He’d seat anyone and everyone in his car.’)
नीतू की बात तो लाक्षणिक अर्थ में है। राज कपूर ने अपने भाई को ‘टैक्सी’ कहा था जब वह शशि से डेट पाने की बेताब कोशिश कर रहा था। राज कपूर को फिल्म '1 सत्यम शिवम सुंदरम' के लिए चुना गया था—यह फिल्म ऊपरी तौर पर शारीरिक और आध्यात्मिक प्रेम के बीच अंतर को दर्शाती है, लेकिन वास्तव में गायिका लता मंगेशकर के प्रति राज के प्रेम को दर्शाती है। फिल्म में मुख्य भूमिका निभाने के लिए अभिनेताओं की होड़ लगी थी, लेकिन राज को दृढ़ विश्वास था कि इस आत्मकथात्मक कहानी में उनके बचपन का किरदार केवल शशि ही निभा

सकते हैं। इसलिए उन्होंने अपने भाई का शेड्यूल देखा और अन्य फिल्म निर्माताओं को दी गई सभी तारीखें अपने नाम कर लीं। शशि ने फिल्म समीक्षक दीपा गहलोत को बताया, 'उन्होंने यह भी ज़िद की कि जिन दिनों मुझे उनके साथ शूटिंग करनी थी, उन दिनों मैं किसी और के साथ शूटिंग नहीं करूंगा। राज जी को खुश रखने के लिए मुझे दिन-रात काम करना पड़ता था, दिन में चार से पांच शिफ्ट में काम करना पड़ता था और सोना पड़ता था।
एक कार में।’2 उनकी उन्मत्त जीवनशैली, जिसने कार को उनका अर्ध-स्थायी पता बना दिया, के कारण उन्हें ‘टैक्सी’ उपनाम मिला। लेकिन शशि का उपनाम 'टैक्सी' बनने के पीछे कुछ और कारण भी थे। लेखक बन्नी रूबेन का कहना है कि जब राज को शशि और ज़ीनत अमान (सत्यम शिवम सुंदरम में शशि की सह-कलाकार) के शूटिंग शेड्यूल के बारे में पता चला, तो दोनों को उनकी खरी-खोटी सुननी पड़ी। राज ने उन्हें डांटते हुए कहा, 'तुम लोग सितारे नहीं हो। तुम सब टैक्सी हो। कोई मीटर चालू करता है - तुम वहां जाते हो! फिर कोई दूसरा मीटर चालू करता है - और तुम वहां जाते हो। दो घंटे।'
यहां... कहीं और दो घंटे लगते हैं। टैक्सी! कलाकार लोग यही बन गए हैं।

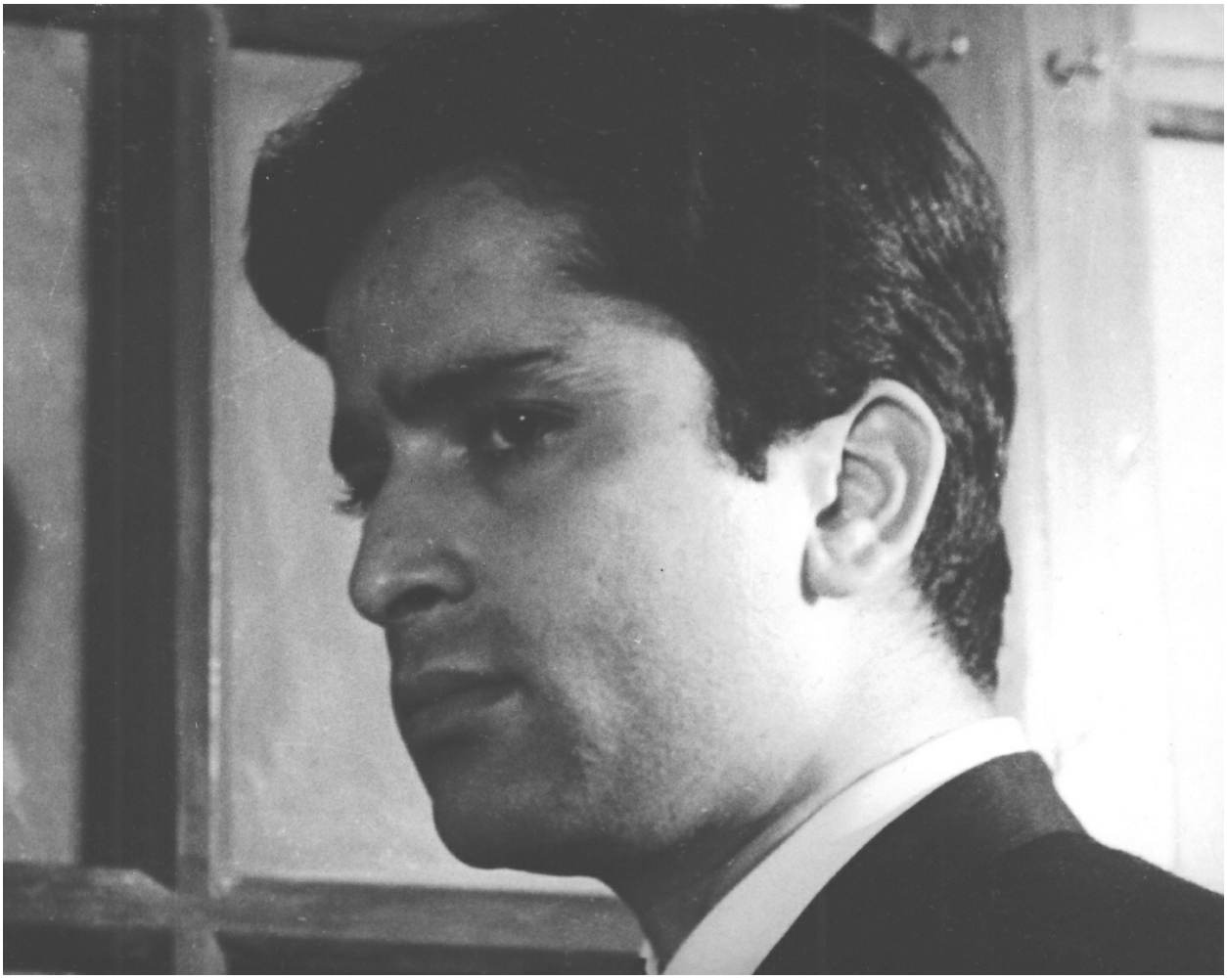

शशि कपूर, 1970 के दशक के सबसे व्यस्त सितारों में से एक। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

अपने बड़े भाई और पिता समान राज कपूर द्वारा सार्वजनिक रूप से फटकारे जाने का दर्द शशि को कई वर्षों तक सताता रहा। मधु जैन कहती हैं, 'इससे उन्हें बहुत दुख हुआ। वे बहुत संवेदनशील थे, वे किसी को भी अपने बारे में कुछ भी कहने पर कभी नहीं भूलते थे, खासकर अगर वह राज कपूर हों।'

फिर भी, शशि अपने फिल्मी शेड्यूल में बदलाव करने के लिए कुछ खास नहीं कर सकते थे। 1970 के दशक के उत्तरार्ध—वह दशक जिसने भारत में शशि के करियर को परिभाषित किया—में अभिनेता ने अनगिनत प्रोजेक्ट हाथ में लिए, एक स्टूडियो से दूसरे स्टूडियो में गए और कई तरह के किरदार निभाए। दरअसल, समीर
गांगुली, जिन्होंने फिल्म '4 शर्मिली' में शशि वर का निर्देशन किया था, कहते हैं कि हिंदी सिनेमा में शिफ्ट सिस्टम शशि वर की वजह से शुरू हुआ। 'वह सबसे व्यस्त अभिनेताओं में से एक थे।'
उन दिनों,’ उनका तर्क है।5
व्यस्त दिनचर्या के बावजूद, शशि ने कभी भी अपने निर्देशकों को निराश नहीं किया। समीर कहते हैं, "[वह] बिल्कुल समय के पाबंद थे। कभी-कभी, उनकी व्यस्त दिनचर्या के कारण, उन्हें देर हो जाती थी, लेकिन हममें से किसी को भी बुरा नहीं लगता था क्योंकि हम जानते थे कि एक बार जब वह सेट पर पहुँच जाते थे, तो वह अपना काम पूरी लगन से करते थे।"
जो उससे अपेक्षित था।
लेकिन शशि की व्यस्त फिल्मों की वजह से एक बड़ी खामी भी थी— जिसका प्रत्यक्ष अनुभव नीतू ने किया, जिन्होंने उनके साथ दस फिल्मों में काम किया। नीतू कहती हैं, 'मैं बहुत छोटी थी और मैंने इंडस्ट्री में ऐसे दौर में कदम रखा जब हम साथ में बेहद खराब फिल्में करते थे। हम तीन शिफ्ट में काम करते थे। मुझे पता ही नहीं होता था कि मैं किसका किरदार निभा रही हूं, क्या कर रही हूं। शशि अंकल भी सेट पर आकर पूछते थे, "हां क्या लाइनें हैं?"' फिल्मी प्रतिबद्धताओं के चलते तनावग्रस्त शशि के लिए कथानक और किरदारों को याद रखना लगभग नामुमकिन था। संजना कपूर को याद है कि उन्हें इस बात का एहसास तब हुआ जब वे परिवार के साथ दक्षिण

मुंबई से पृथ्वीराज कपूर से मिलने जुहू तक लंबी यात्रा पर जाया करती थीं। 'जब पापाजी जीवित थे—और हर रविवार हम उनसे मिलने जाते थे, अगर मेरे पिताजी शहर में होते थे—मैं अपने पिताजी से उस फिल्म की कहानी सुनाने को कहती थी जिसमें वे अभिनय कर रहे होते थे। और वे उसे मनगढ़ंत कहानी बना देते थे। उन्हें कुछ पता नहीं होता था। उन्हें बिल्कुल भी अंदाजा नहीं होता था!'
अगर 1970 का दशक शशि के लिए सबसे व्यस्त समय था, तो उसी दशक में उन्होंने कई फिल्मों और टीवी शो में अभिनय भी किया।
ऐसी फिल्में जो बेहद हिंसक और प्रतिगामी थीं। 7 चोर मचाये शोर— शशि और मुमताज के साथ अभिनीत कुछ फिल्मों में से एक यह फिल्म सचमुच आपत्तिजनक दृश्यों से भरी हुई है। दरअसल, जैसा कि आलोचक टॉड स्टैड्टमैन ने बताया है, इसमें
‘बलात्कार के प्रति एक तरह का जुनून’।8 विजय (शशि) को अपनी प्रेमिका रेखा (मुमताज) के साथ बलात्कार के झूठे आरोप में जेल में डाल दिया जाता है। जब वह जेल से भाग निकलता है, तो वह सोचता है कि चूंकि उसे झूठा फंसाया गया है, तो वह अपने आरोप लगाने वालों को सही साबित कर दे—जिससे एक भयावह दृश्य सामने आता है जहां विजय अपनी प्रेमिका के साथ बलात्कार करने का इरादा जाहिर करता है। इसके तुरंत बाद, रेखा, विजय को शर्मिंदा करने की कोशिश में, उसके सामने अपने स्तन दिखाती है, और विजय, ‘खुद को एक अच्छे व्यक्ति के रूप में साबित करते हुए’
भारतीय लड़का तुरंत अपनी आँखें ढक लेता है और उससे भी ढकने की ज़िद करता है’9—जो इसे एक साथ पूरी तरह से समझ से परे और बेहद परेशान करने वाली फिल्म बना देता है। हालाँकि कुछ सहनीय क्षण भी हैं, जो पूरी तरह से गानों की बदौलत हैं—‘घुंघरू की

तराह’10 11 और ‘एक दाल पर तोता बोले’, अन्य गानों के साथ-साथ—वह चौंकाने वाला अंत, जहाँ हमारा ‘हीरो’ बदला लेने के लिए बलात्कार का प्रयास करने के बाद अपनी प्रेमिका की वफादारी जीत लेता है, संगीत की जो थोड़ी-बहुत बची-खुची चमक थी, उसे भी खत्म कर देता है।
फिर आती है बेहद खराब फिल्म '12 इम्मान धरम'—जो सलीम (खान)- जावेद (अख्तर) की कई फिल्मों में से एक है, जिनमें शशि कपूर ने अभिनय किया था—जिसे दर्शकों ने भी नकार दिया, और इसी वजह से यह पटकथा लेखक जोड़ी की इकलौती फ्लॉप फिल्म बन गई। कहानी समझ से परे घटनाओं का एक बेमेल पुलिंदा है—अंधी श्यामली (अपर्णा सेन) के साथ लगभग बलात्कार हो जाता है; शराबी जेनी (हेलेन) को अपनी नियति का सामना करने और मरने के लिए मजबूर किया जाता है; और दलाल मोहन (शशि) और अहमद (अमिताभ बच्चन) आत्मधर्मी कबीर (संजीव कुमार) की वजह से पश्चाताप के मार्ग पर चल पड़ते हैं।
संजना ने अपने पिता को इन फिल्मों में काम करते हुए देखकर कहा, ‘मुझे याद है मैंने अपनी माँ से पूछा था, “वो इतनी घटिया फिल्मों में कैसे काम कर सकते हैं?” सच कहूँ तो मैं कोई कट्टर नारीवादी नहीं हूँ, लेकिन हिंदी सिनेमा का एक ऐसा दौर है जो मुझे बहुत परेशान करता है—न सिर्फ हिंसा, बल्कि महिलाओं के साथ किया जाने वाला बर्ताव भी।’ फिर जेनिफर केंडल कपूर ने संजना को समझाया कि अगर आर्थिक रूप से संभव होता तो उनके पिता स्टेज एक्टर बने रहते। ‘लेकिन उनका परिवार था और परिवार बढ़ता गया। इसके साथ ही जीवनशैली भी बदल गई और आरामदायक हो गई। अगर आप हर गर्मियों में लंदन जाने का फैसला करते हैं और गोवा में भी घर रखते हैं, तो आपको एक निश्चित रकम कमानी ही पड़ती है। आप इस चक्र में फंस जाते हैं और इससे बाहर नहीं निकल पाते।’

अनिल धारकर आगे कहते हैं, 'मुझे लगता है शशि ने हर बात को सहजता से स्वीकार कर लिया। उन्होंने शुरू से ही इसे मान लिया था - व्यावसायिक सिनेमा पहले ऐसा ही हुआ करता था और जब आप किसी भूमिका के लिए "हां" कहते थे, तो आपको वही करना होता था जो आपसे करने को कहा जाता था।'
हालांकि 1970 के दशक में शशि की कई फिल्में भुलाने लायक थीं, लेकिन कुछ देखने लायक फिल्में भी थीं, जिनमें शर्मिली भी शामिल है। यह फिल्म निस्संदेह राखी की फिल्म है क्योंकि इसमें उन्होंने दोहरी भूमिका निभाई है, लेकिन इस फिल्म ने शशि को एक स्टार के रूप में स्थापित करने में भी कामयाबी हासिल की और उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका दिया।
his uber-charming self while singing ‘Khilte Hain Gul Yahan’,13 ‘Oh Meri
शर्मिली’14 15 और दिल दहला देने वाली फिल्म ‘कैसे कहें हम’ में भी उन्होंने काम किया है। इसके अलावा, उन्हें अपनी अभिनय प्रतिभा दिखाने का मौका भी मिलता है, क्योंकि वे एक प्यार में डूबे नौजवान से लेकर, गलत जुड़वां से शादी करने पर टूट चुके शराबी और फिर अपने पूर्वाग्रहों पर काबू पाना सीखने वाले पति तक के किरदारों में बदलते हैं।
अगर मुझे शर्मिली याद आती है, तो इसके पीछे निजी कारण भी हैं— मैंने स्कूल के नाटक की रिहर्सल छोड़ दी थी ताकि कुछ दोस्तों के साथ दिल्ली के कनॉट प्लेस स्थित रीगल सिनेमा में फिल्म देख सकूँ। मैंने अपनी माँ को नहीं बताया था, लेकिन किसी तरह उन्हें पता चल गया—जैसा कि अक्सर माता-पिता को पता चल ही जाता है—कि मैं स्कूल से बंक करके आई थी। और वह निराश हुईं—इसलिए नहीं कि मैंने क्लास बंक की थी, बल्कि इसलिए कि मैंने उनसे सच छुपाने का

फैसला किया था। आज भी, जब मैं शर्मिली देखती हूँ, तो उस समय की यादें मेरे मन में बस जाती हैं।

अगर 1970 का दशक शशि कपूर के करियर में एक महत्वपूर्ण दशक था, तो इसका एक कारण यह भी था कि शबाना आज़मी, अमिताभ बच्चन और यश चोपड़ा के साथ उनके तीन संबंध और मजबूत हुए।
शबाना की राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता डेब्यू के बाद यह उनकी पहली व्यावसायिक फिल्म है।
16-17 में अंकुर - शशि के साथ फकीरा में थीं, जो जेम्स बॉन्ड से प्रेरित एक अजीबोगरीब, भद्दा थ्रिलर और कॉमेडी फिल्म थी। शबाना कहती हैं, 'शशि और उनकी पत्नी ने अंकुर देखी थी और उन्हें मेरा काम बहुत पसंद आया था,' जिससे यह संकेत मिलता है कि शायद कपूर परिवार ने ही उन्हें उनकी पहली व्यावसायिक फिल्म के लिए सिफारिश की थी। 'लेकिन मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं इस आदमी के साथ काम करूंगी। मैंने हमेशा उन्हें एक प्रशंसक के रूप में देखा था।'
शशि के मार्गदर्शन में, शबाना ने पहली बार मुख्यधारा के सिनेमा की बारीकियां सीखीं। कश्मीर में फिल्म 'फकीरा' की शूटिंग के दौरान, पुणे के भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान (एफटीआईआई) से अभिनय में स्वर्ण पदक विजेता शबाना को प्रकाश परावर्तकों को देखने में कठिनाई हो रही थी। वह मुझे बताती हैं, 'अगर हम कोई आउटडोर सीन कर रहे होते—चाहे वह नाटकीय हो, रोमांटिक हो या दुखद—मेरी आंखें बंद रहती थीं। और मेरी आंखों से आंसू बहते थे।' शशि, जो शबाना को उनकी किशोरावस्था से जानते थे और उनसे

बारह साल बड़े थे, अक्सर दूसरों की उपस्थिति में उनके साथ बनावटी गुस्से वाला लहजा अपनाते थे—ठीक वैसे ही जैसे कोई भाई अपनी छोटी बहन को, जिसका वह सम्मान करता है, लेकिन उसमें कुछ कमियां भी पाता है, डांटता है; अब, वह डांटते हुए कहते थे: 'इतना बड़ा गोल्ड मेडल लेकर फायदा क्या है? आंखें नहीं खोल सकती हो?' ('इतना बड़ा गोल्ड मेडल जीतने का क्या फायदा? आंखें नहीं खोल सकती हो?') फिर, उन्होंने शबाना को परावर्तकों को देखना सिखाया। वह कहती हैं, 'उसने मुझे तब तक घूरने के लिए मजबूर किया, जब तक कि मुझे इसकी आदत नहीं हो गई,' और इस प्रक्रिया को वह पूरी तरह से 'यातना' बताती हैं।
फिर शशि ने उन्हें टॉप लाइटिंग के बारे में सिखाया, जो गलत परिस्थितियों में किसी अभिनेत्री की आंखों को गायब कर सकती है और उसे भूतिया रूप दे सकती है। शबाना कहती हैं, 'उन्होंने मुझे बताया कि अगर आपको टॉप लाइट के साथ शूटिंग करनी है, तो आपको अपना चेहरा ऊपर की ओर झुकाना होगा, ताकि परछाई कम पड़े।' 'मैंने उनसे कई तकनीकी बारीकियां सीखीं।'
शशि के करियर के 1970 के दशक को भी स्वीकार किया जाना चाहिए क्योंकि इसी दौरान एक ऐसी घटना का जन्म हुआ जिसे शशिताभ के नाम से जाना जाने लगा - शशि और अमिताभ भारतीय सिनेमाई इतिहास में सबसे सफल दो-नायक जोड़ियों में से एक बन गए।
यह जोड़ी कैसे बनी? अमिताभ स्वीकार करते हैं, 'मुझे नहीं पता कि निर्माताओं और निर्देशकों ने हमें एक जोड़ी के रूप में क्यों चुना।' 'मुझे लगता है कि हम भाइयों जैसे दिखते थे और हमारी कुछ फिल्मों की सफलता ने इस जोड़ी को और मजबूत बना दिया।' रमेश तलवार, जो मुख्य सहायक निर्देशक थे,

दीवार 18 में आगे कहा गया है, 'निर्देशक एक ही अभिनेताओं के साथ काम करने के आदी हो जाते हैं। जैसे ही कोई अच्छी भूमिका लिखी जाती है, कई निर्देशक सबसे पहले यही सोचते हैं कि अपने पसंदीदा सितारों के साथ दोबारा कैसे काम किया जाए—कास्टिंग इसी तरह होती है। वे सोचते हैं, "यही मेरा अभिनेता है और यह भूमिका उसकी अभिनय शैली के लिए एकदम सही होगी।" सत्यजीत रे ने भी इसी पैटर्न का पालन किया, क्योंकि उन्होंने अक्सर सौमित्र चटर्जी को कई तरह की भूमिकाओं में लिया।'
शशि और अमिताभ ने चौदह फिल्मों में एक साथ काम किया - जिनमें अजीबोगरीब बातें भी शामिल हैं।
मनमोहन देसाई की फिल्म '19 सुहाग' में जुड़वां भाई-बहन के रूप में शशि जी के अभिनय ने सबको प्रभावित किया और जल्द ही उन्हें अमिताभ की पसंदीदा नायिका के रूप में जाना जाने लगा। बेशक, यह एक लैंगिक भेदभावपूर्ण टिप्पणी है, लेकिन इसका अर्थ शशि जी के कोमल चेहरे और आकर्षक व्यक्तित्व के साथ-साथ इस तथ्य पर भी है कि उन्होंने अमिताभ द्वारा अपनाए गए गंभीर किरदारों के विपरीत, सौम्य और सकारात्मक चरित्रों को निभाया। निर्देशक करण जौहर ने इस पुस्तक की प्रस्तावना में इस बात का उल्लेख किया है, जब वे शशि जी के 'शांत स्वभाव और सौम्यता' का जिक्र करते हुए लिखते हैं कि उन्हें अक्सर 'बॉलीवुड में चल रहे 'बदला या कुछ नहीं' के दौर के विपरीत' भूमिकाओं के लिए चुना जाता था। अमिताभ आगे कहते हैं: 'शशि जी बेहद आकर्षक थे और ऐसे किरदार उन पर ही अधिक जंचते थे। इसीलिए निर्देशकों और लेखकों ने उन्हें वे भूमिकाएँ दीं। मुझे लगता है कि वह अंधकारमय, परेशान किरदार मुझ पर ज्यादा जंचता था!' इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि अमिताभ जी के व्यक्तित्व ने उन्हें 'गुस्से वाले नौजवान' का उपनाम दिला दिया।

शशि और अमिताभ की पहली फिल्म (भले ही उनकी जोड़ी दमदार न हो)। वह बहु-सितारा प्रोडक्शन, 20 रोटी कपड़ा और मकान में थे—एक विचित्र संरचना वाली फिल्म जिसमें मोहन बाबू (शशि), एक संघर्षरत लेकिन महत्वाकांक्षी शीतल (ज़ीनत अमान) के धनी बॉस, उसे रिझाने की कोशिश करते हैं, इससे पहले कि उन्हें पता चले कि वह बेरोजगार भरत (मनोज कुमार) की मंगेतर है। इस कहानी के विपरीत, अमिताभ बच्चन, भरत के छोटे भाई और एक देशभक्त सैनिक विजय की भूमिका में, हमेशा की तरह गुस्से में हैं, जिन्हें पता चलता है कि जिस भाई को वे अपना आदर्श मानते थे, वह अब डॉन बनकर सफल हो गया है! हालांकि शशि और अमिताभ दोनों की भूमिकाएँ मनोरंजक हैं, दुख की बात यह है कि वे बहुत कम स्क्रीन समय साझा करते हैं।
इस विशाल कलाकारों की टोली में यह स्पष्ट है कि शशि कपूर ही असली 'स्टार' हैं - एक ऐसा तथ्य जिसे मनोज कुमार फिल्म के शुरुआती क्रेडिट में प्रमुख अभिनेताओं के नामों के साथ-साथ एक अलग स्लाइड में यह घोषणा करते हुए स्वीकार करते हैं: 'और सबसे बढ़कर शशि कपूर'।
शशि की 'स्टार' होने की बात उनके बेहद शानदार कपड़ों से और भी पुख्ता हो जाती है—शानदार सूट और टाई, जिन्हें अनिल धारकर के अनुसार, जेनिफर केंडल कपूर ने डिज़ाइन किया था। जब शशि के किरदार मोहन बाबू शीतल को शादी का प्रस्ताव देते हैं, तो वे सफेद सूट और काले पोल्का डॉट्स वाली लाल सिल्क टाई पहने होते हैं; और सगाई समारोह के दौरान, वे अपनी टाई बदलकर सफेद बैकग्राउंड पर बड़े नारंगी डॉट्स वाली टाई पहन लेते हैं। अनिल कहते हैं, 'जेनिफर में एक खास बात थी जिसे हम 'स्वाद' कहते हैं। बहुत ही परिष्कृत स्वाद। उस स्वाद का असर शशि पर भी पड़ा।'

अंत में, शशि का अपने मित्र और उस्ताद निर्देशक यश चोपड़ा के साथ फलता-फूलता संबंध है; उनके कुशल निर्देशन में, अमिताभ और शशि के बीच की केमिस्ट्री का भरपूर फायदा दीवार से शुरू होने वाली कई ब्लॉकबस्टर फिल्मों में उठाया गया।

Deewaar (1975)

21 वक्त की सफलता के बाद, यश चोपड़ा शशि कपूर को कास्ट करना चाहते थे।
आदमी और इंसान 22 23 और इत्तेफाक। दुर्भाग्य से, शशि पहले ही बहुत व्यस्त हो चुके थे और दोनों फिल्मों के लिए उपलब्ध नहीं थे। आखिरकार, वक्त के एक दशक बाद, यश और शशि को हिंदी सिनेमा की सबसे यादगार फिल्मों में से एक, दीवार में एक साथ काम करने का मौका मिला। शशि को एक ईमानदार पुलिस वाले की भूमिका निभानी थी, जिसे अमिताभ बच्चन द्वारा अभिनीत एक निर्मम अपराधी का पीछा करने के लिए नियुक्त किया जाता है; उसे इस बात का पता नहीं था कि अपराधी उसका भाई था।
हालांकि, सभी परिस्थितियाँ अनुकूल होने और कास्टिंग से जुड़ी सभी चीज़ें सही जगह पर बैठने में थोड़ा समय लगा। उदाहरण के लिए, 'दीवार' के निर्माता गुलशन राय कास्टिंग के लिए उत्सुक थे।
यश की हिट फिल्म 24 दाग में मुख्य भूमिका निभाने वाले और 1960 के दशक के उत्तरार्ध और 1970 के दशक के आरंभिक वर्षों के सबसे बड़े स्टार रहे राजेश खन्ना ने फिल्म में अभिनय किया।
गुंडे की भूमिका के लिए, यश ने अमिताभ को फिल्म '25 ज़ंजीर' में देखा था और वह चाहते थे कि अमिताभ यह भूमिका निभाएं; बड़ी मुश्किल से यश गुलशन को मनाने में कामयाब हुए।

फिर शशि की बारी आई। यश उन्हें किसी फिल्म में लेने के लिए काफी समय से इंतजार कर रहे थे, लेकिन गुलशन को फिर से मनाने की जरूरत पड़ी, न सिर्फ निर्देशक से, बल्कि पटकथा लेखकों सलीम-जावेद से भी—जिन्होंने लगातार हिट फिल्में दी थीं और फिल्म की कास्टिंग प्रक्रिया को प्रभावित करने का उन्हें पूरा अधिकार था। जावेद अख्तर पत्रकार राजीव विजयकर को बताते हैं, 'हम शशि साहब को लेकर आपस में लड़ पड़े क्योंकि, हालांकि वह एक वरिष्ठ अभिनेता थे, अमिताभ से उम्र में बड़े थे और हम चाहते थे कि वह 'दीवार' में छोटे भाई का किरदार निभाएं।' 'हम जानते थे कि वह यह कर सकते हैं, और शशि भी उतने आश्वस्त नहीं थे जितने हम थे! और हमें उन्हें मनाना पड़ा।
निर्माता गुलशन राय को मनाना।26 अंततः, उनके प्रयासों का फल मिला।
वक्त फिल्म में शशि का नाम विजय था, वहीं दीवार फिल्म में उन्हें रवि कहा गया और अमिताभ को विजय (रोटी कपड़ा और मकान की तरह) के नाम से पुकारा गया। ये नाम इतने लोकप्रिय हो गए कि यश की फिल्मों में काम न करने के बावजूद भी ये नाम उनके साथ जुड़े रहे।
शशि को अधिक 'नेक' भूमिका और अमिताभ को अधिक भावुक भूमिका देने के कास्टिंग निर्णय ने आलोचकों और दर्शकों को यह टिप्पणी करने पर मजबूर कर दिया है कि दीवार में अमिताभ दोनों में से अधिक यादगार हैं। हालाँकि,
रमेश सिप्पी, जिन्होंने बाद में 27 शान में इन दोनों अभिनेताओं को निर्देशित किया, बताते हैं कि इस तरह की तुलनाएँ शशि द्वारा एक अभिनेता के रूप में लिए गए सचेत निर्णयों को समझने में विफल रहती हैं: ‘अगर शशि को [दीवार में] वह भूमिका निभानी थी और उसके

प्रति ईमानदार रहना था, तो उन्हें उसे संयमित तरीके से निभाना पड़ा। [...] हालांकि, अगर उन्होंने एक कलाकार के रूप में अलग दिखने की कोशिश की होती और उस तरह का प्रदर्शन दिया होता जिससे स्टारडम मिलता है, तो वह ऐसा नहीं कर पाते।
उन्होंने भूमिका के साथ न्याय नहीं किया। […] उन्होंने इसे सही ढंग से निभाया।’28
दिलचस्प बात यह है कि अपने प्रदर्शन के बारे में इन विरोधाभासी आकलन से अवगत होने के बावजूद, शशि अविचलित रहे। शर्मिला टैगोर कहती हैं, 'उनमें हमेशा हास्यबोध था। उन्हें दीवार में या कहीं और अमिताभ बच्चन के "नंबर दो" होने में कोई आपत्ति नहीं थी।' सबसे बढ़कर, 'दीवार' के कास्टिंग निर्णयों ने शशि और अमिताभ के बीच एक मजबूत दोस्ती का मार्ग प्रशस्त किया। शशि कहती हैं, 'हमने साथ में बहुत मज़ा किया।' एक बार पुणे में एक सौंदर्य प्रतियोगिता में जज के रूप में, जहाँ ज़ीनत अमान भी निर्णायक थीं, शशि और अमिताभ इतने नशे में थे कि वे यह तय नहीं कर पा रहे थे कि विजेता के रूप में किसे चुनें। शशि आगे कहती हैं, 'वे सभी देखने में अच्छी लग रही थीं।'
हमें बहुत अच्छा लगा। हमने सोचा कि उन सभी को पुरस्कार मिलना चाहिए।29 आखिरकार, ब्यूटी क्वीन रह चुकी ज़ीनत ने हस्तक्षेप किया और नशे में धुत अभिनेताओं के लिए फैसला सुनाया। यह दोनों सितारों के बीच कई सहज खुशनुमा पलों में से एक था।
आज, दीवार को यश की अन्य फिल्मों से अलग माना जाता है, क्योंकि इसमें मजबूत रोमांटिक संरचना का अभाव है। अमिताभ/विजय की प्रेमिका परवीन बाबी/अनीता हैं और फिल्म में शशि के किरदार की प्रेमिका वीरा हैं, जिसका किरदार नीतू सिंह ने निभाया है। लेकिन रोमांटिक पल संक्षिप्त हैं, अक्सर गानों के इर्द-गिर्द

घूमते हैं, और मुख्य कथानक को बाधित नहीं करते हैं। नीतू—जो उस समय ऋषि कपूर को डेट कर रही थीं—कहती हैं, 'दीवार में शशि अंकल और मेरे दो गाने थे और क्योंकि वे रोमांटिक थे, इसलिए उन्हें कोरियोग्राफर की आवश्यकता नहीं थी।'
वह गाना था “कह दूं तुम्हें”30—जो बहुत लोकप्रिय हुआ था, और आज भी बजता है।
सभी प्रमुख स्थानों पर—और “मैंने तुझे मांगा, तुझे पाया है”। 31 आमतौर पर, उस समय एक गाने को फिल्माने में दो या तीन दिन लगते थे। लेकिन—और मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ—हमने दोनों गानों की शूटिंग डेढ़ दिन में ही पूरी कर ली! यशजी का काम करने का यही तरीका था। वे बहुत ही तेज गति से काम करने के लिए जाने जाते थे। अगर 'दीवार' को याद किया जाता है, तो सिर्फ़ कलाकारों के लिए ही नहीं, बल्कि सलीम-जावेद (जो यश के साथ पहली बार काम कर रहे थे) की लेखन प्रतिभा और फिल्म के अंत में अमिताभ/विजय के लंबे मोनोलॉग पर शशि/रवि के चार शब्दों के क्लासिक जवाब—अविस्मरणीय, 'मेरे पास मां है!' के लिए भी। इस दमदार पंचलाइन को लिखने में बहुत सोच-विचार किया गया था। जावेद निर्देशक और लेखिका नसरीन मुन्नी कबीर को बताते हैं, 'रवि कई तरह की बातें कह सकते थे... "आज मेरे पास मां का प्यार है, मुझे ये मिल गया, मुझे वो मिल गया।" इसके विपरीत, विजय को ही लीजिए [...] जो इस पंचलाइन के लिए मंच प्रदान कर रहे हैं। रवि के एक ही वाक्य से अपनी छाप छोड़ने से पहले उनके पास कई संवाद हैं।' शायद विजय के एकालाप के बिना रवि के संवाद कारगर नहीं होते।’ वे आगे कहते हैं, ‘आपको एक दृश्य को सुनियोजित करना पड़ता है। अगर आप श्रोता की भावनाओं पर लगातार प्रहार करने की कोशिश करेंगे, तो उसकी संवेदनशीलता इतनी चकनाचूर हो जाएगी कि जब आप चाहेंगे कि वह कुछ महसूस करे, तो वह […]

थका हुआ।’32
अमिताभ/विजय और शशि/रवि के बीच का मशहूर दृश्य राजकमल स्टूडियो में फिल्माया गया था। अमिताभ कहते हैं, 'मुझे और फिल्म से जुड़े किसी भी व्यक्ति को यह बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि यह दृश्य और इसके संवाद इतने लोकप्रिय हो जाएंगे।' हालांकि इस लंबे संवाद का उचित प्रभाव पैदा करने के लिए पूरी तरह से पूर्वाभ्यास किया गया था, अमिताभ कहते हैं कि इससे यह अंदाजा नहीं लगाया जा सकता था कि यह दृश्य भारतीय फिल्म इतिहास का हिस्सा बन जाएगा: 'पेशेवर होने के नाते, हां, हम पूर्वाभ्यास करते हैं। लेकिन कलाकारों के बीच यह सामान्य बात है।'
बाद में, 'दीवार' के प्रीमियर पर अमिताभ शशि के बगल में बैठे थे। अमिताभ याद करते हैं:

हमने एक शब्द भी नहीं कहा। लेकिन 'मेरे पास माँ है' वाले पल में, मैंने अपने हाथ पर एक कोमल हाथ महसूस किया। वह शशि जी का हाथ था। उन्होंने कुछ नहीं कहा, लेकिन जिस तरह से उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा, उसने सब कुछ कह दिया। वह आश्वासन था, स्नेह था, स्वीकृति थी, प्रशंसा थी, सराहना थी, यह सब कुछ उस संघर्षरत अभिनेता के लिए था जिसने कभी उस फिल्म में एक एक्स्ट्रा की भूमिका निभाई थी जिसमें उसके बगल में बैठे यह सज्जन मुख्य भूमिका में थे [जेम्स आइवरी की फिल्म में]। बॉम्बे टॉकी 33] ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि ऐसा होगा।

दीवार ने बॉक्स ऑफिस पर खूब कमाई की और समीक्षकों से भी खूब प्रशंसा बटोरी। फिल्मफेयर पुरस्कार जीतने वाली इस फिल्म को शशि (सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता), यश (सर्वश्रेष्ठ निर्देशक)

और सलीम-जावेद (सर्वश्रेष्ठ पटकथा, कहानी और संवाद) के लिए पुरस्कार मिले। साथ ही, इसे साल की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का दर्जा भी मिला। यह फिल्म स्वर्ण जयंती पर हिट हुई और फिर पचास हफ्तों तक लगातार चलती रही, जिससे यह हिंदी सिनेमा की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर फिल्मों में से एक बन गई।

Kabhi Kabhie (1976)

In 1976, Yash Chopra released 34 Kabhi Kabhie , his ultimate ode to romance, with a huge multi-star cast that included Shashi Kapoor, Amitabh Bachchan, Raakhee, Waheeda Rahman, Rishi Kapoor, Neetu Singh, Simi Garewal and Parikshit Sahni.
कभी कभी एक कवि अमित और उसकी प्रेमिका पूजा की कहानी है, जो अपनी इच्छा के विरुद्ध शादी करने के लिए मजबूर होने के बावजूद अपने भावुक प्रेम प्रसंग की यादों को जीवित रखते हैं; वर्षों बाद, उनके बच्चों के माध्यम से उनका अतीत आपस में टकराता है।
कई पीढ़ियों को समेटे हुए इस कथानक को भले ही लंबा, उलझा हुआ और नाटकीय माना जा सकता है, लेकिन फिल्म में कुछ ऐसे पहलू भी हैं जो बेहद खूबसूरत हैं—उदाहरण के लिए, गाने यादगार हैं, खासकर टाइटल ट्रैक, जिसे अमिताभ (अमित के रूप में) अपनी प्रेमिका राखी (पूजा के रूप में) के लिए गाते हैं, और राखी शादी के समय इसे शशि (विजय के रूप में) के लिए गाती हैं। फिर कश्मीर के रोमांटिक दृश्य हैं, जिनमें अमिताभ की भावपूर्ण आवाज में कविता सुनाई देती है। (इस समय से कश्मीर के परिदृश्य यश जी की फिल्मों का एक अहम हिस्सा बन गए, जब तक कि निर्देशक ने स्विस आल्प्स की बर्फीली चोटियों की खोज नहीं कर ली।) अंत में, फिल्म की स्वाभाविक अनुभूति मन को

मोह लेती है—किरदार असली घरों में रहते हैं (नकली स्टूडियो सेटों के विपरीत), और अक्सर अपने असली कपड़े पहनते हैं। नीतू मुझे बताती हैं, 'यश जी नहीं चाहते थे कि हम कॉस्ट्यूम डिजाइनर रखें। वे कहते थे, "तुम वही पहनो जो तुम असल जिंदगी में पहनते हो। मैं इसे फिल्मी नहीं बनाना चाहता।"'
जहां 'कभी कभी' यश के मित्र और नियमित गीतकार साहिर लुधियानवी से प्रेरित थी (अमिताभ के अमित का किरदार उन्हीं पर आधारित था), वहीं शशि का विजय का किरदार यश पर ही आधारित था—एक हंसमुख व्यक्ति जो गुप्त रूप से कवि बनने की ख्वाहिश रखता था और खुले विचारों वाला था। दरअसल, यश की पत्नी पामेला चोपड़ा कहती हैं, 'शशि की ज्यादातर फिल्मों में, 'दीवार' से शुरू करके, उनके किरदार काफी हद तक यश पर आधारित थे। मेरे पति शशि के सबसे करीब महसूस करते थे क्योंकि उनका स्वभाव मिलता-जुलता था। उन्होंने 'कभी कभी' में शशि के किरदार को व्यक्तिगत रूप से गढ़ा क्योंकि विजय का किरदार यश के स्वभाव जैसा ही था।'
फिर विजय और उनके बेटे विक्रम के बीच का रिश्ता है, जो यश और उनके बेटों आदित्य और उदय के बीच के रिश्ते से काफी मिलता-जुलता है। विक्रम का किरदार निभाने वाले ऋषि कहते हैं, 'आज भी लोग विक्रम और विजय के बारे में बात करते हैं, लेकिन 1970 के दशक के मध्य में, एक पिता और बेटे के बीच पीठ थपथपाने जैसा रिश्ता होना अनसुना था।'
यह एक चतुर कास्टिंग योजना थी—विक्रम की भूमिका कपूर परिवार के एक युवा सदस्य को देना। लेकिन ऋषि इसे स्वीकार करने में हिचकिचा रहे थे क्योंकि जब 'कभी कभी' फिल्म बननी थी, तब तक वे स्टार बन चुके थे और उनकी तत्कालीन प्रेमिका के साथ दो हिट फिल्मों के बाद उनके प्रशंसकों की संख्या काफी बढ़ गई थी।

नीतू— 35 36 खेल खेल में और राफू चक्कर। वह एक मल्टी-स्टार फिल्म में अभिनय करने को लेकर कुछ हद तक अनिच्छुक थे। शशि मजाक में कहते हैं, 'यश ने मुझे फोन करके कहा कि ऋषि
वो फिल्म नहीं कर रहा है। मैंने कहा, चलो उसकी पिटाई करते हैं।’37
जब आखिरकार उन्हें यह भूमिका स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया, तो ऋषि को अपने 'चाचा' के साथ काम करना एक बहुत बड़ा सीखने का अनुभव लगा। वे कहते हैं, 'मुझे याद है, एक बार शशि अंकल ने मेरे अभिनय पर टिप्पणी की थी: "तुम प्रतिक्रिया नहीं करते हो। तुम अपने संवादों में बहुत अच्छे हो, लेकिन तुम्हें प्रतिक्रिया भी देनी चाहिए।" तब मुझे समझ नहीं आया कि वे क्या कहना चाह रहे थे। मुझे लगा कि मुझे बिना कारण प्रतिक्रिया नहीं देनी चाहिए या ज़ोरदार भाव नहीं दिखाने चाहिए। जैसे आदमी जीवन में प्रतिक्रिया करता है ना, वैसा होना चाहिए। लेकिन फिर, समय के साथ, मुझे उनका मतलब समझ में आया। मैंने देखा कि मेरे लिए सही संकेत देना महत्वपूर्ण था, ताकि दूसरा अभिनेता उन्हें समझ सके और अपने संवादों को अच्छी तरह से बोल सके। एक अभिनेता के रूप में, शशि अंकल से यह सीखना मेरे लिए बहुत मददगार साबित हुआ।' कभी कभी बॉक्स ऑफिस पर ज़बरदस्त सफल रही, पचास हफ़्तों तक सिनेमाघरों में चली और इसे स्वर्ण जयंती का दर्जा मिला। आज भी यह एक प्रतिष्ठित फिल्म बनी हुई है, जिसे इसकी समकालीन भावना और इस तथ्य के लिए सराहा जाता है कि शशि और अमिताभ दोनों ने पहली बार जटिल अतीत वाले वृद्ध पुरुषों की भूमिका निभाई है।

Doosra Aadmi (1977)

निर्देशक के रूप में अपनी पहली फिल्म के लिए रमेश तलवार ने अपने गुरु यश राज फिल्म्स के बैनर तले काम किया। यह यश चोपड़ा की किसी अन्य निर्देशक के साथ निर्मित पहली फिल्म होगी।
38 कभी कभी की तरह, दूसरा आदमी भी ऋषि कपूर, नीतू सिंह, राखी और शशि कपूर जैसे सितारों से सजी फिल्म है। यह एक अधेड़ उम्र की महिला (राखी द्वारा अभिनीत निशा) की कहानी है, जो एक युवा विवाहित पुरुष से मोहित हो जाती है, जो उसे उसके मृत प्रेमी की याद दिलाता है।
रमेश इस बात पर अड़े थे कि वे ऋषि को मृत प्रेमी और विवाहित पुरुष की दोहरी भूमिका नहीं देना चाहते थे—उनका मानना था कि ऐसा करने से कहानी का सार स्पष्ट हो जाएगा। इसके बजाय, वे मृत प्रेमी की भूमिका के लिए ऋषि से मिलते-जुलते दिखने वाले किसी अभिनेता को लेना चाहते थे। जब वे विकल्पों पर विचार कर रहे थे, तभी उनकी नज़र 'कभी कभी' की शूटिंग के तुरंत बाद 'द इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया' में ऋषि की एक तस्वीर पर पड़ी, जिसके कैप्शन में लिखा था कि ऋषि अपने चाचा शशि से हूबहू मिलते-जुलते हैं। रमेश कहते हैं, 'इससे मुझे प्रेरणा मिली। मैंने ऋषि की वह तस्वीर अपने साथ ली और शशि से मिलने गया।'
जब रमेश ने शशि को बताया कि वह उन्हें निशा के दिवंगत प्रेमी की भूमिका में एक अतिथि भूमिका देना चाहते हैं, तो अभिनेता हिचकिचाए। रमेश बताते हैं, ‘उन्होंने मुझसे कहा, “देखिए, मैंने आज तक कोई अतिथि भूमिका स्वीकार नहीं की है। मैंने मनमोहन देसाई के लिए भी ऐसा नहीं किया।” लेकिन शशि पटकथा सुनने के लिए तैयार थे। उन्होंने कहा, “अगर यह भूमिका कहानी में कुछ नयापन लाती है, तो मैं इसे करूंगा। लेकिन अगर मुझे लगता है कि यह मेरे

लिए सही नहीं है, और अगर मैं मना कर देता हूं, तो नाराज़ या परेशान मत होना।”’
तो, एक सुबह रमेश ने शशि के घर पर उनके साथ नाश्ता किया और फिर दक्षिण मुंबई से अंधेरी स्थित नटराज स्टूडियो तक कार से गए। रास्ते में, उन्होंने 'दूसरा आदमी' की कहानी सुनाई। यात्रा समाप्त होते-होते शशि फिल्म करने के लिए राजी हो गए। रमेश बताते हैं, 'उनकी एक ही शर्त थी कि हम फिल्म के प्रचार सामग्री में उनके नाम का इस्तेमाल नहीं करेंगे।' 'वह चाहते थे कि दर्शक भी उतने ही हैरान हों, जितने कि वे तब हुए थे जब मैंने उन्हें कहानी का चौंकाने वाला मोड़ सुनाया था।'
जब फिल्म सिनेमाघरों में रिलीज हुई, तो दर्शक निश्चित रूप से मंत्रमुग्ध हो गए!
liked the melodious songs (including ‘Aao Manayen Jashn-E-Mohabbat’39
और ‘आँखों में काजल है’ (40, सभी राजेश रोशन द्वारा संगीतबद्ध), खूबसूरत सितारे और यश की पसंद से ओतप्रोत कथानक—जिसने दूसरा आदमी को स्पष्ट रूप से यश राज प्रोडक्शन बना दिया। और वे विशेष रूप से शशि को पसंद करते थे। ‘जब शशि पहली बार स्क्रीन पर आते थे तो लोग अपनी सीटों से उछल पड़ते थे।
frame singing “Yeh Kya Mastiyan” from the hit song “Kya Mausam Hai”41,’ Ramesh says.
अगर फिल्म को लेकर कोई आपत्तियां थीं, तो वे छोटे कस्बों से, खासकर पंजाब और हरियाणा से आईं, क्योंकि राखी का किरदार एक ऐसी महिला का था जो बार में सिगरेट पीती और शराब पीती थी। 'उस समय राखी एक फिल्म में काम कर रही थीं।

रमेश कहते हैं, 'उस शो का नाम '42 तपस्या' था, जिसमें वह काफी धार्मिक थीं। कुछ लोग उनके जैसी स्टार को, जिनके हालिया इतिहास में धार्मिक भूमिकाएं निभाने, धूम्रपान करने और शराब पीने की आदत रही हो, स्वीकार नहीं कर पाए। हालांकि मुझे व्यक्तिगत रूप से राखी का किरदार अजीब नहीं लगा—शायद मेरी आधुनिक सोच और इस तथ्य के कारण कि मेरी सभी महिला मित्र शराब पीती थीं—लेकिन छोटे शहरों के भारत की सोच अलग थी।'
पंजाब और हरियाणा से मिली ठंडी प्रतिक्रिया के बावजूद, दूसरा आदमी ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा कारोबार किया और कुछ सिनेमाघरों में सौ दिनों तक चली।

Trishul (1978)

वक्त से शुरू करके और फिर कभी कभी में, यश चोपड़ा ने अपने किरदारों को दिल्ली (बॉम्बे नहीं) में स्थापित करने पर जोर दिया, शायद इसलिए कि वह उन्हें अलौकिक और 'फिल्मी' के बजाय जमीनी और वास्तविक दिखाना चाहते थे।
परिणामस्वरूप, त्रिशूल, 43, नई दिल्ली के आस-पड़ोस में खुल गया। दीवार के बाद, त्रिशूल यश द्वारा निर्देशित सलीम-जावेद की पटकथा पर आधारित दूसरी फिल्म थी। एक बार फिर, अमिताभ बच्चन और शशि कपूर को मुख्य भूमिकाएँ दी गईं, इस बार सौतेले भाइयों के रूप में (अलग-अलग माताओं और एक ही पिता के साथ)। एक बार फिर, अमिताभ का किरदार (जिसका नाम - और क्या? - विजय है) गंभीर और चिड़चिड़ा है, जो अपने पिता द्वारा गर्भवती माँ को छोड़ दिए जाने के कारण बदले की भावना से प्रेरित है। और एक बार फिर, शशि (जिन्हें - रवि नहीं - बल्कि शेखर के रूप में कास्ट किया गया है)

आकर्षक हैं, जो विजय की प्रतिशोध की प्रवृत्ति को समझ नहीं पाते हैं, क्योंकि विजय गरीबी से उठकर अपने पिता के व्यवसायों को चुनौती देता है।
दीवार की कुछ हद तक सरल संरचना के विपरीत, त्रिशूल संजीव कुमार (दोहरी पत्नी वाले पिता की भूमिका में) जैसे अभिनेताओं के अतिरंजित अभिनय और बहुत सारे कलाकारों (विजय की प्रेमिका के रूप में राखी, शेखर की प्रेमिका के रूप में हेमा मालिनी और पूनम ढिल्लों और सचिन द्वारा अभिनीत युवा पीढ़ी) के कारण बोझिल लगता है। हालांकि, इन कमियों के बावजूद, त्रिशूल एक बड़ी हिट साबित हुई, जो सिनेमाघरों में पचहत्तर सप्ताह तक चली और फिर उससे भी अधिक समय तक मैटिनी शो के रूप में प्रदर्शित हुई।
आज त्रिशूल का जिक्र न केवल लोकप्रिय फिल्म निर्माताओं द्वारा किया जाता है, बल्कि अन्य लोगों द्वारा भी किया जाता है। अनुराग कश्यप की क्लासिक फिल्म '44 गैंग्स ऑफ वासेपुर' में उनकी भूमिका के लिए तो उन्हें याद किया ही जाता है, साथ ही 'दीवार' के बाद शशि और अमिताभ के बीच के रिश्ते को मजबूत करने वाली फिल्म के रूप में भी। फिल्म की शूटिंग के दौरान दोनों दक्षिण दिल्ली के ओबेरॉय इंटरकॉन्टिनेंटल होटल में ठहरे थे और उन्हें रात में एक साथ समय बिताने का भरपूर मौका मिला। अमिताभ कहते हैं, 'काम के बाद हम होटल के अंदर ही स्थित एकमात्र डिस्को, तबेला में काफी समय साथ बिताते थे। और हां, कभी-कभी देर हो जाती थी तो हम वहीं से सीधे शूटिंग के लिए निकल जाते थे।'
यश भी इस बात की पुष्टि करते हैं, जो शराब न पीने के कारण तबेला में होने वाले मौज-मस्ती में शायद ही कभी शामिल होते थे: 'एक रात अमिताभ और शशि पार्टी करने बाहर गए और जब वे सुबह 6:30 बजे होटल लौटे, तो मैंने यूनिट को शूटिंग के लिए तैयार कर रखा था।' वे आगे

कहते हैं, 'मुझे पता ही नहीं चला कि वे अभी-अभी आए हैं। उनके पास सीधे फिल्म की शूटिंग पर जाने के अलावा कोई चारा नहीं था, और वे थोड़ी देर सोए भी।'
ब्रेक।’45
इस जोड़ी का दिल्ली के इस अब बंद हो चुके मशहूर स्थान के प्रति लगाव अमिताभ बच्चन के मधु जैन के साथ हुए साक्षात्कार में और भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है; यहाँ अभिनेता कहते हैं: 'एक छात्र के रूप में तबला जाना हमेशा से मेरा सपना था और मुझे कभी मौका नहीं मिला।' जहाँ तक शशि की बात है, उन्हें वह करने का मौका मिला जो उन्हें पसंद था—'शशि एक
'अच्छा डांसर,' अमिताभ कहते हैं।46 शराब पीने, नाचने और उल्लास के इसी दौर में शशि और अमिताभ घनिष्ठ मित्र बन गए।

काला पत्थर (1979)

एक और मल्टी-स्टार एक्शन ड्रामा, जिसमें छह मुख्य कलाकार हैं- अमिताभ बच्चन, राखी, शशि कपूर, प्रवीण बाबी, शत्रुघ्न सिन्हा और नीतू सिंह।
— 47 काला पत्थर की पटकथा (जैसा कि अपेक्षित था) सलीम-जावेद ने लिखी थी। एक बार फिर, अमिताभ विजय के रूप में एक गुस्सैल नौजवान की भूमिका निभाते हैं, इस बार एक गहरे राज़ के साथ। एक बार फिर, शशि रवि के रूप में एक उत्साही, बल्कि मिलनसार व्यक्ति की भूमिका निभाते हैं, इस बार एक कोयला खदान के प्रभारी इंजीनियर के रूप में।
पिछली फिल्मों से स्पष्ट समानताओं के बावजूद, काला पत्थर यश चोपड़ा की फिल्मों से बिल्कुल अलग है। एक तो, शशि को एक मिलनसार

किरदार से कहीं अधिक विकसित होने का मौका मिलता है, कई दृश्यों में उसे खदानों की प्रतिकूल कार्य परिस्थितियों के प्रति अपनी निराशा व्यक्त करनी पड़ती है; प्रेम चोपड़ा द्वारा अभिनीत कोयला खदान मालिक धनराज के साथ उसके संवाद क्रोध से भरे हुए हैं।
दूसरी ओर, काला पत्थर को भारत की पहली आपदा फिल्म कहा जा सकता है, जो दिसंबर 1975 में धनबाद की चासनाला कोयला खदान में हुई त्रासदी पर आधारित है, जहां पानी भर गया था और 500 से अधिक मजदूर फंस गए थे। यह फिल्म हॉलीवुड की सफल फिल्मों जैसे द पोसाइडन के जवाब में हिंदी फिल्म उद्योग की प्रतिक्रिया भी है (स्वाभाविक रूप से गीतों और रोमांस के साथ)।
एडवेंचर 48 49 और द टावरिंग इन्फर्नो।
अंत में, काला पत्थर अपने सेटों के लिए अद्वितीय है, जिसमें कला निर्देशक सुधेंदु रॉय ने कोयला खदानों की कठोरता और उनके अथाह अंधकार को बखूबी दर्शाया है। खदानों के अंदर के भयावह दृश्यों को फिर से जीवंत करने के लिए, फिल्म सिटी में सेट बनाए गए थे, जो उस समय अपेक्षाकृत नया स्टूडियो था, और प्रभावों की निगरानी के लिए एक अमेरिकी तकनीकी टीम को बुलाया गया था।
सेट की बात करें तो, 'काला पत्थर' की शूटिंग के दौरान यश ने कुछ दृश्यों के लिए पुणे के पास लोनी में राज कपूर के फार्म को बुक किया था। उस समय शहर में केवल एक ही बड़ा होटल था, ब्लू डायमंड (अब ताज विवांता), जिसमें सिर्फ एक ही सुइट था। अमिताभ और शशि कपूर दोनों ने उसी कमरे में ठहरने की इच्छा जताई। स्थिति को बिगड़ने से बचाने और पक्षपात के आरोपों से बचने के लिए, यश ने अंततः खुद उसी बड़े सुइट में ठहरने का फैसला किया।

अपनी ताजगी और नवीनता के बावजूद, 'काला पत्थर' बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं हो पाई। इसकी जटिल कहानी, जो क्रूर पूंजीवाद की धज्जियां उड़ाती थी और सर्वहारा वर्ग के उत्थान का गुणगान करती थी—एक तरह से 'भाइयों का समूह'—उन दर्शकों को लुभाने में नाकाम रही जो मनोरंजन की तलाश में थे। इसके अलावा, क्लाइमेक्स सीन को ज़रूरत से ज़्यादा लंबा और उबाऊ माना गया। रमेश तलवार बताते हैं कि छोटे शहरों में, सिनेमाघरों के मालिकों ने खुद फिल्म को सफल बनाने के लिए उसमें बदलाव करना शुरू कर दिया। वे कहते हैं, 'फिर बड़े सिनेमाघरों के मालिक हमसे अनुमति मांगने लगे, पहले यह समझाते हुए कि कुछ दृश्य बहुत लंबे क्यों लग रहे हैं।' 'वे हमसे एडिटर भेजने का अनुरोध करते थे।' फिल्म में कुछ बदलाव होने के बाद, बॉक्स ऑफिस पर कुछ हद तक वापसी ज़रूर हुई। लेकिन यह वापसी अल्पकालिक साबित हुई।

श्रृंखला (1981)

सिलसिला 50 मूल रूप से अमिताभ बच्चन (अमित के रूप में), जया बच्चन (भदुरी, शोभा के रूप में) और रेखा (चांदनी के रूप में) के बीच एक प्रेम त्रिकोण की कहानी है। अमित चांदनी से प्यार करता है, लेकिन परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि उसे उसे छोड़ना पड़ता है और उसे डॉ. आनंद (संजीव कुमार) से शादी करते हुए देखना पड़ता है - जो इस प्रेम कहानी का चौथा किरदार है। अमित का यह निर्णय उसके भाई शेखर के अचानक निधन के कारण होता है - जो अपने पीछे एक दुखी मंगेतर शोभा को छोड़ जाता है, जिससे अमित को शादी करने के लिए विवश होना पड़ता है।

यश चोपड़ा को शेखर की भूमिका के लिए अपने पसंदीदा अभिनेता और पर्सनैलिटी शशि कपूर से बेहतर कोई और नहीं सूझा। यह यश के साथ शशि की आठ फिल्मों में से आखिरी फिल्म थी। सिलसिला एकमात्र ऐसी फिल्म भी थी जिसमें शशि ने अमिताभ के बड़े भाई का किरदार निभाया था। और शायद इसलिए कि फिल्म की पटकथा सलीम-जावेद ने नहीं बल्कि खुद यश ने लिखी थी, अमिताभ और शशि विजय और रवि नाम के किरदारों को निभाने के बोझ से मुक्त हो गए। (बेशक, यह रमेश सिप्पी की जेम्स बॉन्ड से प्रेरित फिल्म शान में विजय और रवि के किरदार को कई बार निभाने के बाद हुआ, जिसकी पटकथा सलीम-जावेद ने लिखी थी और जो सिलसिला से कुछ समय पहले ही रिलीज हुई थी।)
जब शशि और अमिताभ एक साथ स्क्रीन शेयर करते हैं तो सिलसिला फिल्म का रंग और भी निखर उठता है, और उनके बीच कुछ बेहद जोशीले दृश्य हैं—जैसे कि जब वे नशे में होते हैं, या जब वे एक साथ नहाते हैं, जैसा कि पश्चिमी देशों के जिम में अक्सर पुरुष करते हैं। दरअसल, यह पहली हिंदी फिल्म है जिसमें उद्योग के दो शीर्ष अभिनेताओं को एक ही फ्रेम में, बेहद स्वाभाविक परिवेश में नहाते हुए दिखाया गया है।
लेकिन विमान दुर्घटना के बाद, शशि का किरदार अचानक कहानी से गायब हो जाता है, और सिलसिला अपनी कुछ ऊर्जा और जीवंतता खो देता है। अब जो कहानी आगे बढ़ती है, वह एक जटिल, भावनात्मक रूप से झकझोर देने वाली कहानी है, जिसमें परिपक्व किरदार, अमित और चांदनी के बीच विवाहेतर संबंध और विनाशकारी परिणाम शामिल हैं— यह गंभीरता कभी-कभार गीतों के माध्यम से ही टूटती है।
as the Holi hit, ‘Rang Barse’.51
फिल्म रिलीज होने से पहले, मीडिया में इस बात को लेकर काफी अटकलें लगाई जा रही थीं कि क्या अभिनेताओं के चयन का मुख्य

सितारों के वास्तविक जीवन के संबंधों से कोई संबंध था। लेकिन टैब्लॉइड की गपशप फिल्म के लिए आर्थिक रूप से फायदेमंद साबित नहीं हुई—सिलसिला बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई। पामेला चोपड़ा मानती हैं कि फिल्म थोड़ी अलग थी; दूसरे शब्दों में, यह अपने समय से आगे थी। वह कहती हैं: 'भारत में विवाह एक बहुत ही पवित्र संस्था है, और जब निर्देशक ने उन दो प्रेमियों के लिए सहानुभूति पैदा की जो अपने विवाह से बाहर जाकर अपने प्रेम संबंध को जारी रखने को तैयार थे,
वह दर्शकों को अपने साथ नहीं ले जा सका।52
बहरहाल, आज सिलसिला को एक कल्ट फिल्म के तौर पर देखा जाता है। और शशि को, उनकी छोटी भूमिका के बावजूद, ऐसी पंक्तियों के लिए याद किया जाता है: 'हम गायब होने वालों में से नहीं हैं।' जहां जहां से गुज़रते हैं जलवे दिखाते हैं. दोस्त तो क्या, दुश्मन भी याद रखते हैं।

नोट्स
1. 1978, Satyam Shivam Sundaram, dir. Raj Kapoor, prod. Raj Kapoor, starring Shashi Kapoor, Zeenat Aman, Padmini Kolhapure.
2. Deepa Gahlot, Shashi Kapoor, The Prithviwallas (New Delhi: रोल, 2004), पृ. 64.
3. बन्नी रूबेन द्वारा लिखित पुस्तक "दिलीप कुमार: स्टार लीजेंड ऑफ इंडियन" में उद्धृत।
सिनेमा (नई दिल्ली: हार्परकॉलिन्स, 2004), पृ. 119.
4. 1971, शर्मीली, दिर. समीर गांगुली, प्रो. सुबोध मुखर्जी,
शशि कपूर, राखी, नज़ीर हुसैन अभिनीत।

5. सुरेखा कपाड़ा-बोस में उद्धृत, 'शशि कपूर: सीमित लेकिन 'अथक', डॉन, 9 अप्रैल 2015।
6. वही।
7. 1974, Chor Machaye Shor, dir. Ashok Roy, prod. N.N. Sippy, इसमें शशि कपूर, मुमताज और डैनी डेन्जोंगपा ने अभिनय किया है।
8. टॉड स्टैड्टमैन, फंकी बॉलीवुड: 1970 के दशक की बेमिसाल दुनिया
इंडियन एक्शन सिनेमा (सरे: एफएबी प्रेस, 2015), पृ. 102.
9. वही।
10. 'घुंघरू की तरह', गीत. रवीन्द्र जैन, सीओपी. रवीन्द्र जैन, कलाकार किशोर कुमार।
11. ‘Ek Daal Par Tota Bole’, lyr. Indrajeet Singh Tulsi, comp. Ravindra Jain, artists Mohammed Rafi, Lata Mangeshkar.
12. 1977, इम्मान धरम, दिर. देश मुखर्जी, प्रो. प्रेमजी,
starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha.
13. ‘Khilte Hain Gul Yahan,’ lyr. Neeraj, comp. S.D. Burman, artist
Kishore Kumar.
14. 'ओह मेरी शर्मीली', गीतकार। नीरज, कंप. एस.डी. बर्मन, कलाकार Kishore Kumar.
15. ‘Kaise Kahen Hum’, lyr. Neeraj, comp. S.D. Burman, artist Kishore Kumar.
16. 1974, Ankur, dir. Shyam Benegal, prod. Mohan J. Bijlani, Freni
वरियावा, अभिनीत शबाना आज़मी, अनंत नाग, साधु मेहर।

17. 1976, फकीरा, निर्देशक सी.पी. दीक्षित, निर्माता एन.एन. सिप्पी, मुख्य कलाकार शशि
कपूर, शबाना आज़मी, डैनी डेन्जोंगपा।
18. 1975, Deewaar, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, नीतू सिंह, परवीन बाबी।
19. 1979, Suhaag, dir. Manmohan Desai, prod. Rajinder Kumar Sharma, Shakti Subhash Sharma, Prakash Trehan, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Rekha, Parveen Babi.
20. 1974, Roti Kapada Aur Makaan, dir. Manoj Kumar, prod. Manoj
Kumar, starring Manoj Kumar, Shashi Kapoor, Amitabh Bachchan, Zeenat Aman.
21. 1965, समय, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत बलराज साहनी, शर्मिला टैगोर, शशि कपूर।
22. 1969, Aadmi Aur Insaan, dir. Yash Chopra, prod. B.R. Chopra,
starring Dharmendra, Saira Banu, Feroz Khan.
23. 1969, इत्तेफाक, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत Rajesh Khanna, Nanda, Madan Puri.
24. 1973, दाग, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. यश चोपड़ा, अभिनीत शर्मिला टैगोर, राजेश खन्ना, राखी।
25. 1973, Zanjeer, dir. Prakash Mehra, prod. Prakash Mehra, starring
Amitabh Bachchan, Jaya Bhaduri, Pran.
26. राजीव विजयकर, ‘पहले कभी नहीं, फिर कभी नहीं: शशि कपूर-अमिताभ बच्चन केमिस्ट्री', बॉलीवुड हंगामा, इन

<http://www.bollywoodhungama.com/movies/features/type/view/id/8260/ 24 दिसंबर 2015 को देखा गया।
27. 1980, शान, निर्देशक रमेश सिप्पी, निर्माता जी.पी. सिप्पी, अभिनीत सुनील
दत्त, अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, राखी, परवीन बाबी।
28. मधु जैन द्वारा लिखित पुस्तक "द कपूर्स: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन" में उद्धृत।
सिनेमा (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृ. 236.
29. जेसिका हाइन्स द्वारा उद्धृत, लुकिंग फॉर द बिग बी: बॉलीवुड, बच्चन और मैं (लंदन: ब्लूम्सबरी, 2007), पृष्ठ 102।
30. ‘Keh Doon Tumhe’, lyr. Sahir Ludhianvi, comp. R.D. Burman, artists Asha Bhosle, Kishore Kumar.
31. ‘Maine Tujhe Maanga, Tujhe Paya Hai’, lyr. Sahir Ludhianvi, COMP. आर.डी. बर्मन, कलाकार आशा भोसले, किशोर कुमार।
32. नसरीन मुन्नी कबीर, टॉकिंग फिल्म्स: हिंदी पर बातचीत सिनेमा विद जावेद अख्तर (नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006), पृ. 43.
33. ‘मैंने शशि से नौकरी मांगी: अमिताभ’ में उद्धृत, द टाइम्स ऑफ भारत, 17 सितंबर 2009।
34. 1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, राखी, सिमी गरेवाल, वहीदा रहमान, ऋषि कपूर, नीतू सिंह अभिनीत।
35. 1975, Khel Khel Mein, dir. Ravi Tandon, prod. Ravi Malhotra, इसमें ऋषि कपूर, नीतू सिंह और राकेश रोशन ने अभिनय किया है।
36. 1975, रफू चक्कर, दिर. नरेंद्र बेदी, प्रो. आई.ए. नाडियाडवाला,

इसमें ऋषि कपूर, नीतू सिंह और मदन पुरी ने अभिनय किया है।
37. राहेल ड्वायर द्वारा लिखित यश चोपड़ा: भारतीय सिनेमा के पचास वर्ष नामक पुस्तक में उद्धृत।
सिनेमा (नई दिल्ली: रोली, 2002)।
38. 1977, Doosra Aadmi, dir. Ramesh Talwar, prod. Yash Chopra, ऋषि कपूर, राखी, शशि कपूर, नीतू सिंह अभिनीत।
39. ‘Aao Manayen Jashn-E-Mohabbat’, lyr. Majrooh Sultanpuri, comp. Rajesh Roshan, artists Kishore Kumar, Lata Mangeshkar.
40. ‘Ankhon Mein Kajal Hai’, lyr. Majrooh Sultanpuri, comp. Rajesh
Roshan, artists Kishore Kumar, Lata Mangeshkar.
41. ‘Kya Mausam Hai’, lyr. Majrooh Sultanpuri, comp. Rajesh Roshan, artists Kishore Kumar, Lata Mangeshkar, Mohammed Rafi.
42. 1976, तपस्या, दिर. अनिल गांगुली, प्रो. ताराचंद बड़जात्या, परीक्षित साहनी, राखी, असरानी अभिनीत।
43. 1978, Trishul, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, हेमा मालिनी, राखी।
44. 2012, Gangs of Wasseypur, dir. Anurag Kashyap, prod. Anurag
कश्यप, सुनील बोहरा, विक्रम मल्होत्रा, गुनीत मोंगा, मनोज बाजपेयी, नवाजुद्दीन सिद्दीकी, हुमा कुरेशी अभिनीत।
45. राहेल ड्वायर द्वारा लिखित यश चोपड़ा: भारतीय सिनेमा के पचास वर्ष नामक पुस्तक में उद्धृत।
सिनेमा (नई दिल्ली: रोली, 2002), पृ. 106.

46. मधु जैन द्वारा लिखित पुस्तक "द कपूर्स: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन" में उद्धृत।
सिनेमा (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृ. 249.
47. 1979, काला पत्थर, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. यश चोपड़ा,
starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Shatrughan Sinha, Neetu Singh, Parveen Babi.
48. 1972, द पोसीडॉन एडवेंचर, दिर। रोनाल्ड नीम, प्रोड. इरविन एलन, जिसमें जीन हैकमैन, अर्नेस्ट बोर्गनाइन और रेड बटन्स ने अभिनय किया है।
49. 1974, द टावरिंग इन्फर्नो, निर्देशक: जॉन गिलर्मिन, निर्माता: इरविन
एलन द्वारा अभिनीत फिल्म में स्टीव मैकक्वीन, पॉल न्यूमैन और विलियम होल्डन ने अभिनय किया है।
50. 1981, सिलसिला, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. यश चोपड़ा, अभिनीत Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha, Jaya Bhaduri.
51. ‘Rang Barse’, lyr. Harivanshrai Bachchan, comp. Shiv–Hari, गायक अमिताभ बच्चन।
52. तेजस्विनी गंती, प्रोड्यूसिंग बॉलीवुड: इनसाइड द में उद्धृत
समकालीन हिंदी फिल्म उद्योग (नॉर्थ कैरोलिना: ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस, 2012), पृ. 284.
5

एकदम सही

शशि, निर्माता और व्यवसायी

'आपको याद रखना होगा, पिताजी ने कभी नहीं कहा था, "मैं फिल्म स्टार बनना चाहता हूँ,"' कुणाल कपूर ने शशि कपूर के बारे में बात करते हुए मुझसे कहा। 'ऐसे अभिनेता और फिल्म जगत के लोग हैं जो बहुत अच्छा कर रहे हैं और जिनका मकसद स्टार बनना है। पिताजी की ऐसी कोई योजना नहीं थी।'
अगर हम शशि कपूर को उनके 'स्टार' वाले रूप से परे देखें, तो हमें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में नज़र आते हैं जो न केवल अभिनय की कला से, बल्कि पोस्ट-प्रोडक्शन के बारीक कामों से भी बेहद प्रभावित हैं। इस लिहाज़ से वे अपने बड़े भाई राज कपूर की तरह हैं, जो खुद को सिर्फ एक 'हीरो' नहीं, बल्कि एक फिल्म निर्माता मानते थे। 1970 के दशक में, शशि ने विदुषक आर्ट्स नाम की एक कंपनी शुरू की, जो उपकरण और कैमरे किराए पर देती थी। शशि के इस उद्यम ने कई फिल्म निर्माताओं को सहारा दिया—क्योंकि उस समय उन्हें ज़्यादातर उपकरण विदेशों से आयात करने पड़ते थे, और वे ऐसा तभी कर सकते थे जब वे यह साबित कर सकें कि वे विदेशी मुद्रा अर्जित कर रहे हैं। फिल्म निर्माता देव बेनेगल कहते हैं, 'यह भूल जाना स्वाभाविक है कि उस समय फिल्में बनाना कितना मुश्किल था। ऐसा लगता था मानो सरकार ही नहीं चाहती थी कि आप फिल्में बनाएं। नेगेटिव फिल्म, साउंड एडिटिंग उपकरण, कैमरे और लाइट आयात करने पर लाइसेंस लगता था। हालात बेहद दयनीय थे।'

शशि उन शुरुआती लोगों में से एक थे जिन्हें फ्लैटबेड एडिटिंग मशीन - एक स्टीनबेक - आयात करने का लाइसेंस मिला था, जिसका उपयोग करने का सौभाग्य देव को मिला। स्टीनबेक बॉम्बे फिल्म लेबोरेटरीज में स्थित थी - जो अब बॉम्बे के प्रभादेवी में एक अपार्टमेंट बिल्डिंग है - और कई प्रतिभाशाली लोग वहां से गुजरे, जिनमें श्याम बेनेगल (जिन्होंने अपनी कुछ फिल्मों के लिए विदुषक आर्ट्स के उपकरणों का उपयोग किया) और सत्यजीत रे के छायाकार सुब्रता मित्रा (जिन्होंने, जैसा कि हम जानते हैं, मर्चेंट-आइवरी की शुरुआती कुछ फिल्मों की छाया ली थी) शामिल हैं।
शशि—जो कभी सिर्फ एक सपने का पीछा करने वाले व्यक्ति नहीं थे— यह भी आशा करते थे कि वे अपनी बनाई फिल्मों को वितरकों के जाल पर निर्भर हुए बिना सीधे दर्शकों तक पहुंचा सकें—जो उनकी राय में पहले व्यापारी थे, जिन्हें सिनेमा को एक कला के रूप में कोई खास सम्मान नहीं था। शशि पूछते हैं, 'हीरा व्यापारियों को फिल्मों के बारे में क्या पता?' '[अगर मैं कमान संभाल लूं], तो फिल्म बनाने के बजाय और
वितरक की प्रतीक्षा करते हुए, मैं दोनों काम एक साथ कर सकता हूँ।
यह विचार मन में बैठ गया, और 1960 के दशक के अंत में, जब उन्हें इस्माइल मर्चेंट को नकदी संकट से बाहर निकालना पड़ा, तो उन्होंने वितरण का अधिकार प्राप्त करने के बदले में ऐसा किया। भारत में बॉम्बे टॉकी 2 रिलीज़ हुई। दुर्भाग्य से, मर्चेंट-आइवरी की यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कोई खास कमाल नहीं दिखा पाई और शशि भी कमाई करने में नाकाम रही।

इसके कुछ समय बाद, 1970 के दशक की शुरुआत में, शशि ने एक विचित्र जापानी एनीमे फिल्म, 'हजार और एक', के भारतीय वितरण अधिकार हासिल कर लिए, जो केवल वयस्कों के लिए थी।
ईची यामामोटो द्वारा निर्देशित और अमेरिका में एक्स-रेटेड फिल्म के रूप में रिलीज़ हुई फिल्म नाइट्स 3 (सेन'या इचिया मोनोगतारी)। एक पुरानी कहानी पर आधारित यह फिल्म अपने नायक अलादीन के गरीबी से अमीरी और फिर गरीबी तक के सफर को दर्शाती है, साथ ही कई महिलाओं के साथ उसके प्रेम प्रसंगों को भी दिखाती है — एक खूबसूरत दासी मरियम; कामुक अमेज़न महिलाएं; और याहिज़, जो बाद में उसकी बेटी साबित होती है। यह साइकेडेलिक और कामुकता से भरपूर फिल्म जापान में सफल रही, लेकिन भारत में इसका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा।
दो असफलताओं के बाद, फिल्म वितरक के रूप में शशि का अगला बड़ा कदम तब आया जब उन्होंने दिल्ली और उत्तर प्रदेश (यूपी) के क्षेत्रों के भीतर राज फिल्म के अधिकार खरीद लिए।
कपूर की 4 5 बॉबी (और बाद में, सत्यम शिवम सुंदरम)। राज के लिए, उनके भाई का हस्तक्षेप एक स्वागत योग्य राहत थी। बॉक्स ऑफिस पर असफलता के बाद
मेरा नाम जोकर 6 के बाद, उन्हें बॉबी के अधिकार खरीदने के लिए वितरकों को मनाने में काफी मुश्किल हुई - एक ऐसी फिल्म जिसमें कुछ भी खास नहीं लग रहा था, जिसमें दो नवागंतुक मुख्य भूमिकाओं में थे - इक्कीस वर्षीय ऋषि कपूर (मेरा नाम जोकर में एक कैमियो के बाद अपनी पहली मुख्य भूमिका में) और सोलह वर्षीय डिंपल कपाडिया।
शशि के लिए इस फिल्म को डिस्ट्रीब्यूट करने का फैसला कुछ हद तक रणनीतिक था और कुछ हद तक सहज प्रवृत्ति पर आधारित था। ऋषि कहते

हैं, 'वह पैसा कमाना चाहता था। शशि अंकल को पूरा भरोसा था कि बॉबी एक बड़ी हिट होगी। उन्होंने अपने भाई का आत्मविश्वास बढ़ाते हुए कहा, "मुझे पता है यह फिल्म ब्लॉकबस्टर होगी!"'
शशि का विश्वास शायद इस तथ्य से उपजा हो कि बॉबी एक ऐसी कहानी सुनाता है जो कभी उबाऊ नहीं लगती—एक अमीर लड़का (राज के रूप में ऋषि) एक गरीब लड़की (बॉबी के रूप में डिंपल) के प्यार में पड़ जाता है और माता-पिता के विरोध से लेकर अपहरण के प्रयासों तक, सभी बाधाओं को पार करते हुए विजयी होता है। इसके अलावा, मुख्य कलाकारों के बीच पर्दे पर दिखाई देने वाली केमिस्ट्री और लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल के मनमोहक गीतों से प्रभावित हुए बिना रहना मुश्किल है—राज को शंकर-जयकिशन के अलावा किसी अन्य संगीतकार के साथ काम करने का यह पहला मौका था।
शशि की भविष्यवाणियां बिलकुल सटीक साबित हुईं। बॉबी फिल्म ज़बरदस्त हिट हुई। रातोंरात ऋषि और डिंपल स्टार बन गए। जब ऋषि का विमान दिल्ली में उतरा, तो शशि ने हवाई अड्डे पर लगभग 500 युवतियों को अपने भतीजे के स्वागत के लिए बुलाया, जिन्होंने बॉबी के पोस्टर पकड़े हुए युवा अभिनेता का नाम चिल्लाया। ऋषि मुझे बताते हैं, 'यह मेरे लिए बहुत बड़ी बात थी। ज़ाहिर है, मैं शशि अंकल का भतीजा था और सारी लाइमलाइट मुझ पर थी—खासकर तब जब डिंपल शादी के बाद व्यस्त थीं (फिल्म की शूटिंग के तुरंत बाद उनकी शादी सुपरस्टार राजेश खन्ना से हो गई थी)। अखबारों में ऋषि कपूर के शहर में होने की खबरें छाई हुई थीं। और फिल्म में एस्कॉर्ट्स बाइक—मैंने भी वैसी ही बाइक से हवाई अड्डे से यात्रा की थी, और इसने काफी हलचल मचा दी थी।'
दुर्भाग्य से, बॉबी की बॉक्स ऑफिस सफलता और युवा सितारों की लोकप्रियता शशि अंकल के लिए बड़ा लाभ नहीं ला सकी। ऋषि कहते

हैं: 'सभी कपूरों की तरह, शशि अंकल को भी ज्यादा कमाई नहीं हुई। उन्हें बहुत ज्यादा कमाना चाहिए था। लेकिन पैसा इधर-उधर गँवा दिया गया।' कुणाल भी इस बात से सहमत हैं। 'मेरे पिता के साथ धोखा हुआ। अगर कोई फिल्म आंशिक रूप से सफल होती है तो आप हिसाब-किताब छिपा सकते हैं, लेकिन सुपर हिट फिल्म के मामले में आप कितना छिपा सकते हैं?'
शशि की फिल्म 'बॉबी' के फ्लॉप होने का कारण उस दौर से भी जुड़ा था जब वे फिल्म बनाते थे—इंटरनेट और वीडियो पायरेसी का कोई नामोनिशान नहीं था। बड़े बजट की हिंदी फिल्में कभी-कभी भारत भर में अलग-अलग चरणों में रिलीज होती थीं, जहां वितरक उन्हें क्षेत्रवार, एक निश्चित समय अवधि में दिखाते थे—कुछ हद तक अमेरिका में आर्ट हाउस फिल्मों की प्लेटफॉर्म रिलीज की तरह। तो, 'बॉबी' पहले मुंबई, हरियाणा और पंजाब में रिलीज हुई, और बाद में शशि के गढ़ दिल्ली और उत्तर प्रदेश में। 'बॉबी' की जनता के साथ तुरंत हुई लोकप्रियता को देखते हुए, हरियाणा और पंजाब के वितरकों ने इस बात का पूरा फायदा उठाया कि शशि ने अभी तक फिल्म को राजधानी में रिलीज नहीं किया था। उन्होंने दिल्ली से पड़ोसी राज्यों में फिल्म देखने वालों से भरी बसें भेजकर अपना बाजार बढ़ाने का फैसला किया। ऋषि बताते हैं, 'दिल्ली से भर, भर के बसें जाती थीं गुड़गांव और फरीदाबाद!'—इतना कि जब अभिनेता फिल्म के प्रीमियर के लिए दिल्ली पहुंचे, तब तक कई लोग 'बॉबी' देख चुके थे! लेकिन शशि कुछ असफलताओं के बाद हार मानने वालों में से नहीं थी। उनके भीतर का व्यवसायी एक बार फिर सामने आया, और यह सब प्रतिष्ठित 7 जुनून के साथ देखने को मिला।
(थोड़ी देर में और विस्तार से)। इसके कुछ समय बाद, 1976 में, शशि ने अपनी कंपनी, फिल्म-वालास की स्थापना की—जो स्पष्ट रूप से

मर्चेंट-आइवरी की उस फिल्म के शीर्षक से प्रेरित थी जिसमें उन्होंने अभिनय किया था, शेक्सपियर वाला। फिल्म-वालास ने 1970 के दशक के उत्तरार्ध और 1980 के दशक की कुछ सबसे प्रसिद्ध आर्ट-हाउस फिल्मों का निर्माण किया। कुणाल कहते हैं, 'पिताजी जिस तरह की फिल्मों में काम कर रहे थे, उनसे थोड़ा निराश हो रहे थे,' हालांकि वे यह भी स्वीकार करते हैं कि शशि हिंदी फिल्म अभिनेता के रूप में अच्छा पैसा कमा रहे थे। इस प्रकार, फिल्म-वालास और इसके निर्माण ने शशि की रचनात्मक भूख को संतुष्ट किया।

Junoon (1978)

1970 के दशक के उत्तरार्ध में, श्याम बेनेगल अपनी प्रत्येक कथात्मक फीचर फिल्म के साथ भारत की नई लहर, या समानांतर सिनेमा आंदोलन के अग्रणी व्यक्ति बन गए।
अंकुर, निशांत, मंथन और भूमिका ने यथार्थवाद के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और मुख्यधारा के हिंदी सिनेमा के गीत-नृत्य की भव्यता को नकारते हुए कलात्मक और बॉक्स ऑफिस दोनों ही क्षेत्रों में सफलता हासिल की। उदाहरण के लिए, अंकुर एक युवा किसान महिला लक्ष्मी की कहानी के माध्यम से जाति, महिलाओं के अधिकार और आर्थिक असमानता जैसे संवेदनशील विषयों को बिना किसी स्पष्ट रोमांटिकरण के उजागर करता है; वहीं निशांत स्वतंत्रता की दहलीज पर खड़े भारत में सामंती व्यवस्था के अत्याचार का निर्मम और मार्मिक चित्रण करता है।
शशि कपूर श्याम की फिल्मों को बड़े चाव से देखते थे, और जब फिल्म-वालास की शुरुआत हुई, तो उन्होंने निर्देशक से पूछा कि क्या उनके पास अपनी पहली फिल्म के लिए कोई विषय या कहानी है।

श्याम मुझे बताते हैं, 'मुझे यह विचार तुरंत पसंद आ गया।' रस्किन की किताबें पढ़ने के बाद,
बॉन्ड की लघु उपन्यास, '12 ए फ्लाइट ऑफ पिजन्स' से प्रेरित होकर, श्याम ने शशि को शाहजहाँपुर में 1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान की एक कहानी सुनाई। यह कहानी एक विवाहित पठान, जावेद खान के बारे में थी, जो एक युवा एंग्लो-इंडियन महिला, रूथ से इतना मोहित हो जाता है कि वह उसके परिवार और रूथ का अपहरण कर लेता है, इस उम्मीद में कि वह उससे शादी कर लेगा। श्याम बताते हैं, 'शशि को कहानी बहुत पसंद आई और उसने कहा, "हाँ, हम इसे बनाएंगे!" और बस, कहानी वहीं खत्म हो गई।'
'अ फ्लाइट ऑफ पिजन्स' को विस्तार देकर 'जुनून' की पटकथा तैयार की गई - जिसे श्याम ने स्वयं लिखा था और सत्यदेव दुबे और इस्मत चुगताई ने संवाद लिखे थे। पटकथा इतनी प्रभावशाली थी कि शशि, जिन्होंने पहले केवल फिल्म का निर्माण करने की योजना बनाई थी, ने श्याम से अनुरोध किया। शशि मधु को बताती हैं, 'पटकथा पढ़ने के बाद, मैंने श्याम से पूछा कि क्या वह चाहते हैं कि मैं फिल्म में अभिनय करूं।'
जैन.13
श्याम के लिए फैसला आसान था। अपेक्षाकृत कम प्रसिद्ध थिएटर कलाकारों या नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा और/या फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के नए प्रतिभाशाली कलाकारों के साथ काम करने के बाद, उन्हें अपने प्रोजेक्ट से एक बड़े नाम के जुड़ने की खुशी थी। श्याम ने शशि को जावेद खान की मुख्य भूमिका की पेशकश की।
शशि कपूर, अपनी ओर से, फिल्मी हीरो की तरह अहंकारी नहीं थे, बल्कि एक टीम प्लेयर थे। श्याम कहते हैं, 'वे बेहद मेहनती थे।

उन्होंने कभी भी स्टार होने का घमंड नहीं दिखाया—हालांकि उस समय वे बहुत बड़े स्टार थे। उन्होंने थिएटर कलाकार की तरह अनुशासन से काम किया। आप जानते हैं, रिपर्टरी थिएटर कंपनी के कलाकार कितने अनुशासित होते हैं। आप उन्हें एक निश्चित समय देते हैं, और वे हमेशा तय समय पर कैमरे के सामने आने के लिए तैयार रहते हैं—मेकअप किया हुआ, पोशाक पहनी हुई। यही थे शशि कपूर, मेरे अभिनेता।'
हालांकि नफीसा अली (राष्ट्रीय तैराकी चैंपियन और मिस इंडिया) ने रूथ की भूमिका निभाई, श्याम को पूरा यकीन था कि रूथ की निर्दयी मां मरियम की भूमिका, जो जावेद से लड़ने के लिए उग्रता और चालाकी का शक्तिशाली मिश्रण इस्तेमाल करती है, जेनिफर केंडल कपूर को ही दी जानी चाहिए - जिन्होंने बॉम्बे टॉकी के बाद लगभग एक दशक तक कैमरे के सामने कदम नहीं रखा था। श्याम कहते हैं, 'जेनिफर शुरू में बहुत घबराई हुई थीं। उन्होंने तो यहां तक पूछ लिया था, "क्या आप किसी और को नहीं ले सकते?" लेकिन जैसे ही वह कैमरे के सामने आईं, उनकी सारी झिझक गायब हो गई।'
जुनून में सभी कलाकारों का अभिनय शानदार है, लेकिन फिल्म के सबसे बेहतरीन पल जेनिफर/मरियम और शशि/जावेद के बीच के हैं, जब वे रूथ से शादी करने की उसकी इच्छा को लेकर बहस करते हैं। एक बेहद मार्मिक दृश्य में, मरियम, चल रहे सिपाही विद्रोह और विद्रोहियों पर जावेद के विश्वास का फायदा उठाते हुए, अपने बंदी बनाने वाले से चतुराई से सौदा करती है। अगर दिल्ली विद्रोहियों के कब्जे में आ जाती है, तो जावेद रूथ से शादी कर सकता है। फिर वह कहती है: 'अगर अंग्रेजों का कब्जा हो गया दिल्ली पर, तो फिर आप ना तो रूथ से बात करने की कोशिश करेंगे, ना शादी के लिए दबाव डालेंगे। मंज़ूर?' ('अगर अंग्रेज दिल्ली पर कब्जा कर

लेते हैं, तो आप रूथ से बात करने की कोशिश नहीं करेंगे, न ही उस पर शादी के लिए दबाव डालेंगे। सहमत?') जावेद मरियम को स्तब्ध होकर देखता रहता है, साथ ही वह सौदे के परिणामों पर विचार भी करता है।
बाद में, जेनिफर के पिता, जेफ्री केंडल, फिल्म में अपनी बेटी के संवाद-प्रस्तुति की जमकर प्रशंसा करेंगे। वे अपनी आत्मकथा में लिखते हैं, 'जेनिफर ने शादी के बाद ही हिंदी सीखना शुरू किया, और [उसे देखकर]
14 जुनून में इतनी सहजता से एक लंबी भूमिका निभाना आश्चर्यजनक था।

1978, जुनून। शशि कपूर, 1987 के विद्रोही के रूप में। यहाँ, फिल्म के अंत में, वह
वह एंग्लो-इंडियन रूथ (नफीसा अली) की बेसब्री से तलाश करता है। सौजन्य: श्याम बेनेगल।

दिलचस्प बात यह है कि जेनिफर, शशि की तरह ही, फिल्म निर्माण के दौरान दोहरी भूमिका निभा रही थीं—वह न केवल मुख्य अभिनेत्री थीं, बल्कि अक्सर की तरह, वेशभूषा डिजाइन करने की जिम्मेदारी भी उन्हीं पर थी। संजना कपूर को वह समय अच्छी तरह याद है जब जुनून प्री-प्रोडक्शन चरण में थी। वह कहती हैं, 'उस समय हमारा घर एक दर्जी की दुकान में बदल गया था। जहां मां पश्चिमी वेशभूषा डिजाइन करती थीं, वहीं वह खुद सभी टोपियां सिलती थीं।' शायद जेनिफर की बारीकियों पर पैनी नजर के कारण ही जुनून का एक सबसे उल्लेखनीय पहलू ब्रिटिश और भारतीय किरदारों का पहनावा है, यहां तक कि अतिरिक्त कलाकारों का भी। श्याम कहते हैं, 'वे इतने सटीक और प्रामाणिक थे।' 'भारत में बनी किसी फिल्म के लिए वेशभूषा के माध्यम से किसी कालखंड को जीवंत करना दुर्लभ था।' बाद में, नवंबर 1983 में, जब ओम पुरी को पहले पृथ्वी थिएटर महोत्सव के लिए मजमा थिएटर के हिट प्रोडक्शन 'बिच्छू' का मंचन करते समय धन की कमी का सामना करना पड़ा, तो जेनिफर उन्हें फिल्म-वालास के स्टोर रूम में ले गईं, सभी बक्से निकाले और उन्हें नाटक के लिए 'जुनून' फिल्म की वेशभूषा दीं।
शशि, नफीसा और जेनिफर के अलावा, जुनून की विशाल कलाकार-कलाकार टीम में शबाना आज़मी (जावेद की पत्नी के रूप में), नसीरुद्दीन शाह (जावेद के बहनोई के रूप में) और इस्मत चुगताई (मरियम की माँ के रूप में) शामिल हैं। लखनऊ के पास मलिहाबाद और काकोरी के

विशाल इलाकों में फिल्माई गई इस फिल्म में विस्तृत युद्ध दृश्य भी हैं, जिनमें पृष्ठभूमि कलाकारों, घोड़ों और हाथियों की एक बड़ी टीम शामिल है। अंत में महत्वपूर्ण पलायन दृश्य में लगभग 3,000 अतिरिक्त कलाकार, 300 जानवर, 40 घोड़ागाड़ियाँ और बैलगाड़ियाँ दिखाई देती हैं।
इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि जुनून श्याम द्वारा निर्देशित अब तक की सबसे महंगी फिल्म साबित हुई। निर्देशक कहते हैं, 'यह मेरे लिए एक बहुत बड़ी फिल्म थी। बेशक, राजेश खन्ना की फिल्म जितनी बड़ी तो नहीं, लेकिन उन फिल्मों की तुलना में बड़ी थी जो मैं उस समय 8-10 लाख रुपये में बना रहा था।' कुणाल कपूर बताते हैं कि जुनून की लागत 34 लाख रुपये थी, जबकि निर्देशक और लेखिका संगीता
दत्ता ने इससे कहीं अधिक आंकड़ा यानी '55 लाख रुपये' बताया है। 15
अब बात करते हैं निर्माता शशि की, और श्याम तुरंत मुझे बताते हैं, 'मैंने उनसे बेहतर निर्माता कभी नहीं देखा!' वे आगे कहते हैं, 'शशि सिर्फ बैठकर पैसा लगाने और आलोचना करने वाले नहीं थे। उन्होंने इससे कहीं अधिक किया। उन्होंने पूरी प्रक्रिया में भाग लिया। उन्होंने चीजों को एक फिल्म निर्माता और अंदरूनी व्यक्ति के नजरिए से देखा। उन्हें किसी स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं थी। वे समझते थे कि क्या आवश्यक है। ऐसे निर्माता बहुत कम होते हैं - आप उन्हें सचमुच उंगलियों पर गिन सकते हैं।'
निर्माता के तौर पर शशि हमेशा सेट पर सबसे पहले आते थे और सबसे आखिर में जाते थे। अनुशासन के लिए तो उनकी काफी ख्याति थी ही, साथ ही वे अपने उच्च नैतिक मूल्यों के लिए भी जाने जाते थे।

श्याम बताते हैं, 'मुझे याद है, एक बार कोई सिगरेट पीते हुए इधर-उधर पड़ा हुआ था। शशि उस पर बहुत गुस्सा हुए! उन्होंने कहा, "सुनो, सेट एक मंदिर की तरह है। तुम मंच पर ऐसा नहीं करोगे, है ना? तो फिर फिल्म सेट पर इस तरह की हरकत करने की कोशिश मत करो!"' शबाना, जो हमेशा शशि के साथ मजाक में नोकझोंक करती रहती थीं, उनके पास भी एक किस्सा है। ‘मुझे याद है, फिल्म 'जुनून' की शूटिंग के दौरान मैं अपनी बारी का इंतजार कर रही थी और बीटल्स के गाने सुन रही थी। तभी शशि चिल्लाते हुए आए, “ये कोई मतलब है? 1857 की फिल्म बन रही है और तुम बीटल्स सुन रही हो?” तो मैंने पूछा, “ये क्या दादागिरी है आपकी?” और उन्होंने कहा, “बेगम अख्तर लगाओ।” मैंने कहा, “माफ़ करना, बेगम अख्तर भी 1857 में नहीं थीं।” और मैंने कहा, “माफ़ कीजिए, बेगम अख्तर भी 1857 में नहीं थीं।”’ शबाना के लिए, निर्माता के रूप में शशि का सबसे उल्लेखनीय गुण यह था कि वे सभी के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करते थे। वे कहती हैं, “आप जानते हैं, फिल्म उद्योग एक बहुत ही पदानुक्रमित जगह है। सितारों और छोटी भूमिकाओं में अभिनय करने वालों में बहुत बड़ा अंतर होता है। शशि, शायद रंगमंच की दुनिया से आने के कारण, सभी अभिनेताओं, चाहे वे बड़े हों या छोटे, की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील रहे।” उनके लोकतांत्रिक स्वभाव के कारण ही उन्होंने जुनून फिल्म के पूरे कलाकारों को—सिर्फ मुख्य कलाकारों को ही नहीं—दो महीने के लिए लखनऊ के क्लार्क्स अवध होटल में ठहराया था। शबाना कहती हैं, “ये वे छोटी-छोटी बातें थीं जिनके लिए उन्होंने पैसे दिए और जो उन्हें बहुत ही असाधारण बनाती थीं। लेकिन इससे वे बिल्कुल अपने पिता की तरह भी बन गए—मेरी माँ बताती हैं कि पृथ्वीराज कपूर अपने कामगारों का बहुत सम्मान करते थे।” शशि कई मायनों में अपने पिता के पुत्र थे।

निर्माण लागत में लगातार वृद्धि के बावजूद, जुनून ने अंततः लागत की भरपाई कर ली या, जैसा कि श्याम कहते हैं, 'पैसा वसूलने में कोई समस्या नहीं थी, लेकिन मुनाफा कमाने में दिक्कत आ रही थी।' वे आगे कहते हैं, 'फिल्म उद्योग के लोग कहते थे, "ठीक है, शशि और श्याम अच्छे अभिनय वाली आर्ट-हाउस फिल्में बनाते हैं, लेकिन कमाई कहां से हो रही है?"'
लेकिन पैसा ही सफलता का एकमात्र पैमाना नहीं हो सकता। जुनून ने दुनिया भर में यात्रा की, मॉस्को, मॉन्ट्रियल, काहिरा और सिडनी का दौरा किया और कई पुरस्कार जीते। इसे 1979 के राष्ट्रीय पुरस्कारों में हिंदी की सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के रूप में मान्यता मिली और 1980 के फिल्मफेयर पुरस्कारों में इसने धूम मचा दी, जिसमें सर्वश्रेष्ठ फिल्म, निर्देशक और संवाद का पुरस्कार शामिल था।

Kalyug (1981)

जुनून के तुरंत बाद, शशि कपूर और श्याम बेनेगल ने भविष्य की योजनाएँ बनाना शुरू कर दिया। श्याम कहते हैं, 'मैंने शशि से पूछा कि क्या वह दूसरी फिल्म का निर्माण करना चाहेंगे, जो उस विचार पर आधारित होगी जिस पर (अभिनेता और नाटककार) गिरीश कर्नाड और मैं कुछ समय से काम कर रहे थे।' 'यह चचेरे भाइयों के बीच पारिवारिक कलह का आधुनिक रूपांतरण होना था—जो वास्तव में महाभारत का आधार है। गिरीश ने पटकथा की रूपरेखा तैयार कर ली थी और शशि सहमत हो गए।'

इसे तैयार करो।’ शशि-श्याम के दूसरे सहयोग से बनी कृति, 16 कलयुग की शुरुआत इसी तरह हुई, जिसने एक भारतीय महाकाव्य का आधुनिकीकरण किया।
इस फिल्म में कलाकारों की संख्या लगभग महाभारत जितनी ही थी, और श्याम ने राज बब्बर, अनंत नाग, सुषमा सेठ, कुलभूषण खरबंदा, विजया मेहता, सुप्रिया पाठक और विक्टर बनर्जी सहित कई युवा और वरिष्ठ अभिनेताओं को शामिल किया। इनमें दो बड़े सितारे भी थे—शशि, जिन्होंने खुबचंद वंश के सलाहकार और वफादार करण सिंह (या कौरवों के कर्ण) की भूमिका निभाई; और रेखा, जिन्होंने प्रतिद्वंद्वी पुरंचंद परिवार के मुखिया धर्मराज (राज बब्बर द्वारा अभिनीत युधिष्ठिर के समान एक किरदार) की द्रौपदी जैसी पत्नी सुप्रिया की भूमिका निभाई। इस जटिल कथानक को और भी पेचीदा बनाने के लिए एक उपकथा भी है जिसमें सुप्रिया अपने देवर भरत (अनंत नाग, आधुनिक युग के अर्जुन के रूप में) से गुप्त रूप से प्रेम करती है। इसके बाद हिंसक कॉरपोरेट संघर्ष और पारिवारिक रक्तपात की कहानी सामने आती है।
श्याम बताते हैं कि रेखा 'वास्तव में शशि की वजह से' कलयुग का हिस्सा बनीं। वह मुझे याद दिलाते हैं कि कलयुग शशि की उनके साथ ग्यारहवीं फिल्म थी। शशि ने आखिरकार इस अभिनेत्री के साथ अठारह फिल्मों में काम किया - किसी भी हिंदी फिल्म अभिनेता के साथ उन्होंने जितनी फिल्में कीं, यह उनकी सबसे बड़ी संख्या थी। श्याम आगे कहते हैं, 'यह एक संयुक्त निर्णय था। मैं खुद कलयुग के लिए रेखा को चुनता, लेकिन मुझे नहीं लगता कि अगर मैंने उनसे पूछा होता तो वह मेरे लिए काम करतीं।' कई साल बाद, श्याम ने रेखा को फिर से कास्ट किया, इस बार खालिद मोहम्मद द्वारा लिखित फिल्म में।

नाटक, 17 जुबैदा।
जुनून के विपरीत, शशि ने कलयुग में करण की भूमिका स्वेच्छा से नहीं निभाई—यद्यपि यह भूमिका फिल्म की कहानी के लिए निस्संदेह महत्वपूर्ण थी, फिर भी इसकी भूमिका सहायक ही थी। इसके बजाय, शशि धर्मराज की मुख्य भूमिका निभाना चाहते थे और उन्होंने अमिताभ बच्चन को करण का किरदार देने की योजना बनाई थी। श्याम कहते हैं, 'लेकिन ऐसा नहीं हो पाया।' 'मैं शशि को केवल करण सिंह के रूप में ही देख सकता था, और मैंने अमिताभ से संपर्क नहीं किया। मुझे लगता है कि शशि ने किया था। लेकिन उस समय, अमिताभ अपने करियर के शिखर पर थे और उनकी अलग महत्वाकांक्षाएँ और अन्य काम थे।' एक समय तो शशि ने सत्यजीत रे के पसंदीदा अभिनेता सौमित्र चटर्जी को करण की भूमिका देने पर भी विचार किया था। शशि कहते हैं कि यह लगभग एकमात्र ऐसा समय था जब सौमित्र किसी हिंदी फिल्म में काम करने के करीब आए थे: '[लेकिन]'
चूंकि वह अस्वस्थ थे, इसलिए वे मेरा प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सके।18
अपनी योजनाएँ विफल होने पर, शशि ने बिना किसी कड़वाहट के करण की भूमिका स्वीकार कर ली, यहाँ तक कि यह भी मान लिया, 'अगर [सौमित्र] ने अच्छा प्रदर्शन किया होता तो...'
उन्होंने मुझसे कहीं ज़्यादा इस किरदार के साथ न्याय किया है।’19 श्याम कहते हैं, ‘उनका स्वभाव ही ऐसा था—एक बड़े स्टार होने के बावजूद उन्हें दूसरों के साथ जगह साझा करने में कोई आपत्ति नहीं थी। अब, ऐसा करने वाले बहुत कम लोग हैं।’ दिलचस्प बात यह है कि मुख्य अभिनेता न होने के बावजूद, शशि को कलयुग में शीर्ष भूमिका मिली, उसके बाद रेखा का नंबर था—वास्तव में, यह उद्योग में उनकी स्टार स्थिति का ही नतीजा था।

देव बेनेगल, जिन्हें कलयुग फिल्म में अपना पहला फिल्म यूनिट का काम मिला था, के अनुसार, शशि ने करण की भूमिका स्वीकार करने के बाद कहा, 'वह एक बिल्कुल पेशेवर अभिनेता थे। वह किरदार में इस कदर ढल जाते थे मानो वह मंच पर हों। स्क्रिप्ट मिलने के एक घंटे के भीतर ही वह मंच के पीछे पहुंच जाते थे और अपने किरदार में पूरी तरह डूब जाते थे।'
कलयुग में एक महत्वपूर्ण दृश्य है, जहाँ शशि द्वारा अभिनीत करण को अपनी माँ की पहचान का पता चलता है—यह दृश्य कर्ण से काफी मिलता-जुलता है, जिसे यह जानकर बहुत दुख होता है कि उसकी माँ कुंती है। करण इतना आहत होता है कि वह भ्रूण की मुद्रा में बिस्तर पर सिकुड़कर लेट जाता है—यह दृश्य हिंदी फिल्म के सबसे बेहतरीन दृश्यों में से एक है और श्याम और शशि के बीच सबसे उत्कृष्ट सहयोगों में से एक है। श्याम कहते हैं, 'उन्होंने इस पर बहुत मेहनत की।' देव आगे कहते हैं, 'यह टॉप-एंगल शॉट था और इसे सेट करने में काफी समय लगा। दृश्य पूरा होने के बाद, शशि बाहर आए और पूछा कि क्या सब ठीक है। उस समय हमारे पास मॉनिटर नहीं थे, लेकिन मुझे कैमरों के पास खड़े होने की अनुमति दी गई थी। मैंने उनसे कहा कि उन्होंने बिल्कुल शानदार काम किया है और माहौल को पूरी तरह से सेट कर दिया है। शशि मुस्कुराए और बोले, "अच्छा, तुम्हें पता है मैं क्या सोच रहा था?" मैं एक अनुभवहीन लड़का था, बहुत शांत और शर्मीला—शशि और उनकी पत्नी एक दंपत्ति के रूप में इतने मिलनसार और मेहमाननवाज थे कि मेरी ये झिझक दूर हो जानी चाहिए थी—फिर भी, मैंने उन्हें खाली निगाहों से देखा।' और शशि ने कहा, “मैं सोच रहा था, उम्मीद है मेरी पत्नी आज रात के खाने में बैंगन नहीं बना रही होगी। उम्मीद है खाने के लिए कुछ और

होगा।” मैं बस मुस्कुरा दिया। लेकिन वह बात मेरे दिमाग में रह गई।
शशि को अपनी मां के बारे में पता चलने का क्षण कलयुग के कई उल्लेखनीय पलों में से एक है। हालांकि हर किरदार को सीमित स्क्रीन-टाइम मिलता है, लेकिन कई किरदारों के दृश्य बेहद मार्मिक हैं—चाहे वह सुषमा सेठ की सावित्री हों, जो पुरंचन्द परिवार की मुखिया (या कुंती) हैं और परिवार के कलह के प्रति अपनी असहमति को बड़ी करुणा के साथ व्यक्त करती हैं; या वह क्षण जब विक्टर बनर्जी के धनराज (या दुर्योधन) करण का इस्तीफा स्वीकार करते हैं। ये अभिनय से भरपूर दृश्य; साजिशों की झलकियाँ; और परेशान करने वाला, कामुक अंत, जो हिंदी सिनेमा में पहले कभी नहीं देखा गया, कलयुग को एक उल्लेखनीय नाटक बनाते हैं।
फिर भी, महाभारत की कथा को दो समकालीन औद्योगिक परिवारों के जीवन में पिरोना, जो प्रतिस्पर्धी व्यवसायों को लेकर आपस में लड़ रहे थे, चुनौतियों से भरा था। श्याम कहते हैं, 'मैं कलयुग के परिणाम से कभी संतुष्ट नहीं था'; यह पहली बार था जब उन्हें किसी फिल्म के उनके इरादे के अनुरूप न बन पाने पर समझौता करना पड़ा। निर्देशक संगीता दत्ता ने फिल्म का आलोचनात्मक विश्लेषण करते हुए कमियों को उजागर किया: 'कलयुग के पात्र घटनाओं के एक उग्र प्रवाह में बह रहे हैं, इसलिए फिल्म निर्माता उनके आंतरिक जगत का पता लगाने में असमर्थ रहे।' श्याम ने संगीता से स्वीकार किया, 'पटकथा में कुछ समस्याएं थीं जिनका समाधान नहीं हो सका।' अंत तक खुला।
दरअसल, देव—जिन्हें श्याम के नियमित पटकथा लेखक सत्यदेव दुबे द्वारा लिखे गए संवादों को देवनागरी और अंग्रेजी में लिखकर सभी अभिनेताओं को वितरित करना था—का कहना है कि एक संपूर्ण पटकथा

का अभाव ही फिल्म की असफलता का कारण बना। वे कहते हैं, ‘वास्तव में कोई पटकथा नहीं थी जिस पर हम फिल्म बना रहे थे, या मैंने कभी कोई पटकथा देखी ही नहीं।’ ‘मेरे पास एक फाइल थी जिसमें फिल्म की एक पृष्ठ की चरणबद्ध रूपरेखा थी।’ कभी-कभी संवाद अभिनेताओं को शूटिंग से एक रात पहले सौंप दिए जाते थे, लेकिन कभी-कभी उन्हें शूटिंग के दिन, शॉट की तैयारी के दौरान मिलते थे। कई बार संवाद अचानक बदल जाते थे। देव कहते हैं, ‘विक्टर बनर्जी वास्तव में संवाद पहले से चाहते थे। उन्हें हिंदी में ज्यादा सहजता नहीं थी। वे भाषा को समझने के लिए कुछ समय चाहते थे। लेकिन वे कभी भी समय पर संवाद प्राप्त नहीं कर पाए।’ शशि—भले ही उसे अपनी लाइनें समय से पहले न मिलने पर गुस्सा आता था—लेकिन वह दूसरे अभिनेताओं के बारे में और भी ज्यादा चिंतित हो जाता था।'

1981, Kalyug. Shyam Benegal to the left; Govind Nihalani behind the camera; and Shashi Kapoor
उनके दाहिनी ओर निर्माता के रूप में उनका हालिया अवतार। सौजन्य: श्याम बेनेगल।

यह शशि की चिंता का एकमात्र कारण नहीं था। देव को याद है कि कलयुग में अभिनय करते समय भी शशि को निर्माण संबंधी संकटों का सामना करना पड़ा था। देव कहते हैं, 'निर्माण व्यवस्था कुछ इस तरह से चल रही थी जो कि तात्कालिक या यूं कहें कि तदर्थ थी। और

शशि फिल्म निर्माण की इस शैली को अपनाने की कोशिश कर रहे थे। स्पष्ट रूप से कुछ तनाव था।'
अच्छे इरादों और कुछ शानदार प्रदर्शनों के बावजूद, कलियुग असफल रहा।
बॉक्स ऑफिस पर। शशि मधु जैन को बताती है कि फिल्म को 10 लाख रुपये का नुकसान हुआ है।21
1988 में, बी.आर. चोपड़ा ने दूरदर्शन के लिए 94 एपिसोड का एक धारावाहिक निर्मित और निर्देशित किया—महाभारत की एक सटीक, हालांकि कुछ अतिरंजित, पुनर्कथा। गहरे धार्मिक भावों से भरपूर यह धारावाहिक बेहद सफल रहा। इसके विपरीत, कलयुग, जिसने एक प्राचीन महाकाव्य में समकालीन अर्थ खोजने का प्रारंभिक प्रयास किया, दर्शकों को पसंद नहीं आया।

36 चौरिंगी लेन (1981)

अपर्णा सेन, जिन्होंने सत्यजीत रे की फिल्म 'समाप्ति' से अपने अभिनय करियर की शुरुआत की थी,
22 तीन कन्या त्रयी की अभिनेत्री ने कई बंगाली फिल्मों में काम किया और फिर हिंदी व्यावसायिक सिनेमा में भी। इस दौरान, उन्होंने लेखन जारी रखा— पहले एक लघु कहानी, जो काफी लंबी हो गई और अंततः एक अंग्रेजी पटकथा बन गई— यह कहानी आधुनिक कलकत्ता में रहने वाली एक अकेली, वृद्ध एंग्लो-इंडियन स्कूल शिक्षिका की मार्मिक कहानी है, जिसका एकमात्र सहारा शेक्सपियर पढ़ाना है।

स्क्रिप्ट हाथ में लेकर अपर्णा ने कुछ संभावित निर्माताओं से संपर्क किया। अपर्णा कहती हैं, "वे मुझसे पूछते थे, 'सेक्स? हिंसा? आप क्या बेचना चाह रही हैं?'"
‘और मैं जवाब देता, “एक छोटी सी मानवीय कहानी।”’23 यह वापसी अधिकांश निर्माताओं के लिए बहुत कम रुचि की थी।
आखिरकार, हताश होकर अपर्णा ने अपनी पटकथा अपने गुरु सत्यजीत को दिखाई, जिन्होंने जवाब देने में कुछ महीने लगा दिए। उनका जवाब उत्साहवर्धक था—उन्हें पटकथा पसंद आई—और उन्होंने अपर्णा से कहा कि उन्हें यह फिल्म बनानी चाहिए। जब अभिनेत्री ने निर्माताओं को ढूंढने में आ रही कठिनाइयों का जिक्र किया, तो सत्यजीत ने उन्हें शशि कपूर से संपर्क करने का सुझाव दिया, क्योंकि उन्होंने हाल ही में 'जुनून' का निर्माण किया था। अपर्णा कहती हैं, 'दरअसल, उन्होंने मुझसे कहा कि उन्हें अंदर से महसूस हो रहा था कि शशि कपूर इस फिल्म को बनाएंगे।'
अपर्णा ने शशि को कहानी का सारांश भेजा, जिसे वह बॉम्बे के माध्यम से पहले से जानती थी।
टॉकी24 25 और सलीम-जावेद द्वारा लिखित इम्मान धरम में भी काम करने का प्रस्ताव था। शशि ने कुछ दिनों बाद उन्हें वापस फोन किया। उन्होंने कहा, “हमें कहानी का सारांश बहुत पसंद आया, लेकिन हमें कैसे पता चलेगा कि आप इससे एक अच्छी फिल्म बना पाएंगी?” मैंने कहा, “मुझे नहीं पता कि मैं आपको कैसे मनाऊं।” तो उन्होंने कहा, “क्यों न आप कलकत्ता से मुंबई आकर हमें पटकथा पढ़कर सुनाएं? और अगर हम आपको फिल्म में लेते हैं, तो हम आपके वापस जाने का किराया देंगे।”
इसी तरह अपर्णा की मुलाकात शशि कपूर से मिलने मुंबई गई। उन्होंने कपूर परिवार के घर पर अभिनेता, उनकी पत्नी और

निर्देशक एवं छायाकार गोविंद निहलानी को पटकथा पढ़कर सुनाई। कुणाल कपूर बताते हैं कि इस पटकथा-पाठ के बाद उनके माता-पिता को कहानी इतनी पसंद आई कि
वे चाहते थे कि श्याम बेनेगल फिल्म का निर्देशन करें।26 लेकिन अंततः अपर्णा उन्हें यह समझाने में कामयाब रहीं कि वह फिल्म की निर्देशक बनने के लिए तैयार हैं।36
चौरिंगी लेन 27 - मुख्य किरदार के सुनसान निवास का जिक्र करते हुए, और दिलचस्प बात यह है कि इसे लगभग उसी पते पर शूट किया गया है: 26 चौरिंगी रोड।
शुरुआत में, अपर्णा गोविंद के साथ छायांकन करना चाहती थीं। लेकिन उस समय गोविंद द्वितीय इकाई के सिनेमैटोग्राफर के रूप में व्यस्त थे।
रिचर्ड एटनबरो की फिल्म 28 गांधी के लिए (फोटोग्राफर)
एक ऐसी प्रतिबद्धता जो उन्हें कम से कम एक साल तक व्यस्त रखेगी।
अपर्णा—जो मानो अनंत काल से इंतज़ार कर रही थीं—शूटिंग शुरू करने के लिए बेचैन थीं, और शशि ने उनकी बेचैनी को भांप लिया।
उन्होंने आगे बढ़कर एक सिफारिश की।
कई छायाकारों में से एक 29 विटनेस के कैमरामैन भी शामिल थे। अशोक मेहता—जिन्होंने कई इंटरव्यू में शशि को अपना सर्वश्रेष्ठ जनसंपर्क अधिकारी बताया है। शशि अभिनीत एक खूबसूरती से फिल्माई गई फिल्म 'विटनेस' (जो दुर्भाग्यवश कभी रिलीज़ नहीं हो पाई) देखने के बाद अपर्णा को यकीन हो गया कि उन्हें वह प्रतिभा मिल गई है जिसकी उन्हें तलाश थी। अशोक '36 चौरंगी लेन' के छायाकार बने। एक अखबार के इंटरव्यू में अपर्णा कहती हैं:

अशोक और मैं बैठकर फिल्म की दृश्य शैली पर चर्चा करने लगे। हमने चित्रों, कला पुस्तकों, और अन्य चीजों का सहारा लिया। फिर अशोक ने मुझसे अपनी फिल्म के स्वरूप को एक पंक्ति में वर्णित करने को कहा। मैंने कहा, 'अगर एक गुलाब को लंबे समय तक किताब के अंदर दबाकर रखा जाए, तो आप जानते हैं कि उसके रंग क्या होंगे?'
अशोक तुरंत समझ गया कि मैं क्या चाहता था।

फिर कास्टिंग का सवाल आया। अपर्णा ने एंग्लो-इंडियन महिला वायलेट स्टोनहैम के मुख्य किरदार के लिए आदर्श उम्मीदवार खोजने में काफी समय बिताया। आखिरकार, अभिनेता और निर्देशक उत्पल दत्त ने जेनिफर केंडल कपूर का नाम सुझाया। ‘मैंने जेनिफर को जुनून में देखा था, हाँ। लेकिन वह बहुत ही शालीन लग रही थीं। वह दुखी, बूढ़ी मिस स्टोनहैम का किरदार कैसे निभा सकती थीं? लेकिन उत्पल दत्त ने जोर देकर कहा कि वह एक अद्भुत, दमदार अभिनेत्री हैं। इसलिए, मैंने जेनिफर से बात की, और मैंने अपनी झिझक के बारे में खुलकर बताया—कि वह युवा दिखती हैं। जेनिफर ने कहा, "चिंता मत करो, मैं झुर्रियों के बारे में सोच सकती हूँ!"’ अपर्णा उस बातचीत को याद करके हंसती हैं। अंततः, जेनिफर ने एक मेकअप आर्टिस्ट से अपने बालों को गर्दन के पीछे जूड़ा बनवाया और अपनी तस्वीरें अपर्णा को मेल कीं। ‘जब मुझे वे तस्वीरें मिलीं, तो मुझे एहसास हुआ कि उन्होंने किरदार का सार पकड़ लिया था।’
एक तरह से अप्रत्याशित कास्टिंग करते हुए, अपर्णा ने ज्योफ्री केंडल को भी कास्ट कर लिया। ज्योफ्री ने अपनी आत्मकथा में लिखा है: 'मुझे जेनिफर के भाई (बूढ़े और बीमार एडी) का किरदार निभाना था, एक ऐसा किरदार जो मुझे पहले इसलिए नहीं दिया गया था क्योंकि

उन्हें लगा कि मैं उतना बूढ़ा और कमजोर नहीं दिखता। जाहिर है, उन्होंने
उन्होंने अपना मन बदल लिया था।’31 32 जेम्स आइवरी की फिल्म शेक्सपियर वॉलह के बाद, जिसमें फेलिसिटी और जेफ्री (और जेनिफर एक छोटी, अनाम भूमिका में) थे, यह पिता-पुत्री की जोड़ी एक ही फिल्म में एक साथ अभिनय करेगी—अजीब बात यह है कि भाई-बहन के रूप में। संजना कपूर कहती हैं, 'मेरे दादाजी ने इसमें शानदार अभिनय किया था।'
और जैसा कि अक्सर उनके घरेलू निर्माणों में होता था, शशि और जेनिफर के बच्चों ने भी 36 चौरंगी लेन में संक्षिप्त भूमिका निभाई। संजना ने मुंबई के माढ द्वीप में फिल्माए गए एक स्वप्न दृश्य में युवा वायलेट स्टोनहैम की भूमिका निभाई है। और संजना के बड़े भाई, करण कपूर ने वायलेट के प्रेमी डेवी की भूमिका निभाई है, जिसकी द्वितीय विश्व युद्ध में मृत्यु हो जाती है। आखिर में, बिल्ली को शामिल करने की बारी आई! अपर्णा कहती हैं, 'जब सत्यजीत रे ने स्क्रिप्ट पढ़ी, तो उन्होंने कहा, "आपने इसमें एक बिल्ली को शामिल कर दिया है। एयर-कंडीशन्ड कमरे में बैठकर बिल्ली के बारे में लिखना तो ठीक है, लेकिन मैं आपको बता रहा हूँ, आप जो करने का प्रस्ताव दे रही हैं वह बहुत मुश्किल है।" उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने एक बार बिल्ली के साथ काम करने की कोशिश की थी।
अपर्णा अपुर संसार 33 में रहती थी और कुछ ही दिनों में भाग गई थी। हालाँकि उसे धैर्यपूर्वक समझाया गया कि बिल्लियों को फिल्मों के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता, फिर भी अपर्णा अपनी बात पर अड़ी रही। आखिरकार, शशि ने मद्रास से उसके लिए एक बिल्ली मंगवाई। चौरंगी लेन के 36 नंबर पर, सर टोबी बेल्च नाम की

काली धारीदार बिल्ली का घर बसाया गया—जो बारहवीं शताब्दी के एक उपन्यास के एक पात्र के नाम पर रखा गया था।
रात 34—घर पर मिस स्टोनहैम की साथी बनी रहती है।
शशि और गोविंद ने मिलकर फिल्म का बजट तैयार किया था। अपर्णा का मानना है कि शुरुआती योजना लगभग 16 लाख रुपये की थी, लेकिन बजट बढ़कर 24 लाख रुपये तक हो गया होगा। हालांकि, वह कहती हैं, 'मैं इस पर शर्त नहीं लगा सकती। असल बात यह है कि बजट पर मुझसे कभी चर्चा ही नहीं हुई।' संभवतः, शशि ने मुंबई के बाहरी इलाके पनवेल के पास श्रीदों गांव में 18 एकड़ जमीन बेचकर '36 चौरंगी लेन' फिल्म के लिए पैसे जुटाए थे, इस बात पर भी अपर्णा से कभी चर्चा नहीं हुई। वह आगे कहती हैं, 'मेरी पिछली तीन फिल्मों के निर्माता ने मुझे तय दिनों में शूटिंग पूरी करने के लिए कहा था, लेकिन शशि ने मुझे यह भी नहीं बताया। उन्होंने बस इतना ही सुझाव दिया कि मुझे लागत कम रखने की कोशिश करनी चाहिए।'
अपर्णा कहती हैं कि निर्माता शशि कंजूस नहीं थे। ‘शशि काफी खर्चीले थे,’ वह कहती हैं। ‘हम रविवार को काम नहीं करते थे। चूंकि शूटिंग कलकत्ता में थी, इसलिए वह फिल्म-वालास के पूरे लाइटिंग उपकरण लेकर मुंबई से आते थे और पांच सितारा होटलों में ठहरते थे। फिर, वह हर सप्ताहांत यूनिट के लड़कों के लिए खाने- पीने का बहुत उदारतापूर्वक इंतजाम करते थे—वह हमेशा टीम को खुश रखते थे।’
शर्मिला टैगोर आगे कहती हैं कि निर्माता शशि भी बेहद मेहनती थे। ‘जब वे 36 चौरंगी लेन का निर्माण कर रहे थे, तब शशि, जेनिफर और मैं कलकत्ता जाते या वापस आते थे—यह हवाई यात्रा का लंबा सफर होता था। और शशि ने बताया कि वे सुबह-सुबह नींद से भरी आँखों

से उठते थे और सीधे काम पर लग जाते थे, क्योंकि वे अपर्णा के साथ एक अच्छी फिल्म बनाने के लिए प्रतिबद्ध थे।’
अगर शशि और अपर्णा के बीच कोई अनबन हुई थी, तो वह '36 चौरंगी लेन' की एडिटिंग के दौरान हुई थी। चूंकि शशि को निर्देशक का कट थोड़ा लंबा लगा, इसलिए उन्होंने उसमें काफी काट-छांट कर दी। अपर्णा कहती हैं, 'मुझे यह बात पसंद नहीं आई और हमारी थोड़ी कहा-सुनी हो गई। लेकिन फिर मैंने इसे स्वीकार कर लिया। आखिरकार सब ठीक हो गया।'
36 चौरंगी लेन बुढ़ापे और अकेलेपन पर आधारित एक खूबसूरती से बयां की गई, शांत फिल्म है, जो कलकत्ता के एंग्लो-इंडियनों के जीवन की गहरी झलक भी पेश करती है। फिल्म की समीक्षकों ने खूब सराहना की और इसे कई पुरस्कार मिले, जिनमें 1982 में जेनिफर को सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के रूप में बाफ्टा (ब्रिटिश एकेडमी ऑफ फिल्म एंड टेलीविजन आर्ट्स) नामांकन भी शामिल है—शायद यह एकमात्र ऐसा मौका है जब भारत में भारतीयों द्वारा निर्मित और निर्देशित किसी फिल्म की नायिका को यह सम्मान मिला हो। जेनिफर की सह-नामांकित अभिनेत्रियों में सिसी भी शामिल थीं।
स्पेसक ने 35-36 रन बनाए और डायने कीटन रेड्स की ओर से खेलीं, लेकिन अंततः वे हार गईं।
कैथरीन हेपबर्न ने फिल्म 'ऑन गोल्डन पॉन्ड' में अभिनय किया था। हालांकि, जेनिफर को 1982 में इवनिंग स्टैंडर्ड ब्रिटिश फिल्म अवार्ड्स द्वारा सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के रूप में सम्मानित किया गया था।
जेनिफर ऐसी प्रशंसा से अप्रभावित रहीं, लगभग विनम्र। एक साक्षात्कार में, वह कहती हैं, 'मुझे नहीं लगता कि [36 चौरंगी लेन में] मेरा अभिनय उतना अच्छा है जितना लोग कहते हैं। मुझे

लगता है कि बॉम्बे टॉकी और जुनून के बीच लंबे अंतराल के कारण, लोग भूल गए थे कि मैंने कभी अभिनय भी किया है।' फिर, वह अपर्णा की प्रशंसा करती हैं।
36 चौरंगी लेन किसी के करियर में उन दुर्लभ उदाहरणों में से एक है जब एक लेखक, जो निर्देशक भी है, ने एक ऐसा संपूर्ण चरित्र रचा है... मुझे मिस स्टोनहैम के किसी भी काम को अपने मन में सही ठहराने की कभी कोई ज़रूरत नहीं पड़ी... कुछ भी उस चरित्र के विपरीत नहीं था... शायद इसलिए कि [अपर्णा] भी एक अभिनेत्री हैं, इसलिए ऐसा हो पाया।
बहुत आसान। 38

अपर्णा ने 1981 में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक श्रेणी में राष्ट्रीय पुरस्कार जीता, जबकि अशोक को उनकी छाया लेखन के लिए सम्मानित किया गया। फिर, 1982 में मनीला में सिनेमनिला अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव हुआ। सत्यजीत, जिन्होंने अपर्णा से कहा था कि उन्हें फिल्म पसंद आई है, निर्णायक मंडल के प्रमुख थे। अपर्णा मुझे बताती हैं, 'वहाँ कई महत्वपूर्ण फिल्में प्रतिस्पर्धा कर रही थीं, जिनमें 'द फ्रेंच' भी शामिल थी।' लेफ्टिनेंट की महिला 39 40, फासबिंडर की लोला और ट्रूफॉट की द वुमन नेक्स्ट
डोर.41 इसकी तुलना में, मैं तो बस एक नवागंतुक था।’ इतनी कड़ी प्रतिस्पर्धा के बावजूद, 36 चौरंगी लेन को सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए गोल्डन ईगल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बाद में, अपर्णा ने सत्यजीत से पूछा कि क्या उन्होंने जूरी के फैसले को प्रभावित किया था और उस महान निर्देशक का दिल छू लेने वाला जवाब था कि यह सर्वसम्मत निर्णय था।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इतनी प्रशंसा मिलने के बावजूद, 36 चौरंगी लेन बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप रही। कुणाल इस फिल्म को 'आत्मघाती' बताते हैं क्योंकि यह अंग्रेजी में बनी थी, जबकि जेफ्री अपनी आत्मकथा में लिखते हैं, 'एक अकेली एंग्लो-इंडियन अविवाहित महिला की कहानी, जिसका जीवन का एकमात्र आनंद अपने छात्रों को शेक्सपियर पढ़ाना था, जरूरी नहीं कि एक व्यापक दर्शक वर्ग को पसंद आए।'
दर्शकों।’42 द हिंदू के साथ एक साक्षात्कार में, शशि ने फिल्म की प्रतिक्रिया पर अपनी निराशा व्यक्त की। उन्होंने कहा, ‘36 चौरंगी लेन पूरी तरह से फ्लॉप रही। मुझे प्रचार शुल्क का भुगतान करना पड़ा और कुछ जगहों पर तो मुझे फिल्म के लिए कलाकार भी किराए पर लेने पड़े।
मैं खुद थिएटरों में इसे प्रदर्शित करूंगा।’43 कहीं और, शशि कहते हैं कि उनके हिसाब से,
फिल्म को कम से कम 24 लाख 44 रुपये का नुकसान हुआ (जो कि अपर्णा द्वारा फिल्म के बजट के रूप में बताया गया आंकड़ा है)।
बाद में देखा जाए तो, फिल्म का निर्माण करना और फिर उसे खुद ही रिलीज़ करना शशि का सबसे अच्छा व्यावसायिक निर्णय नहीं था। लेकिन तब उनके पास कोई और विकल्प नहीं था। यह भारत में सिंगल-स्क्रीन सिनेमाघरों का दौर था। मल्टीप्लेक्स, जो स्वतंत्र फिल्मों को जगह देते थे, अभी दूर की बात थे। जैसा कि कई लोगों ने कहा है, निर्माता के रूप में शशि अपने समय से आगे थे।
विजेता (1982)

गोविंद निहलानी की मुलाकात शशि कपूर से 1960 के दशक की शुरुआत में हुई, जब शशि कपूर को अपने करियर का पहला बड़ा ब्रेक मिलने

वाला था। उस समय युवा अभिनेता 'मोहब्बत इस्को' फिल्म में मुख्य भूमिका निभा रहे थे।
कहते हैं (45) फिल्म की शूटिंग के दौरान गोविंद फिल्म इंडस्ट्री में अपने शुरुआती काम को समझने की कोशिश कर रहे थे। गोविंद मुझसे कहते हैं, 'मुझे वो दिन बहुत प्यार से याद हैं। शशि एक युवा, उभरते हुए अभिनेता थे, जबकि मैं सिर्फ एक सहायक कैमरामैन था। लेकिन वो हमेशा मेरे साथ बहुत दयालु, दोस्ताना और स्नेहपूर्ण व्यवहार करते थे, और यही उनका सभी तकनीशियनों के प्रति रवैया था।'
शूटिंग खत्म होने के बाद गोविंद और शशि का संपर्क टूट गया, लेकिन मशहूर छायाकार ने अभिनेता के फिल्मी करियर पर नजर रखना जारी रखा। आखिरकार, श्याम बेनेगल ने जब जुनून और कलयुग बनाईं, तब उनकी जिंदगी फिर से टकराई और गोविंद (छात्राकार के रूप में) और शशि (अभिनेता/निर्माता के रूप में) दोनों को लिया। शशि के साथ उनका रिश्ता और भी मजबूत होता चला गया।
गोविंद से अपनी होम प्रोडक्शन फिल्म 46 विजेता का निर्देशन करने के लिए कहेंगे, यह देखने के बाद कि...
गोविंद की समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फिल्म 47 आक्रोश, जिसने 1981 में छह फिल्मफेयर पुरस्कार जीते थे।
विजेता की उत्पत्ति कुछ अनोखी थी। 1980 के दशक की शुरुआत में, जब शशि अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के लिए दिल्ली में थे, तब उनकी मुलाकात वायु सेना प्रमुख मार्शल दिलबाग सिंह से हुई, जिन्होंने भारतीय वायु सेना (आईएएफ) का जश्न मनाने और 1982 में इसकी पचासवीं वर्षगांठ को चिह्नित करने वाली एक हिंदी फिल्म में रुचि व्यक्त की। दिलबाग ने बदले में फिल्म के लिए सभी सुविधाएं प्रदान करने की पेशकश की - हैदराबाद में वायु सेना

अकादमी और पुणे में वायु सेना स्टेशन और राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में बड़े हिस्से की शूटिंग की अनुमति दी। शशि निर्माता और वित्तपोषक बने रहे, लेकिन यह पहली बार था कि आईएएफ किसी हिंदी फिल्म निर्माण कंपनी के साथ सहयोग कर रहा था।
इसके अलावा, भारतीय वायु सेना एक ऐसी कहानी देखना चाहती थी जो पुरानी धारणाओं को तोड़ दे। हिंदी सिनेमा की उस पुरानी परंपरा का पालन करने के बजाय, जिसमें सेना के पायलटों को ऐसे योद्धाओं के रूप में दिखाया जाता है जो अपनी गर्भवती पत्नियों या शोक संतप्त प्रेमिकाओं को पीछे छोड़ जाते हैं, वे एक समकालीन कहानी देखना चाहते थे, एक ऐसी कहानी जो संस्था को आधुनिक चिंताओं से जुड़ा हुआ दिखाए। गोविंद कहते हैं, 'वे युवाओं को आकर्षित करने के लिए एक शिक्षित पायलट चाहते थे। वे वायु सेना की उस पारंपरिक छवि को नहीं दिखाना चाहते थे, जिसमें पति युद्ध में जाते हैं और शहीद हो जाते हैं।'
इस संक्षिप्त निर्देश के आधार पर, गोविंद ने श्याम के संवाद-लेखन सहयोगी सत्यदेव दुबे और प्रसिद्ध कवि दिलीप चित्रे के साथ मिलकर एक मौलिक कहानी तैयार की। सत्यदेव की एक सिख सज्जन और उनकी महाराष्ट्रीयन पत्नी से जान-पहचान को आधार बनाकर, टीम ने एक आकर्षक पारिवारिक परिदृश्य का निर्माण किया।
विजेता एक सख्त मिजाज, कभी अय्याश रहे सिख निहाल (शशि) की कहानी है, जिसका अपनी महाराष्ट्रीयन पत्नी नीलिमा (रेखा) और लक्ष्यहीन बेटे अंगद (कुणाल कपूर) के साथ बेहद तनावपूर्ण रिश्ता है। हताश अंगद, जो अपने बिखरे परिवार से जूझते हुए भी लगातार असफलताओं की ओर बढ़ रहा है, आखिरकार वायुसेना में शामिल होकर अपना मकसद पा लेता है। इसके बाद अंगद के परिपक्व होने की

कहानी शुरू होती है—उदासी से आत्म-साक्षात्कार की ओर उसका सफर।
गोविंद ने श्याम के मार्गदर्शन में शशि को अभिनय करते देखा था, इसलिए उन्हें निर्देशित करना अपेक्षाकृत आसान साबित हुआ। गोविंद कहते हैं, 'मुझे बस दृश्य सुनाना होता था। चूंकि शशि शुरू से ही जानते थे कि हमने कुछ ऐसे किरदार बनाए हैं जिनमें कुछ अस्पष्ट पहलू हैं, इसलिए वे उन बारीकियों को बखूबी समझ पाए। एक अभिनेता के रूप में वे बहुत ही प्रतिभाशाली थे।' विजेता में शशि ने एक ऐसे पति का मार्मिक अभिनय किया है जो अपने बेटे के प्यार के कारण एक दुखी वैवाहिक जीवन को निभा रहा है। विजेता, जुनून और कलयुग के साथ, शशि को एक अभिनेता के रूप में अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पर दिखाया गया है; इन सभी फिल्मों में, जटिल और परेशान किरदारों को निभाते हुए भी उन्होंने अपार संयम दिखाया है।
अगर विजेता फिल्म में निहाल/शशि की सख्ती पृष्ठभूमि का काम करती है, तो फिल्म का केंद्र बिंदु अंगद है। शशि के बेटे कुणाल को कई अन्य फिल्मों में छोटी भूमिकाओं के बाद इस फिल्म से अपना पहला बड़ा ब्रेक मिला। ऐसा माना जाता है कि शशि विजेता फिल्म के जरिए अपने बेटे के करियर को लॉन्च करना चाहते थे, लेकिन गोविंद कहते हैं कि ऐसा कोई दबाव नहीं था: 'शशि ने इसे कोई शर्त नहीं बनाया था। उन्होंने इसे हम पर छोड़ दिया और सुझाव दिया कि अगर कुणाल यह भूमिका निभा सकता है, तो ठीक है।'
फिल्म निर्माण के दौरान, कुणाल ने एक अभिनेता से कहीं अधिक प्रतिभा का परिचय दिया। विजेता—जो आज भी कुछ हद तक लंबी लगती है—के बाईस मिनट कुणाल ने शशि की स्टीनबेक मशीन का उपयोग करके

संपादित किए थे, जिसमें भानुदास दिवाकर (जिन्होंने जुनून और कलयुग का संपादन भी किया था) का कुशल मार्गदर्शन भी शामिल था। (और उस समय श्याम की फिल्म '48 मंडी' पर काम कर रहे थे)। कुणाल कहते हैं, 'मुझे विजेता का शुरुआती संस्करण बहुत नीरस लगा और मुझे लगा कि इसे छोटा करना चाहिए।' 'मैंने पिताजी को फोन किया और उन्हें संपादित संस्करण दिखाया। उन्हें यह पसंद आया।' बेशक, यह सब गोविंद की जानकारी के बिना किया गया था, और जब निर्देशक को इस गुप्त संपादन सत्र के बारे में पता चला, तो वे बहुत नाराज़ हुए! अंत में, गोविंद को मनाने के लिए, अंतिम संस्करण में बारह मिनट वापस जोड़ दिए गए।
विजेता के फाइनेंसर शशि को गोविंद बड़े स्नेह से याद करते हैं और उन्हें एक दुर्लभ निर्माता बताते हैं, जो निर्देशक की जरूरतों को समझते थे। गोविंद कहते हैं, 'वे समझते थे कि सिनेमा अंततः निर्देशक का माध्यम है। निर्देशकों को वही मिलना चाहिए जो वे चाहते हैं।' विजेता की शूटिंग के दौरान वित्तीय कठिनाइयों के बावजूद भी शशि का अपने निर्देशक के दृष्टिकोण को साकार करने का समर्पण स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। गोविंद कहते हैं, 'शशि बहुत अमीर निर्माता नहीं थे, इसलिए फंडिंग कहीं न कहीं से तो आनी ही थी, है ना? लेकिन उन्होंने कभी भी इस तनाव को निर्देशक या फिल्म निर्माता यूनिट तक नहीं पहुंचने दिया।' दुर्भाग्यवश, जैसा कि अन्य फिल्मों के साथ नियमित रूप से होता आ रहा था।
शशि ने निर्माण किया, 49 विजेता ने पैसा खो दिया - 40 लाख रुपये, शशि ने मधु जैन को बताया।
कुणाल को विजेता की असफलता का स्पष्ट रूप से अफसोस है, खासकर अंगद के रूप में उनके दमदार प्रदर्शन को देखते हुए। मिंट के एक

लेख में, वह उदास होकर कहते हैं, 'अगर विजेता (शशि) इस्माइल मर्चेंट या एकता कपूर होते तो उन्होंने खूब पैसा कमाया होता।' लोगों को पसंद तो आया, लेकिन इसकी मार्केटिंग अच्छी तरह से नहीं की गई।50 यह एक ऐसी आलोचना है जो शशि के अगले प्रोडक्शन के लिए भी उठाई जाएगी।

उत्सव (1984)

शूद्रक द्वारा रचित मृच्छकटिका 51 (जिसका अनुवाद 'छोटी मिट्टी की गाड़ी' के रूप में किया गया है) एक दस अंकों का नाटक है, जो हास्य से भरपूर है और राजनीतिक उथल-पुथल की पृष्ठभूमि में प्रेम का गुणगान करता है। इसकी कहानी काफी सरल है—एक गरीब ब्राह्मण, चारुदत्त, एक धनी वेश्या, वसंतसेना के प्यार में पड़ जाता है, जबकि राजा का बहनोई उसका पीछा करता रहता है। समस्थानक; वात्स्यायन (52 कामसूत्रों के लिए प्रसिद्ध) कथावाचक हैं जो घटनाओं को आपस में जोड़ते हैं, साथ ही साथ उस विषय पर विस्तार से चर्चा करते हैं जिससे वे सबसे अच्छी तरह परिचित हैं: यौन सुख। मृच्छकटिका नाटक आज भी इतना प्रसिद्ध है, क्योंकि यह प्राचीन भारत में यौन इच्छा और वासना जैसे विषयों को हास्य और नवीनता के साथ प्रस्तुत करता है।
कलयुग के बाद शशि कपूर के संपर्क में रहे गिरीश कर्णद ने अभिनेता को बताया कि वे शूद्रक की क्लासिक कृति पर आधारित एक फिल्म का निर्देशन करना चाहते हैं। लगभग पचास साल पहले, पृथ्वीराज कपूर ने इसी नाटक में मुख्य भूमिका, चारुदत्त, निभाई थी। अब, गिरीश इस नाटक को एक नया आयाम देना चाहते थे।

उन्होंने शेखर सुमन के साथ '53 उत्सव' नामक फिल्म में मुख्य भूमिका निभाई, जिसका निर्माण पृथ्वीराज के बेटे शशि ने किया था। यह शशि द्वारा भारत के आर्ट-हाउस सिनेमा से जुड़े निर्देशकों के लिए वित्तपोषित की गई पांच फिल्मों में से आखिरी फिल्म थी।
रेखा को खूबसूरत वसंतसेना का किरदार निभाना था, और अमजद खान को वात्स्यायन के रूप में चुना गया था, वहीं शशि ने अपने दोस्त अमिताभ बच्चन को मोटे, कामुक समस्थानक के रूप में लेने की योजना बनाई थी। हालाँकि, बाद में
मनमोहन देसाई की फिल्म ' कुली' की शूटिंग के दौरान अमिताभ गंभीर रूप से घायल हो गए थे, जिसके चलते अमिताभ के पास फिल्म से हटने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था; शशि को निर्माता की भूमिका निभाते हुए सहायक भूमिका स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस भूमिका की आवश्यकता के कारण शशि ने पहली बार वजन बढ़ाया। अमिताभ की दुर्घटना फिल्म 'उत्सव' के निर्माण में आई दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं की एक लंबी श्रृंखला की शुरुआत थी। कर्नाटक में फिल्म का सेट चक्रवात से तबाह हो गया। फिर, शूटिंग के पहले ही दिन, रेखा के घर पर आयकर विभाग ने छापा मारा। सबसे बुरी बात यह थी कि फिल्म का बजट 1.2 करोड़ रुपये से बढ़कर 2 करोड़ रुपये हो गया।
शशि की शुरुआती वित्तीय योजनाएँ कई कारणों से विफल हो गईं। एक कारण यह था कि शशि और गिरीश, जिन्हें उत्सव से बहुत उम्मीदें थीं और उन्हें पूरा विश्वास था कि यह फिल्म कम से कम पश्चिमी देशों के आर्ट हाउस सिनेमाघरों में तो सफल होगी ही, ने हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में एक साथ शूटिंग करने का फैसला किया।

अंग्रेजी में डबिंग के लिए ब्रिटिश कलाकारों को नियुक्त किया गया और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी पैसा खर्च किया गया। दुर्भाग्यवश, यह पैसा वापस नहीं मिल सका, क्योंकि अंग्रेजी संस्करण कभी बड़े पर्दे पर नहीं आ सका। देव बेनेगल कहते हैं, 'मुझे नहीं लगता कि इसमें किसी की दिलचस्पी थी।' बेनेगल मुंबई में कुणाल कपूर के साथ 'उत्सव' के सेट पर समय बिताते थे और बाद में लंदन में पोस्ट-प्रोडक्शन के दौरान फिल्म के अंग्रेजी संस्करण पर काम किया। 'उस समय, अंग्रेजी बोलने वाले भारतीय अभिनेताओं की मांग नहीं थी।' कुणाल, जो 'उत्सव' में एक सहायक भूमिका निभाते हैं, आगे कहते हैं, 'उस समय, अंतरराष्ट्रीय बाजार में किसी को भी भारत के उस दौर में दिलचस्पी नहीं थी। यह फिल्म न तो आर्ट-हाउस थी और न ही एक विज्ञापन। मैंने इसे डगलस फेयरबैंक्स जैसी साहसिक कहानी के रूप में कल्पना की थी।
दूसरी समस्या यह थी कि खर्चों पर लगाम नहीं लगाई जा रही थी। शर्मिला टैगोर कहती हैं: 'उत्सव के निर्माण के दौरान बहुत सारा पैसा खर्च हो रहा था, जिससे एक दोस्त के तौर पर मुझे बहुत दुख हुआ। उदाहरण के लिए, शशि उन लोगों को हवाई जहाज से भेज देते थे जो ट्रेन से यात्रा करने के आदी थे।' देव आगे कहते हैं: 'इससे भी बुरा यह था कि उत्सव की टीम फिल्म को पानी की तरह बहा रही थी!' बढ़ते खर्चों का शशि पर काफी बुरा असर पड़ा, और आखिरकार उनका गिरीश से झगड़ा हो गया। देव बताते हैं, 'फिल्म स्टॉक के इस्तेमाल को लेकर क्रू के सामने ही दोनों में बहस हो गई। यही एक समय था जब मैंने शशि को दबाव में झुकते हुए देखा। क्योंकि, वैसे तो वह एक आदर्श निर्माता थे। वह कभी किसी बात के लिए मना नहीं करते थे।'

जब उत्सव का हिंदी संस्करण भारत में रिलीज़ हुआ, तो यह बुरी तरह फ्लॉप हो गया। इसकी असफलता के कई कारण बताए गए। संजना कपूर ने उत्सव में अपने पिता की प्रशंसा करते हुए कहा, 'वह अद्भुत थे: अय्याश और भावुक', साथ ही साथ उन्होंने यह भी कहा कि कुल मिलाकर कलाकारों का अभिनय एक जैसा नहीं था। 'अलग-अलग एक्टिंग स्कूलों के इतने सारे कलाकार एक साथ चिपकाए गए थे!'
देव आगे कहते हैं कि फिल्म का मिजाज पूरी तरह गलत था। मृच्छकटिका एक हास्य नाटक है जो मंच पर लगभग हमेशा सफल होता है। लेकिन उत्सव—जो ऐतिहासिक बारीकियों, प्रोडक्शन डिजाइन, वेशभूषा और आभूषणों से बोझिल है—बिल्कुल भी हास्यप्रद नहीं है। देव याद करते हुए कहते हैं, ‘मुझे याद है, एक बार शशि ने मुझसे कहा था, “तुम फिल्म निर्माताओं के साथ समस्या यह है कि तुम कॉमेडी बनाने से डरते हो, तुम्हारे पास हास्यबोध नहीं है।”’ ‘सच कहूँ तो, उत्सव में हास्य की कमी थी। गिरीश के निर्देशन में यह एक नीरस, सीधा-सादा नाटक बन गया जिसमें कोई चतुराई नहीं थी।’ कुणाल का कहना है कि फिल्म का मकसद कामुकता को दिखाना तो है, लेकिन यह विषय की गहराई में जाने से चूक जाती है। फिल्म के शुरुआती दृश्यों में से एक में, वसंतसेना चारुदत्त को फंसाने के बाद निर्वस्त्र हो जाती है, लेकिन कैमरा उसके शरीर के कुछ हिस्सों पर फोकस करते हुए भी अश्लीलता से बचता है। एक अन्य दृश्य में, जब वत्स्यायन एक वेश्यालय में ताक-झांक करता है, तो दर्शकों को जो कुछ वह देखता है, उसका बस एक हल्का सा संकेत मिलता है, इससे ज्यादा कुछ नहीं। कुणाल लिखते हैं, 'मुझे लगता है कि गिरीश को फिल्म को और ज्यादा ग्लैमरस और सेक्सी बनाना चाहिए था। अंग्रेजी संस्करण में कुछ नग्न दृश्य थे। लेकिन हिंदी

संस्करण में, अमजद खान द्वारा देखे गए कुछ दृश्यों को काट दिया गया।
बाहर.’56
समीक्षक सुनील सेठी ने इंडिया टुडे में अपनी समीक्षा में इस बात से सहमति जताई है कि फिल्म में दिखाई गई ये झिझक फिल्म को नुकसान पहुंचाती है—और फिर आगे कहते हैं कि उत्सव की मुख्य कमी यह है कि इसमें सामंजस्य का अभाव है।

बेहद खूबसूरत फोटोग्राफी, शानदार प्रस्तुति, और बड़ी मेहनत से बनाया गया यह फिल्म, दो घंटे की अवधि में क्या घटित होता है, यह किसी को भी पूरी तरह से समझ नहीं आता। […] इसमें बहुत सारी उपकथाएँ हैं, बहुत सारे पात्र हैं जो कथित तौर पर शुद्ध हिंदी में घटिया ढंग से लिखे गए संवाद बोलते हैं, और बहुत सारे विषयांतर हैं […] जिससे असल मुद्दे तक पहुँचना मुश्किल हो जाता है। […] उत्सव सेंसरशिप की परेशानी में पड़ने की उम्मीद के अलावा कुछ खास हासिल नहीं कर पाता। यह एक व्यर्थ खर्च है, एक महँगी बर्बादी, और यह भी उसी राह पर चल पड़ता है जिस राह पर सब कुछ राख हो जाता है।
और धूल.57

मुझे भी 'उत्सव' कभी पूरी तरह से पसंद नहीं आई। इसकी भव्यता के बावजूद, फिल्म में आंतरिक ऊर्जा की कमी महसूस हुई। यह खोखली और थोड़ी दिखावटी लगी, साथ ही संवाद भी बनावटी थे।
इन खामियों के बावजूद, उत्सव काफी अच्छा प्रदर्शन कर सकती थी— लेकिन शशि के प्रोडक्शन में आम हो चुकी समस्या—इसका प्रभावी ढंग से विपणन न होना—की वजह से ऐसा नहीं हो पाया। कुणाल कहते

हैं, 'मर्चेंट-आइवरी को ही ले लीजिए—उनकी फिल्में ऐसी नहीं थीं कि आप सबके लिए दरवाजा खोल दें। फिर भी, वितरकों की लंबी लाइन बाहर खड़ी रहती थी। वे अपने प्रोजेक्ट्स को तब भी प्रमोट करते थे, जब...
ऑस्कर नामांकित फिल्मों जैसे '58 ए रूम विद अ व्यू' की सफलता। पिताजी दबाव नहीं डाल रहे थे। इस्माइल एक मेहनती व्यक्ति था। पिताजी नहीं थे।'
उत्सव में लगभग 1.5 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। कुणाल लिखते हैं कि यह परिवार के लिए विशेष रूप से कठिन समय था, 'उत्सव के कारण पिताजी आर्थिक रूप से पूरी तरह कंगाल हो गए थे।'
हमारी तिजोरियां भरने के बजाय, इसने हमें पूरी तरह से घाटे में डाल दिया।’59 गुजारा चलाने के लिए, कुणाल ने एक विज्ञापन एजेंसी खोली, और उनके भाई, करण कपूर, जो उस समय मॉडलिंग कर रहे थे, इसमें शामिल हो गए। उनकी कमाई ने परिवार को उस दौर से उबरने में मदद की जब वे वास्तव में आर्थिक तंगी से जूझ रहे थे।
यह एक बेहद कठिन समय था जब जेनिफर केंडल कपूर अस्वस्थ थीं और लंदन में कैंसर का इलाज करा रही थीं। शशि मधु जैन को बताती हैं, ‘जेनिफर ने तब मुझसे कहा, “चलो कारोबार बंद कर देते हैं।”’60 लेकिन शशि ने अपना प्रोडक्शन हाउस बंद करने के बजाय एक आखिरी कोशिश की, इस बार खुद एक फिल्म का निर्देशन करने का - एक विशाल, बेहद खर्चीली सिनेमाई कृति।
यह एक काल्पनिक कहानी है, जो अरेबियन नाइट्स की कहानियों और हॉलीवुड की सुपरहीरो फिल्मों से प्रेरित है।
अजूबा62 एक निर्माता के रूप में शशि की आखिरी फिल्म होगी।

Ajooba (1991)

अजूबा की कहानी तब शुरू हुई जब कुणाल कपूर उत्सव के प्रचार के लिए मॉस्को गए थे। वहां उनकी मुलाकात एक भारतीय व्यक्ति से हुई, जो उनके पिता के व्यापारिक मित्रों में से एक थे। उन्होंने जोखिम को बांटने की उम्मीद में भारत-सोवियत सह-निर्माण का सुझाव दिया। यह विचार शशि कपूर को पसंद आया, जो पहले भी कई बार असफल हो चुके थे। उन्होंने सोवियत सह-निर्देशक गेन्नादी वासिलयेव के साथ फिल्म का निर्देशन करने और सोवियत वित्तपोषकों की मदद से इसका निर्माण करने का फैसला किया। सोवियत संबंध को देखते हुए, यह भी तय किया गया कि फिल्म की अधिकांश शूटिंग सोवियत संघ में ही की जाएगी, जिसमें काला सागर के किनारे स्थित याल्टा शहर भी शामिल है, जहां स्थानीय कलाकार अतिरिक्त भूमिकाओं में नजर आएंगे।
परिणामस्वरूप बनी फिल्म 'अजूबा', एक नकाबपोश ज़ोरो जैसे नायक की कहानी बयां करती है—जो 'बहारिस्तान' राज्य के लोगों का रक्षक और दुष्ट, शैतान की पूजा करने वाले वज़ीर का नाश करता है। इस बार शशि अपने मित्र और सुपरस्टार अमिताभ बच्चन को मुख्य भूमिका निभाने के लिए मनाने में कामयाब रहे। डिंपल कपाड़िया, ऋषि कपूर, अमरीश पुरी और शम्मी कपूर सहायक कलाकारों का हिस्सा बने। कलाकारों के साइन होने के बाद, शूटिंग ज़ोर-शोर से शुरू हो गई। ऋषि कहते हैं, 'शशि अंकल हाथ में छड़ी लेकर निर्देशन करते थे। मजे के लिए।' अमिताभ भी इस किस्से की पुष्टि करते हैं: 'सेट पर छड़ी ले जाने की कहानी बिल्कुल सही है। इसका इस्तेमाल अनुशासन और व्यवस्था बनाए रखने के लिए किया जाता था—यह किसी और चीज़ से ज़्यादा एक दोस्ताना उपकरण था।' अमिताभ आगे बताते हैं कि शशि का छड़ी लेकर निर्देशन करने का यह कारनामा सिर्फ़ मुंबई में

फ़िल्म की शूटिंग के दौरान ही चला। 'उन्होंने रूस में छड़ी खो दी। भगवान का शुक्र है!'
शुरुआत में तो सब कुछ अच्छा चल रहा था, लेकिन अजूबा गंभीर मुश्किलों में फंस गई। कुणाल का दावा है कि आर्थिक संकट के संकेत हर समय मौजूद थे। सोवियत संघ की कुछ रेकी यात्राओं के दौरान उन्होंने महसूस किया कि खर्च खतरनाक रूप से बढ़ता जा रहा था। कुणाल कहते हैं, 'मैंने पिताजी से डबू (रणधीर कपूर) से मिलने की ज़िद की। डबू और रणधीर कपूर बहुत करीबी दोस्त हैं और डबू बेबाक और निष्पक्ष व्यक्ति हैं। जब मैंने पिताजी को बताया कि हमारा बजट पहले ही ज़्यादा हो चुका है और हमें फिल्म रद्द कर देनी चाहिए, तो डबू मुझसे सहमत हो गए। लेकिन पिताजी ने साफ मना कर दिया। और उन्होंने अजूबा फिल्म बनाने का फैसला किया।' कुणाल को जहाँ एक ओर आर्थिक संकट का आभास हो रहा था, वहीं संजना कपूर ने शुरुआत में ही समझ लिया था कि फिल्म ठीक से बन नहीं रही है। ‘मैं शूटिंग के लिए रूस गई थी—यह एक परंपरा थी कि हम एक्स्ट्रा कलाकार के तौर पर काम करते थे। मुझे याद है पापा ने मुझे एक दृश्य के बारे में बताया था जिसमें चिंटू (उनका चचेरा भाई, ऋषि) गधे की पीठ पर बैठा था। उन्होंने जिस तरह से इसका वर्णन किया था, वह बहुत सुंदर था। लेकिन जब मैंने इसे देखा, तो पता चला कि रोशनी से बचने के लिए दोपहर के समय का एक लंबा शॉट ही काफी था। यह बहुत ही खराब था,’ वह हंसती हैं। ‘सच में, यह बहुत ही बुरा था। पापा, वह निर्देशक नहीं हैं।’
इससे भी बुरी बात यह हुई कि आने वाले दिनों में निर्माण कार्य में जो कुछ भी गड़बड़ हो सकता था, वह सब हो गया। शूटिंग के अंत में, जब सोवियत संघ और उसकी अर्थव्यवस्था चरमराने लगी, तो फाइनेंसरों ने हाथ खींच लिया। अभी भी कुछ हफ्तों की शूटिंग

बाकी थी, और स्पेशल इफेक्ट्स के कई हिस्से अभी भी लंबित थे। फिल्म को पूरा करने के प्रयास में, शशि को सारा खर्च अपनी जेब से उठाना पड़ा।
अजूबा उतनी सफल नहीं रही जितनी शशि ने उम्मीद की थी। यह फिल्म भारतीय बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप हुई और शशि को लगभग 3.5 करोड़ रुपये का भारी नुकसान उठाना पड़ा। अगर किसी ने कुछ मुआवज़ा हासिल किया तो वो अमिताभ बच्चन थे, जिन्होंने दिल्ली और उत्तर प्रदेश के लिए वितरण अधिकार हासिल किए और दर्शकों को आकर्षित करने में कामयाब रहे।
आलोचकों ने अजूबा की जमकर आलोचना की— इसके घटिया स्पेशल इफेक्ट्स, खराब अभिनय और कथानक में कई विसंगतियों के लिए इसकी निंदा की। फिल्म से जुड़े लोग भी इसका बचाव करने से कतरा गए। ऋषि, जो अपनी बात कहने में कभी संकोच नहीं करते, कहते हैं: 'अजूबा बिल्कुल बकवास थी!' संजना आगे कहती हैं: 'पिताजी ने अजूबा का निर्देशन करने और सभी सितारों के साथ पैसा कमाने का फैसला किया। लेकिन इससे पता चलता है कि सिर्फ सितारे ही फिल्म को सफल नहीं बनाते। फिल्म का अच्छा होना जरूरी है।' मिंट में अपने लेख में कुणाल ने अंतिम बात कही: 'अजूबा न तो सफल थी और न ही सफल।' और वो अच्छी फिल्म नहीं थी। उसके बाद हमने पिताजी को दूसरी फिल्म बनाने नहीं दी।’63
जब मैंने अजूबा को रिलीज़ के समय देखा था, तब यह बताना मुश्किल था कि यह बच्चों की काल्पनिक कहानी है या वयस्कों के लिए एक एक्शन एडवेंचर ड्रामा। अब, यह फिल्म बेहद पुरानी और लगभग शर्मनाक लगती है। फिर भी, समय के साथ अजूबा ने एक कल्ट फिल्म का दर्जा हासिल कर लिया है। कुछ प्रशंसक इसे इतना बुरा मानते हैं

कि यह अच्छी लगती है—मधु जैन भी उनमें से एक हैं, जब वह अपनी समीक्षा में लिखती हैं:

[अजूबा] आपको थोड़ा चौंका देती है। लेकिन एक बार जब आप कहानी पर विश्वास करना छोड़ देते हैं, तो यह बच्चों और उनके अंदर छिपे बच्चे को भी पसंद आनी चाहिए। शशि अपने निर्देशन की पहली फिल्म में बड़े भाई राज की विरासत को हथियाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं—‘मैं कभी उनकी जगह नहीं ले सकता। वह एक महान फिल्मकार थे।’ लेकिन एक शोमैन की झलक ज़रूर दिखती है। सोवियत संघ से जुड़ाव। मनोरंजन में विश्वास। ‘मेरी सारी दिलचस्पी आपके मनोरंजन के लिए है,’ वे कवि के शब्दों को उद्धृत करते हुए कहते हैं। […] अधिकांश आलोचकों ने अजूबा पर सवाल उठाए हैं। लेकिन तर्क को एक तरफ रख दें, थोड़ा मनोरंजन अच्छा होता है।
पलायनवादी मनोरंजन।64

अक्सर यह सवाल उठता है कि क्या शशि कपूर एक अच्छे निर्माता थे। कुछ लोग—खासकर वे निर्देशक जिन्हें उन्होंने काम पर रखा था— उनकी उदारता की लगातार तारीफ करते रहते हैं। मधु जैन, जो न सिर्फ एक आलोचक और पत्रकार हैं बल्कि शशि की दोस्त भी हैं, इन्हीं भावनाओं को दोहराती हैं: 'मुझे लगता है कि शशि कपूर वास्तव में एक अच्छे निर्माता थे।'
वह एक शोमैन थे क्योंकि उन्होंने हर काम दिल से किया। बॉबी के लिए, वह

उन्होंने एक बड़ी पार्टी दी, हर टेक्नीशियन को रेडियो दिए और फिर सेट पर मौजूद हर किसी का ख्याल रखा, सिर्फ सितारों का ही नहीं। शशि अपने पिता की तरह ही थे—आप जानते हैं, दोनों को ही बचपन में बचा हुआ खाना मिलता था।
शशि के बच्चों को भी अपने पिता की उदारता की यादें हैं। कुणाल कपूर को अपने पिता द्वारा आयोजित भव्य डोंगा पार्टियों की याद आती है।
जब जब फूल खिले की 66 वर्षीय संजना कपूर अपने पिता के साथ सिंगापुर के मशहूर पांच सितारा होटल रैफल्स होटल जाने की घटना को याद करती हैं, जब उनके पिता ने फिल्म के एक एपिसोड की शूटिंग पूरी कर ली थी।
उनकी शुरुआती ब्रिटिश प्रस्तुतियों में से एक, 67 प्रीटी पॉली। 'जब प्रीटी पॉली बनी, तब वह मंदी के दौर से गुजर रहे थे। फिर भी, उन्होंने इस शानदार होटल में क्रू के लिए हमेशा की तरह भव्य पार्टी का आयोजन किया।'
शर्मिला टैगोर ने इस बात पर और जोर दिया है कि शशि की दयालुता कभी कम नहीं हुई, यहां तक कि जब वे आर्थिक संकट से जूझ रहे थे तब भी। वे कहती हैं, 'वे इतने उदार और इतने अच्छे थे। यहां तक कि जब वे अंततः दिवालिया हो गए, तब भी उन्होंने हर व्यक्ति को उसकी मूल राशि लौटा दी।'
स्वाभाविक रूप से, शशि कपूर अपनी उदारता के कारण अभिनेताओं, फिल्म क्रू और निर्देशकों के चहेते थे। संजना कहती हैं: 'मुझे याद है सुप्रिया पाठक ने मुझसे कहा था, "ओह, शशि कपूर सबसे अच्छे निर्माता थे क्योंकि उन्होंने हम सभी को लखनऊ ले जाकर 'जुनून' की शूटिंग के दौरान क्लार्क्स अवध होटल में ठहराया था। उन्होंने कहा था कि हम जो चाहें ऑर्डर कर सकते हैं। इसलिए हम

नाश्ते, दोपहर के भोजन और रात के खाने में वनीला आइसक्रीम के साथ हॉट चॉकलेट सॉस खाते थे।" उन्होंने मुझे यही बताया था।' फिर भी, शशि की उदारता हमेशा फायदेमंद नहीं रही, और उनके बच्चे इस बारे में खुलकर बात करते हैं। संजना कहती हैं: 'बात यह है कि पापा हद से ज्यादा खर्चीले थे, जो मूर्खतापूर्ण लगता था। क्योंकि उन्होंने "दूसरी तरफ" का जीवन देखा था, इसलिए वे निर्देशकों को उनकी हर मांग पूरी कर देते थे, जितना वे दे सकते थे। और यह हमेशा समझदारी भरा नहीं होता था। निर्देशकों को भी नियंत्रित करने की जरूरत होती है। लेकिन पापा इसमें बिल्कुल नाकाम थे। वे लगभग हर चीज पर बहुत पैसा खर्च करते थे।'
जो तस्वीर उभरकर सामने आती है, वह काफी जटिल है—शशि निःसंदेह निर्देशक/अभिनेता के निर्माता थे। लेकिन इससे वे अच्छे निर्माता नहीं बन गए। उनके बेटे कुणाल भी इस बात से सहमत हैं: ‘मेरे पिताजी एक बुरे व्यवसायी थे। जुनून जैसी फिल्म में भी, जहाँ उन्हें मुनाफा कमाना चाहिए था—यह उनकी अपनी कंपनी थी— उन्होंने न के बराबर ही कमाया।’ एक अन्य लेख में, वे और भी तीखे शब्दों में लिखते हैं, ‘मेरे पिताजी दुनिया के सबसे बुरे निर्माता थे! वे कभी ना नहीं कहते थे […] वे पैसे के लिए यह काम नहीं करते थे। उन्हें तो यह भी नहीं पता होता था कि कितना पैसा चाहिए।
उसकी जेब में था।
फिर भी, निश्चित रूप से, इसी वजह से शशि एक असाधारण फाइनेंसर थे — एक ऐसे व्यक्ति जिन्होंने अपने आदर्शों पर अडिग रहते हुए भी, फिल्म निर्माण के व्यवसाय से जुड़े होने के बावजूद, अपने प्रिय सिनेमा को समर्थन देने का जोखिम उठाया। देव बेनेगल मुझे बताते हैं कि शशि एकमात्र ऐसे निर्माता थे जो भारत में नई, आर्ट-हाउस

फिल्मों को वित्तपोषित करने के लिए अपने स्वयं के पैसे या उधार लिए गए पैसे का उपयोग कर रहे थे। अन्य, जो 1970 और 1980 के दशक में भारत के नए दौर के समानांतर सिनेमा आंदोलन का हिस्सा थे, उन्हें सरकारी स्वामित्व वाली एफएफसी (बाद में एनएफडीसी के नाम से जानी गई) द्वारा वित्तपोषित किया गया था। देव कहते हैं, 'शशि द्वारा निर्मित फिल्में उनके जुनून से प्रेरित परियोजनाएं थीं — वे ऐसे निर्देशकों को लेते थे जो व्यावसायिक नहीं थे और उनकी फिल्मों को बनाने के लिए उन्हें वित्तपोषित करते थे।' 'यह उस दौर से पहले का है जब द वेनस्टीन कंपनी या सोनी पिक्चर्स क्लासिक्स आज काम कर रही हैं या डेविड पुटनाम इंग्लैंड में प्रयास कर रहे थे।'
फिर भी, गोविंद निहलानी मुझे बताते हैं कि फिल्म निर्माण के प्रति यही बचकाना उत्साह शशि जी की विवेकपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता में बाधा बनता था: 'वे फिल्मों के निर्माण की कला या रचनात्मक पहलू में इतना खो जाते थे कि समय के साथ लोग कहने लगे, "शशिजी बड़े दिलवाले हैं, बहुत अलग तरह की फिल्में बनाते हैं।" लेकिन फिर वे कहते, उन्हें फाइनेंसरों के साथ किए जाने वाले सौदों के बारे में सावधान रहना चाहिए। मैं ऐसी बातें सुनता था, "शशिजी व्यापार में ज्यादा ध्यान देते तो और भी अच्छा होता।" यह कहने का एक विनम्र तरीका था कि लोग उनकी अच्छाई का फायदा उठा रहे थे।'
देव इस आकलन से सहमत हैं: ‘शशि ने लोगों को काम पर रखा, उन पर भरोसा किया, खूब पैसा लुटाया और उन्हें पूरी छूट दे दी। उनके पास खुली छूट थी और वे जो चाहें कर सकते थे। कई मायनों में, मुझे लगता है कि उन्होंने उस भरोसे को तोड़ा।’ शर्मिला भी इस बात पर टिप्पणी करती हैं: ‘शशि ने सबके साथ समान व्यवहार किया और

पेशेवर रवैया अपनाया, लेकिन ज़ाहिर है, भारत में किसी ने इसकी सराहना नहीं की।’
शशि को इस तरह की निराशाओं को समझने में थोड़ा समय लगा। अनिल धारकर कहते हैं, 'मुझे याद है एक दिन शशि ने मुझे एक निर्देशक के बारे में बताया—मैं उनका नाम नहीं लूंगा, लेकिन वह उस फिल्म का हिस्सा थे जिसे शशि ने प्रोड्यूस किया था। उन्होंने कहा, "जब एफएफसी के लिए फिल्में बनाते हैं, तो निर्देशक कम बजट में काम करते हैं। लेकिन अब शशि कपूर निर्माता बन गए हैं, वे अचानक पैसे खर्च करने में कंजूसी नहीं करते और खर्चों पर उनका कोई नियंत्रण नहीं रहता!" यह कड़वाहट का एक दुर्लभ प्रदर्शन था।' अन्य कई लोगों की तरह, जो शशि को एक इंसान के रूप में पसंद करते हैं, अनिल का मानना है कि फिल्म व्यवसायी के रूप में शशि असफल रहे—‘उनका दिल बहुत बड़ा था और उनके इरादे नेक थे। लेकिन उनकी उदारता ने एक निर्माता के रूप में बजट पर पालन किए जाने वाले अनुशासन को पीछे छोड़ दिया।’
यह सवाल मन में उठता ही है: अगर शशि एक ज़्यादा सतर्क निर्माता होते, तो क्या उनकी फिल्मों का भविष्य अलग होता? क्या वे बॉक्स ऑफिस पर सफल होतीं? शायद नहीं—क्योंकि उनकी हर फिल्म एक नया प्रयोग थी। लेकिन कम से कम वे बुरी तरह फ्लॉप तो नहीं होतीं। हालांकि, अनिल अब भी आशावादी हैं: 'अगर शशि की फिल्में सीमित बजट में बनी होतीं, तो मुझे लगता है कि वे मुनाफा कमातीं!'
आज तो सब कुछ अनुमान ही है।
नोट्स
1. मधु जैन द्वारा लिखित पुस्तक "द कपूर्स: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन" में उद्धृत।
सिनेमा (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृ. 247.

2. 1970, बॉम्बे टॉकी, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट,
इसमें शशि कपूर, जेनिफर केंडल और जिया मोहियुद्दीन ने अभिनय किया है।
3. 1969, एक हजार और एक रातें, निर्देशक: ईची यामामोटो, निर्माता.
ओसामु तेज़ुका, अभिनीत (वॉइस-ओवर के रूप में) युकिओ अशिमा, क्योको किशिदा, हिरोशी अकुतागावा।
4. 1973, बॉबी, निर्देशक: राज कपूर, निर्माता: राज कपूर, मुख्य अभिनेता: ऋषि
कपूर, डिंपल कपाडिया, प्रेम नाथ।
5. 1978, Satyam Shivam Sundaram, dir. Raj Kapoor, prod. Raj Kapoor, starring Shashi Kapoor, Zeenat Aman, Padmini Kolhapure.
6. 1970, Mera Naam Joker, dir. Raj Kapoor, prod. Raj Kapoor, starring Raj Kapoor, Simi Garewal, Manoj Kumar.
7. 1978, Junoon, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring
शशि कपूर, शबाना आज़मी, जेनिफर केंडल।
8. 1974, Ankur, dir. Shyam Benegal, prod. Mohan J. Bijlani, Freni वरियावा, अभिनीत शबाना आज़मी, अनंत नाग, साधु मेहर।
9. 1975, Nishant, dir. Shyam Benegal, prod. Mohan J. Bijlani, Freni
वरियावा, शबाना आज़मी, नसीरुद्दीन शाह, गिरीश कर्नाड अभिनीत।
10. 1976, Manthan, dir. Shyam Benegal, prod. Gujarat Co-operative

Milk Marketing Federation Ltd and Sahyadri Films, starring Smita Patil, Girish Karnad, Naseeruddin Shah.

11. 1977, Bhumika, dir. Shyam Benegal, prod. Lalit M. Bijlani, Freni Variava, starring Smita Patil, Amol Palekar, Anant Nag.

12. □□□□□□ □□□□□, □ □□□□□□ □□ □□□□□□ (□□ □□□□□□: □□□□□□□, 2007)□

13. □□□ □□□, □□□□ □□□□□□: □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ (□□ □□□□□□: □□□□□□□, 2005), □□□□□ 247□

14. □□□□□□ □□□□□, □ □□□□□□□□□ □□□□: □□ □□□□□□□ (□□□□: □□□□□□□ □□□ □□□□□□, 1986), □□. 174.

15. Sangeeta Datta, Shyam Benegal (London: British Film Institute, 2002), □□. 120.

16. 1981, Kalyug, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Raj Babbar.

17. 2001, □□□□□□□, □□□. □□□□□ □□□□□□, □□□□. □□□□□ □□□□□□□□, □□□□□□□ □□□□, □□□□, □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□

18. □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ ‘Why B’wood Didn’t Cast’ □□□ □□□□□□□

□□□□□□□ □□□□□□, □ □□□□□□ □□ □□□□□□, 23 □□□□□ 2012□

19. □□□□

20. Sangeeta Datta, Shyam Benegal (London: British Film Institute, 2002), □□. 128–29.

21. मधु जैन, कपूर परिवार: भारतीय सिनेमा का पहला परिवार
(नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृष्ठ 248।
22. 1961, ‘Samapti’, Teen Kanya, dir. Satyajit Ray, prod. Satyajit रे, सौमित्र चटर्जी, अपर्णा सेन, सीता मुखर्जी अभिनीत।
23. ‘सेन इन द सिटी’, द हिंदू, 5 जुलाई 2004 में उद्धृत।
24. 1970, बॉम्बे टॉकी, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट,
इसमें शशि कपूर, जेनिफर केंडल और जिया मोहियुद्दीन ने अभिनय किया है।
25. 1977, इम्मान धरम, दिर. देश मुखर्जी, प्रो. प्रेमजी,
starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha.
26. कुणाल कपूर, ‘शशि कपूर’, मिंट, 4 मई 2013।
27. 1981, 36 चौरंगी लेन, दिर. अपर्णा सेन, प्रो. शशि
कपूर, जेनिफर केंडल, देबाश्री रॉय, धृतिमान चटर्जी अभिनीत।
28. 1982, गांधी, निर्देशक: रिचर्ड एटनबरो, निर्माता: रिचर्ड एटनबरो अभिनीत फिल्म में बेन किंग्सले, रोहिणी हट्टंगडी और रोशन सेठ ने अभिनय किया है।
29. 1974, विटनेस, निर्देशक राज मार्ब्रोस, मुख्य भूमिका में शशि कपूर।
राखी, उत्पल दत्त।
30. सुभाष के. झा, 'अशोक मेहता द्वारा अपर्णा सेन तबाह।' 'मृत्यु', द टाइम्स ऑफ इंडिया, 27 अगस्त 2012।
31. जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा
(लंदन: सिडगविक एंड जैक्सन, 1986), पृ. 169.

32. 1965, शेक्सपियर वाला, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल
Merchant, starring Shashi Kapoor, Felicity Kendal, Madhur Jaffrey.
33. 1959, Apur Sansar, dir. Satyajit Ray, prod. Satyajit Ray, starring
सौमित्र चटर्जी, शर्मिला टैगोर, आलोक चक्रवर्ती।
34. विलियम शेक्सपियर, ट्वेल्थ नाइट (लंदन: वर्ड्सवर्थ,
1995).
35. 1982, मिसिंग, निर्देशक: कोस्टा-गाव्रास, निर्माता: एडवर्ड लुईस, मिल्ड्रेड
लुईस, पीटर गुबर, जॉन पीटर्स, अभिनीत: जैक लेमन, सिसी स्पेसक, मेलानी मेयरोन।
36. 1981, रेड्स, निर्देशक: वॉरेन बीट्टी, निर्माता: वॉरेन बीट्टी, अभिनीत
वॉरेन बीट्टी, डायने कीटन, एडवर्ड हरमन।
37. 1981, स्वर्ण तालाब पर, दिर. मार्क रिडेल, प्रोड. ब्रूस गिल्बर्ट,
इसमें कैथरीन हेपबर्न, हेनरी फोंडा और जेन फोंडा ने अभिनय किया है।
38. सुरेंद्र भाटिया द्वारा उद्धृत, ‘जेनिफर कपूर हमारी फिल्म से वापस आ गई हैं’
'आर्काइव्स कपूर खानदान में होने के बारे में बात करेंगे', सोसाइटी, 7 जून 2013।
39. 1981, द फ्रेंच लेफ्टिनेंट वुमन, दिर। कारेल रीज़, उत्पाद।

लियोन क्लोर, जिसमें मेरिल स्ट्रीप, जेरेमी आयरन्स और डेविड वार्नर ने अभिनय किया है।
40. 1981, लोला, दिर. रेनर वर्नर फासबिंदर, उत्पाद। वुल्फ-डिट्रिच
ब्रुकर, होर्स्ट वेंडलैंड्ट, अभिनीत बारबरा सुकोवा, आर्मिन म्यूएलर-स्टाहल, मारियो एडॉर्फ।
41. 1981, द वुमन नेक्स्ट डोर, निर्देशक फ्रांकोइस ट्रूफॉट, निर्माता।
फ़्राँस्वा ट्रूफ़ोट, अभिनीत फैनी अर्दंत, जेरार्ड डेपार्डियू, हेनरी गार्सिन।
42. जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा
(लंदन: सिडगविक एंड जैक्सन, 1986), पृ. 169.
43. ‘शशि कपूर के लिए एक नई भूमिका’ में उद्धृत, द हिंदू, 11 दिसंबर 2004।
44. मधु जैन द्वारा लिखित पुस्तक "द कपूर्स: द फर्स्ट फैमिली ऑफ इंडियन" में उद्धृत।
सिनेमा (नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृ. 248.
45. 1965, Mohabbat Isko Kahete Hain, dir. Akhtar Mirza, starring
Nanda, Shashi Kapoor, Ramesh Deo.
46. 1982, Vijeta, dir. Govind Nihalani, prod. Shashi Kapoor, starring
Shashi Kapoor, Rekha, Kunal Kapoor.
47. 1980, Aakrosh, dir. Govind Nihalani, prod. Devi Dutt, Narayan
केनी, अभिनीत नसीरुद्दीन शाह, स्मिता पाटिल, ओम पुरी।

48. 1983, Mandi, dir. Shyam Benegal, prod. Lalit M. Bijlani, Freni वरियावा, शबाना आज़मी, स्मिता पाटिल, नसीरुद्दीन शाह अभिनीत।
49. मधु जैन, कपूर परिवार: भारतीय सिनेमा का पहला परिवार
(नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृष्ठ 248।
50. कुणाल कपूर, ‘शशि कपूर’, मिंट, 4 मई 2013।
51. शूद्रक, मृच्छकटिका, आर्थर लेवेलिन बाशम द्वारा अनुवादित, अरविंद शर्मा (न्यूयॉर्क: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क प्रेस, 1994)।
52. Vatsyayana, Kamasutra, translated by Richard Burton (New यॉर्क: डोवर, 2006)।
53. 1984, Utsav, dir. Girish Karnad, prod. Shashi Kapoor, starring
Shekhar Suman, Rekha, Shashi Kapoor.
54. 1983, कुली, दिर. मनमोहन देसाई, प्रो. केतन देसाई, अभिनीत Amitabh Bachchan, Rishi Kapoor, Rati Agnihotri.
55. कुणाल कपूर, ‘शशि कपूर’, मिंट, 4 मई 2013।
56. वही।
57. सुनील सेठी, ‘द वे ऑफ ऑल फ्लेश’, इंडिया टुडे, 15 मई 1984।
58. 1985, ए रूम विद ए व्यू, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल
मर्चेंट, जिसमें मैगी स्मिथ, हेलेना बोनहम कार्टर और डेनहोम इलियट ने अभिनय किया है।
59. कुणाल कपूर, ‘शशि कपूर’, मिंट, 4 मई 2013।
60. मधु जैन, कपूर परिवार: भारतीय सिनेमा का पहला परिवार
(नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005), पृष्ठ 248।

61. अरेबियन नाइट्स, हुसैन हद्दावी द्वारा अनुवादित, संपादक: मुहसिन
महदी (न्यूयॉर्क: नॉर्टन, 1990)।
62. 1991, Ajooba, dir. Shashi Kapoor, prod. Shashi Kapoor, starring
Amitabh Bachchan, Rishi Kapoor, Dimple Kapadia.
63. कुणाल कपूर, ‘शशि कपूर’, मिंट, 4 मई 2013।
64. मधु जैन, ‘शानदार भोजन’, इंडिया टुडे, 15 मई 1991।
65. 1973, बॉबी, निर्देशक: राज कपूर, निर्माता: राज कपूर, मुख्य कलाकार: ऋषि
कपूर, डिंपल कपाडिया, प्रेम नाथ।
66. 1965, Jab Jab Phool Khile, dir. Suraj Prakash, prod. Chetan K.,
इसमें शशि कपूर, नंदा और आगा ने अभिनय किया है।
67. 1967, प्रीटी पॉली, निर्देशक: गाय ग्रीन, निर्माता: जॉर्ज डब्ल्यू जॉर्ज,
फ्रैंक ग्रैनट, जिसमें हेले मिल्स, शशि कपूर और ट्रेवर हॉवर्ड ने अभिनय किया है।
68. कुणाल कपूर, ‘शशि कपूर’, मिंट, 4 मई 2013।
6

बाद के दौर की फिल्में

शशि, 1980 का दशक और उसके बाद

1980 के दशक की शुरुआत में, रमेश शर्मा—एक युवा निर्देशक जिन्होंने एक पुरस्कार जीता था—
तिब्बती बौद्ध धर्म पर बनी लघु वृत्तचित्र फिल्म '1 रुमटेक' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार (सर्वश्रेष्ठ सूचनात्मक फिल्म, 1978) जीतने वाले रमेश एक कथात्मक फीचर फिल्म के साथ कुछ नया करना चाहते थे। पत्रकारिता की पृष्ठभूमि से आने के कारण, उन्होंने आपातकाल के बाद अरुण शौरी और एम.जे. अकबर जैसे पत्रकारों द्वारा की जा रही खोजी पत्रकारिता से प्रेरित एक कहानी पर विचार किया। वे मुझे बताते हैं, 'सत्ता विरोधी भावना प्रबल थी। लोगों का मानना था कि सरकार कुछ छिपाने की कोशिश कर रही है।' इसलिए, रमेश ने पटकथा लिखना शुरू किया और फिर, अप्रत्याशित रूप से, एक सामान्य मित्र के माध्यम से उनकी मुलाकात महान कवि गुलजार से हुई। रमेश कहते हैं, 'गुलजार को मेरी कहानी की रूपरेखा बहुत पसंद आई और वे बहुत कम पैसों में पटकथा लेखक बनने के लिए तैयार हो गए।'
संयोगवश ही रमेश की मुलाकात दिल्ली हवाई अड्डे पर अपने एक धनी कॉलेज मित्र से हुई, जिसने संक्षिप्त बातचीत के बाद निर्देशक की 25 लाख रुपये की छोटी इंडी फिल्म में निवेश करने पर सहमति जताई। लेकिन मित्र की एक शर्त थी। वह मुख्य भूमिका के लिए एक बड़े व्यावसायिक अभिनेता को लेना चाहता था।

इससे रमेश के सामने एक समस्या खड़ी हो गई, जो ओम पुरी या नसीरुद्दीन शाह जैसे विशिष्ट अभिनेताओं को लेने की योजना बना रहे थे—ये दोनों ही कलाकार आर्ट हाउस और न्यू वेव सिनेमा जगत में अपने करियर के शिखर पर थे। रमेश ने अपने मित्र और कैमरामैन सुब्रता मित्रा (दोनों ने 'रमटेक' में साथ काम किया था) से इस बारे में बात की, जिन्होंने युवा फिल्म निर्माता को रहस्यमय तरीके से बताया कि एक प्रतिभाशाली स्टार है जो मुख्य भूमिका निभा सकता है। एक दिन बाद, सुब्रता ने उस अभिनेता का नाम बताया जिस पर वे विचार कर रहे थे—शशि कपूर।
सुब्रता ने शशि कपूर के साथ मर्चेंट-आइवरी की कुछ फिल्मों में काम किया था, इसलिए छायाकार को अभिनेता की छोटी, यथार्थवादी फिल्मों के प्रति प्रतिबद्धता का पता था; उन्हें यह भी पता था कि शशि कपूर जटिल किरदारों को बखूबी निभा सकते हैं। रमेश याद करते हुए बताते हैं, 'तब सुब्रता ने कहा, "अब शशि कपूर को मनाना तुम्हारी जिम्मेदारी है।"'

नई दिल्ली टाइम्स (1986)

यह सन् 1983 की बात है। रमेश शर्मा एक जोखिम उठाने के लिए तैयार थे—एक दृष्टिकोण अपनाने के लिए।
शशि कपूर उनकी फिल्म '2 न्यू दिल्ली टाइम्स' में मुख्य भूमिका निभाएंगे। फिल्म में एक ईमानदार अखबार संपादक विकास पांडे की कहानी दिखाई जाएगी, जो एक राजनेता की हत्या की जांच करने निकलता है। रमेश कहते हैं, 'मैं मुंबई के लिए रवाना हुआ - बहुत घबराया हुआ था। यह मेरी पहली फीचर फिल्म थी; मैं युवा था, कॉलेज से अभी-

अभी निकला था, और मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि मैं शशि कपूर जैसे 'स्टार' को क्या बताऊंगा।'
चिंतित रमेश, ताज महल होटल के गोल्डन ड्रैगन रेस्तरां में शशि से डिनर पर मिले। अचानक, रमेश और शशि की बातचीत के बीच में ही, शशि अपने कुछ दोस्तों के साथ बगल की मेज पर बैठे हिंदी फिल्म अभिनेता जीतेंद्र के पास गए। रमेश बताते हैं, 'शशि ने मुझे अपनी अगली फिल्म के निर्देशक के रूप में मिलवाया। मैं दंग रह गया क्योंकि मैंने अभी-अभी कहानी सुनाना शुरू ही किया था! लेकिन फिर, मैं खुश भी था।'
अब उत्साहित रमेश ने शशि को फिल्म की बाकी कहानी बताई—पत्रकार विकास पांडे द्वारा राजनेता की हत्या की जांच के दौरान एक बड़ी राजनीतिक साजिश का पर्दाफाश करना; अपने खुलासे को दबने से बचाने के लिए उनका संघर्ष; और बाद में राजनेताओं और मीडिया दिग्गजों के बीच के घिनौने गठजोड़ का पता लगाना। रमेश ने मुझे बताया, 'शशि को कहानी बहुत पसंद आई। सच में, शशि बहुत अच्छे इंसान थे। उन्होंने मेरे साथ एक पेशेवर और बराबरी का व्यवहार किया, मानो मैंने दर्जनों फिल्में बनाई हों।'
लेकिन फिर, अहम सवाल सामने आया। रमेश बताते हैं, 'शशि ने मुझसे फिल्म का बजट पूछा। मैंने अपनी ज़बान पर काबू रखा और धीरे से कहा, "25 लाख रुपये।" शशि ने मुझे हैरानी से देखा और आखिर में पूछा, "रमेश, क्या तुम सच कह रहे हो?" मैंने उन्हें बताया कि मेरे पास बस इतना ही है और सभी लोग लगभग बिना वेतन के काम कर रहे हैं।' शशि चुप हो गए। फिर उन्होंने युवा निर्देशक से पूछा कि उनकी जेब में कितने पैसे हैं। 'मैंने उन्हें बताया कि मेरे पास कुछ हज़ार रुपये हैं। शशि ने कहा, "मुझे एक सौ एक रुपये दो।" मैं काफी उलझन में था। फिर उन्होंने आगे कहा, "यह मेरी साइनिंग फीस

है। आज जुम्मा है - एक शुभ दिन - और तुमने मुझे साइन कर लिया है।" बस इतना ही। उन्होंने स्क्रिप्ट भी नहीं पढ़ी थी।'
अब बारी थी स्टार की सैलरी पर चर्चा करने की। लेकिन इस समय तक शशि इस प्रोजेक्ट से इतने प्रभावित हो चुके थे कि उन्होंने स्वेच्छा से मात्र एक लाख रुपये में काम करना स्वीकार कर लिया— ठीक उतनी ही रकम जितनी बी.आर. चोपड़ा ने उन्हें लगभग दो दशक पहले दी थी।
इससे पहले शशि कपूर ने फिल्म '3 वक्त' के लिए हामी भरी थी। हालांकि, इसके बदले में शशि कपूर ने दो शर्तें रखीं (जो बाद में मान ली गईं)। रमेश को पहली शर्त याद है: 'शशि कपूर ने कहा, "मैं आमतौर पर ऐसा नहीं करता और तुम भुगतान की शर्तें अपने तक ही रखना; किसी और निर्देशक या निर्माता को मत बताना क्योंकि वे सोचेंगे कि मैं काम के लिए बेताब हूं।"' फिर दूसरी शर्त आई। रमेश बताते हैं, 'वह दिल्ली के ताज मानसिंह होटल में रुकना चाहते थे। उन्होंने अपने खाने-पीने और फोन कॉल का खर्च खुद उठाने की पेशकश की, लेकिन होटल की जगह पर कोई समझौता नहीं हुआ। उन्होंने मुझसे कहा, "जब लोग मुझसे मिलें, तो उन्हें पता होना चाहिए कि शशि कपूर के स्तर में कोई गिरावट नहीं आई है।"' बाद में एक तीसरी शर्त की भी बात हुई - कि शशि कपूर को फिल्म से 5 प्रतिशत का बैक-एंड शेयर मिलेगा।
शशि ने रमेश की फिल्म क्यों स्वीकार की? न्यूयॉर्क टाइम्स के लॉरेंस वैन गेल्डर के साथ एक साक्षात्कार में, शशि ने अपने निर्णय के पीछे के तर्क का संकेत दिया: 'मैंने बहुत कम राजनीतिक रूप से प्रेरित फिल्में की हैं,' उन्होंने कहा, साथ ही 'न्यू दिल्ली टाइम्स' को राजनीतिक परिदृश्य में वाटरगेट कांड जैसी फिल्म बताया।

खोजी पत्रकारिता।4
शशि के साथ जुड़ने के बाद, शर्मिला टैगोर को निशा की भूमिका निभाने के लिए चुना गया, जो एक सफल वकील और नायक की पत्नी है। यह भी तय किया गया कि फिल्म की शूटिंग जुलाई और अगस्त 1984 में दिल्ली में होगी। लेकिन यह योजना कई बार पटरी से उतर गई। शुरुआत में, शशि खुद को एक भयानक व्यक्तिगत संकट के बीच फंसा हुआ पाया। एक दिन रमेश को स्टार का एक परेशान करने वाला फोन आया। उन्होंने बताया कि जेनिफर लंदन में कैंसर से जूझ रही हैं और उनकी तबीयत खराब है; वह उनका साथ नहीं छोड़ सकते। रमेश याद करते हैं, 'वह बार-बार विनती कर रहे थे कि वह फिल्म नहीं कर सकते, लेकिन मैंने उनसे कहा कि मैं उनका इंतजार करूंगा।' जेनिफर का निधन सितंबर 1984 की शुरुआत में हुआ।
इसके कुछ ही समय बाद एक राष्ट्रीय आपदा आ पड़ी। इंदिरा गांधी की हत्या कर दी गई और राजधानी सिख विरोधी दंगों की चपेट में आ गई। रमेश कहते हैं, 'दिल्ली में पूरी तरह से अफरा-तफरी मची हुई थी और हमें फिल्म की शूटिंग एक बार फिर स्थगित करनी पड़ी। लेकिन कम से कम इससे शशि को थोड़ा आराम करने का समय मिल गया। जैसा कि हमें बाद में पता चला, वह पूरी तरह से ठीक नहीं हो पाए—लेकिन फिर भी, वह लोगों से मिलने की स्थिति में थे।'
आखिरकार, जनवरी 1985 में शूटिंग शुरू हुई और लोकेशन दिल्ली से बदलकर बॉम्बे की फिल्म सिटी कर दी गई। अब पीछे मुड़कर देखने पर रमेश को लगता है कि इंतज़ार करने का उनका फैसला समझदारी भरा था, खासकर इसलिए क्योंकि इससे उन्हें शशि के साथ काम करने का मौका मिला। रमेश कहते हैं, 'वह पूरी तरह से पेशेवर थे। वह हमेशा समय पर आते थे। उनके डायलॉग तैयार रहते थे। और ज़्यादातर वह एक ही टेक में सीन खत्म कर देते थे—बहुत सहज थे। मुझे उस आदमी के साथ

कोई दिक्कत नहीं थी!' फिल्म में शशि को मूंछें देने का फैसला रमेश का ही था। 'वह एक आकर्षक व्यक्ति थे और मैं नहीं चाहता था कि उनकी शक्ल-सूरत दर्शकों का ध्यान उनके किरदार से भटकाए। साथ ही, मुझे लगा कि मूंछें उन्हें बौद्धिक गंभीरता प्रदान करेंगी।'
नई दिल्ली टाइम्स एक दमदार राजनीतिक थ्रिलर साबित हुई, जिसमें किरदारों को बारीकी से गढ़ा गया था और एक ऐसी अनोखी कहानी थी जो पत्रकारिता की निष्पक्षता और मीडिया भ्रष्टाचार जैसे संवेदनशील विषयों पर प्रकाश डालती थी। लेकिन फिल्म को तमाम मुश्किलों का सामना करना पड़ा। एक व्यक्ति ने फिल्म के खिलाफ मुकदमा दायर किया, जिसे एक संवाद से आपत्ति थी जिसमें विकास/शशि, निशा/शर्मिला से कहता है कि सभी वकील झूठे होते हैं; किसी और ने फिल्म पर प्रतिबंध लगाने की कोशिश की क्योंकि इसमें एक राजनेता को सांप्रदायिक दंगे भड़काते हुए दिखाया गया था। जब नई दिल्ली टाइम्स को दूरदर्शन पर दिखाया जाना था, तो कानूनी विवादों के कारण इसे आखिरी समय में हटा दिया गया। हालात और भी बदतर हो गए जब फिल्म की बड़े पैमाने पर पायरेसी हुई; पहले हफ्ते के बाद बड़े सिंगल-स्क्रीन सिनेमाघरों को भरना मुश्किल हो गया। रमेश अफसोस जताते हुए कहते हैं, 'अगर उस समय हमारे पास आज की तरह मल्टीप्लेक्स होते, तो नई दिल्ली टाइम्स और भी लंबे समय तक चलती।'

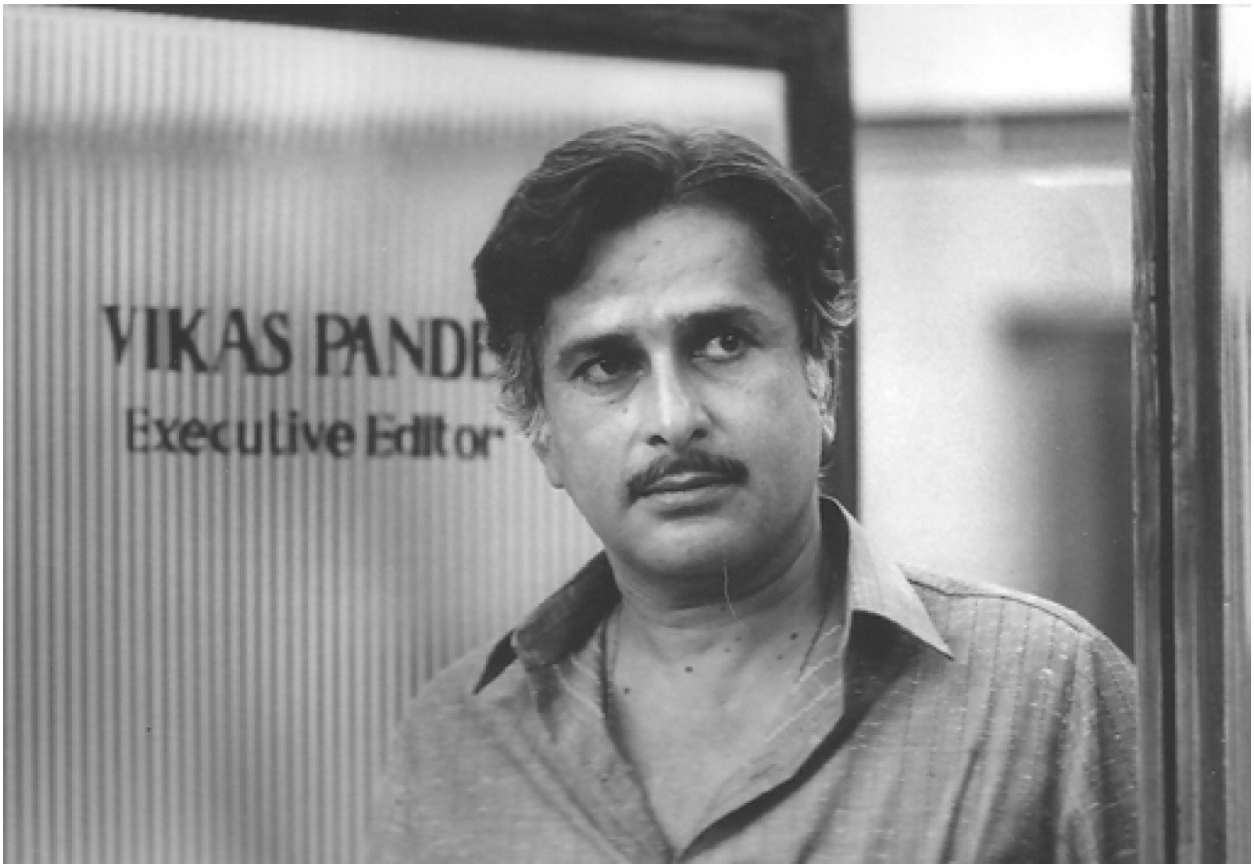

1986, नई दिल्ली टाइम्स। शशि कपूर ने एक ईमानदार पत्रकार विकास पांडे की भूमिका निभाई है।
सौजन्य: रमेश शर्मा।

1986, नई दिल्ली टाइम्स। शशि कपूर, व्यस्त पत्रकार विकास पांडे के रूप में, एक सहकर्मी से बात कर रहे हैं।
सौजन्य: रमेश शर्मा।

1986, नई दिल्ली टाइम्स। 'यह फिल्म खोजी पत्रकारिता पर आधारित वाटरगेट कांड जैसी फिल्म है': शशि कपूर। सौजन्य: रमेश शर्मा।

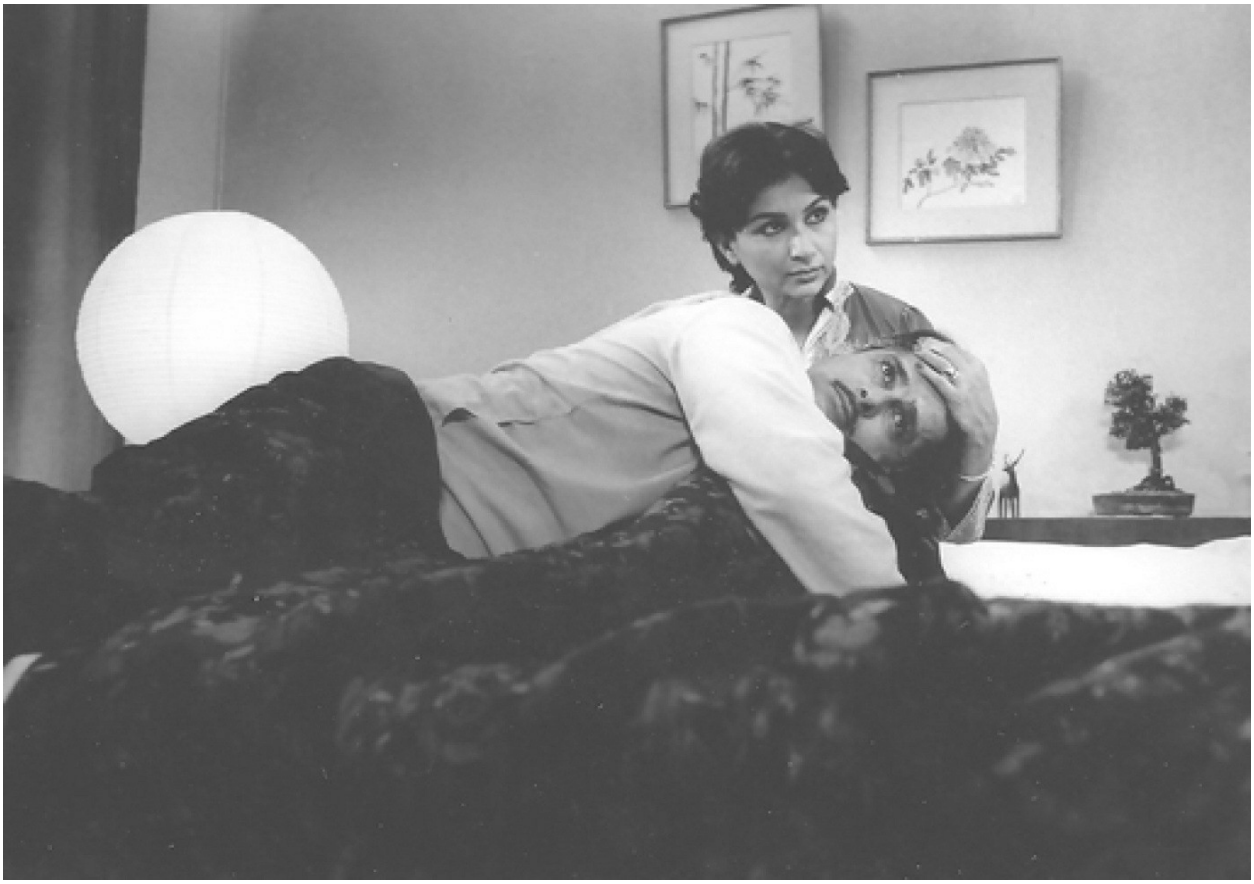

1986, नई दिल्ली टाइम्स। इस दृश्य में, शर्मिला टैगोर, जो एक पत्रकार की वकील पत्नी की भूमिका निभा रही हैं, अपने पति (जिसका किरदार शशि कपूर ने निभाया है) को सांत्वना देती हैं, क्योंकि जांच लगातार तनावपूर्ण होती जा रही है। सौजन्य: रमेश शर्मा।

दो बार प्रोजेक्ट टलने के कारण न्यू दिल्ली टाइम्स का बजट पहले ही बढ़ चुका था—शुरू में 25 लाख रुपये के बजाय, आखिरकार इसकी लागत 35 लाख रुपये हो गई। अब, मुकदमों और पायरेसी की चिंताओं से घिरी इस फिल्म का अस्तित्व खतरे में था। रमेश, जो शशि के संपर्क में थे, याद करते हैं कि अभिनेता कभी-कभी उनसे पूछते थे: 'कुछ आ

रहा है 5 परसेंट?' (क्या मुझे 5 परसेंट मिल रहा है?) अफसोस, बांटने के लिए पैसे नहीं थे।
पिछले कुछ वर्षों में, न्यू दिल्ली टाइम्स को काफी हद तक सकारात्मक समीक्षाएँ मिली हैं; आलोचक खालिद मोहम्मद कहते हैं: 'बहुत कम फिल्में ऐसी हैं जिन्होंने मीडिया के बारे में बात करते हुए सच्चाई का कुछ अंश प्रस्तुत किया है। उनमें से एक रमेश शर्मा की न्यू दिल्ली टाइम्स है, जो मीडिया और मीडिया के बीच के गठजोड़ की पड़ताल करती है।
राजनीतिज्ञों और मीडिया दिग्गजों पर किया गया यह अब तक का सबसे तीक्ष्ण प्रहार रहा है।
1986 में, न्यू दिल्ली टाइम्स को निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ पहली फिल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार मिला, और शशि के अभिनय की व्यापक रूप से सराहना हुई, जिसके लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला—यह सम्मान उन्हें केवल एक बार ही मिला। लेकिन शशि के लिए यह बहुत कम और बहुत देर से आया था। उन्होंने पत्रकार ज्योति वेंकटेश से कहा:

काश, ये पुरस्कार मेरी पत्नी जेनिफर को उनकी जीवित रहते ही मेरी फिल्म '36 चौरंगी लेन' में उनके अभिनय के लिए मिल जाता। सच कहूँ तो, इस समय मेरे लिए इन पुरस्कारों का कोई महत्व नहीं है, क्योंकि मैं अब जीवित नहीं हूँ।
उसे मेरे साथ साझा करने के लिए कहें।

सैमी एंड रोजी गेट लेड (1987) और द डिसीवर्स (1988)

1980 के दशक के मध्य में, ब्रिटिश फिल्म निर्माता स्टीफन फ्रीर्स—जो आज हाई के लिए जाने जाते हैं—ने एक फिल्म बनाई। फिडेलिटी 7 8 9, डर्टी प्रीटी थिंग्स और द क्वीन—ने खुद को इस्माइल मर्चेंट के कहने पर भारत जाने वाली उड़ान पर पाया। स्टीफन और इस्माइल दोनों ही नई शुरुआत के मुहाने पर थे। स्टीफन ने अभी-अभी
स्टीफन ने हनीफ कुरैशी द्वारा लिखित धमाकेदार ब्रिटिश-एशियाई फिल्म '10 माई ब्यूटीफुल लॉन्ड्रेट' का निर्देशन किया, जो लंदन में पाकिस्तानी समुदाय के कई पहलुओं (और विशेष रूप से उसके गुप्त पक्षों) को उजागर करती है, साथ ही एक युवा पाकिस्तानी लड़के और उसके श्वेत सहपाठी (जिसे युवा डैनियल डे-लुईस ने आकर्षक ढंग से निभाया है) के बीच समलैंगिक प्रेम कहानी को भी दर्शाती है। फिल्म की सफलता के साथ (हनीफ की पटकथा को ऑस्कर के लिए नामांकित किया गया था), स्टीफन फिल्म समारोहों और कला-गृह जगत में काफी लोकप्रिय हो गए।
इस बीच, इस्माइल ने जॉन मास्टर्स का उपन्यास, 11 द डिसीवर्स पढ़ लिया था।
एक किताब में ब्रिटिश भारत में 'ठग्गी' पंथ आंदोलन का विस्तृत वर्णन विलियम सैवेज की कहानी के माध्यम से किया गया है, जो ईस्ट इंडिया कंपनी का एक अधिकारी है और इन हिंसक गिरोहों में घुसपैठ करता है, जहाँ उसे स्वयं इस पंथ की अत्यधिक रक्तपात की प्रवृत्ति का अनुभव होता है—और वह इस पर एक फिल्म बनाना चाहता था। हालाँकि, न तो जेम्स आइवरी और न ही रूथ प्रॉवर झबवाला इस विचार से उत्साहित थे, और इस्माइल को अपने दायरे से बाहर देखना पड़ा। स्टीफन की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए, उन्होंने न केवल इस युवा निर्देशक को, बल्कि एक बिल्कुल नए पटकथा लेखक,

नाटककार चार्ल्स वुड को भी चुना। (परियोजना की मुख्य टीम में समय के साथ बदलाव होते रहे, और अंततः, माइकल हिर्स्ट, जो अपनी लेखन शैली के लिए सबसे प्रसिद्ध हैं, को शामिल किया गया।)
12 एलिजाबेथ की पटकथा के लिए पटकथा लेखक वही होंगे।
इस तरह स्टीफन हलचल भरे भारत पहुंचे। भारत पहुंचते ही इस्माइल ने सबसे पहले उन्हें दक्षिण मुंबई स्थित शशि कपूर के अपार्टमेंट में उनसे मिलवाया। 'मैं शशि कपूर से परिचित था क्योंकि मैं उनसे पहले मिल चुका था।'
मैंने 'शेक्सपियर वाला' की 13 फिल्में देखी हैं,’ स्टीफन कहते हैं। ‘इसलिए, मुझे पता था कि वह बहुत प्रतिभाशाली हैं। लेकिन उनसे मिलने पर ही मुझे एहसास हुआ कि वह एक बहुत ही परिष्कृत व्यक्ति भी हैं।’
अंततः स्टीफन ने फिल्म को आगे न बढ़ाने का फैसला किया। निर्देशक के इस फैसले के बारे में जानकर जेम्स कहते हैं, 'हम बहुत निराश हुए।' इस्माइल अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि स्टीफन फिल्म के निर्माण के तरीके से खुश नहीं थे।
फिल्म 'द डिसीवर्स' की स्क्रिप्ट 14 में लिखी गई थी। लेकिन एक पर्यवेक्षक, जिसने लोकेशन की तलाश के दौरान स्टीफन और इस्माइल के साथ ट्रेन में सफर किया था, का मानना है कि भारत ब्रिटिश निर्देशक से सहमत नहीं था। कारण चाहे जो भी हो,
डिसीवर्स 15 का निर्देशन अंततः निकोलस मेयर ने किया था—जो मुख्य रूप से इसके लिए जाने जाते हैं।
स्टार ट्रेक II: द रैथ ऑफ खान 16 में शशि ने एक सहायक भूमिका निभाई थी, जिसमें उन्होंने एक भारतीय जमींदार का किरदार निभाया था जो नायक विलियम सैवेज (पियर्स ब्रॉसनन) से दोस्ती करता है।

फिल्म को मिली-जुली समीक्षाएं मिलीं, कुछ का दावा था कि इसमें 'कास्टिंग' की गई है।
काफी लंबा समय’,17 और अन्य लोग यह दावा करते हैं कि यह ‘एक साहसिक महाकाव्य है जिसमें एक
रोमांच की भावना काफी कमज़ोर है।
इस फिल्म ने शशि को एक और प्रशंसक दिला दिया; पियर्स ब्रॉसनन ने शशि की अंग्रेजी की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह 'हॉलीवुड के किसी भी प्रमुख अभिनेता जितनी अच्छी' थी, और उनके 'सहज' अभिनय की भी तारीफ की। फिर उन्होंने आगे कहा: 'एक दृश्य में, [शशि] ने बस मेरी तरफ देखा और मुस्कुरा दिया, मानो...'
हजार शब्द, जो केवल एक उच्च कोटि का अभिनेता ही कर सकता है।19

जब 'द डिसीवर्स' बन रही थी, उसी दौरान स्टीफन फ्रीर्स और शशि कपूर की मुलाकात एक बार फिर हुई; इस बार दोनों ने सचमुच साथ काम किया। नतीजा यह हुआ कि हनीफ कुरैशी की पटकथा पर आधारित दूसरी फिल्म 'सैमी' बनी।
और रोजी ने संबंध बनाए।
सैमी एंड रोज़ी गेट लेड एक अपरंपरागत, बोहेमियन जोड़े के इर्द-गिर्द घूमती है, जिनका जीवन अस्त-व्यस्त होने के बावजूद बेहद स्वतंत्र है। फिर सैमी के पिता रफी रहमान अपने बेटे, बहू और एक लंबे समय से बिछड़ी प्रेमिका के साथ अपने रिश्ते को फिर से जोड़ने के लिए इंग्लैंड लौट आते हैं। रिश्ते सुधारने की कोशिश के बावजूद, हमें पता चलता है कि रफी पाकिस्तान में एक राजनेता के रूप में अपने भ्रष्ट और क्रूर अतीत से भाग रहे हैं।

फिल्म में सैमी, रोजी और रफी की अहम भूमिकाएँ हैं, लेकिन लंदन शहर भी उतना ही महत्वपूर्ण किरदार है। हनीफ द्वारा परिकल्पित ब्रिटिश राजधानी का चित्रण उस दौर के अखबारों से लिया गया था। कलाकार, कार्यकर्ता, हिप्पी और स्वतंत्र विचारक जमकर मौज-मस्ती कर रहे थे, वहीं मार्गरेट थैचर के शासनकाल के चरम पर नस्लीय दंगे और वर्ग संघर्ष शहर को अपनी चपेट में ले रहे थे। फिल्म शहरी पतन के दृश्यों को बखूबी दर्शाती है—रफी ने जिन गलियों को रोमांटिक अंदाज में चित्रित किया था, उन पर अब गिरोहों का राज चलता है, और टैक्सी चालक खून से सने हेडबैंड पहने नज़र आते हैं। कई मायनों में, यह फिल्म ब्रिटिश प्रधानमंत्री को एक तीखा संदेश है, और हनीफ के निर्देशन में बनी 'सैमी एंड रोजी गेट लेड' अराजक ऊर्जा से ओतप्रोत है, उस दौर की यौन राजनीति से रंगी हुई है, और वर्ग और आप्रवासन से जुड़े सवालों से भरी हुई है।
एक ढहते शहर में रफी का आगमन हनीफ के अपने अनुभवों पर आधारित है। हनीफ बताते हैं, 'कहानी के कुछ अंश मेरे एक चाचा के अनुभवों पर आधारित हैं, जो तीस साल के अंतराल के बाद लंदन आए थे - उस समय ब्रिक्सटन और सेंट पॉल्स में थैचर विरोधी दंगे और विद्रोह चल रहे थे। लंदन आग की लपटों में घिरा था। मेरे चाचा की अंग्रेजों, बीबीसी और इस देश की सभ्यता के बारे में बहुत अच्छी राय थी। लेकिन अब, उन्हें यह जगह एक युद्धक्षेत्र जैसी लगी, जहाँ पुलिस और अश्वेत बच्चों के बीच झड़पें हो रही थीं।'

1987, सैमी और रोजी का शारीरिक संबंध। शशि कपूर रफी के किरदार में और क्लेयर ब्लूम एलिस की भूमिका में। रफी
वह उसके साथ अपने रोमांस को फिर से जगाने के लिए लंदन की यात्रा करता है।

अपने चाचा के अलावा, हनीफ यह भी मानते हैं कि रफी का किरदार जुल्फिकार अली भुट्टो पर भी आधारित हो सकता था। वे कहते हैं, 'मैं भुट्टो से नहीं मिला, इसलिए मैं उन्हें नहीं जानता। लेकिन वे मेरे परिवार से परिचित थे—मेरे पिता के बहुत पुराने दोस्त,

जिनके साथ उन्होंने स्कूल में पढ़ाई की थी।' वे आगे कहते हैं, 'मेरे ज्यादातर पुराने भारतीय या पाकिस्तानी किरदारों की तरह, रफी किसी एक व्यक्ति पर आधारित नहीं था, बल्कि मेरे कई चाचाओं और एक राजनेता के जीवन के संभावित अनुभवों का मिश्रण था।'
रफी की जटिल भूमिका निभाने के लिए, हनीफ कहते हैं कि उन्हें 'एक बेहद सभ्य, सहज और बुद्धिमान अभिनेता' की आवश्यकता थी, जो एक ऐसे पाकिस्तानी राजनेता का किरदार निभा सके जो संघर्ष के एक उन्मादी रंगमंच में प्रवेश करे और 'राजनीति, कामुकता और हद से ज़्यादा बेहूदगी से चकित हो जाए'। हनीफ के लिए, शशि आदर्श उम्मीदवार थे।
दिलचस्प बात यह है कि स्टीफन भी इसी निष्कर्ष पर पहुंचे। निर्देशक कहते हैं, 'उस समय, ऐसे बहुत कम भारतीय अभिनेता थे जो अंग्रेजी बोलते थे और इंग्लैंड में काम करने का अनुभव रखते थे। विकल्प वाकई बहुत सीमित थे। फिर अचानक एक ऐसे महान भारतीय अभिनेता का मिलना जो परिष्कृत भी थे—यह मेरे लिए सचमुच एक सौभाग्य की बात थी। जब मैंने हनीफ की पटकथा पढ़ी, तो मुझे पता चल गया कि यह शशि के लिए ही बनी भूमिका है।'
फिर भी, जब उन्होंने मिलकर इस कास्टिंग का फैसला किया, तो हनीफ और स्टीफन को काफी डर था कि शशि यह भूमिका स्वीकार नहीं करेंगे; आखिरकार, वह एक स्टार थे और उनका करिश्माई व्यक्तित्व लोगों को डरा देता था। हनीफ ने फिल्म की शूटिंग के दौरान रखी अपनी डायरी में लिखा है कि दोनों की मुलाकात भारतीय अभिनेता शशि शशि से 9 अगस्त 1986 को नॉटिंग हिल के '192' रेस्टोरेंट में लंच के लिए हुई, जो उस समय मशहूर हस्तियों के लिए सबसे आकर्षक जगहों में से एक था। हनीफ के अनुसार, शशि ने एक ढीला भूरा गाउन पहना था, जिसके कंधे पर गहरे लाल और चॉकलेट रंग का स्कार्फ लिपटा हुआ था। […]

वह इतने शाही और गरिमामय, स्टाइलिश और अनोखे थे कि उन्हें देखकर सिहरन सी दौड़ गई।
रेस्टोरेंट से होकर गुजरता है।
दोनों की आशंकाओं के बावजूद, शशि—जिन्हें हनीफ 'विनम्र' बताते हैं—ने लेखक और निर्देशक से कहा कि उन्हें लगता है कि सैमी एंड रोजी गेट लेड की पटकथा माई ब्यूटीफुल लॉन्ड्रेट की पटकथा से बेहतर है; फिर उन्होंने कहा कि फिल्म निर्माताओं की सुविधानुसार वह रफी की भूमिका निभाने के लिए उपलब्ध रहेंगे। हालांकि हनीफ और स्टीफन की शशि को कास्ट करने की उत्सुकता समझ में आती है, लेकिन एक सवाल उठता है: अभिनेता ने उस टीम के साथ फिल्म करने के लिए क्यों हामी भरी - खासकर तब जब, तब तक, कम से कम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, उन्होंने केवल मर्चेंट-आइवरी टीम में ही रुचि दिखाई थी (कभी-कभार ही सही)।
सिद्धार्थ 22 23 और प्रीटी पॉली)? हनीफ अनुमान लगाता है: 'शायद शशि ने सोचा होगा, ये बच्चे - जैसे हम तब थे - कुछ रोमांचक करने जा रहे हैं! तो क्यों न मैं भी उनके साथ जुड़ जाऊं, कोशिश करूं और देखूं कि वे क्या कर रहे हैं?'
इसके बाद हनीफ, जेनिफर केंडल कपूर के प्रभाव और शशि की प्रयोग करने की इच्छा को स्वीकार करते हैं, भले ही वह किसी छोटी ब्रिटिश इंडी फिल्म में ही क्यों न हो। वे कहते हैं, 'अगर यह फिल्म नहीं होती, तो शशि हिंदी सिनेमा में बार-बार वही किरदार निभाते रहते। और वे ऐसा नहीं कर सकते थे। वे बेहद बुद्धिमान व्यक्ति थे। मैं कई फिल्मी सितारों से मिला हूँ और उनमें से अधिकतर बहुत नीरस होते हैं। वहीं दूसरी ओर, शशि पढ़े-लिखे थे; उन्हें क्रिकेट और हर तरह की चीजों का ज्ञान था। उनमें हॉलीवुड/बॉलीवुड जैसी खोखली सोच नहीं थी। वे एक फिल्मी सितारे

थे, लेकिन वे खुद को या तो फिल्मी सितारे की तरह दिखाना या बोलना नहीं चाहते थे।'
तो ये थे अयूब खान-दीन (जो बाद में लेखक के रूप में अपनी ख्याति अर्जित करेंगे)
नाटक और फिल्म (24 ईस्ट इज़ ईस्ट) में सैमी की भूमिका निभाने वाले अभिनेता हनीफ को चुना गया; फ्रांसिस बार्बर ने रोज़ी का किरदार निभाया; और मूंछों वाले, बेहद सुरुचिपूर्ण (हालांकि अब मोटे हो चुके) अड़तालीस वर्षीय शशि ने बुजुर्ग पाकिस्तानी सज्जन रफी की भूमिका निभाई। रफी को मूंछें लगाने का फैसला शशि का ही था, और हनीफ ने इसे पूरी तरह से मंजूरी दी। वे अपनी डायरी में लिखते हैं, 'इससे वो बूढ़े, कम आकर्षक, और कम लोकप्रिय लगते हैं। लेकिन [इससे वो] दुर्जेय, प्रभावशाली और कुछ हद तक... ब्रिटिशों ने सही सैन्य सत्तावादी तरीके से ऐसा किया।25 हालांकि हनीफ (और स्टीफन भी) उस मूंछ की बहुत तारीफ करते थे, लेकिन अभिनेता के वजन को लेकर उनकी चिंता बढ़ती जा रही थी। शशि ने रोल के लिए वजन कम करने पर सहमति जताई; स्टीफन और हनीफ तो अभिनेता को 'हेल्थ फार्म' भेजने की भी सोच रहे थे, ताकि वह 'फिट और स्लिम' दिख सकें। लेकिन जाहिर तौर पर यह योजना नाकाम हो गई क्योंकि शशि शूटिंग के लिए मुश्किल से ही समय पर पहुंच पाए। हनीफ कहते हैं, 'मुझे याद है मैंने उनसे इस बारे में बात की थी। शशि ने मुझसे पूछा, "हनीफ, मैं पतला कैसे हो सकता हूं?" मैंने कहा, "तुम्हें कम खाना होगा और ज्यादा व्यायाम करना होगा।" तब शशि ने जवाब दिया, "मैं कुछ भी करने को तैयार हूं, बस कम खाना और ज्यादा व्यायाम करना मुझे पसंद नहीं है।"' और बात यहीं खत्म हो गई।

आगे जो होने वाला था, उसके मुकाबले शशि का वजन एक मामूली सी चिंता साबित हुआ। शूटिंग के पहले दिन, जब हनीफ शशि को उनके होटल से लेने गए, तो अभिनेता फिल्म की कहानी को लेकर अनिश्चित लग रहे थे, हालांकि उन्होंने स्क्रिप्ट पहले ही पढ़ ली थी। जैसा कि अक्सर मुख्यधारा के भारतीय फिल्म सितारे करते हैं, शशि ने कहानी को याद दिलाने के लिए कहा। इसी सवाल ने हनीफ के मन में खतरे की घंटी बजा दी। पटकथा लेखक को संदेह होने लगा कि क्या उन्होंने और स्टीफन ने सही कास्टिंग का चुनाव किया है। ये संदेह तब और बढ़ गए जब शशि ने स्टीफन से पूछा कि क्या वह शूटिंग के पहले दिन जल्दी जा सकते हैं क्योंकि उन्हें एक कॉकटेल पार्टी का निमंत्रण था। फ्रीअर्स ने कहा, अगर सितारे ऐसे ही व्यवहार करते हैं, तो शायद आगे चलकर मुश्किल हो सकती है।
‘उससे निपटो,’ हनीफ ने डायरी में लिखा है, और खुद भी थोड़ा चिंतित लग रहा है।26
‘लेकिन वह गंभीर और उत्सुक है,’27 वह बाद में कहते हैं, मानो खुद को आश्वस्त करने की बेताब कोशिश कर रहे हों।
सौभाग्य से, शशि को काम करते देख लेखक और निर्देशक की शुरुआती आशंकाएँ उनकी प्रशंसा में तब्दील हो गईं। हनीफ़ कहते हैं, 'उन्होंने पूरे उत्साह से काम किया। उन्होंने कभी यह नहीं सोचा कि हम जैसे सीधे-सादे लोगों के साथ काम करने के लिए वे बहुत अच्छे हैं। सचमुच, हर कोई उन्हें पसंद करता था और उनकी प्रशंसा करता था। वे सबके पास जाते, हाथ मिलाते, क्रू को 'गुड मॉर्निंग' कहते - एक सच्चे सज्जन। उनमें ज़रा भी घमंड नहीं था।' शूटिंग के दौरान जब लंदन की दक्षिण एशियाई आबादी ने उन्हें पहचाना, तो शशि ने वैसा ही सौहार्द दिखाया - वे अपने प्रशंसकों का अभिवादन करते, भले ही वे उनके लिए खाना लाते और तस्वीरें लेते।

शशि ने यह भी साबित कर दिया कि वह एक ऐसे अभिनेता हैं जो शूटिंग कितनी भी चुनौतीपूर्ण क्यों न हो, उसे सहजता से स्वीकार कर लेते हैं। सैमी एंड रोजी गेट लेड के अंतिम दृश्यों में से एक में रियल एस्टेट डेवलपर्स का एक समूह अतिक्रमणकारियों द्वारा कब्जा किए गए क्षेत्र को खाली कराता हुआ दिखाया गया है। इन अवैध निवासियों में रफी भी शामिल है, जो एक ट्रेलर घर में रात बिताता है, और फिर उसे बुलडोजर से गिराया जा रहा होता है। फिल्म में, रफी को बिस्तर पर उछलते हुए दिखाया गया है, जबकि किताबें उसके सिर पर गिर रही होती हैं। स्पष्ट रूप से, हिंदी फिल्म उद्योग में कुछ सुख-सुविधाओं के आदी अभिनेता के लिए यह एक चुनौतीपूर्ण दृश्य रहा होगा। हनीफ भी इस बात से सहमत प्रतीत होते हैं, जैसा कि वह मजाक में लिखते हैं:

जब शशि घबराया हुआ, परेशान, चक्कर खा रहा और तंग आकर बाहर आता है, तो वह बॉम्बे वापस जाने की धमकी देता है। अगली सुबह हम उससे मजाक में कहते हैं कि हमें कारवां के पीछे वाले हिस्से में उसके दृश्य को दोबारा शूट करना होगा।
और उसका चेहरा सफेद पड़ जाता है।28

सैमी और रोज़ी गेट लेड में यह कई दुर्लभ पलों में से एक है, और स्टीफन का निर्देशन और हनीफ़ का लेखन—जो स्टीफन के शब्दों में, हमेशा 'एशियाई लोगों के प्रति अंग्रेज़ों के रवैये पर व्यंग्यात्मक' होता है—एक दूसरे के पूरक हैं। एक मज़ेदार दृश्य में, सैमी और रोज़ी के घर पर एक पार्टी के दौरान, एक मेहमान, अन्ना (वेंडी गज़ेल), रफ़ी से पूछती है, 'क्या आप मंत्रोच्चार करते हैं?'

यह दृश्य मुझे फिल्म '29 द हाउसहोल्डर' की याद दिलाता है, जिसमें एक अमेरिकी महिला शशि के किरदार प्रेम सागर से पूछती है कि वह किस तरह का योग करते हैं। प्रेम, जो इस सवाल से बेहद उलझन में दिखते हैं, वहीं शशि के किरदार रफी, जो उनसे बीस साल से भी ज्यादा बड़े हैं, बड़े आत्मविश्वास से जवाब देते हैं: 'किसका जाप, मेरी प्यारी?'
‘खुद को शांत रखने के मंत्र,’ अन्ना कहती हैं। इस पर रफी जवाब देते हैं: ‘मैं शांत हूँ। तुम युवा, अंतरराष्ट्रीय लोग मुझे हैरान कर देते हो। तुम्हारे लिए दुनिया और संस्कृति एक डिपार्टमेंटल स्टोर की तरह है। तुम आते हो और हर मंजिल से अपनी पसंद की चीज़ ले लेते हो। तुम्हें किसी चीज़ से लगाव नहीं है। तुम्हारे लिए जीवन बेतरतीब और खोखला है।’ यह एक शानदार दृश्य है जिसे पूरी तरह से समझने के लिए देखना ज़रूरी है—क्योंकि शशि अपने बेहतरीन अंदाज़ में हैं, चेहरे पर शरारती मुस्कान लिए, और अन्ना की पूर्वी दर्शन की घिसी-पिटी समझ को गलत साबित कर रहे हैं।
फिल्म के मध्य में एक और दिलचस्प दृश्य सामने आता है, जब स्टीफन स्क्रीन को तीन क्षैतिज खंडों में विभाजित करके छह पात्रों को प्रेम प्रसंग में लिप्त दिखाते हैं—एक मोटा लेकिन आकर्षक रफी अपनी दशकों पुरानी प्रेमिका एलिस (क्लेयर ब्लूम) के साथ बिस्तर पर; रफी की बहू रोजी डैनी (सुंदर रोनाल्ड गिफ्ट, जो संगीत समूह फाइन यंग कैनिबल्स के मुख्य गायक भी हैं) के साथ यौन संबंध बनाते हुए; और सैमी अन्ना के साथ रोमांस करते हुए—यह सब द गेटो लाइट्स के रेगे रीमिक्स की पृष्ठभूमि में घटित होता है।
ओटिस रेडिंग के क्लासिक गीत, 'माई गर्ल' के संदर्भ में।30 हनीफ लिखते हैं: 'यह निर्लज्जतापूर्वक कामुक है, उत्तेजना पैदा करने

वाला है, जो हमारे युग की संकीर्ण एकविवाही भावना के बिल्कुल विपरीत है। इस फिल्म में किसी भी अन्य फिल्म की तुलना में अधिक कामुकता का प्रदर्शन होगा।
अब तक का सबसे बेहतरीन।
जब मैंने बोस्टन में दोस्तों के एक समूह के साथ 'सैमी एंड रोजी गेट लेड' देखी, तो उनमें से कुछ को फिल्म की यौन राजनीति से आपत्ति हुई। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि उनकी असहजता देखकर मुझे खुशी हुई। यह फिल्म मेरे लिए एक और कारण से खास थी: 'सैमी एंड रोजी गेट लेड' में ही मैंने पहली बार नुसरत फतेह अली खान की कव्वालियां सुनी थीं।

1987, सैमी और रोजी का शारीरिक संबंध। शशि कपूर के किरदार रफी को एक पार्टी में हैरान और असमंजस में देखा जा सकता है।
उनके बगल में, डैनी का किरदार निभाने वाले रोलैंड गिफ्ट, रफी की बहू रोजी (फ्रांसिस) को चूम रहे हैं। नाई)।

सैमी एंड रोजी गेट लेड अक्टूबर 1987 के अंत में अमेरिका में रिलीज़ हुई, और आलोचकों की प्रतिक्रियाएँ कुछ खास अच्छी नहीं रहीं। द न्यूयॉर्क टाइम्स के विन्सेंट कैनबी कहते हैं: 'श्री कुरैशी की पटकथा में इतनी सारी चीज़ें घटित हो रही हैं कि किसी

एक व्यक्ति या चीज़ का संतोषजनक ढंग से अन्वेषण करना संभव नहीं है [...] जैसे-जैसे प्रत्येक पात्र अभिभूत होता जाता है...'
कुछ हद तक विरोधाभासी आवेगों से प्रेरित होकर, फिल्म भी कुछ इसी तरह है।’32 द न्यू यॉर्कर की पॉलीन केल भी उतनी ही कठोर हैं। वह लिखती हैं, ‘इस फिल्म को आगे बढ़ाने वाली कोई भावनात्मक शक्ति नहीं है। फिल्म की चतुराई में भी ज्यादा हास्य नहीं है।’ लेकिन फिर वह आगे कहती हैं: ‘यह कपूर के अभिनय में मौजूद है […] शशि कपूर एक ऐसे व्यक्ति के रूप में अद्भुत हैं जो जो कुछ भी होता है (या
एक सीमा तक अनुकूलन करता है)।
यह प्रशंसा बिल्कुल जायज़ है, क्योंकि शशि ने इस भूमिका में अपना पूरा दम लगा दिया था। न्यूयॉर्क टाइम्स के लॉरेंस वैन गेल्डर द्वारा लिए गए साक्षात्कार में शशि ने कहा कि हालांकि आम धारणा यह है कि अभिनय के साथ नौ तरह की कलाएं आती हैं, लेकिन ‘रस’ या भावनाएँ,34 रफ़ी के किरदार के लिए अठारह की आवश्यकता थी। ‘मुझे अच्छा होना था, मुझे बुरा होना था, मुझे दुष्ट होना था, मुझे मज़ेदार होना था, कभी-कभी हास्यपूर्ण भी, और फिर भी मुझे भावुक होना था—एक बहुत ही स्नेही पिता, एक स्नेही प्रेमी और फिर भी एक धूर्त, धोखेबाज, स्वार्थी और एक बहुत ही फासीवादी राजनीतिज्ञ जिसने अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शायद भयानक काम किए थे। उनका किरदार याद दिलाता है
मुझे लियर की भूमिका बहुत पसंद आई […] मैं उस किरदार से बहुत प्रभावित हुआ था।’35
लॉरेंस आगे सुझाव देते हैं कि शशि 'की भारतीय समकक्ष' हैं।

रॉबर्ट रेडफोर्ड या स्टीव मैकक्वीन’।36 लेकिन सच्चाई यह भी है कि अपने करियर के इस चरण में, शशि पूरी तरह से अपनी ही एक अलग लीग में थे।

हिरासत में (1993)

37 ए रूम विद ए व्यू जैसी साहित्यिक रूपांतरणों की अपार सफलता के बाद,
हावर्ड्स एंड 38 39 और द रिमेन्स ऑफ द डे—जिन्होंने हॉलीवुड में बॉक्स ऑफिस विश्वसनीयता के अलावा मर्चेंट-आइवरी टीम को कुल मिलाकर छह ऑस्कर दिलाए—के बाद इस्माइल मर्चेंट ने अपनी भारतीय जड़ों की ओर लौटने का विकल्प चुना। इस बार,
उन्होंने फैसला किया कि वे खुद एक फिल्म का निर्देशन करेंगे— 40 इन कस्टडी—जो उनकी पहली फीचर फिल्म होगी, और यह लेखिका अनीता देसाई के इसी नाम के उपन्यास पर आधारित होगी।
1984 में मैन बुकर पुरस्कार के लिए चयनित इस पुस्तक में, अनीता एक बूढ़े उर्दू कवि नूर की मार्मिक कहानी बयां करती हैं, जो शराब के नशे में डूबे अपने अंतिम दिन बिता रहे हैं। उनके चारों ओर उनकी दो झगड़ालू पत्नियां हैं, जो एक जर्जर हवेली की अलग-अलग मंजिलों पर रहती हैं, और कुछ चापलूस और चमचे मुफ्त शराब और खाने की उम्मीद में उनके साथ हैं। उनका एकमात्र सहारा एक अभागे शिक्षक का संक्षिप्त और अचानक आगमन है, जिसे एक साहित्यिक प्रकाशन के लिए उनका साक्षात्कार लेने का काम सौंपा गया है। इस कहानी को कहते हुए, 'इन कस्टडी' एक भाषा के धीरे-धीरे लुप्त होने की पड़ताल करती है। जैसा कि अनीता अपने एक पात्र के माध्यम से लिखती हैं:

हिंदी जैसे शाकाहारी राक्षस के इस युग में उर्दू कैसे जीवित रहेगी? […] किसानों की वह भाषा… मूली और आलू खाकर पली-बढ़ी वह भाषा… फिर भी इन सब्जियों की तरह फल-फूल रही है, जबकि उर्दू— राजशाही के दिनों में दरबार की भाषा—अब शहर की तंग गलियों और गटरों में विरक्ति कर रही है। अब उसके लिए अपने पुराने अंदाज में जीने की कोई जगह नहीं, न ही कोई सम्राट या नवाब उसके संरक्षक बनने के लिए मौजूद हैं।
संरक्षक। 41
दूसरी जगह, अनीता (नूर के माध्यम से) यह दावा करती है:

जब उर्दू भाषा का अस्तित्व ही नहीं है, तो उर्दू कविता कैसे हो सकती है? यह मर चुकी है, समाप्त हो चुकी है। अंग्रेजों द्वारा मुगलों की पराजय ने इसके सिर पर फंदा डाल दिया, और हिंदी भाषी लोगों द्वारा अंग्रेजों की पराजय ने इसे और कस दिया। तो अब आप इसका शव यहाँ पड़ा हुआ देखते हैं, प्रतीक्षा कर रहा है कि इसे दफनाया जाए।
दफनाया गया.42

इस्माइल को ऐसी ही टिप्पणियों ने मोहित कर लिया था। 1999 में न्यूयॉर्क शहर की एशिया सोसाइटी में आयोजित एक कार्यक्रम में, निर्देशक ने दावा किया कि वे पुस्तक में उर्दू कविता और एक पतनशील संस्कृति के माहौल पर केंद्रित दृष्टिकोण से आकर्षित हुए थे। अपनी आत्मकथा में, इस्माइल ने आगे बताया है कि आधुनिक भारत में उर्दू के पतन की कहानी ने उन्हें क्यों आकर्षित किया। उन्होंने कहा, 'उर्दू मेरी भाषा और मेरी संस्कृति है।'

लिखते हैं, ‘मैंने इस फिल्म को अपनी विरासत को श्रद्धांजलि के रूप में देखा।’43
इन कस्टडी में कई जाने-माने कलाकार हैं। ओम पुरी ने कॉलेज शिक्षक देवेन की भूमिका निभाई है, जो उर्दू के प्रति अपने प्रेम से परेशान है, जिससे उसे आर्थिक सहायता नहीं मिलती, और साथ ही परिवार की आजीविका की ज़रूरतों को भी पूरा करने के लिए संघर्ष करता है। शबाना आज़मी और सुषमा सेठ नूर की पत्नियों की भूमिका निभाती हैं, जबकि नीना गुप्ता देवेन की असंतुष्ट पत्नी हैं।

1993, इन कस्टडी। अधिक वजन वाले शशि कपूर एक उदास कवि नूर की भूमिका निभा रहे हैं। इस दृश्य में, कॉलेज प्रोफेसर के रूप में ओम पुरी को नूर का साक्षात्कार लेने के लिए भेजा जाता है।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

लेकिन सबसे पहले सवाल यह था कि मोटापे से ग्रस्त और दुखद किरदार नूर को कौन निभाएगा। इस्माइल के लिए शशि कपूर पहली पसंद थे। हालांकि, इस बार अभिनेता को राजी करना आसान नहीं था, क्योंकि शशि मुख्य भूमिका निभाने के लिए काफी अनिच्छुक थे। एक साक्षात्कार में शशि कहते हैं, 'मैं बार-बार कहता रहा, मैं यह नहीं कर सकता। मुझे भाषा नहीं आती, मैं कभी उर्दू कवियों के

मुशायरों में नहीं गया। मैं कुछ को जानता था […] जैसे कैफी आज़मी—एक बहुत प्रसिद्ध उर्दू कवि जो मेरे पिता के पड़ोसी थे।
लेकिन मैंने कभी किसी कवि के जीवन का अध्ययन नहीं किया है।
कवि। और मुझे शुद्ध, अच्छी उर्दू और शुद्ध फ़ारसी बोलने से बहुत डर लगता था।
संकोची शशि ने इस्माइल को दिलीप कुमार समेत अन्य अभिनेताओं के नाम सुझाए, जो उनकी राय में इस भूमिका के लिए अधिक योग्य थे। लेकिन इस्माइल संतुष्ट नहीं हुए, और अंततः, कुछ वर्षों बाद, अपनी दृढ़ता के लिए प्रसिद्ध निर्देशक ने शशि के करीबी लोगों (उनके बच्चों और उनके भाई शम्मी कपूर) को यह समझाने में कामयाबी हासिल की कि यह अभिनेता के लिए एक सपनों का प्रोजेक्ट होगा। उसके बाद, शशि को 'वश में करना' आसान हो गया। अभिनेता खुद भी यह स्वीकार करते हैं कि इस्माइल ने 'सभी को अपने पक्ष में कर लिया'। [उसने] मुझे इस भूमिका को स्वीकार करने और करने के लिए राजी कर लिया।
इस्माइल की प्रभावशाली क्षमता का सबसे बड़ा प्रमाण शायद यह है कि उन्होंने उपन्यास के लेखक से ही फिल्म की पटकथा लिखवाई (जिसका उर्दू अनुवाद शाहरुख हुसैन ने किया)। उन्होंने फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ की कविताओं का भी उपयोग किया, जो फिल्म की कल्पना से बहुत पहले लिखी गई थीं; आज वे कथानक में इतनी सहज लगती हैं कि मानो उन्हें फिल्म के लिए ही लिखवाया गया हो। एशिया सोसाइटी के कार्यक्रम में इस्माइल ने कहा कि फ़ैज़ की रचनाओं का उपयोग करना उन्हें स्वाभाविक लगा क्योंकि अनीता ने वास्तव में 'इन कस्टडी' लिखते समय पाकिस्तानी कवि को ध्यान में रखा था। यह एक बड़ा संयोग है कि फ़ैज़ का निधन 1984 में हुआ, उसी वर्ष अनीता का उपन्यास प्रकाशित हुआ था।

हालांकि उपन्यास की कहानी दिल्ली में घटित होती है, लेकिन इस्माइल ने कहानी का स्थान भोपाल में स्थानांतरित कर दिया, जिसे वे भारत में कला और संस्कृति का केंद्र बताते हैं। जेम्स आइवरी फिल्म के निर्माण से जुड़े नहीं थे, फिर भी वे कुछ हफ्तों के लिए शूटिंग देखने भोपाल गए; इस दौरान वे हर दिन सेट पर जाते और शशि को काम करते हुए देखते। एक सुबह अचानक इस्माइल ने उनसे कहा कि वे थक गए हैं। जेम्स बताते हैं, “उन्होंने मुझसे कहा, ‘मैं थोड़ी देर सोना चाहता हूँ। आप अगला दृश्य निर्देशित कीजिए।’ यह शशि और ओम के साथ एक शॉट था, और उस बच्चे (सीकू, जिसका किरदार सागर आर्य ने निभाया था) को साक्षात्कार रिकॉर्ड करने थे। शशि बिस्तर पर थे और अंग्रेजी कविताएँ सुना रहे थे। बच्चा इस बात को लेकर असमंजस में था कि उसे माइक चालू करना चाहिए या नहीं, जबकि ओम उसे बार-बार माइक चालू करने के लिए कह रहे थे। मैंने उस दृश्य का निर्देशन किया और शशि के साथ दोबारा काम करना बहुत मजेदार था, उनके साथ सेट पर वापस आना बहुत अच्छा लगा।’ शशि के लिए भी यह एक खास दिन रहा होगा—उस निर्देशक के निर्देशन में काम करना, जिन्होंने उन्हें 'द हाउसहोल्डर' में शुरुआती मौका दिया था और जिन्होंने उन्हें शुरुआती अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाई थी।
जेम्स का मानना है कि 'इन कस्टडी' शशि के बेहतरीन अभिनय में से एक है। वे कहते हैं, 'हाल ही में होनोलूलू में हमारी कई भारतीय फिल्में दिखाई गईं और मैंने 'इन कस्टडी' पूरी देखी। यह एक शानदार फिल्म है—बेहद मार्मिक और अनोखी। और शशि का अभिनय लाजवाब था।' शशि भी नूर के अपने किरदार से संतुष्ट थे। शशि कहते हैं, 'मुझे खुशी है, बहुत खुशी है कि मैंने कवि का किरदार

निभाया। मुझे इस बात पर गर्व है कि मैं एक ऐसे किरदार को निभा सका जो मुझसे बिल्कुल अलग, बहुत भिन्न था।'
मुझसे, 46, जो मेरे लिए बिल्कुल अनजान है।
इन कस्टडी को अमेरिका में अच्छी समीक्षाएं मिलीं, और द न्यूयॉर्क टाइम्स की कैरिन जेम्स ने शशि की जमकर प्रशंसा की।

नूर एक विचित्र रूप से प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला व्यक्ति है, यहां तक कि कैमरे की ओर पीठ किए हुए भी।
और यह शशि कपूर के लंबे करियर में शायद सबसे बेहतरीन भूमिका है। […] लगभग तीस साल पहले, श्री कपूर मर्चेंट-आइवरी की शुरुआती फिल्म शेक्सपियर वाला में दुबले-पतले, आकर्षक युवक के रूप में थे, और हाल ही में स्टीफन फ्रीर्स की फिल्म सैमी एंड रोजी गेट लेड में एक आक्रोशित पिता की भूमिका में थे। इस्माइल मर्चेंट की समृद्ध और आकर्षक फिल्म इन कस्टडी में, श्री कपूर नूर को आज के बाल्ज़ाक में बदल देते हैं: उग्र और बुद्धिमान, फिर भी जीवन के कुछ अधिक ही अनुभव के साथ।
ठीक है.47

कैरिन का कहना है कि इस्माइल ने अपनी पहली निर्देशित फिल्म में भारतीय संस्कृति के प्रति अपने पूरे स्नेह को समाहित कर दिया है—जिससे फिल्म कई बार ‘कलात्मक राजदूत’ की गरिमामय भूमिका निभाती हुई प्रतीत होती है—वहीं वह आगे कहती हैं कि फिल्म को इसके अभिनेताओं का भरपूर समर्थन प्राप्त है: ‘इन कस्टडी’ अपने दर्शकों की उलझी हुई मानवता को कभी नहीं भूलती।
श्री कपूर और श्री पुरी द्वारा इतनी सशक्त रूप से निभाई गई भूमिकाएँ।

अन्य फिल्म समीक्षाओं में अभिनेताओं की प्रतिभा, और विशेष रूप से शशि कपूर (एक मोटे अवतार में), पर टिप्पणी की गई है। वैरायटी के डेरेक एली लिखते हैं: 'थके-हारे, गोल-मटोल कवि के रूप में, शशि कपूर, अपने दुबले-पतले, लोकप्रिय अभिनेता के दिनों से लगभग पहचाने नहीं जा सकते, एक प्रभावशाली उपस्थिति को चित्रित करते हैं, जो भारतीय चार्ल्स लॉटन और सिडनी लॉटन के बीच कहीं है।' ग्रीनस्ट्रीट।’49 और वाशिंगटन पोस्ट की रीटा केम्पली लिखती हैं, ‘[शशि] कपूर, एक दहाड़ते भैंस जैसे अभिनेता, ऑर्सन वेल्स की याद दिलाते हैं जब वे गठिया से पीड़ित होकर ढेर की तरह पड़े रहते हैं, और नशे में धुत लोगों के एक समूह के सामने अपनी कलात्मक क्षीणता पर विलाप करते हैं।
ग्रुपियां।’50
शशि के अभिनय की प्रशंसा करने के लिए अक्सर उनके वजन का जिक्र किया जाता था (साथ ही साथ अन्य मोटे पश्चिमी अभिनेताओं का भी हवाला दिया जाता था), और भले ही उनके मोटेपन ने उन्हें नूर के किरदार में ढलने में मदद की हो, शबाना को शूटिंग के दौरान अभिनेता के भारी वजन के कारण कुछ कठिन पल याद हैं। वह कहती हैं, 'शशि का वजन बहुत बढ़ गया था और शराब के नशे में उन्हें जमीन पर लेटे देखना बहुत दर्दनाक होता था। मुझे बहुत बुरा लगता था।' संजना कपूर आगे कहती हैं, 'पापा उस समय काफी शराब पीते थे। उन्हें एक दिन में एक बोतल वोदका पीने की आदत हो गई थी।'
फिर, शशि को सबसे अच्छी तरह जानने वाली और उनकी सबसे बड़ी आलोचक होने के नाते, संजना कहती हैं, 'मुझे लगता है कि पापा ने 'इन कस्टडी' में उतना शानदार अभिनय नहीं किया जितना उन्हें करना चाहिए था। उन्होंने किरदार के हिसाब से चीज़ों को कुछ ज़्यादा ही सुंदर बना दिया था—वे कुछ ज़्यादा ही आकर्षक लग रहे थे। मैं

थोड़ा और पतन देखना पसंद करती। फिल्म देखने के बाद मुझे और देखने की इच्छा हुई।'
इन कस्टडी का अंत नूर की अंतिम यात्रा के साथ होता है। कवि का ताबूत उनकी जर्जर हवेली से सड़कों पर ले जाया जाता है, जबकि उनकी विधवाएँ अपने नौकरों से घिरी हुई अपने घर की दो मंजिलों से यह सब देखती रहती हैं। ताबूत के चारों ओर भीड़ जमा हो जाती है, कुछ लोग तो उसे कंधे पर भी उठा लेते हैं। पृष्ठभूमि में हरिहरन द्वारा फैज़ की कविता 'आज बाज़ार में पा-बा जौलां चलो' का गायन सुनाई देता है, जिसका मोटे तौर पर अनुवाद है 'आज हमें चलना होगा'।
शेकल्स में मार्केट प्लेस।51
उस दृश्य को याद करते हुए जेम्स मुझे बताते हैं, 'वह पल फिर से दोहराया गया। इस्माइल की मृत्यु के बाद मैं बॉम्बे में नहीं था — हालांकि उनका निधन लंदन में हुआ था, लेकिन उनका अंतिम संस्कार बॉम्बे में हुआ था। बाद में मुझे पता चला कि शशि ने सभी शोक मनाने वालों को शहर की सड़कों से होते हुए ले जाया था। मैंने सोचा, यह कितना अजीब—नहीं, अजीब से भी बढ़कर—कितना विचित्र है, ऐसी किसी चीज़ की समरूपता। कितना मार्मिक, भावनात्मक गहराई।' जेम्स का वर्णन मेरे मन में कला के जीवन में अनुकरण के एक दुर्लभ उदाहरण के रूप में बसा हुआ है।

जिन्ना (1998)

पाकिस्तान की स्थापना की पचासवीं वर्षगांठ के अवसर पर, फिल्म निर्माता जमील देहलवी और सह-लेखक/कार्यकारी निर्माता अकबर अहमद ने अपने देश के संस्थापक मुहम्मद अली जिन्ना पर एक

निर्णायक फिल्म बनाने का निश्चय किया—एक ऐसी फिल्म जिसे कुछ लोग रिचर्ड के प्रति पाकिस्तान की प्रतिक्रिया कहेंगे। एटनबरो की 52 53 गांधी। लेकिन परियोजना में एक साल की देरी हो गई और जिन्ना
इसका निर्माण अंततः 1998 में पूरा हुआ।
जमील के अनुसार, जिन्ना का उद्देश्य तीन गुना था: इतिहास को सही करना; इस्लाम के उदारवादी पक्ष को प्रस्तुत करना; और एक ऐसे व्यक्ति को जीवंत करना जो काफी हद तक अज्ञात था।
पाकिस्तान के युवा पाठकों के लिए, चाहे वे देश में हों या विदेश में।54 लेकिन इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, जमील एक सीधी-सादी जीवनी बनाने में रुचि नहीं रखते थे। इसके बजाय, उनकी पटकथा समय में आगे-पीछे जाती रही, और जिन्ना के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाती रही। परंपरा से हटकर, फ्लैशबैक में मृत नेता की आत्मा एक देवदूत के साथ लंबी यात्रा करती है—जो बदले में, जिन्ना के जीवन की जांच करता है, उनके अच्छे कर्मों की तुलना विवादास्पद कर्मों से करता है और अंतिम निर्णय पर पहुंचता है। अकबर के हवाले से कहा गया है, 'सीधी-सादी पटकथा को कल्पना की दुनिया में ले जाने का विचार जमील का था। उन्हें लगा कि इस तरह यह अधिक रोमांचक होगा। शुरू में मैं असहज था, लेकिन मुझे एहसास हुआ
इससे बेहतर फिल्म बन सकती है।

1998, जिन्ना। शशि कपूर, 'कथावाचक' के रूप में, मुहम्मद अली जिन्ना के पापों का विश्लेषण करते हैं।

(क्रिस्टोफर ली)। सौजन्य: जमील देहलवी।

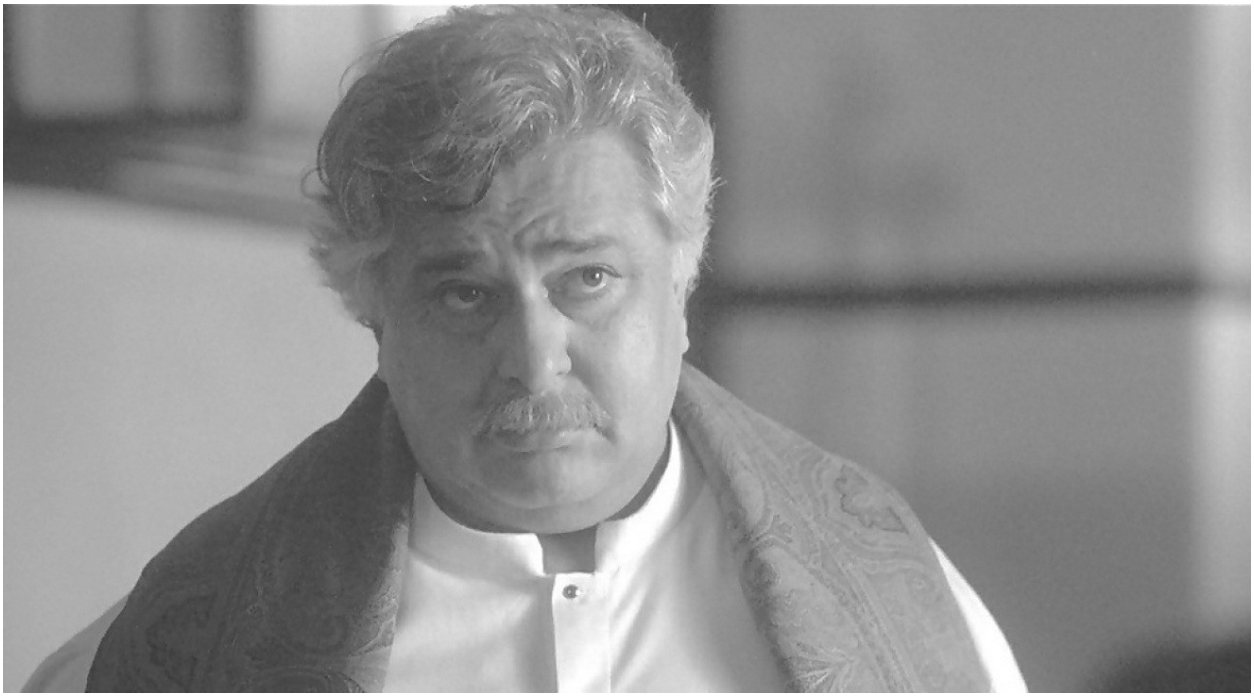

1998, जिन्ना। शशि कपूर मुहम्मद अली का मूल्यांकन करते हुए 'कथावाचक' के रूप में प्रश्नवाचक बने रहते हैं।
जिन्ना का जीवन। सौजन्य: जमील देहलवी।

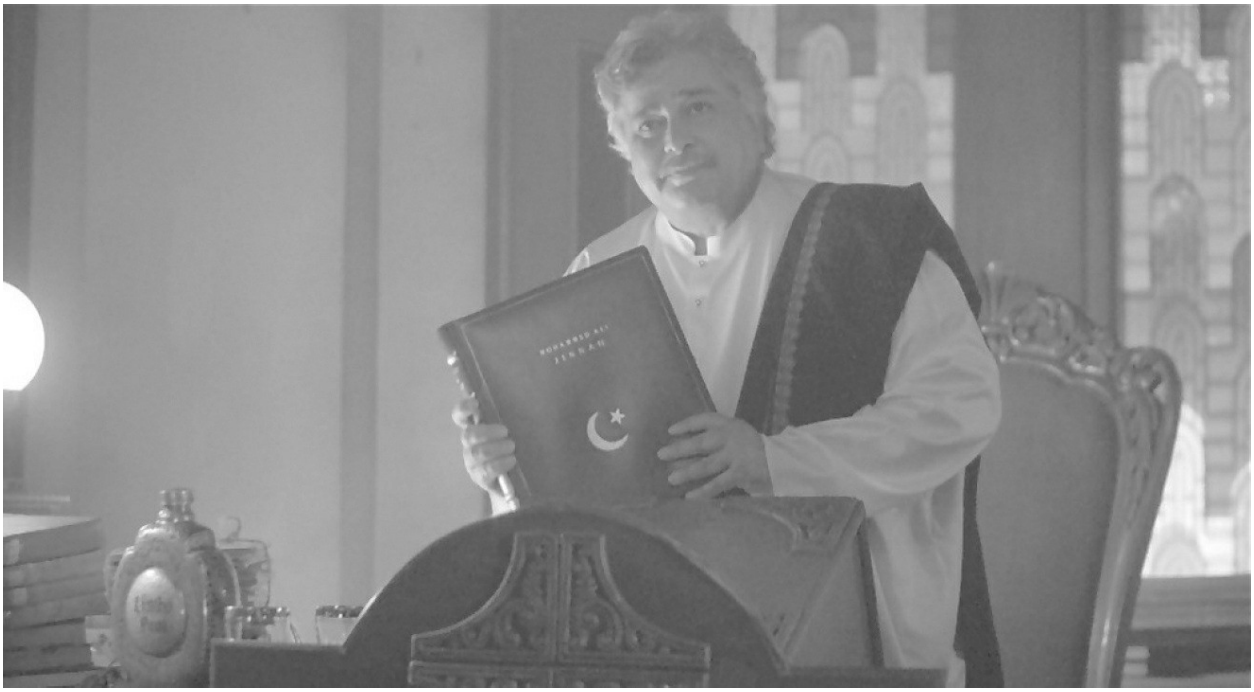

1998, जिन्ना। शशि कपूर, 'कथावाचक', जिन्ना के जीवन पर लिखी एक किताब के साथ। सौजन्य: जमील
दिल्ली।

1998, जिन्ना। शशि कपूर, जो 'कथावाचक' की भूमिका में हैं, मुहम्मद अली जिन्ना को प्रमुख स्थलों पर दोबारा जाते हुए देखते हैं।
उनके जीवन के कुछ खास पल। सौजन्य: जमील देहलवी।

जमील एक अंतरराष्ट्रीय कलाकारों की टीम को लेना चाहते थे, खासकर इसलिए क्योंकि उन्हें अंग्रेजी भाषा की फिल्म में जिन्ना की भूमिका निभाने के लिए कोई पाकिस्तानी स्टार नहीं मिल रहा था। जमील मुझे बताते हैं, 'मैंने जिन पाकिस्तानी अभिनेताओं के साथ काम किया है, उनमें से ज्यादातर अंग्रेजी में अभिनय करने

में सहज नहीं हैं। उनका अभिनय काफी बनावटी लगता है। इसलिए, मेरे सामने एक ऐसे अभिनेता को ढूंढने की बड़ी चुनौती थी जो जिन्ना जैसा दिखता हो और उनकी भूमिका और मिथक को बखूबी निभा सके - इसीलिए मैंने क्रिस्टोफर ली को चुना, जो शानदार हैं।'
देवदूत की भूमिका के लिए जमील ने शशि कपूर को चुना। ‘हमें एक ऐसे अभिनेता की ज़रूरत थी जो दमदार हो, क्रिस्टोफर के बराबर का स्टार हो, और थोड़ा सनकी भी हो, जिसमें हास्य का पुट भी हो। शशि कपूर एक स्वाभाविक पसंद लगे। वो अब वो युवा सुपरस्टार नहीं रहे थे जो कभी हुआ करते थे और मुझे लगा कि वो किरदार की विलक्षणताओं को बखूबी निभा सकते हैं।’ जमील का यह भी मानना था कि शशि कपूर का बढ़ा हुआ वज़न उस जिज्ञासु देवदूत के किरदार के साथ बखूबी मेल खाता था जिसे वो निभा रहे थे।
हालांकि, मैंने बताया कि जिन्ना के फाइनल कट में, देवदूत को कथावाचक कहा गया है; जमील ने मुझे बताया कि स्क्रिप्ट में बदलाव क्यों हुआ: ‘जब आप दुनिया के इस हिस्से में फिल्में बनाते हैं, तो आपको बहुत सावधान रहना पड़ता है, क्योंकि आप लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचा सकते हैं। आप बिना किसी कारण के विवाद खड़ा कर सकते हैं।’ शशि को ‘महादूत गेब्रियल’ की भूमिका निभाने के खतरों के बारे में जरूर आगाह किया गया होगा, क्योंकि बाद में, जब उनसे एक साक्षात्कार में जिन्ना में उनके किरदार के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने तुरंत कहा, ‘अरे नहीं! मैं महादूत की भूमिका नहीं निभा रहा हूँ। फिल्म में ऐसा कोई किरदार नहीं है। मैं कथावाचक की भूमिका निभा रहा हूँ—यह भारतीय नाटकों में सूत्रधार की भूमिका के समान है; यह शेक्सपियर के नाटकों में कोरस की तरह है।’ फिर उन्होंने आगे कहा, ‘मेरा किरदार अधर में है; यह कल्पना का मिश्रण है।’

और [सभी चीजें] अमूर्त हैं।’56
शशि और जमील की सावधानी के बावजूद, जिन्ना को गंभीर परेशानी का सामना करना पड़ा। सबसे पहले, स्थानीय समाचार पत्रों में दुर्भावनापूर्ण अफवाहें छपने लगीं। कराची में ग्यारह सप्ताह तक चले शूट के दौरान, क्रिस्टोफर की कास्टिंग को लेकर तीखे विरोध प्रदर्शन हुए। सितंबर 1998 में, बीबीसी की एक रिपोर्ट में कला संवाददाता रजिया इकबाल के हवाले से कहा गया, 'यह तथ्य कि श्री ली का संबंध काउंट ड्रैकुला से है, न कि यह कि वह एक यूरोपीय हैं जो एक एशियाई की भूमिका निभा रहे हैं, ने लोगों को परेशान किया है।'
लोगों।’57 कार्यकर्ताओं ने कथित तौर पर क्रिस्टोफर की गिरफ्तारी और पाकिस्तान से निर्वासन की मांग की थी। वह तनावपूर्ण समय था, और निर्माताओं को ब्रिटिश अभिनेता के लिए सशस्त्र गार्ड मुहैया कराने पड़े। इसके अलावा, उन्हें शशि को भी सुरक्षा प्रदान करनी पड़ी। ‘ऐसा नहीं है कि कोई समस्या है,’ शशि एक साक्षात्कार में स्पष्ट करने की कोशिश करती हैं। ‘मैं घूमती-फिरती हूं, लोगों के घरों में दोपहर के भोजन के लिए जाती हूं, सिंध क्लब जाती हूं। यह बहुत अच्छी जगह है, बहुत अच्छे लोग हैं। […] माहौल बहुत सौहार्दपूर्ण है।’ हमेशा की तरह समझदारी से भरी शशि आगे कहती हैं, ‘अपने ही लोग हैं, यार। (वे हमारे ही जैसे हैं।) वही लोग, वही
संस्कृति के मामले में, आपको ऐसा महसूस नहीं होता कि आप भारत के बाहर शूटिंग कर रहे हैं।
फिर खबर आई कि पाकिस्तानी सरकार—जो जिन्ना की शुरुआती समर्थकों में से एक थी—ने फिल्म के निर्माण के बीच में ही फंडिंग वापस ले ली। जमील को कुछ त्वरित बदलाव करने पड़े—

जिनमें शशि की भूमिका को कुछ हद तक कम करना भी शामिल था। जमील बताते हैं, “फिल्म में एक दृश्य था जिसमें शशि और जिन्ना समय से परे जाकर आधुनिक मुस्लिम नेताओं, जैसे सद्दाम हुसैन से मिलते हैं। यह फिल्म का एक दिलचस्प पहलू था। लेकिन हम इसे पूरा नहीं कर पाए। हमारे पास पैसे खत्म हो गए थे।”
इन सभी मुश्किलों के बावजूद, शशि के मन में शूटिंग की मार्मिक यादें बसी हुई हैं—उनमें से एक में क्रिस्टोफर दर्शकों की भारी भीड़ के बीच खड़े हैं। फिल्म के एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा, ‘भीड़ वाले दृश्य देखना बहुत भावुक कर देने वाला है। जब जिन्ना भीड़ के बीच से गुजर रहे थे, तो क्रू मेंबर न होने के बावजूद कुछ बुजुर्ग उन्हें छू रहे थे… इससे मुझे बॉम्बे और दिल्ली में गांधी जी की शूटिंग की याद आ गई। यहाँ के लोग उनके साथ बहुत सम्मान से पेश आते हैं।
इतनी श्रद्धा के साथ।’59
जमील शशि के साथ बिताए समय को बड़े प्यार से याद करते हैं: 'शशि एक अद्भुत इंसान हैं, बेहद विनम्र। सच कहूँ तो, मुझे सुखद आश्चर्य हुआ, क्योंकि उनका लंबा अनुभव है और वे मुश्किल स्वभाव के भी हो सकते थे। लेकिन नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं था। वे विनम्र थे, उनके साथ काम करना आसान था।' जिन्ना फिल्म में, कड़क सफेद कुर्ता-पायजामा पहने हुए हट्टे-कट्टे शशि अपने चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान लिए चलते हैं, मानो वे 'कथावाचक' होने के हर पल का आनंद ले रहे हों।
यह एक ऐसी भूमिका है जिसमें शशि, क्रिस्टोफर के लिए एकदम सही साथी साबित होते हैं। शशि कहते हैं कि उन्हें ब्रिटिश स्टार के साथ काम करना बहुत पसंद आया ('वह एक शानदार अभिनेता हैं,' वे जोर

देकर कहते हैं, 'एक अच्छे इंसान होने के साथ-साथ, वे बहुत जागरूक भी हैं।')
कायद-ए-आजम (1960) की भूमिका निभाने की जिम्मेदारी के बावजूद, क्रिस्टोफर ने 2001 में पाकिस्तान न्यूज़ सर्विस के साथ एक रेडियो साक्षात्कार के दौरान विनम्रता बनाए रखी: 'फिल्म में पाकिस्तानी कलाकार मेरे प्रति बहुत दयालु थे और फिल्म में एक बहुत ही प्रतिष्ठित भारतीय अभिनेता शशि भी थे।'
कपूर.’61
दिसंबर 1998 में, लॉस एंजिल्स टाइम्स में जिन्ना को एक मजबूत सकारात्मक समीक्षा मिली, जिसमें आलोचक केविन थॉमस ने अभिनेताओं की प्रशंसा करते हुए कहा: 'फिल्म के अंत तक, ली एक अडिग गरिमा वाले व्यक्ति के आंतरिक जीवन को उजागर करने की अपनी क्षमता में बेहद मार्मिक हैं [...] कलाकार उत्कृष्ट हैं।' इसमें हास्यप्रद कपूर (जो लंबे समय से भारतीय सिनेमा के मुख्य आधार रहे हैं) भी शामिल हैं। 62 यह एक ऐसी समीक्षा है जो जिन्ना की खूबियों को समाहित करती है - एक ऐसी फिल्म जो एक ऐसे व्यक्ति के सार को पकड़ती है जो शायद बेहद सही, संयमित, यहां तक कि गंभीर भी रहा हो - लेकिन जो स्वभाव में इन बाधाओं के बावजूद, अपार साहस और अडिग सत्यनिष्ठा के नेता के रूप में उभरता है।
अगर फिल्म में कोई कमी है, तो वह इस तथ्य के कारण है कि गांधी फिल्म का जवाब देने के प्रयास में, जिसमें जिन्ना को सत्ता का भूखा व्यक्ति दिखाया गया है, जमील की फिल्म—एक आलोचक के शब्दों में—‘अंततः एक ऐसे द्वैतवादी संसार को प्रस्तुत करती है जिसमें जिन्ना “अच्छाई” का प्रतीक है जबकि गांधी, नेहरू और माउंटबेटन मिलकर एक “बुराई” की तिकड़ी बनाते हैं जिस पर जिन्ना का प्रभुत्व है […

एक] अन्यथा सराहनीय प्रयास को […] नायक-पूजा के स्तर तक ले जाया गया।’63 प्रोफेसर पॉल वैलेली बताते हैं कि विडंबना यह है कि फिल्म को ‘भारत में पाकिस्तानी प्रचार और जिन्ना के गृह देश में हिंदू और ज़ायोनिस्ट दोनों के रूप में आलोचना झेलने का अवांछनीय गौरव प्राप्त हुआ।
प्लॉट.’64
जिन्ना फिल्म सिनेमाघरों तक नहीं पहुंच पाई और वितरक न मिलने के कारण सात साल बाद, 2005 में, डीवीडी के रूप में रिलीज़ हुई। क्रिस्टोफर के लिए, जिनका वैसे तो शानदार करियर रहा है, यह एक बड़ा अफसोस बना रहा। 'फिल्म के तौर पर मुझे अपने पूरे करियर में इस फिल्म से अब तक की सबसे अच्छी समीक्षाएं मिलीं।'
और एक प्रदर्शन के रूप में,’ वह बीबीसी की एक रिपोर्ट में कहते हैं,65 जिन्ना की उस सफलता को हासिल करने में असमर्थता पर अपनी हैरानी व्यक्त करते हुए जिसके वह हकदार थे।

साइड स्ट्रीट्स (1998)

1990 के दशक के उत्तरार्ध में, न्यूयॉर्क में रहने वाले एक युवा वृत्तचित्र फिल्म निर्माता टोनी गेर्बर ने अपनी पहली फीचर फिल्म बनाने का निश्चय किया, जिसकी पटकथा उन्होंने अपने सहपाठियों के साथ मिलकर लिखी थी।
पत्नी, लिन नॉटेज। 66 साइड स्ट्रीट्स न्यूयॉर्क के जीवन का एक अंश है, जिसमें आप्रवासियों की कई परस्पर जुड़ी कहानियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक न्यूयॉर्क शहर के पाँचों इलाकों में से एक में एक बेहद गर्म गर्मी के दिन की पृष्ठभूमि पर आधारित है।

लिखी गई कहानियों में से एक कहानी भारतीय-अमेरिकी लिमोसिन ड्राइवर बिपिन राज की थी, जो अपनी पत्नी चंद्रा, बच्चों और परिवार के नए सदस्य विक्रम राज के साथ स्टेटन द्वीप पर रहता है। हिंदी फिल्मों के बड़े अभिनेता के रूप में अपने करियर के खत्म होने की सच्चाई से भागते हुए, विक्रम - जो कभी रहस्यमय रहा होगा, लेकिन अब मोटापे से ग्रस्त और खुद को बहुत बड़ा समझने वाला शराबी है - चंद्रा की नाराजगी के बावजूद एक बेहद जिद्दी मेहमान बन जाता है।
चंद्रा के जटिल किरदार को चित्रित करने के लिए, जो लगातार निराश होती जा रही है और विक्रम की मांगों को मानकर बेहतर एयर कंडीशनिंग या नाश्ता मंगवाती है, जबकि वह खुद आराम से बैठकर कभी मिली प्रशंसा का आनंद लेता है या इस उम्मीद में जीता है कि अल पचीनो उसे फोन करेंगे, टोनी और लिन ने शबाना आज़मी को लेने पर विचार किया। सितंबर 1996 में, जब निर्माताओं में से एक की मुलाकात टोरंटो अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में अभिनेत्री से हुई—जहाँ वह
दीपा मेहता की फिल्म '67 फायर' के प्रमोशन के दौरान शबाना ने यह भूमिका निभाने के लिए हामी भरी। आर्ट मलिक फिल्म में शबाना के लिमोसिन ड्राइवर पति के रूप में शामिल हुए, वहीं शबाना ने फिल्म निर्माताओं को सुझाव दिया कि शशि कपूर उम्रदराज पूर्व अभिनेता विक्रम की भूमिका आसानी से निभा सकते हैं। मुंबई लौटने पर शबाना ने तुरंत शशि कपूर को स्क्रिप्ट सौंप दी। टोनी बताते हैं, 'वह बहुत इच्छुक थे, हालांकि उन्होंने मुझसे संपर्क करके कहा कि अमेरिका में उनका कोई एजेंट नहीं है। लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि असल में इस्माइल मर्चेंट ही उनके एजेंट हैं।' इस तरह,

इस्माइल फिल्म से जुड़ गए और शशि कपूर के लिए मध्यस्थ की भूमिका निभाने लगे, और साथ ही कार्यकारी निर्माता भी बन गए।

1998, साइड स्ट्रीट्स। शशि कपूर, विक्रम के किरदार में, एक ढलते सितारे की तरह, अल पचीनो के फोन का इंतजार कर रहे हैं। शबाना आज़मी (पृष्ठभूमि में) एक लिमोसिन ड्राइवर की परेशान पत्नी के रूप में देख रही हैं, जिसका किरदार आर्ट मलिक (बाएं) ने निभाया है।
फोटो साभार: सेठ रुबिन। सौजन्य: साइड स्ट्रीट्स प्रोडक्शंस।

साइड स्ट्रीट्स अनजाने में शशि की अनौपचारिक त्रयी का तीसरा भाग बन गई—सैमी एंड रोजी गेट लेड और इन कस्टडी इसके पहले दो भाग थे। इन तीनों फिल्मों में, अभिनेता एक उम्रदराज, मोटे आदमी की भूमिका निभाते हैं, जो अपने करियर के चरम पर रहे दिग्गज की मात्र एक परछाई है—सैमी एंड रोजी गेट लेड में वह अतीत से भागता हुआ एक राजनेता है, इन कस्टडी में समय के बीतने पर विलाप करता हुआ एक कवि है, और साइड स्ट्रीट्स में एक ऐसा अभिनेता है जिसके पास अतीत की गौरवशाली यादों के अलावा कुछ नहीं बचा है।
मेरी बातचीत में कई अन्य लोगों की तरह, टोनी ने भी मुझे बताया कि शशि एक पूर्ण पेशेवर थे। निर्देशक कहते हैं, 'वह एक अद्भुत अभिनेता थे। मुझे उनके बारे में जो बात विशेष रूप से याद है, वह यह है कि अन्य सितारों के विपरीत - जो अपनी लाइनें खत्म करके किरदार से बाहर आ जाते हैं, या निर्देशक की ओर देखकर पूछते हैं, "हो गया ना? हमें समझ आ गया?" - शशि तब तक सीन में बने रहते थे जब तक मैं "कट" नहीं बोल देता था।'
तो, टोनी ने शशि के साथ एक खेल शुरू किया, जिसमें वह अपना कॉल टालने लगे। टोनी हंसते हुए कहते हैं, 'कैमरा चालू रखना बहुत मज़ेदार था, जबकि शशि हर पल को जीवंत कर देते थे। मेरे पास क्रू के लिए एक गैर-मौखिक संकेत होता था, इसलिए शशि को पता नहीं चलता था कि मैंने कब 'कट' बोला और वह कमाल की चीज़ें करते थे। वह मेरी उम्मीद से कहीं बेहतर अभिनेता थे!' टोनी को यह भी याद है कि शशि स्थितियों को जल्दी समझ लेते थे और अभिनय करने लगते थे। टोनी कहते हैं, 'औसतन, शशि तीन टेक देते थे और तब तक वह अपने किरदार में माहिर हो जाते थे; उन्हें इससे ज़्यादा समय की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। कभी-कभी, वह हर टेक में अलग-अलग तरह का प्रदर्शन करते थे। हालांकि, अगर मैं चौथा या पांचवां टेक मांगता, तो उनका

प्रदर्शन बिगड़ने लगता था। मुझे नहीं लगता कि इसका उनकी ऊर्जा या शारीरिक स्थिति से कोई लेना-देना था। मेरा मानना है कि ऐसा इसलिए होता था क्योंकि वह मानसिक और रचनात्मक रूप से आगे बढ़ जाते थे।'
फिर भी, यह एक सच्चाई है कि जब तक शशि ने 'साइड स्ट्रीट्स' के लिए हामी भरी, तब तक उनकी तबीयत पूरी तरह ठीक नहीं थी; पत्नी के निधन से वे भावनात्मक रूप से बुरी तरह आहत हो चुके थे और उनका शरीर भी उनका साथ नहीं दे रहा था। टोनी ने मुझे बताया कि शूटिंग के दौरान उनके टखनों में सूजन को लेकर चिंता जताई गई थी।
फिर वो रात आई जब क्रू एक्टर के साथ आखिरी सीन शूट करने वाला था। लेकिन शशि ने कहा कि वो थके हुए हैं। लिन और टोनी कहते हैं, 'वो वाकई थके हुए और चिड़चिड़े लग रहे थे, और उन्होंने तय कर लिया कि वो परफॉर्म नहीं करना चाहते।' लेकिन फिर, उन्हें खुद प्रोडक्शन से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ा। वे बताते हैं, 'पूरा क्रू वहाँ था, हमने होटल पहले ही बुक कर लिया था, और हमारे पास क्रू को घर भेजने के लिए पैसे नहीं थे। वो शूटिंग के सबसे महंगे दिनों में से एक था।' 'लेकिन शशि ने होटल का दरवाजा बंद कर लिया था! हमने उनसे बाहर आने की बहुत मिन्नतें कीं।' शशि ने उस दिन सिर्फ़ दो ही टेक किए थे, इसलिए उनकी अत्यधिक थकान अजीब थी— लेकिन टोनी समझाते हैं कि उनकी थकान सिर्फ़ शारीरिक नहीं हो सकती थी: 'आप जानते हैं, सीन उनकी मौत से जुड़ा था,' टोनी कहते हैं। 'शायद उन्हें लग रहा था कि वो किसी अंधेरी जगह पर जा रहे हैं।'
आखिरकार शशि अपने कमरे का दरवाजा खोलने में कामयाब हो गया। वह बाहर निकला, नारंगी रंग का रेशमी कुर्ता-पायजामा पहना और भांगड़ा जैसा नृत्य करने लगा।

dance to ‘Le Jayenge, Le Jayenge, Dilwale Dulhania Le Jayenge’68 from
चोर मचाए शोर.69 लिन कहती हैं, 'जब हमने उन्हें इस अद्भुत नृत्य के लिए मना लिया, तो उन्होंने अपना सब कुछ इसमें समर्पित कर दिया और इतनी खूबसूरती से - और एक ही टेक में - प्रदर्शन किया कि अंत में क्रू ने अनायास ही ताली बजा दी। यह एक खूबसूरत पल था और आप देख सकते थे कि शशि इसे साकार करने के लिए अपनी आत्मा की गहराई में उतर रहे थे - इस बात से पूरी तरह अवगत थे कि वे भारी और थके हुए थे।'
शशि पाकिस्तानी कवि हाफ़िज़ जालंधरी की व्यंग्यात्मक कविता 'अभी तो मैं जवान हूं' के पाठ के साथ दृश्य का समापन करते हैं; कवि जानता है कि वह समय के साथ दौड़ रहा है, लेकिन बुढ़ापे के प्रकोप के खिलाफ़ आक्रोश व्यक्त करता है।

Ye kya gumaan hai badgumaan, samajh na mujh ko naatavaan Khayaal-e-zohd, abhi kahaan? Abhi to main jawaan hun.

(मुझे अपने संदेहों और पतन की आशंकाओं से बख्श दीजिए। संयम— आह, क्या अभी इसके लिए बहुत जल्दी नहीं है? क्योंकि अभी मैं जवान हूँ।)

आज तक, शशि को वो डायलॉग बोलते हुए देखकर मुझे बहुत दुख होता है। हम जानते हैं कि जवानी में वो कैसे थे और अब हम उन्हें एक पूरी तरह बदले हुए इंसान के रूप में देखते हैं। फिर भी उनके अंदर का अभिनेता अभी भी पूरी तरह से जीवंत है, और यह 'साइड' में साफ तौर पर दिखाई देता है।

स्ट्रीट्स 70 उनकी अंतिम से पहले वाली फिल्म थी, जिसके एक साल बाद डर्टी ब्रिटिश बॉयज आई।
वैरायटी के समीक्षक डेविड रूनी ने साइड स्ट्रीट्स की मिलीभगत से समीक्षा करते हुए (इसे 'बहुत लंबा' लेकिन 'पसंदीदा' बताते हुए) शशि की जमकर प्रशंसा की, “जिनकी भूमिका में उनके अपने करियर की विडंबनापूर्ण झलक मिलती है। वे एक ऐसे सितारे का किरदार निभाते हैं जो कभी चमकता था, लेकिन अब अहंकारी और निराश, गरिमामय और दयनीय दोनों है, और धीरे-धीरे हल्के-फुल्के हास्य से करुणा की ओर बढ़ते हैं, खासकर सबसे मार्मिक दृश्यों में।
कहानियों के निष्कर्ष।’71 यही बात दर्शकों को विशेष रूप से प्रभावित करती है—साइड स्ट्रीट्स के स्टेटन आइलैंड खंड की आत्म-संदर्भितता। विक्रम शशि है, और उनके जीवन, एक दुर्लभ प्रकार की निराशा से चिह्नित, एक दूसरे का प्रतिबिंब हैं। हालांकि शशि एक ज्यादा मांग करने वाले अभिनेता नहीं थे, टोनी ने इस्माइल के सुझाव का पालन किया और उन्हें दो सहायक दिए— न्यूयॉर्क शहर में रहने वाले दो युवा भारतीय—रोहेना गेरा (जो आज कुछ फिल्मों की पटकथा/कहानी लेखिका के रूप में जानी जाती हैं)।
Naa Kaho72 73 and Thoda Pyaar Thoda Magic and the director of the
डॉक्यूमेंट्री, 74 (व्हाट्स लव गॉट टू डू विद इट?) और सबरीना धवन (अब
(75, 76, 77 मॉनसून वेडिंग, कमीने और इश्किया के पटकथा लेखक के रूप में जाने जाते हैं)।
दोनों को शशि के साथ बिताए समय की अच्छी तरह से याद है।

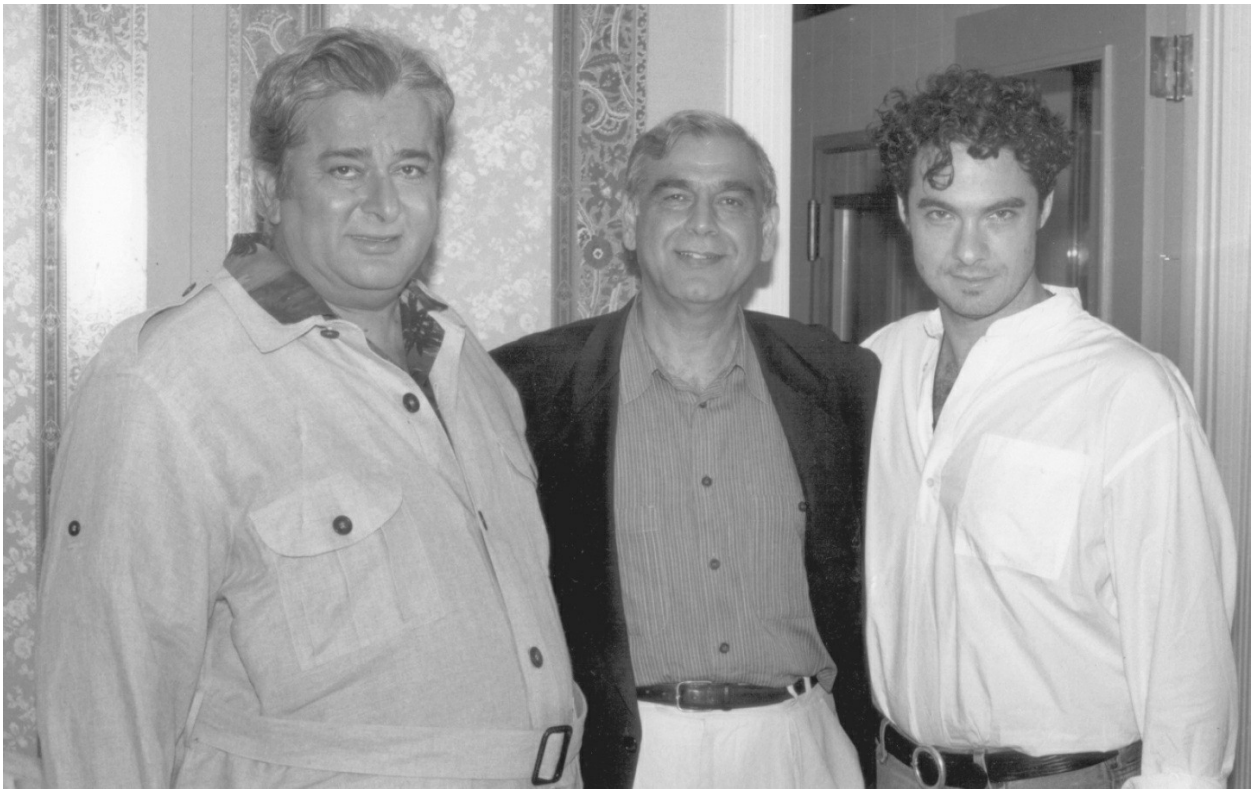

1998, साइड स्ट्रीट्स। शशि कपूर फिल्म के कार्यकारी निर्माता, इस्माइल मर्चेंट के साथ।
निर्देशक, टोनी गेर्बर (बाएं से दाएं)। फोटो साभार: सेठ रुबिन। सौजन्य: साइड स्ट्रीट्स प्रोडक्शंस।

रोहेना को याद है कि वो स्टेटन आइलैंड के उस घर के बाहर बैठी थीं जहाँ शशि, आर्ट और शबाना वाले सेगमेंट शूट किए गए थे, और उन्हें खास तौर पर शशि की गर्मजोशी याद है। वो मुझे बताती हैं कि अभिनेता ने उन्हें नज़रअंदाज़ करने के बजाय, उनके बारे में जानने की उत्सुकता दिखाई—सारा लॉरेंस कॉलेज से ग्रेजुएट एक युवा भारतीय महिला, जिसे फिल्मों में दिलचस्पी थी। मैनहट्टन में एक चाइनीज़ लंच के दौरान, उन्होंने उनसे पूछा कि क्या वो

न्यू यॉर्क में काम करने पर विचार करेंगी, और इस तरह उन्होंने उनके करियर में मदद करने की कोशिश की।
यॉर्क में अपने भतीजे ऋषि कपूर की फिल्म '78 आ अब लौट चलें' के लिए क्रू मेंबर के तौर पर काम कर रहे हैं। 'मैं
बाद में मेरी मुलाकात चिंटू (ऋषि) से हुई,’ रोहेना कहती हैं, ‘लेकिन यह मेरे लिए सही नहीं था। शशि कपूर हमेशा इस बारे में बहुत ही सौम्य और उदार रहे—शालीन और उदार, लेकिन अजीब नहीं। फिल्म जगत में अकेली महिला होने के नाते, अक्सर लोग सतर्क रहते हैं, लेकिन वह एक स्नेही और देखभाल करने वाले चाचा की तरह थे।’ दिलचस्प बात यह है कि सबरीना ने बिल्कुल यही खाका पेश किया है। वह फिल्म 'साइड स्ट्रीट्स' के लिए सांस्कृतिक सलाहकार के तौर पर जुड़ी थीं, उन्होंने शशि कपूर की क्लासिक फिल्मों के गाने ढूंढे थे, और उन्हें याद है कि स्टार से मिलने को लेकर वह बेहद उत्साहित थीं। वह मुझे बताती हैं, 'मैंने ज़्यादा अभिनेताओं से मुलाकात नहीं की थी, क्योंकि उस समय मैं छात्रा थी। इसलिए, जब मुझे पता चला कि वे भी आम इंसान होते हैं—या कम से कम शशि कपूर तो थे—तो मुझे पहले तो हैरानी हुई। वह आपके पसंदीदा चाचा जैसे हो सकते थे!'
सबरीना को शशि कपूर में एक दुर्लभ प्रकार की विनम्रता भी देखने को मिली। वह कहती हैं कि शबाना के शूटिंग के लिए आने के एक दिन बाद, उन्होंने शशि और अभिनेत्री को एक कोने में बातचीत करते हुए सुना—‘हिंदी में, जो विदेशियों या प्रवासियों के लिए सांकेतिक भाषा है,’ सबरीना कहती हैं। ‘शबाना आज़मी ने धीरे से पूछा, “यहाँ कुछ खाने-पीने को है?” और शशि कपूर ने सहजता से जवाब दिया, “पता नहीं, बाहर कुछ बिस्किट-विस्किट, बैगल-शगल पड़े हुए हैं।” उस पल

में कुछ बहुत ही प्यारा और दिल को छू लेने वाला था—एक दिग्गज फिल्म स्टार को इतनी सरलता से यह कहते हुए सुनना।’
सबरीना आगे कहती हैं: 'शशि कपूर बेहद सभ्य और विनम्र थे। आज के मुंबई में जिस तरह का शिष्टाचार देखने को मिलता है, वैसा उनमें नहीं था। उनका शिष्टाचार जन्मजात और सच्चा था। उनकी शालीनता और परिष्कार वास्तविक था। उनमें कुछ ऐसा था जो पुराने जमाने की याद दिलाता था। उन्हें देखकर मन करता है कि काश उनके जैसे लोग हमेशा जीवित रह पाते।'
‘हां,’ मैं केवल फुसफुसाकर कह पाती हूं। ‘हां, ऐसा ही है।’

नोट्स
1. 1978, रुमटेक: एक लाख फूलों से सजा मठ
रेनबोज़, निर्देशक: रमेश शर्मा, निर्माता: रमेश शर्मा।
2. 1986, नई दिल्ली टाइम्स, निर्देशक रमेश शर्मा, निर्माता पी.के. तिवारी,
starring Shashi Kapoor, Sharmila Tagore, Om Puri.
3. 1965, समय, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत बलराज साहनी, शर्मिला टैगोर, शशि कपूर।
4. लॉरेंस वैन गेल्डर, ‘एट द मूवीज़’, द न्यूयॉर्क टाइम्स, 13 नवंबर 1987।
5. खालिद मोहम्मद, ‘चौथा स्तंभ: वास्तविक और काल्पनिक’,
खलीज टाइम्स, 13 दिसंबर 2013।
6. ज्योति वेंकटेश, ‘शशि कपूर’, फ्रंटलाइन, 14-27 जून 1986।
7. 2000, हाई फिडेलिटी, निर्देशक: स्टीफन फ्रीर्स, निर्माता: टिम बेवन, रुड

सिमंस, जिसमें जॉन कुसैक, जैक ब्लैक और लिसा बोनेट ने अभिनय किया है।
8. 2002, डर्टी प्रीटी थिंग्स, निर्देशक: स्टीफन फ्रीर्स, निर्माता: ट्रेसी
सीवार्ड, रॉबर्ट जोन्स, अभिनीत: चिवेटेल एजियोफोर, ऑड्रे टॉटू, सर्गी लोपेज़।
9. 2006, द क्वीन, निर्देशक स्टीफन फ्रीर्स, निर्माता एंडी हैरिस,
क्रिस्टीन लैंगन, ट्रेसी सीवार्ड, हेलेन मिर्रेन, माइकल शीन, जेम्स क्रॉमवेल अभिनीत।
10. 1985, माई ब्यूटीफुल लॉन्ड्रेट, निर्देशक: स्टीफन फ्रीर्स, निर्माता: सारा
रैडक्लिफ़, टिम बेवन, अभिनीत गॉर्डन वार्नके, डेनियल डे-लुईस, सईद जाफ़री।
11. जॉन मास्टर्स, द डिसीवर्स (न्यूयॉर्क: कैरोल एंड ग्राफ, 1988)।
12. 1998, Elizabeth, dir. Shekhar Kapur, prod. Tim Bevan, Eric फेलनर, एलिसन ओवेन, अभिनीत केट ब्लैंचेट, जेफ्री रश, जोसेफ फिएनेस।
13. 1965, शेक्सपियर वाला, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल
Merchant, starring Shashi Kapoor, Felicity Kendal, Madhur Jaffrey.
14. इस्माइल मर्चेंट, भारत से मेरी यात्रा: एक फिल्म निर्माता की यात्रा

बॉम्बे से हॉलीवुड तक (न्यूयॉर्क: वाइकिंग स्टूडियो, 2002), पृ. 115.
15. 1988, द डिसीवर्स, निर्देशक निकोलस मेयर, निर्माता इस्माइल मर्चेंट,
इसमें पियर्स ब्रॉसनन, शशि कपूर और सईद जाफरी ने अभिनय किया है।
16. 1982, स्टार ट्रेक II: द रैथ ऑफ खान, निर्देशक निकोलस मेयर, निर्माता: रॉबर्ट सैलिन, कलाकार: विलियम शैटनर, लियोनार्ड निमोय, डीफॉरेस्ट केली।
17. जे बॉयर, ‘द डिसीवर्स: रिव्यू’, ऑरलैंडो सेंटिनल, 17
फरवरी 1989।
18. हाल हिंसन, ‘धोखेबाजों का छूटा हुआ रूपक’, द वाशिंगटन
पोस्ट, 9 सितंबर 1988।
19. प्रदीप गुप्ता द्वारा उद्धृत, ‘जेम्स बॉन्ड ने शशि कपूर को शुभकामनाएं दीं’,
टाइम्स ऑफ इंडिया, 17 मार्च 2011।
20. 1987, सैमी और रोजी ने संबंध बनाए, निर्देशक: स्टीफन फ्रीर्स, निर्माता: टिम
बेवन, सारा रेडक्लिफ, जिसमें शशि कपूर, फ्रांसिस बार्बर और क्लेयर ब्लूम ने अभिनय किया है।
21. हनीफ कुरैशी, ‘सम टाइम विद स्टीफन’, लंदन किल्स मी:
तीन पटकथाएँ और चार निबंध (न्यूयॉर्क: पेंगुइन 1992), पृष्ठ 124।
22. 1972, सिद्धार्थ, निर्देशक: कॉनरैड रूक्स, निर्माता: कॉनरैड रूक्स,
starring Shashi Kapoor, Simi Garewal, Romesh Sharma.

23. 1967, प्रीटी पॉली, निर्देशक: गाय ग्रीन, निर्माता: जॉर्ज डब्ल्यू जॉर्ज,
फ्रैंक ग्रैनट, जिसमें हेले मिल्स, शशि कपूर और ट्रेवर हॉवर्ड ने अभिनय किया है।
24. 1999, ईस्ट इज़ ईस्ट, निर्देशक: डेमियन ओ'डोनेल, निर्माता: लेस्ली उडविन,
इसमें ओम पुरी, लिंडा बैसेट और आर्ची पंजाबी ने अभिनय किया है।
25. हनीफ कुरैशी, ‘सम टाइम विद स्टीफन’, लंदन किल्स मी:
तीन पटकथाएँ और चार निबंध (न्यूयॉर्क: पेंगुइन 1992), पृ. 155– 56.
26. वही, पृष्ठ 151.
27. वही, पृष्ठ 155.
28. वही, पृष्ठ 162.
29. 1963, द हाउसहोल्डर, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट,
शशि कपूर, लीला नायडू, दुर्गा खोटे अभिनीत।
30. ‘माई गर्ल’, गीतकार: स्मोकी रॉबिन्सन, रोनाल्ड व्हाइट, संगीतकार: विलियम
रॉबिन्सन, रोनाल्ड व्हाइट, कलाकार ओटिस रेडिंग।
31. हनीफ कुरैशी, ‘सम टाइम विद स्टीफन’, लंदन किल्स मी:
तीन पटकथाएँ और चार निबंध (न्यूयॉर्क: पेंगुइन 1992), पृष्ठ 183।
32. विंसेंट कैनबी, ‘फिल्म: सैमी और रोजी’, द न्यूयॉर्क टाइम्स, 30 अक्टूबर 1987।
33. पॉलीन केल, 'द करंट सिनेमा: सैमी और रोजी का यौन संबंध,'
द न्यू यॉर्कर, 16 नवंबर 1987।

34. ‘नवरसा’ या ‘नौ भाव’ की अवधारणा निम्नलिखित से प्रेरित है: भरत मुनि का नाटकीय सिद्धांत का प्राचीन कार्य, नाट्यशास्त्र, 200 ईसा पूर्व और 200 ईस्वी के बीच लिखा गया था। नौ रसों में श्रृंगार (प्रेम), हास्य (हँसी), करुणा (करुणा), रौद्र (क्रोध), वीरा (साहस), भयनका (आतंक), भीभत्स्य (घृणा), अद्भुत (आश्चर्य) और शांता (शांति) शामिल हैं। देखें भरत मुनि, द नाट्यशास्त्र: क्रिटिकल नोट्स के साथ अंग्रेजी अनुवाद, आद्या रंगाचार्य द्वारा अनुवादित (नई दिल्ली: मुंशीराम, 2014)।
35. लॉरेंस वैन गेल्डर, ‘एट द मूवीज़’, द न्यूयॉर्क टाइम्स, 13 नवंबर 1987।
36. वही।
37. 1985, ए रूम विद ए व्यू, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल
मर्चेंट, जिसमें मैगी स्मिथ, हेलेना बोनहम कार्टर और डेनहोम इलियट ने अभिनय किया है।
38. 1992, हॉवर्ड्स एंड, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट,
इसमें एंथोनी हॉपकिंस, वैनेसा रेडग्रेव और हेलेना बोनहम कार्टर ने अभिनय किया है।
39. 1993, द रिमेन्स ऑफ द डे, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल
जॉन कैली, माइक निकोल्स द्वारा अभिनीत फिल्म में जॉन हेक्राफ्ट, क्रिस्टोफर रीव और एंथोनी हॉपकिंस ने अभिनय किया है।
40. 1993, हिरासत में, निर्देशक: इस्माइल मर्चेंट, निर्माता: वाहिद चौहान,

starring Shashi Kapoor, Shabana Azmi, Om Puri.

41. [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] (New Delhi: [illegible] [illegible], 2007), pp. 14.

42. [illegible], [illegible] 45.

43. [illegible] [illegible], [illegible] in the [illegible] [illegible]: An [illegible] [illegible] of [illegible]

[illegible] of [illegible] ([illegible]: [illegible] [illegible], 2002), pp. 124.

44. [illegible] [illegible] [illegible] in [illegible] of [illegible] [illegible]

45. [illegible]

46. [illegible]

47. [illegible], 'Aaj Bazaar Mein Pa-ba Joulaan Chalo': [illegible] [illegible] in [illegible] [illegible]'

'[illegible]', in [illegible], 15 [illegible] 1994.

48. [illegible]

49. [illegible], 'Interview'

50. [illegible] [illegible], 'Faiz [illegible]', in [illegible], 30 [illegible] 1994.

51. 'Aaj Bazaar Mein Pa-ba Joulaan Chalo', lyr. Faiz Ahmed Faiz, [illegible]. [illegible] [illegible], [illegible].

52. 1982, [illegible], [illegible]: [illegible] [illegible], [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] in [illegible] [illegible] of [illegible]

53. 1998, Jinnah, dir. Jamil Dehlavi, prod. Jamil Dehlavi, starring [illegible], [illegible], [illegible]

54. 'जिन्ना ऑन द सिल्वरस्क्रीन' देखें, कोलंबिया विश्वविद्यालय, में
<http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00litlinks/naim/txt_naim_onjinnah.pdf 11 जनवरी 2016 को देखा गया।
55. फातिमा यामीन के साथ एक साक्षात्कार में उद्धृत, डॉन, 18 अप्रैल 1999।
56. सुपन वर्मा द्वारा उद्धृत, 'क्रिस्टोफर ली का जिन्ना का किरदार निभाना ऐसा है जैसे
मुकरी प्लेइंग गांधी', रेडिफ, इन <http://www.rediff.com/news/apr/05jinnah.htm>, 8 जनवरी 2015 को देखा गया।
57. ‘ट्रबल्ड जिन्ना मूवी ओपन्स’, बीबीसी, 26 सितंबर 1998।
58. सुपन वर्मा द्वारा उद्धृत, 'क्रिस्टोफर ली का जिन्ना का किरदार निभाना ऐसा है जैसे
मुकरी प्लेइंग गांधी', रेडिफ, इन <http://www.rediff.com/news/apr/05jinnah.htm>, 8 को एक्सेस किया गया
जनवरी 2015।
59. वही।
60. वही।
61. आयशा फैयाजी सरवारी ने क्रिस्टोफर ली के साथ एक साक्षात्कार में कहा,
2001.
62. केविन थॉमस, 'पाकिस्तान के कम ज्ञात नेता जिन्ना को सामने लाना'
'जीवन के लिए', लॉस एंजिल्स टाइम्स, 15 दिसंबर 1998।

63. ‘सिल्वरस्क्रीन पर जिन्ना’, कोलंबिया विश्वविद्यालय, में <http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00litlinks/naim/txt_naim_onjinnah.pdf 11 जनवरी 2016 को देखा गया।
64. पॉल वैलेली, 'क्या जिन्ना संत थे या पापी?', इंडिपेंडेंट, 13 नवंबर 1998।
65. ‘शोक संदेश: क्रिस्टोफर ली’, बीबीसी, 11 जून 2015 में उद्धृत।
66. 1998, साइड स्ट्रीट्स, निर्देशक टोनी गेर्बर, निर्माता ब्रूस वीस, अभिनीत
वेलेरिया गोलिनो, शशि कपूर, शबाना आज़मी।
67. 1996, फायर, निर्देशक: दीपा मेहता, निर्माता: बॉबी बेदी, दीपा मेहता,
शबाना आज़मी, नंदिता दास, जावेद जाफरी अभिनीत।
68. ‘Le Jayenge, Le Jayenge, Dilwale Dulhania Le Jayenge’, lyr. Inderjeet Singh Tulsi, comp. Ravindra Jain, artists Asha Bhosle, Kishore Kumar.
69. 1974, Chor Machaye Shor, dir. Ashok Roy, prod. N.N. Sippy, इसमें शशि कपूर, मुमताज और डैनी डेन्जोंगपा ने अभिनय किया है।
70. 1999, डर्टी ब्रिटिश बॉयज़, निर्देशक: असद राजा, निर्माता: फ़राज़ हुसैन,
इसमें जॉर्ज क्रिस्टोफर, शशि कपूर और असद राजा ने अभिनय किया है।
71. डेविड रूनी, ‘समीक्षा: “साइड स्ट्रीट्स”’, वैरायटी, 7 अक्टूबर
1998.
72. 2003, Kuch Naa Kaho, dir. Rohan Sippy, prod. Ramesh Sippy,

starring Abhishek Bachchan, Aishwarya Rai, Satish Shah.

73. 2008, Thoda Pyaar Thoda Magic, dir. Kunal Kohli, prod. Aditya Chopra, Kunal Kohli, starring Rishi Kapoor, Saif Ali Khan, Rani Mukherjee.

74. [illegible], starring [illegible].

75. 2001, [illegible], [illegible], starring [illegible].

76. 2009, Kaminey, dir. Vishal Bhardwaj, prod. Ronnie Screwvala, [illegible].

77. 2010, Ishqiya, dir. Abhishek Chaubey, prod. Raman Maroo, [illegible].

78. 1999, Aa Ab Laut Chalen, dir. Rishi Kapoor, prod. Rajiv Kapoor, Rishi Kapoor, Randhir Kapoor, starring Rajesh Khanna, Akshaye Khanna, Aishwarya Rai.

[illegible]

[illegible]

जेनिफर केंडल कपूर के जीवन में, कम से कम कुछ समय के लिए, घरेलू जीवन ही सर्वोपरि था। जैसे-जैसे शशि अभिनेता-निर्माता के रूप में अपने करियर में व्यस्त होते गए, जेनिफर ने घर संभालने और अपने तीन बच्चों की परवरिश करने के लिए अभिनेत्री के रूप में अपना पेशा छोड़ दिया।
शायद, 'त्याग दिया' शब्द का चयन उपयुक्त नहीं है, क्योंकि एक साक्षात्कार में जेनिफर कहती हैं कि ऐसा कभी कोई क्षण नहीं था जब वह थिएटर अभिनेत्री के जीवन के प्रति समर्पित न रही हों।

मैंने थिएटर कभी छोड़ा ही नहीं। अगर मुझे तब पता होता कि मैं इतने लंबे समय तक स्टेज से दूर रहूंगी, तो मेरी प्रतिक्रिया बहुत खराब होती। मैं बहुत परेशान हो जाती। मेरे पास अभी भी वह तौलिया है, जिसमें हम मेकअप पोंछने के लिए लिक्विड पैराफिन रखते थे। वह अभी भी मेरे मेकअप बॉक्स में है। बिल्कुल वैसा ही जैसा मैंने अपने आखिरी शो के बाद छोड़ा था। मुझे हमेशा से यह अंधविश्वास रहा है: मुझे लगता था कि अगर मैं इसे धोऊंगी, तो मैं कभी अभिनय नहीं कर पाऊंगी।
फिर.1

थिएटर के प्रति जेनिफर के प्रेम ने ही उन्हें पृथ्वी थिएटर शुरू करने और इसके दैनिक प्रबंधन एवं संचालन की देखरेख करने के

लिए प्रेरित किया। और अभिनय के प्रति उनके प्रेम ने ही उन्हें 36 चौरंगी के साथ लंबे अंतराल के बाद सिनेमा में वापस ला खड़ा किया।
फिल्म को मिली आलोचनात्मक प्रशंसा के बाद, जेनिफर अचानक सुर्खियों में आ गईं और एक अभिनेत्री के रूप में उनका करियर फिर से शुरू हो गया। उन्हें लगातार ऑफर मिलने लगे और जल्द ही, उन्होंने फिल्म 'हीट' में मिसेज सॉन्डर्स की भूमिका निभाई - वह उदास महिला जो हमेशा एक भारतीय नौकर द्वारा छेड़छाड़ किए जाने के डर में रहती थी।
और डस्ट.3 लेकिन अब, जब उसके पास काम करने का समय था, तो उसका स्वास्थ्य उसका साथ देने से इनकार कर रहा था।

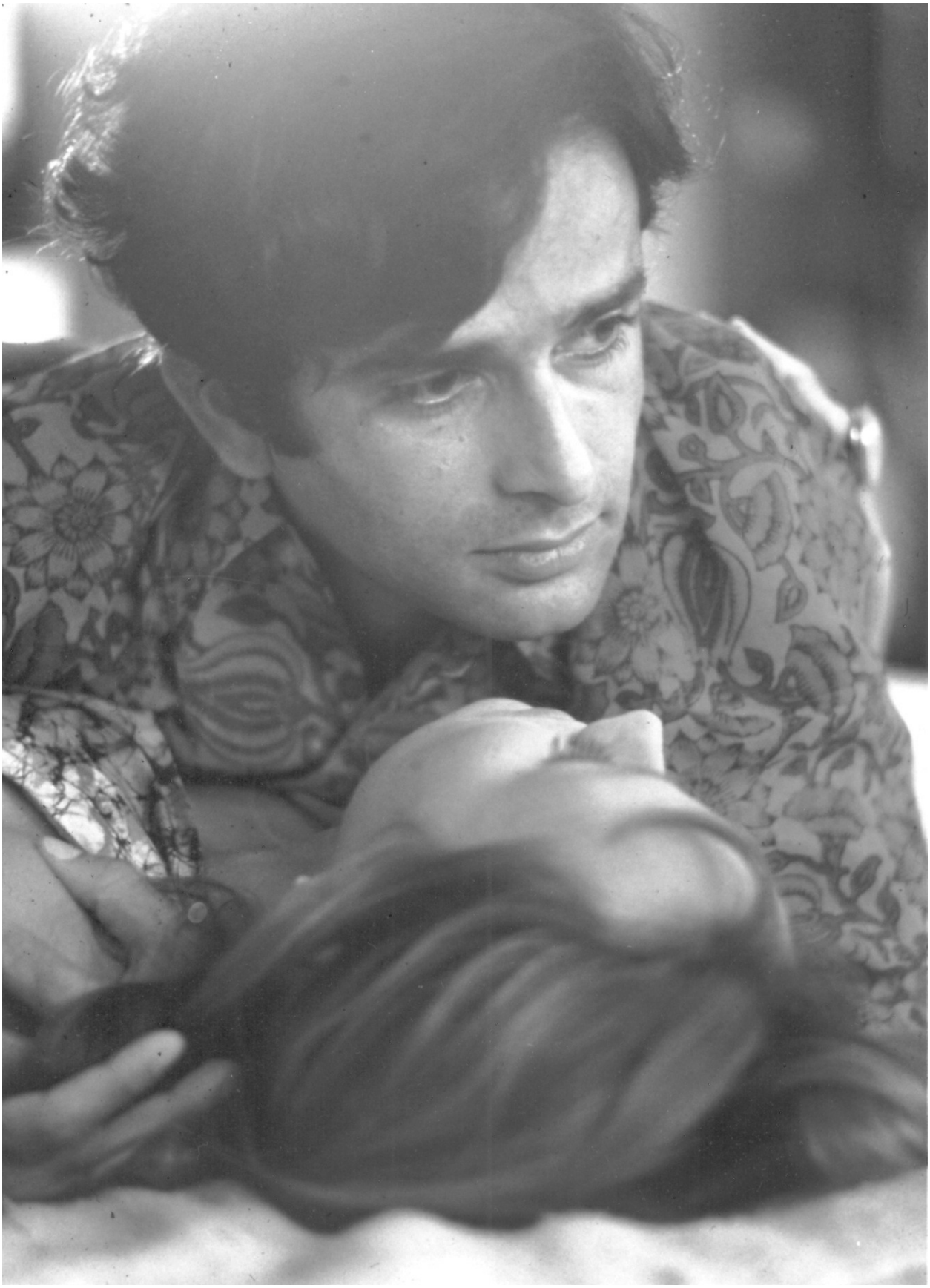

1970, बॉम्बे टॉकी। शशि कपूर एक ब्रिटिश लेखिका के साथ भावुक क्षण में, जिनका किरदार निभाया गया है उनकी पत्नी, जेनिफर केंडल कपूर। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

यह सन् 1983 की बात है। कान फिल्म फेस्टिवल। जेनिफर—जिन्हें तब तक अमीबिक पेचिश से पीड़ित माना जा रहा था—को कैंसर का पता चला। ज्योफ्री केंडल अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि जब उन्हें अपनी बेटी की बीमारी के बारे में पता चला, तो वे लंबे समय तक 'कैंसर' शब्द का उच्चारण नहीं कर पाए; उन्होंने इसे
‘बीमारी’ या ‘यह चीज़’।4
इसी बीच, जेनिफर ने धीरे-धीरे अपनी बीमारी को स्वीकार कर लिया और अनिल धारकर जैसे दोस्तों समेत अपने करीबियों को बताना शुरू कर दिया। अनिल बताते हैं, 'उसने मुझे बताना शुरू किया कि कैसे उन्होंने मुंबई के टाटा मेमोरियल अस्पताल में एक कमरे को वॉलपेपर से सजाने की कोशिश की थी। मैंने उससे पूछा, 'अच्छा, तुम वहाँ क्यों गई थीं?' तो उसने जवाब दिया, 'अनिल, क्या तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा? मुझे कैंसर हो गया है।' बस, यही बात थी। इसी तरह मुझे पता चला।'
निदान के बाद, जेनिफर की भारत में सर्जरी हुई और ऐसा लग रहा था कि वह ठीक हो रही हैं। लेकिन बाद में, लंदन की यात्रा के दौरान और अधिक जांच के बाद, पता चला कि कैंसर फैल गया था। जेनिफर ने अपने अंतिम महीने ब्रिटिश राजधानी में अस्पताल में और अपने माता-पिता के घर पर बिताए।
जेनिफर की मृत्यु से जेफ्री बुरी तरह टूट गया था। जेनिफर उसकी पहली संतान, उसकी लाडली, उसकी लगभग सब कुछ थी। शोकग्रस्त जेफ्री

कहता है: 'इस भयानक क्षति के बारे में मैं न तो बात कर सकता हूँ और न ही लिख सकता हूँ। ऐसा लग रहा था मानो पूरा देश ही तबाह हो गया हो।'
वादा जम गया था।5 उनके साथ-साथ उनकी पत्नी, लौरा लिडेल केंडल को भी कष्ट सहना पड़ा। फेलिसिटी केंडल कहती हैं, 'मेरी माँ उसके बाद कभी पहले जैसी नहीं रहीं। वह पहले बहुत धार्मिक थीं, लेकिन उनका विश्वास डगमगा गया। मानो उनकी ज़िंदगी की रोशनी फीकी पड़ गई हो।' पूरा परिवार बिना किसी सहारे के डगमगाने लगा। फेलिसिटी बताती हैं, 'मेरे माता-पिता साल का आधा समय मेरी बहन के साथ भारत में बिताते थे, लेकिन जब उनकी मृत्यु हो गई, तो उन्हें वापस जाना बहुत दर्दनाक लगा, इसलिए उन्होंने अपना विश्वास खो दिया।
उनका घर और साथ ही जेनिफर भी।
इस बीच, फेलिसिटी—जो कहती हैं, 'अंत में, जेनिफर की एकमात्र चिंता अपने बच्चों के लिए थी'—दुःख से अभिभूत होने की बात याद करती हैं; एक अखबार के साक्षात्कार में, वह अपनी बहन के बारे में कहती हैं: 'हमारी निकटता इसलिए थी क्योंकि हम बचपन से घुमंतू थे, इसलिए हमारे स्थानीय दोस्त नहीं थे। जब [जेनिफर] की मृत्यु हुई, तो यह केवल उनकी मृत्यु की त्रासदी नहीं थी, बल्कि यह स्वार्थी बात भी थी,
मैं ये बात किसे बताऊँ? मैं कोई फैसला नहीं कर पा रही थी।
और फिर थे शशि। जेनिफर के निधन के बाद, देव बेनेगल बताते हैं कि उनकी मुलाकात पृथ्वी थिएटर में आयोजित एक शोक सभा में कुणाल कपूर से हुई: ‘परिवार गोवा से लौटा था और कुणाल ने मुझसे कहा, “पिताजी एक नाव लेकर समुद्र के बीचोंबीच गए थे। जब वे वहाँ पहुँचे, तो पहली बार रोए। सचमुच, वे फूट-फूटकर रोए।”’ देव की तरह, मैं भी उस पल की मार्मिकता से दंग रह गया—शशि, विशाल खुले

समुद्र में अकेले, शोक मना रहे थे। ‘वे जेनिफर की मृत्यु से सचमुच बहुत दुखी थे।’
शोक संवेदनाओं का तांता लग गया और जेनिफर, उस बेहतरीन अभिनेत्री और महान महिला के बारे में प्रेस में खबरें छपीं। 'लेकिन कुछ ही लोगों ने वह देखा था जो हमने देखा था या जिनके पास हमारी यादें थीं,' जेफ्री लिखते हैं। 'लोगों की यादें बहुत कम समय की होती हैं, और ऐसा लगता है कि कोई यह कल्पना भी नहीं करता कि उनके सामने वास्तव में कुछ घटित होता है।'
अपना समय।

जेनिफर केंडल कपूर के निधन के बाद भी शशि कपूर ने काम करना जारी रखा, और उनके कुछ बेहतरीन काम शोक के इस दौर में ही सामने आए। लेकिन उनके अंदर कुछ टूट गया था। 'मुझे लगता है कि जेनिफर की मौत उनके लिए एक बड़ा झटका था।'
हनीफ कुरैशी कहते हैं, जिन्होंने शशि के साथ 9 सैमी और रोजी गेट लेड पर काम किया था।
अपनी पत्नी के निधन के दो साल बाद। 'इससे वह पूरी तरह टूट गया था।'
जेनिफर शशि के जीवन का प्यार थीं, उनका सच्चा सहारा थीं। उनकी मृत्यु के बाद, शशि दिशाहीन हो गए। सिमी गरेवाल मुझे बताती हैं, 'जेनिफर ने उनके व्यक्तित्व का एक बड़ा हिस्सा अपने कब्जे में ले लिया था—या कहें कि शशि ने खुद को उनके हवाले कर दिया था। और वे दोनों एक हो गए थे। जेनिफर के जाने के बाद, शशि संघर्ष करते रहे, लेकिन खुद को नहीं पहचान पाए। उनके व्यक्तित्व का वह विशाल

हिस्सा जो जेनिफर से जुड़ा था—अब खाली पड़ा था। एक शून्य। मैं उनसे लंदन में इस्माइल मर्चेंट के साथ डिनर पर मिली थी और मैंने देखा कि वे संघर्ष कर रहे थे। वे बदल गए थे—वे खुद नहीं थे।' अनिल धारकर, जो हमेशा से उनके मित्र रहे, शशि के भावनात्मक पतन के साक्षी थे। कभी-कभी, अभिनेता उन पर निर्भर रहते थे—ठीक वैसे ही जैसे कभी जेनिफर पर रहे होंगे—अजीबोगरीब सामाजिक परिस्थितियों से निपटने में मदद के लिए—जैसे कि जब सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय उनसे किसी विदेशी अतिथि को रात्रिभोज पर आमंत्रित करने का अनुरोध करता था। अनिल बताते हैं, 'फिर वह मुझे फोन करते और विनती करते: “देखिए, मेरे यहाँ एक बहुत ही उबाऊ अतिथि रात्रिभोज पर आए हैं, क्या आप मेरा साथ देंगे?” और मैं ऐसा करता। लेकिन जब अतिथि चले जाते, तो शशि सचमुच मुझे बाहर धकेल देते।'
फिर, अनिल और शशि के करीबी लोगों ने अभिनेता की शारीरिक हालत बिगड़ते हुए देखी। जेनिफर द्वारा उन पर लगाए गए सख्त अनुशासन के अभाव में, अभिनेता अपनी दो सबसे बड़ी कमजोरियों - खाने और पीने - में लिप्त होने लगे। अनिल को याद है कि वह कभी-कभी दोपहर के भोजन के लिए उनके घर जाते थे और एक गिलास बीयर मांगते थे, लेकिन उन्हें पता चलता था कि शशि सुबह से ही वोदका पी रहे थे। अनिल बताते हैं, 'जैसे ही उनका गिलास खाली होता, उनके नौकर तुरंत दूसरा गिलास ला देते थे। उन्हें पूछने की भी जरूरत नहीं पड़ती थी। उन्हें ठीक-ठीक पता होता था कि उन्हें अपना पेय खत्म करने में कितना समय लगता है और वे अगला गिलास तैयार रखते थे। दोपहर के भोजन के अंत तक, वह पूरी तरह नशे में धुत हो जाते थे।'
अनिल आगे बताते हैं, ‘मैंने कई बार उसे समझाने की कोशिश की। दरअसल, संजना और कुणाल कहते थे, “अरे, कुछ तो करो, वो तुम्हारी

बात सुनता है!” और मैं जवाब देता था, “यह एक ऐसा मामला है जिसमें वो मेरी बात बिल्कुल नहीं सुनता।” तब वे कहते थे, “ज़्यादा बार आओ क्योंकि जब तुम यहाँ होते हो, तो कम से कम वो घूमता तो है। वरना, वो बस बैठा रहता है।” तो मैंने वैसा ही किया।’
जैसे-जैसे शशि दुख और बीमारी के दुष्चक्र में फंसते गए, वे कपूर परिवार के उस कुख्यात सिंड्रोम का शिकार हो गए—यानी बहुत जल्दी और बहुत ज़्यादा वज़न बढ़ जाना। उनका स्वास्थ्य तेज़ी से बिगड़ने लगा। उन्हें एटलस अपार्टमेंट्स छोड़कर जुहू जाना पड़ा, जहाँ उनके बेटे कुणाल उनकी देखभाल कर सकें। मधु जैन बताती हैं, 'इससे उनकी पूरी ज़िंदगी बदल गई।' 'वे दक्षिण मुंबई के रहने वाले थे,' और उनका दावा है कि इस बदलाव ने सितारे के अकेलेपन और बढ़ते अवसाद को और बढ़ा दिया। अनिल आगे कहते हैं, 'मैं कुछ बार जुहू गया था, लेकिन सच में, उन्होंने बहुत कम बोलना शुरू कर दिया था।' सिमी, अपनी विशिष्ट अंतर्दृष्टि के साथ, कहती हैं, 'ऐसा लगता था जैसे शशि ने आंतरिक संघर्ष छोड़ दिया हो। वे लगभग एकांतवासी बन गए थे।'
फिर आया साल 2005। इस्माइल मर्चेंट का निधन हो गया; उनकी उम्र मात्र अड़सठ वर्ष थी। संजना उस शख्स के बारे में कहती हैं, जो उनके परिवार का हिस्सा बन चुका था, 'इस्माइल उन शख्सियतों में से एक थे जिन्हें अमर रहना चाहिए था। उनकी मृत्यु नहीं होनी चाहिए थी। यह सरासर अन्याय था। मुझे खुशी है कि जब मेरे पिताजी को यह खबर मिली, तब मैं उनके साथ थी।'
शशि को जब अपने प्रिय निर्माता के निधन की खबर मिली, तो वह गहरे सदमे में डूब गए; उनका दुख और भी बढ़ गया, मानो एक के बाद एक दुख बढ़ता जा रहा हो। एक साल बाद जब जेम्स आइवरी भारत आए, इस्माइल की कब्र पर श्रद्धांजलि अर्पित की और फिर शशि से मिलने गए—जो

मर्चेंट-आइवरी बैनर के पहले प्रमुख अभिनेता थे—तो उन्होंने पाया कि शशि अब वह सितारा नहीं रहे थे जिन्हें वह जानते थे, बल्कि अपने पुराने रूप की परछाईं मात्र रह गए थे, भावनात्मक रूप से अलग-थलग। जेम्स कहते हैं, 'मैं यह नहीं कह सकता कि यह जेनिफर के निधन के शोक का ही एक रूप था। लेकिन शशि की जवानी ढल चुकी थी, वह बूढ़े होने लगे थे। हमारा आपस में कोई जुड़ाव नहीं रहा।'

शशि कपूर पृथ्वी थिएटर में संगीत में लीन थे। सौजन्य: ज़ोरान साहेर।

बाद में, सिमी ने यश राज फिल्म्स स्टूडियो में एक पुरस्कार समारोह में शशि को देखा—वह स्टार व्हीलचेयर पर थे, उनकी बेटी उनके साथ थीं। जैसे ही सिमी अपने पुराने सह-कलाकार के पास पहुंचीं, संजना कपूर ने उन्हें आगाह किया। सिमी याद करती हैं, “उन्होंने मुझसे कहा, ‘उन्हें स्ट्रोक हुआ है, इसलिए उनका एक हिस्सा लकवाग्रस्त है। उन्हें दिल का दौरा भी पड़ा है और कई अन्य समस्याएं भी हैं। उन्हें लोगों के नाम याद नहीं रहते। इसलिए परेशान मत होना। मैं बस तुम्हें चेतावनी दे रही हूं।’” फिर वह आगे कहती हैं, 'मेरे लिए यह मायने नहीं रखता था कि शशि मुझे याद रखता है या नहीं। मुझे फिर भी उसके पास जाना था। मैं

झुकी, उसके थके हुए चेहरे की ओर देखा। उसकी नज़रें धीरे-धीरे उठीं और मुझ पर टिक गईं। उसने कहा, "हेलो, सिमी!" मुझे हंसी भी आई और रोना भी। फिर, मेरा मन किया कि बस उसे गले लगा लूँ।'
सिमी के बोलते समय ऐसा लगता है मानो मुझे शशि की बातों की गूंज सुनाई दे रही हो।
अंतिम से पहले वाली फिल्म, हाफ़िज़ जालंधरी की कविता:

तरब-फ़िज़ा, आलम-रुबा, असर दान-ए-साज़,
Jigar mein aag de lagaa.
Har ik lab pe ho sadaa, na haath rok saaqiyaa;
Pilaaye jaa, pilaaye jaa, pilaaye jaa—
Abhi to main jawaan hoon.
(गीतकार, रात भर गाते रहो,)
मेरे जीवन में उस आग को फिर से जगाओ।
शराब बनाने वाले, अरे, भाग मत जाना;
हमारे लिए, हमारे लिए, हमारे लिए—
क्योंकि आज रात मैं अभी भी जवान हूँ।

नोट्स
1. सुरेंद्र भाटिया के हवाले से, ‘जेनिफर कपूर हमारी फिल्म से वापस आ गई हैं’
'आर्काइव्स कपूर खानदान में होने के बारे में बात करेंगे', सोसाइटी, 7 जून 2013।
2. 1981, 36 चौरंगी लेन, दिर. अपर्णा सेन, प्रो. शशि
कपूर, जेनिफर केंडल, देबाश्री रॉय, धृतिमान चटर्जी अभिनीत।

3. 1983, हीट एंड डस्ट, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट,
इसमें जूली क्रिस्टी, ग्रेटा स्काची और शशि कपूर ने अभिनय किया है।
4. जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा
(लंदन: सिडगविच एंड जैक्सन, 1986), पृ. 172.
5. वही।
6. रेबेका हार्डी की रचना ‘हाउ माई डार्लिंग सिस्टर्स डेथ’ में उद्धृत।
'मेरी जिंदगी बदल गई: फेलिसिटी केंडल ने बताया कि भारत की वापसी यात्रा ने बचपन की यादों को कैसे ताजा कर दिया', मेल ऑनलाइन, <http://www.dailymail.co.uk/femail/article-2142393/Felicity-केंडल ने खुलासा किया कि भारत की वापसी यात्रा ने उनके बचपन की यादें ताजा कर दीं।
memories.html#ixzz3wwIvYyuZ>, 11 जनवरी 2016 को एक्सेस किया गया।
7. वही।
8. जेफ्री केंडल, द शेक्सपियर वॉलह: एक आत्मकथा
(लंदन: सिडगविच एंड जैक्सन, 1986), पृ. 173.
9. 1987, सैमी और रोजी गेट लेड, निर्देशक: स्टीफन फ्रीर्स, निर्माता: टिम
बेवन, सारा रेडक्लिफ, जिसमें शशि कपूर, फ्रांसिस बार्बर और क्लेयर ब्लूम ने अभिनय किया है।
10. 1998, साइड स्ट्रीट्स, निर्देशक टोनी गेर्बर, निर्माता ब्रूस वीस, अभिनीत
वेलेरिया गोलिनो, शशि कपूर, शबाना आज़मी।

शशि कपूर की फिल्मों की सूची

इस पुस्तक में उल्लिखित शशि कपूर अभिनीत फिल्मों की सूची

1951, Awara, dir. Raj Kapoor, prod. Raj Kapoor, starring Prithviraj Kapoor, Raj Kapoor, Nargis, Shashi Kapoor.

1961, Char Diwari, dir. Krishan Chopra, prod. Jagan Prasad Sharma, starring Shashi Kapoor, Nanda, Manmohan Krishna.

1961, धर्मपुत्र, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत शशि कपूर, माला सिन्हा, रहमान।

1962, प्रेम पत्र, दिर. बिमल रॉय, प्रो. बिमल रॉय, शशि कपूर, साधना, सीमा देव अभिनीत।

1963, द हाउसहोल्डर, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत: शशि कपूर, लीला नायडू, दुर्गा खोटे।
1964, Benazir, dir. S. Khalil, prod. Bimal Roy, starring Ashok Kumar, Meena Kumari, Shashi Kapoor.

1965, Jab Jab Phool Khile, dir. Suraj Prakash, prod. Chetan K., starring Shashi Kapoor, Nanda, Agha.
1965, Mohabbat Isko Kahete Hain, dir. Akhtar Mirza, starring Nanda, Shashi Kapoor, Ramesh Deo.

1965, शेक्सपियर वॉलह, निर्देशक जेम्स आइवरी, निर्माता इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत शशि कपूर, फेलिसिटी केंडल, मधुर जाफरी।

1965, समय, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत बलराज साहनी, शर्मिला टैगोर, शशि कपूर।

1966, Pyar Kiye Jaa, dir. C.V. Sridhar, starring Shashi Kapoor, Kalpana, Mumtaz.

1967, आमने-सामने, दिर. सूरज प्रकाश, प्रो. सूरज प्रकाश, शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, प्रेम चोपड़ा अभिनीत।

1967, प्रीटी पॉली, निर्देशक: गाय ग्रीन, निर्माता: जॉर्ज डब्ल्यू जॉर्ज, फ्रैंक ग्रैनट, अभिनीत: हेले मिल्स, शशि कपूर, ट्रेवर हॉवर्ड।

1968, Haseena Maan Jayegi, dir. Prakash Mehra, prod. S.M. Abbas, starring Shashi Kapoor, Babita, Johnny Walker.

1969, Pyar Ka Mausam, dir. Nasir Hussain, prod. Nasir Hussain, starring Shashi Kapoor, Asha Parekh, Bharat Bhushan.

1970, बॉम्बे टॉकी, निर्देशक: जेम्स आइवरी, निर्माता: इस्माइल मर्चेंट, अभिनीत: शशि कपूर, जेनिफर केंडल, जिया मोहियुद्दीन।

1970, सुहाना सफ़र, दिर. विजय, प्रो. आर.सी. कुमार, अभिनीत शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, ललिता पवार।

1971, शर्मीली, दिर. समीर गांगुली, प्रो. सुबोध मुखर्जी, शशि कपूर, राखी, नज़ीर हुसैन अभिनीत।

1972, Siddhartha, dir. Conrad Rooks, prod. Conrad Rooks, starring Shashi Kapoor, Simi Garewal, Romesh Sharma.

1973, आ गले लग जा, दिर। मनमोहन देसाई, प्रो. ए.के. नाडियाडवाला, शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, शत्रुघ्न सिन्हा अभिनीत।
1974, Chor Machaye Shor, dir. Ashok Roy, prod. N.N. Sippy, starring Shashi Kapoor, Mumtaz, Danny Denzongpa.

1974, Paap Aur Punya, dir. Prayag Raj, prod. Shyam Kumar Shivdasani, starring Shashi Kapoor, Sharmila Tagore, Aruna Irani.

1974, Roti Kapada Aur Makaan, dir. Manoj Kumar, prod. Manoj Kumar, starring Manoj Kumar, Shashi Kapoor, Amitabh Bachchan, Zeenat Aman.

1974, साक्षी, दिर. राज मार्ब्रोस, अभिनीत शशि कपूर, राखी, उत्पल दत्त।

1975, Deewaar, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Neetu Singh, Parveen Babi.

1976, फकीरा, दिर. सी.पी. दीक्षित, प्रो. एन.एन. सिप्पी, शशि कपूर, शबाना आज़मी, डैनी डेन्जोंगपा अभिनीत।

1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.

1977, दूसरा आदमी, दिर. रमेश तलवार, प्रो. यश चोपड़ा, ऋषि कपूर, राखी, शशि कपूर, नीतू सिंह अभिनीत।

1977, Immaan Dharam, dir. Desh Mukherjee, prod. Premji, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha.
1978, Junoon, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Shabana Azmi, Jennifer Kendal.

1978, Satyam Shivam Sundaram, dir. Raj Kapoor, prod. Raj Kapoor, starring Shashi Kapoor, Zeenat Aman, Padmini Kolhapure.

1978, Trishul, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Hema Malini, Raakhee.

1979, Gautam Govinda, dir. Subhash Ghai, prod. Shyam Sunder Shivdasani, starring Shashi Kapoor, Shatrughan Sinha, Moushumi Chatterjee.

1979, Kaala Patthar, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Shatrughan Sinha, Neetu Singh, Parveen Babi.
1979, Suhaag, dir. Manmohan Desai, prod. Rajinder Kumar Sharma, Shakti Subhash Sharma, Prakash Trehan, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Rekha, Parveen Babi.
1980, □□□, □□□. □□□□ □□□□□□, □□□□. □□.□□. □□□□□□, □□□□□□ □□□□□ □□□□, □□□□□□ □□□□□, □□□ □□□□, □□□□, □□□□□ □□□□□

1981, Kalyug, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Raj Babbar.

1981, Silsila, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha, Jaya Bhaduri.

1982, Namak Halaal, dir. Prakash Mehra, prod. Satyendra Pal, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Smita Patil, Waheeda Rehman, Parveen Babi.

1982, Vijeta, dir. Govind Nihalani, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Kunal Kapoor.

1983, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]

1986, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]

1987, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible],

1999, डर्टी ब्रिटिश बॉयज़, निर्देशक: असद राजा, निर्माता: फ़राज़ हुसैन, अभिनीत: जॉर्ज क्रिस्टोफ़र, शशि कपूर, असद राजा।

इस सूची में शशि कपूर द्वारा निर्मित फिल्मों का उल्लेख किया गया है।
Book 1978, Junoon, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Shabana Azmi, Jennifer Kendal.

1981, 36 चौरंगी लेन, दिर. अपर्णा सेन, प्रो. शशि कपूर, जेनिफर केंडल, देबाश्री रॉय, धृतिमान चटर्जी अभिनीत।

1981, Kalyug, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Raj Babbar.

1982, Vijeta, dir. Govind Nihalani, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Kunal Kapoor.

1984, Utsav, dir. Girish Karnad, prod. Shashi Kapoor, starring Shekhar Suman, Rekha, Shashi Kapoor.

1991, Ajooba, dir. Shashi Kapoor, prod. Shashi Kapoor, starring Amitabh Bachchan, Rishi Kapoor, Dimple Kapadia.

इस सूची में शशि कपूर द्वारा निर्देशित एकमात्र फिल्म का उल्लेख किया गया है।
किताब

1991, Ajooba, dir. Shashi Kapoor, prod. Shashi Kapoor, starring Amitabh Bachchan, Rishi Kapoor, Dimple Kapadia.

□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□, □□□□□□ □□□□ □□□ □□-□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□

Amitabh Bachchan

1974, Roti Kapada Aur Makaan, dir. Manoj Kumar, prod. Manoj Kumar, starring Manoj Kumar, Shashi Kapoor, Amitabh Bachchan, Zeenat Aman.

1975, Deewaar, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Neetu Singh, Parveen Babi.

1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.

1977, Immaan Dharam, dir. Desh Mukherjee, prod. Premji, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha.

1978, Trishul, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Hema Malini, Raakhee.

1979, Ahsaas, dir. Surindara Suri, prod. G.P. Sippy, starring Shashi Kapoor, Simi Garewal, Amitabh Bachchan.

1979, Kaala Patthar, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Shatrughan Sinha, Neetu Singh, Parveen Babi.

1979, Suhaag, dir. Manmohan Desai, prod. Rajinder Kumar Sharma, Shakti Subhash Sharma, Prakash Trehan, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Rekha, Parveen Babi.

1980, Do Aur Do Paanch, dir. Rakesh Kumar, prod. C. Dhandayuthapani, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Hema Malini, Parveen Babi.

1980, □□□, □□□. □□□□ □□□□□□, □□□□. □□.□□. □□□□□□, □□□□□□ □□□□□ □□□□, □□□□□□ □□□□□, □□□ □□□□, □□□□, □□□□□ □□□□□

1981, Silsila, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha, Jaya Bhaduri.

1982, Namak Halaal, dir. Prakash Mehra, prod. Satyendra Pal, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Smita Patil, Waheeda Rehman, Parveen Babi.

1991, Akayla, dir. Ramesh Sippy, prod. Mohammad Riaz, Mushir Alam, starring Amitabh Bachchan, Amrita Singh, Shashi Kapoor.

Asha Parekh

1968, Kanyadaan, dir. Mohan Segal, prod. Rajendra Bhatia, starring Asha Parekh, Shashi Kapoor, Bela Bose.

1969, Pyar Ka Mausam, dir. Nasir Hussain, prod. Nasir Hussain, starring Shashi Kapoor, Asha Parekh, Bharat Bhushan.

□□□□□

1968, Haseena Maan Jayegi, dir. Prakash Mehra, prod. S.M. Abbas, starring Shashi Kapoor, Babita, Johnny Walker.
1969, Ek Shriman Ek Shrimati, dir. Bhappi Sonie, prod. Surinder Kapoor, starring Shashi Kapoor, Babita, Prem Chopra.

□□□□ □□□□□□

1969, Jahan Pyar Mile, dir. Lekh Tandon, prod. Lekh Tandon, starring Shashi Kapoor, Hema Malini, Nadira.

1970, □□□□□□□□□□, □□□. □□□□□ □□□□□□□, □□□□. □□□□□ □□□□□□□, □□□ □□□□, □□□□ □□□□□□, □□□ □□□□□□□ □□□□□□□

1976, Aap Beati, dir. Mohan Kumar, prod. Mohan Kumar, starring Shashi Kapoor, Hema Malini, Ashok Kumar.

1976, □□□ □□□ □□□□□, □□□. □□□□□ □□□ □□□□□□, □□□□. □□□□□□□ □□□□, □□□ □□□□, □□□□ □□□□□□, □□□□ □□□□□□ □□□□□□□

1978, Apna Khoon, dir. Babbar Subhash, prod. S.K. Kapur, starring Shashi Kapoor, Hema Malini, Ashok Kumar.

1978, Trishul, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Hema Malini, Raakhee.

1980, Do Aur Do Paanch, dir. Rakesh Kumar, prod. C. Dhandayuthapani, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Hema Malini, Parveen Babi.

1981, Kranti, dir. Manoj Kumar, prod. Manoj Kumar, starring Shashi Kapoor, Dilip Kumar, Hema Malini, Parveen Babi.
1981, Krodhi, dir. Subhash Ghai, prod. Ranjit Virk, starring Shashi Kapoor, Zeenat Aman, Hema Malini.

1981, Maan Gaye Ustad, dir. Shibu Mitra, prod. S.K. Kapur, starring Shashi Kapoor, Hema Malini, Amjad Khan.

1985, Aandhi-Toofan, dir. Babbar Subhash, prod. Pahlaj Nihalani, starring Shashi Kapoor, Hema Malini, Danny Denzongpa.

1987, Anjaam, dir. T. Hariharan, prod. Ramesh Tiwari, starring Shashi Kapoor, Hema Malini, Satish Shah.
□□□□ □□□□□□

1964, Benazir, dir. S. Khalil, prod. Bimal Roy, starring Ashok Kumar, Meena Kumari, Shashi Kapoor.

□□□□□□

1974, Chor Machaye Shor, dir. Ashok Roy, prod. N.N. Sippy, starring Shashi Kapoor, Mumtaz, Danny Denzongpa.

1975, Prem Kahani, dir. Raj Khosla, prod. Lekhraj Khosla, starring Rajesh Khanna, Shashi Kapoor, Mumtaz.

□□□□

1961, Char Diwari, dir. Krishan Chopra, prod. Jagan Prasad Sharma, starring Shashi Kapoor, Nanda, Manmohan Krishna.

1962, Mehndi Lagi Mere Haath, dir. Suraj Prakash, prod. Hiren Khera, starring Ashok Kumar, Nanda, Shashi Kapoor.

1965, Jab Jab Phool Khile, dir. Suraj Prakash, prod. Chetan K., starring Shashi Kapoor, Nanda, Agha.

1965, Mohabbat Isko Kahete Hain, dir. Akhtar Mirza, starring Nanda, Shashi Kapoor, Ramesh Deo.

1966, Neend Hamari Khwab Tumhare, dir. Shiv Sahni, prod. Hans Choudhary, starring Shashi Kapoor, Nanda, Balraj Sahni.

1968, Juari, dir. Suraj Prakash, prod. Nirmal Sirkar, starring Shashi Kapoor, Nanda, Tanuja.

1969, Raja Saab, dir. Suraj Prakash, prod. Limelight, starring Shashi Kapoor, Nanda, Kamal Kapoor.
1970, रूठा ना करो, दिर. सुन्दर दार, प्रोड. बिश्वनाथ प्रसाद शाहाबादी, अभिनीत शशि कपूर, नंदा, कुमारी नाज़।

नीतू सिंह 1975, दीवार, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. गुलशन राय, अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, नीतू सिंह, परवीन बाबी अभिनीत।

1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.

1976, Shankar Dada, dir. Shibu Mitra, prod. S.K. Kapur, starring Shashi Kapoor, Neetu Singh, Ashok Kumar.

1977, दूसरा आदमी, दिर. रमेश तलवार, प्रो. यश चोपड़ा, ऋषि कपूर, राखी, शशि कपूर, नीतू सिंह अभिनीत।

1978, हीरालाल पन्नालाल, दिर. अशोक राय, प्रो. अशोक रॉय, शशि कपूर, जीनत अमान, नीतू सिंह अभिनीत।

1979, Duniya Meri Jeb Mein, dir. Tinnu Anand, prod. Bitu Anand, Naresh Malhotra, starring Rishi Kapoor, Shashi Kapoor, Neetu Singh.

1979, Kaala Patthar, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Shatrughan Sinha, Neetu Singh, Parveen Babi.

1980, काला पानी, दिर. शिबू मित्रा, प्रो. बी. गुप्ता, अभिनीत शशि कपूर, नीतू सिंह, अजीत।
1981, Ek Aur Ek Gyarah, dir. Ashok Roy, starring Shashi Kapoor, Neetu Singh, Vinod Khanna.

1982, दो गुरु, दिर. रवि टंडन, मुख्य भूमिका में शशि कपूर, नीतू सिंह, प्राण।

परवीन बाबी

1975, Deewaar, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Neetu Singh, Parveen Babi.

1978, आहुति, दिर. अशोक वी. भूषण, प्रो. रामचंद बशोमल, रीता शाह, आर सोनी, राजेंद्र कुमार, शशि कपूर, परवीन बाबी अभिनीत।

1979, चोर सिपाही, दिर. प्रयाग राज, प्रो. श्याम सुंदर शिवदासानी, शशि कपूर, परवीन बाबी, शबाना आज़मी अभिनीत।

1979, Kaala Patthar, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Shatrughan Sinha, Neetu Singh, Parveen Babi.

1979, Suhaag, dir. Manmohan Desai, prod. Rajinder Kumar Sharma, Shakti Subhash Sharma, Prakash Trehan, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Rekha, Parveen Babi.

1980, Do Aur Do Paanch, dir. Rakesh Kumar, prod. C. Dhandayuthapani, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Hema Malini, Parveen Babi.

1980, शान, दिर. रमेश सिप्पी, प्रो. जी.पी. सिप्पी, अभिनीत सुनील दत्त, अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, राखी, परवीन बाबी।

1981, Kranti, dir. Manoj Kumar, prod. Manoj Kumar, starring Shashi Kapoor, Dilip Kumar, Hema Malini, Parveen Babi.

1982, Namak Halaal, dir. Prakash Mehra, prod. Satyendra Pal, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Smita Patil, Waheeda Rehman, Parveen Babi.

1983, दुर्देश, दिर. अंबरीश संगल, प्रो. शमीम अहमद, जगदीश भरूस, शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, परवीन बाबी अभिनीत।

Raakhee

1971, शर्मीली, दिर. समीर गांगुली, प्रो. सुबोध मुखर्जी, शशि कपूर, राखी, नज़ीर हुसैन अभिनीत।

1972, Jaanwar Aur Insaan, dir. Tapi Chanakya, prod. Sandow M.M.A. Chinnappa Devar, starring Shashi Kapoor, Raakhee, Shabnam.
1974, साक्षी, दिर. राज मार्ब्रोस, अभिनीत शशि कपूर, राखी, उत्पल दत्त।

1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.

1977, दूसरा आदमी, दिर. रमेश तलवार, प्रो. यश चोपड़ा, ऋषि कपूर, राखी, शशि कपूर, नीतू सिंह अभिनीत।

1978, तृष्णा, दिर. अनिल गांगुली, प्रो. जी.पी. सिप्पी, शशि कपूर, संजीव कुमार, राखी अभिनीत।
1978, Trishul, dir. Yash Chopra, prod. Gulshan Rai, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Hema Malini, Raakhee.

1980, शान, दिर. रमेश सिप्पी, प्रो. जी.पी. सिप्पी, अभिनीत सुनील दत्त, अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, राखी, परवीन बाबी।

1981, बसेरा, दिर. रमेश तलवार, प्रो. रमेश बहल, शशि कपूर, राखी, रेखा अभिनीत।

1983, बंधन कच्चे धागों का, दिर। अनिल शर्मा, प्रो. के.सी. शर्मा, शशि कपूर, राखी, जीनत अमान अभिनीत।

1984, बंद होंथ, दिर. राज मार्ब्रोस, अभिनीत उत्पल दत्त, शशि कपूर, राखी।

1984, ज़मीन आसमान, दिर. भरत रंगाचारी, प्रो. सुभाष गुप्ता, उदय नारायण सिंह, शशि कपूर, राखी, रेखा अभिनीत।

1985, Pighalta Aasman, dir. Shammi, prod. Shammi, starring Shashi Kapoor, Raakhee, Rati Agnihotri.

रेखा

1977, □□□□□ □□ □□□□□, □□□. □□□□ □□□, □□□□. □□.□□□□□ □□□□□, □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□, □□□□, □□□□□□

1977, □□□□□□□ □□ □□□□□, □□□. □□.□□. □□□□□□, □□□□□. □□□□□□ □□□, □□. □□□□□□, □□□ □□□□, □□□□, □□□□□ □□□□□□□

1977, Immaan Dharam, dir. Desh Mukherjee, prod. Premji, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha.

1978, Do Musafir, dir. Devendra Goel, prod. Syed Anwar Hussain, R.N. Kumar, Shashikant Shah, starring Shashi Kapoor, Rekha, Ashok Kumar.

1978, Muqaddar, dir. Ravi Tandon, starring Shashi Kapoor, Rekha, Amjad Khan.

1978, Rahu Ketu, dir. B.R. Ishara, prod. B.D. Pandey, starring Shashi Kapoor, Rekha, Bindu.

1979, Suhaag, dir. Manmohan Desai, prod. Rajinder Kumar Sharma, Shakti Subhash Sharma, Prakash Trehan, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Rekha, Parveen Babi.

1980, Kali Ghata, dir. Ved Rahi, prod. Ved Rahi, starring Shashi Kapoor, Rekha, Danny Denzongpa.

1980, Neeyat, dir. Anil Ganguly, prod. Veer Jain, Tutu Sharma, starring Shashi Kapoor, Rekha, Jeetendra.

1981, □□□□□, □□□. □□□□ □□□□□, □□□□. □□□□ □□□, □□□ □□□□, □□□□, □□□□ □□□□□□□

1981, Kalyug, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Raj Babbar.

1981, Silsila, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Rekha, Jaya Bhaduri.

1982, Vijeta, dir. Govind Nihalani, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Rekha, Kunal Kapoor.

1984, Utsav, dir. Girish Karnad, prod. Shashi Kapoor, starring Shekhar Suman, Rekha, Shashi Kapoor.
1984, □□□□□ □□□□□, □□□. □□□ □□□□□□□□, □□□□. □□□□□ □□□□□□, □□□ □□□□□□ □□□□, □□□ □□□□, □□□□, □□□□ □□□□□□□

1987, Ijaazat, dir. Gulzar, prod. R.K. Gupta, starring Rekha, Naseeruddin Shah, Shashi Kapoor.

1987, Pyar Ki Jeet, dir. Saawan Kumar Tak, prod. Saawan Kumar Tak, starring Shashi Kapoor, Rekha, Vinod Mehra.

1989, Clerk, dir. Manoj Kumar, prod. Manoj Kumar, starring Manoj Kumar, Rekha, Shashi Kapoor.

ऋषि कपूर

1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.
1977, दूसरा आदमी, दिर. रमेश तलवार, प्रो. यश चोपड़ा, ऋषि कपूर, राखी, शशि कपूर, नीतू सिंह अभिनीत।

1979, Duniya Meri Jeb Mein, dir. Tinnu Anand, prod. Bitu Anand, Naresh Malhotra, starring Rishi Kapoor, Shashi Kapoor, Neetu Singh.

साधना

1962, प्रेम पत्र, दिर. बिमल रॉय, प्रो. बिमल रॉय, शशि कपूर, साधना, सीमा देव अभिनीत।

शबाना आज़मी

1976, फकीरा, दिर. सी.पी. दीक्षित, प्रो. एन.एन. सिप्पी, शशि कपूर, शबाना आज़मी, डैनी डेन्जोंगपा अभिनीत।

1977, Hira Aur Patthar, dir. Vijay Bhatt, prod. Arun Bhatt, Kishore Vyas, starring Ashok Kumar, Shashi Kapoor, Shabana Azmi.

1978, Atithee, dir. Aravind Sen, prod. Anita Sen, Aravind Sen, starring Shashi Kapoor, Shabana Azmi, Shatrughan Sinha. 1978, Junoon, dir. Shyam Benegal, prod. Shashi Kapoor, starring Shashi Kapoor, Shabana Azmi, Jennifer Kendal.

1979, चोर सिपाही, दिर. प्रयाग राज, प्रो. श्याम सुंदर शिवदासानी, शशि कपूर, परवीन बाबी, शबाना आज़मी अभिनीत।

1989, Oonch Neech, dir. Wasi Khan, prod. Jagdish Varma, starring Shashi Kapoor, Shabana Azmi, Sanjeev Kumar.

1993, इन कस्टडी, निर्देशक: इस्माइल मर्चेंट, निर्माता: वाहिद चौहान, अभिनीत: शशि कपूर, शबाना आज़मी, ओम पुरी।

1998, साइड स्ट्रीट्स, निर्देशक टोनी गेर्बर, निर्माता ब्रूस वीस, अभिनीत वैलेरिया गोलिनो, शशि कपूर, शबाना आज़मी।

शर्मिला टैगोर

1965, समय, दिर. यश चोपड़ा, प्रो. बी.आर. चोपड़ा, अभिनीत बलराज साहनी, शर्मिला टैगोर, शशि कपूर।

1967, आमने-सामने, दिर. सूरज प्रकाश, प्रो. सूरज प्रकाश, शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, प्रेम चोपड़ा अभिनीत।

1970, My Love, dir. S. Sukhdev, starring Shashi Kapoor, Sharmila Tagore, Rajendra Nath.

1970, सुहाना सफ़र, दिर. विजय, प्रो. आर.सी. कुमार, अभिनीत शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, ललिता पवार।

1973, आ गले लग जा, दिर। मनमोहन देसाई, प्रो. ए.के. नाडियाडवाला, शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, शत्रुघ्न सिन्हा अभिनीत।

1974, Paap Aur Punya, dir. Prayag Raj, prod. Shyam Kumar Shivdasani, starring Shashi Kapoor, Sharmila Tagore, Aruna Irani.

1975, Anari, dir. Asit Sen, prod. Satish Bhatia, Inder Kapoor, starring Shashi Kapoor, Sharmila Tagore, Kabir Bedi.

1983, दुर्देश, दिर. अंबरीश संगल, प्रो. शमीम अहमद, जगदीश भरूस, शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, परवीन बाबी अभिनीत।

1986, नई दिल्ली टाइम्स, निर्देशक रमेश शर्मा, निर्माता पी.के. तिवारी, कलाकार शशि कपूर, शर्मिला टैगोर, ओम पुरी।

1986, □□□□□□, □□□. □□□□□□□ □□□□□, □□□□. □□.□□. □□□□□□, □□□ □□□□, □□□□□□□ □□□□□, □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□

□□□□ □□□□□□

1972, Siddhartha, dir. Conrad Rooks, prod. Conrad Rooks, starring Shashi Kapoor, Simi Garewal, Romesh Sharma.

1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.

1979, Ahsaas, dir. Surindara Suri, prod. G.P. Sippy, starring Shashi Kapoor, Simi Garewal, Amitabh Bachchan.
□□□□□ □□□□□

1976, Kabhi Kabhie, dir. Yash Chopra, prod. Yash Chopra, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Raakhee, Simi Garewal, Waheeda Rehman, Rishi Kapoor, Neetu Singh.

1982, Namak Halaal, dir. Prakash Mehra, prod. Satyendra Pal, starring Amitabh Bachchan, Shashi Kapoor, Smita Patil, Waheeda Rehman, Parveen Babi.
1982, Sawaal, dir. Ramesh Talwar, prod. Yash Chopra, starring Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Waheeda Rehman.

ज़ीनत अमान

1974, Roti Kapada Aur Makaan, dir. Manoj Kumar, prod. Manoj Kumar, starring Manoj Kumar, Shashi Kapoor, Amitabh Bachchan, Zeenat Aman.

1976, दीवानगी, दिर. समीर गांगुली, प्रो. सुबोध मुखर्जी, शशि कपूर, जीनत अमान, हेलेन अभिनीत।

1978, हीरालाल पन्नालाल, दिर. अशोक राय, प्रो. अशोक रॉय, शशि कपूर, जीनत अमान, नीतू सिंह अभिनीत।

1978, Satyam Shivam Sundaram, dir. Raj Kapoor, prod. Raj Kapoor, starring Shashi Kapoor, Zeenat Aman, Padmini Kolhapure.

1981, Krodhi, dir. Subhash Ghai, prod. Ranjit Virk, starring Shashi Kapoor, Zeenat Aman, Hema Malini.

1983, बंधन कच्चे धागों का, दिर। अनिल शर्मा, प्रो. के.सी. शर्मा, शशि कपूर, जीनत अमान, राखी अभिनीत।

1984, Pakhandi, dir. Samir Ganguly, prod. Robert D’Souza, starring Shashi Kapoor, Sanjeev Kumar, Zeenat Aman.

1985, Bhavani Junction, dir. H. Dinesh, prod. Deepak S. Shivdasani, starring Shashi Kapoor, Shatrughan Sinha, Zeenat Aman.

1986, Aurat, dir. B.R. Ishara, prod. Sunil Bohra, starring Zeenat Aman, Shashi Kapoor, Shakti Kapoor.

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

मैं करण जौहर के भावपूर्ण प्रस्तावना के लिए और स्पंदन के प्रति आभारी हूं।
सुंदर कवर डिजाइन करने के लिए बनर्जी को धन्यवाद।
मैं उन सभी लोगों का भी आभारी हूं जिन्होंने मुझे सलाह दी और मुझे भेजा।
जब मैं यह पुस्तक लिख रहा था तो शोध सामग्री और डीवीडी, संपर्क जानकारी साझा की और यहां तक कि साक्षात्कार भी संभव बनाया- धीरज अकोलकर, पराग और बेला अमलदी, पीटर बेकर, मीनल बाघल, गिरिमोहन कोनेटी, ज़ेटे एम्मन्स, ज़ाकिर हुसैन, अमित खन्ना, रोंजिता कुलकर्णी, अमिताव कुमार, निखिल लक्ष्मण, राजीव मसंद, टिम मैकहेनरी, अमिताव नाग, प्रीतीश नंदी, अवतार पनेसर, राम रहमान, वैभव राजपूत, ज़ोरान साहेर, जिंजर शंकर, अरुण शिवदासानी, श्री श्रीनिवासन और सुफला।
पुस्तक के कुछ हिस्सों को गर्मियों के दौरान लिखा और शोध किया गया था।
2015 में, जब मेरी माँ नोएडा के एक अस्पताल में भर्ती थीं और मुझे अपने काम पर ध्यान देने का समय मिला। मैं अपने चचेरे भाई-बहनों, राकेश और सोनल पोपली का आभारी हूँ, जिन्होंने उन दिनों और बाद में शरद ऋतु में, जब मैं उनके अपार्टमेंट के बगल में रहने चला गया, मुझे भोजन उपलब्ध कराया।
मैं अपनी लेखिका और अभिनेत्री मित्र रूपलीना बोस की आभारी हूँ, जिन्होंने
इस किताब का शीर्षक मुझे सुझाया था। और मेरे दोस्त, गिरिमोहन कोनेटी, जिन्होंने मुझे ब्रुकलिन स्थित अपने अपार्टमेंट में कई हफ्तों तक रहने दिया, जहाँ मैंने शशि की कई फिल्में देखीं।

मैं मेघा भौरस्कर को शशि के प्रति उनके जुनून को साझा करने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ।
कपूर मेरे साथ हैं।
और अंत में, देव बेनेगल को धन्यवाद, जो मुझे हमेशा नवीनतम जानकारी से अवगत कराते रहते हैं।
मुंबई के फिल्म उद्योग की कहानियां।

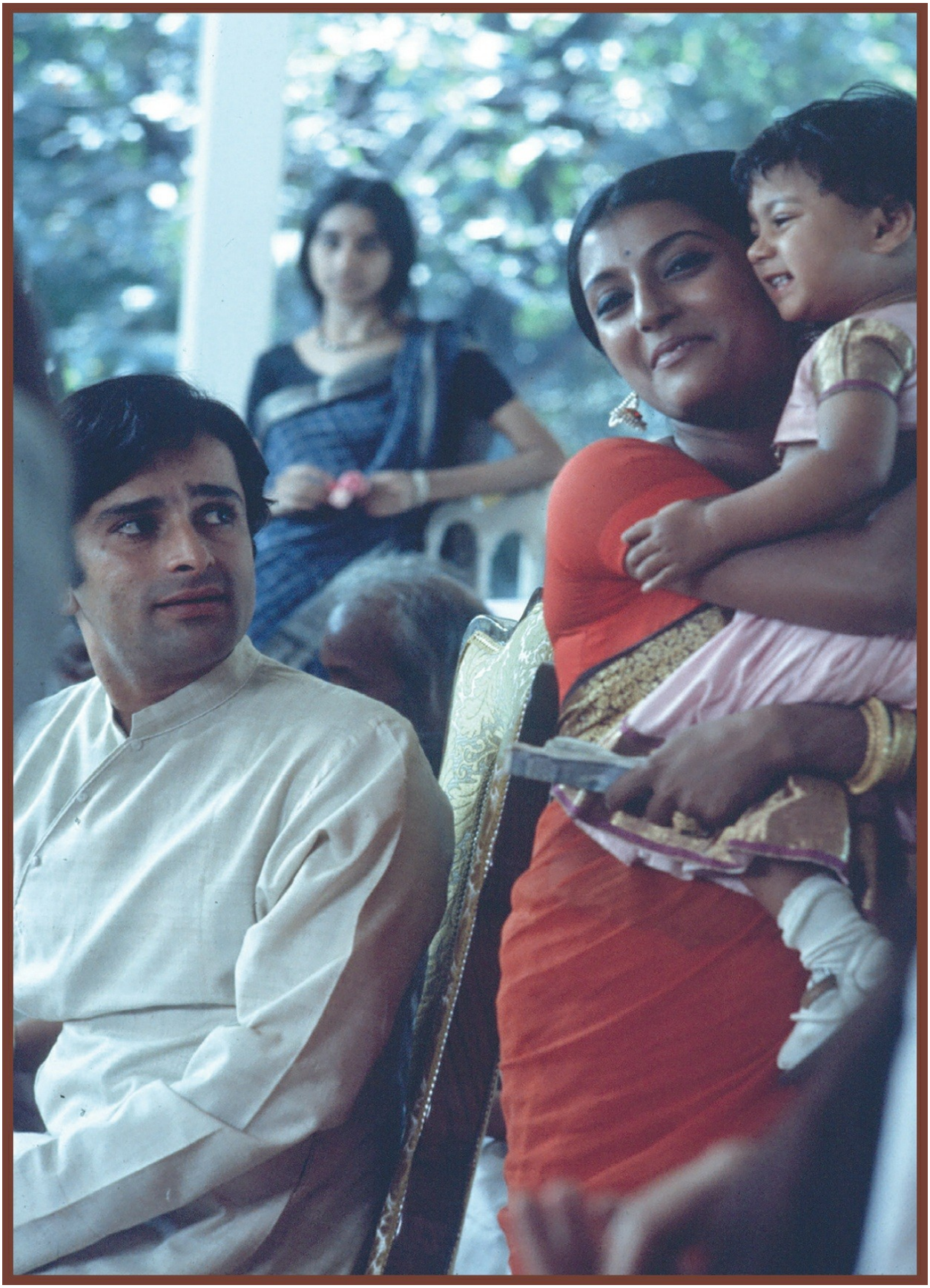

1970, बॉम्बे टॉकी। शशि कपूर की फिल्म विक्रम, जिसमें उनकी पत्नी माला का किरदार अपर्णा सेन ने निभाया था, का दृश्य फिल्माया गया था। शशि कपूर आगे चलकर अपर्णा की पहली निर्देशित फिल्म 36 चौरंगी लेन (1981) के निर्माता बनेंगे। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

1972, सिद्धार्थ। कॉनरैड रूक्स की फिल्म में पिंचू कपूर (व्यापारी कामास्वामी के रूप में) और शशि कपूर (मुख्य भूमिका में) हरमन हेस के प्रसिद्ध उपन्यास पर आधारित हैं। सौजन्य: अलेक्जेंडर रूक्स/लोटस फिल्म्स।

1978, जुनून। शशि कपूर का पहला प्रोडक्शन, श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित: 1857 की एक कहानी जिसमें एक विवाहित मुस्लिम व्यक्ति, जावेद खान (शशि कपूर) एक युवा एंग्लो-इंडियन महिला के प्यार में पड़ जाता है।
Courtesy: Shyam Benegal.

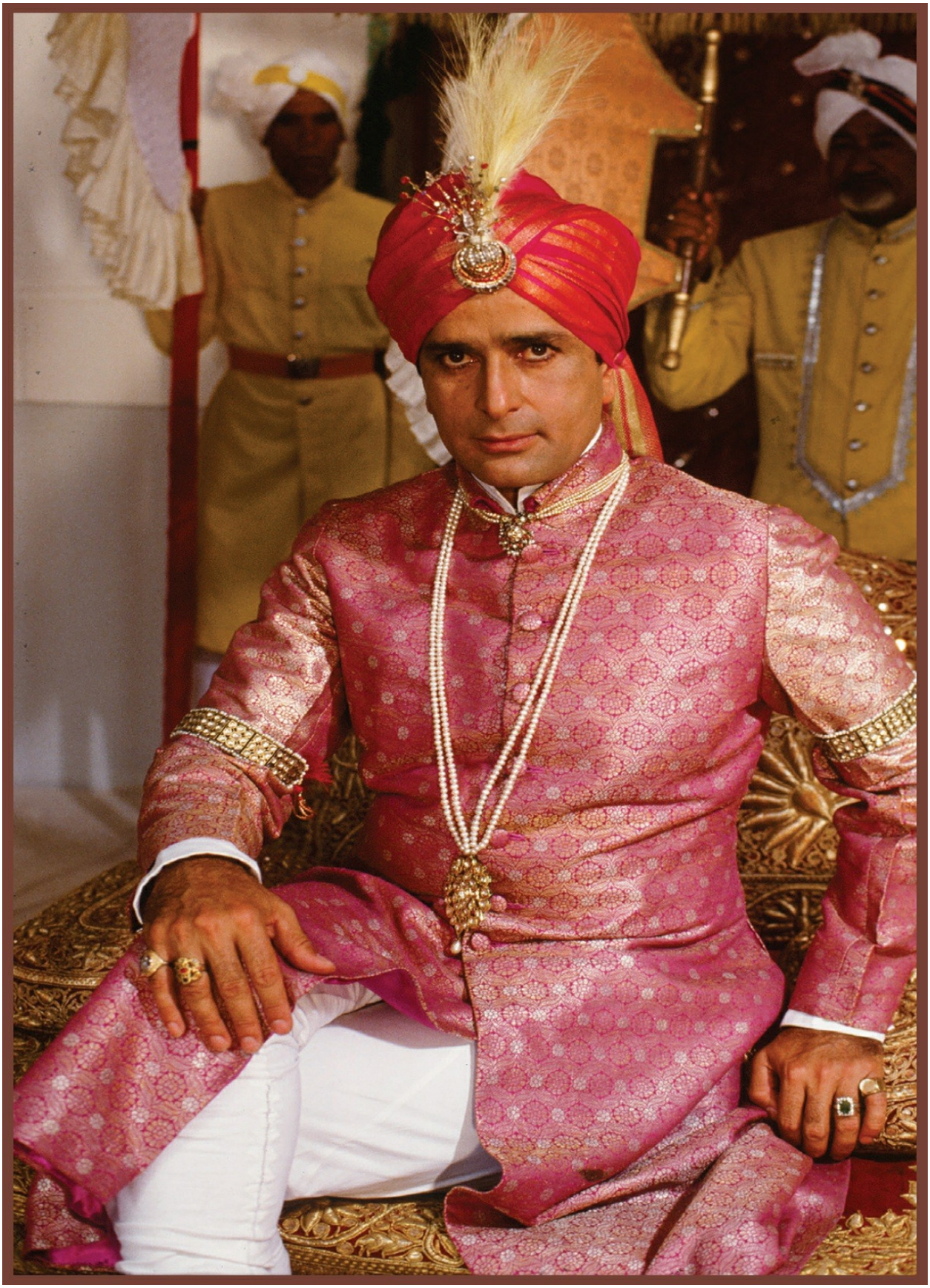

1983, हीट एंड डस्ट। शशि कपूर, नवाब के रूप में। यहाँ वे अपने शाही दरबार के दौरान बैठे हैं। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

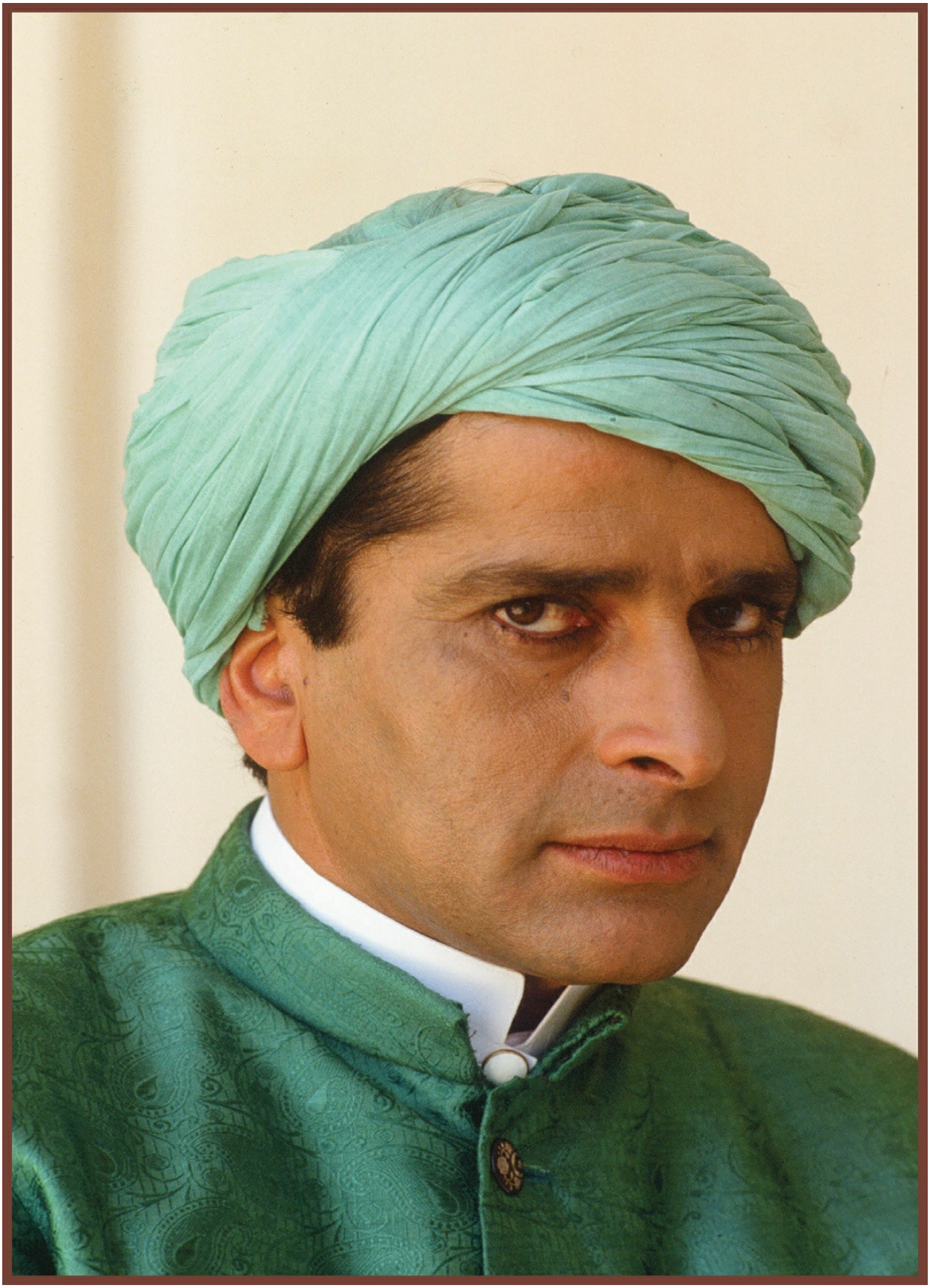

1983, हीट एंड डस्ट। जेम्स आइवरी की फिल्म में शशि कपूर नवाब के रूप में, जो रूथ प्रॉवर झबवाला के बुकर पुरस्कार विजेता उपन्यास पर आधारित है, का क्लोज-अप शॉट। सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

सन् 1986, नई दिल्ली टाइम्स। रमेश शर्मा की राजनीतिक थ्रिलर फिल्म में शशि कपूर एक ईमानदार अखबार संपादक की भूमिका में हैं — इस भूमिका के लिए उन्हें अपना एकमात्र राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। यहां वे अपनी ऑन-स्क्रीन वकील पत्नी, शर्मिला टैगोर द्वारा अभिनीत भूमिका के बगल में बैठे हैं। सौजन्य: रमेश शर्मा।

1987, [illegible] [illegible] [illegible]

1993, इन कस्टडी। शशि कपूर, एक टूटे हुए, बूढ़े कवि नूर के रूप में, अपने कबूतरों के साथ एक निजी पल बिताते हुए।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

1993, इन कस्टडी। इस्माइल मर्चेंट की निर्देशक के रूप में पहली फीचर फिल्म। जेम्स आइवरी ने अपने मित्र के कहने पर इस दृश्य का निर्देशन किया है, जिसमें ओम पुरी द्वारा अभिनीत देवेन एक साहित्यिक पत्रिका के लिए कवि नूर (शशि कपूर) का साक्षात्कार लेते हैं।
सौजन्य: मर्चेंट-आइवरी प्रोडक्शंस।

1998, जिन्ना। रिचर्ड एटनबरो की फिल्म 'गांधी' का पाकिस्तानी संस्करण, जिसमें शशि कपूर एक देवदूत (या 'कथावाचक') के रूप में मुहम्मद अली जिन्ना (क्रिस्टोफर ली) को उनके जीवन के सफर से रूबरू कराते हैं। सौजन्य: जमील देहलवी।

BROADWAY
One Giant Step For Womankind
ake me to the oon.

1998, साइड स्ट्रीट्स। शशि कपूर द्वारा अभिनीत विक्रम राज, एक पूर्व बॉलीवुड अभिनेता के रूप में, न्यूयॉर्क शहर में फंसा हुआ है।
फोटो साभार: सेठ रुबिन। सौजन्य: साइड स्ट्रीट्स प्रोडक्शंस।